दर्ज़ी दर्पण

लेखक

श्री० मा० ईश्वर दत्त

लेखक दोस्त दर्ज़ियां इत्यादि

प्रकाशक

दर्ज़ी घर

रङ्ग महल बाज़ार, लाहौर

दूसरी वार] [मूल्य २॥) रु०

प्रकाशक—

मास्टर ईश्वरदत्त

दर्ज़ी घर-रङ्गमहल, लाहौर

मुद्रक—

जय चन्द मैहरा

पब्लिक एडवोकेट प्रैस सरकुलर रोड नं० ३३ लाहौर।

भूमीका

दोस्त दर्ज़ियां नामक पुस्तक को जनता ने कितना पसन्द किया और गत दो तीन वर्षों मे इस के उर्दू हिन्दी तथा पंजाबी संस्करणों का न केवल भारत वर्ष मे वलिक अन्य २ देशों मे भी जो स्वागत हुआ है उस के जतलाने की आवश्यकता नहीं। कई कन्या पाठशालों मे यह पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं और लाखों दर्ज़ियों देवियों तथा बेकार नौजवानों ने इन उपयोगी पुस्तकों से लाभ उठाया है। जनता के अनुरोध पर मै तीन वर्ष की कठिन तपस्या तथा सैंकड़ों रुपयों की अङ्गरेजी पुस्तकों का स्वाध्याय करके और अपने कई वर्षों के अभ्यास के आधार पर यह दर्ज़ी दर्पण नामक पुस्तक आप की भेंट कर रहा हूं। मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि यह अनुपम पुस्तक प्रत्येक उस सज्जन के वास्ते जो दर्ज़ी का काम करता हो अथवा करना चाहता हो अति उपयोगी होगी और देवियों के वास्ते जो घर में सिलाई का काम करती हैं यह पुस्तक पूर्ण पथ प्रदर्शक का काम देगी। वह सज्जन भी जिन के पास दोस्त दर्ज़ियां है इस से पूरा लाभ उठा सकते हैं। इस पुस्तक को पढ़ कर आप अवश्य यह अनुभव करेगे कि सैंकड़ों रुपयों की अङ्गरेज़ी तथा अन्य पुस्तकों को पढ़ कर भी आप इस पुस्तक के बराबर लाभ नहीं उठा सकेंगे क्योंकि इस मे प्रत्येक विषय को विस्तार पूर्वक समझाने का यत्न किया गया है। परन्तु जितनी भी अन्य पुस्तकें इस काम के विषय

पढेगे वह सब संक्षिप्त होंगी 'जिन्हे' केवल वह सज्जन समझ सकते है जो पहले ही बहुत कुच्छ जानते हों ।

दोस्त दर्जिया मे सब प्रकार के कपडों का काटना वा सीना समझाया गया है। प्रत्येक कारीगर का कपड़े काटने का तरीका एक दूसरे से भिन्न होता है। इस वास्ते हो सकता है कि कई सज्जनों ने केवल इस वास्ते इस पुस्तक से लाभ न उठाया हो कि इस पुस्तक मे दिये गये तरीके उन के तरीकों से भिन्न हों परन्तु दर्जी दर्पण म सब प्रकार के कपडों की सिलाई व कटाई के नुक्स मालूम करना उन को चित्रों द्वारा दिखला कर उन का कारण मालूम करना और उन्ही कारणों की सहायता से इन नुक्सों को दूर करना युक्ति पूर्वक समझाया गया है। छोटे से लेकर बड़े कारीगर तक कोई भी आज तक यह नही कह सका कि उस के काम मे कभी किसी प्रकार का नुक्स पडता ही नही अथवा थोड़े बहुत नुक्स प्रत्येक के काम मे अवश्य पड़ते है। कभी २ ऐसे नुक्स भी पड जाते है जिन्हे साधारण कारीगर तो क्या बडे २ कारीगर भी नही समझ सकते और प्राय. ऐसी हालतों मे तंग आकर कपड़े को रद्दी कर देते हैं। यदि यह उपयोगी पुस्तक आप के पास होगी तो आप इस की सहायता से प्रत्येक कठिनाई को पार कर सकेंगे।

मैं उस परम पिता परमात्मा का धन्यवाद करता हूं और निम्रता पूर्वक उस के पवित्र चरणों मे सिर झुकाता हूँ कि उस पूर्ण प्रभू ने मुझे बल दिया जिस से मै यह पुस्तक लिख कर आप की सेवा कर रहा हू। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रभु मुझे शक्ति प्रदान

करेंगे जिस से मै और बहुत सी ऐसी पुस्तक लिख कर जनता की पहले से भी ज्यादा सेवा कर सकूं। मै आशा करता हूं कि आप भी इस प्रार्थना मे मेरा साथ देंगे।

इतना यत्न करने पर भी यदि इस पुस्तक मे कोई कमी रह गई हो। क्योंकि मैं भी तो एक साधारण मनुष्य हों और प्रत्येक मनुष्य से किसी समय गलती हो जाने की सम्भावना है। आप का बड़ा अनुग्रह होगा यदि आप इस मे किसी भी त्रुटी को देख कर मुझे शीघ्र ही उस से सूचित करेगे ताकि दूसरे सस्करण मे उसे ठीक कर दिया जाय।

भवदीय

ईश्वरदत्त नासा

श्रीयुत मास्टर ईश्वर दत्त जी नासा की अति उपयोगी पुस्तकें !

(१) दोस्त दर्ज़ियां प्रथम भाग जिस में सब प्रकार की कमीज, पाजामा, सलवार, जम्पर, फराक, पेटीकोट, दराज़, बाडी, कम्बीनेशन और निकर इत्यादि का वर्णन है। ४०० पृष्ट मूल्य सजिल्द हिन्दी १।।) पंजाबी १।।) उर्दू १)।

(२) दूसरा भाग- जिस मे कोट, ओवरकोट, वाडी कोट, अचकन, फराक कोट, ड्रैस कोट, मार्निङ्ग कोट, वास्कट, पतलून, निकर, मस फोर्स इत्यादि का वर्णन है केवल हिन्दी व पंजाबी मे मुल्य १।।) फ़ी ।

(३) दोस्त दर्ज़ियां मुकम्मल जिस मे ऊपर वाले दोनों भाग शामिल हैं मूल्य हिन्दी व पंजाबी ३) फ़ी उर्दू २।।)।

(४) फैशन बुक जदीद- सब प्रकार के जनाना, मर्दाना तथा बच्चों के कपडों के नये २ फैशन के ४०० से अधिक नमूने मूल्य १)

(५) दर्ज़ी दर्पण- सब प्रकार की कपड़ों की सिलाई व कटाई की त्रुटिया मालूम करके उन्हें चित्रों द्वारा दिखलाना, उन के कारण मालूम करके उन्हे ठीक करने के नियम युक्ती पूर्वक ४०० के लग भग चित्रों द्वारा सरल भाषा मे समझाया गया है। प्रत्येक दर्ज़ी तथा इस काम के करने वाली देवियों के पास इस अति उप-

योगी पुस्तक का होना अत्यावश्यक है जिल्द पक्की कपड़े की सुनहरी छपी हुई मूल्य उर्दू व हिन्दी २॥) प्रति।

नोट (१) डाक व्यय हर अवस्था मे ग्राहक के जुमे होगा

(२) इस उपयोगी पुस्तक के छपने पर हम तीन भागों में एक अति लाभ दायक पुस्तक इस कार्य्य के विषय में लिख रहे हैं जो कि शीघ्र ही जनता की सेवा में लेकर उपस्थित होंगे।

(३) यह सब पुस्तकें अपने २ शहर के पुस्तक विक्रेताओं से तथा हम से मंगावे।

दर्ज़ी घर,

रंग महल बाज़ार,

लाहौर।

समर्पण

यह "दर्ज़ी-दर्पण" नामक पुस्तक मैं अपने पूज्य गुरू श्रीमान बख्शी दीना नाथ जी वैद संचालक फ़रम डी० एन० बख्शी ऐण्ड सन्ज रावलपिंडी के पवित्र चरणों मे समर्पण करता हूँ। जिनकी अपार कृपा से मैं इस समर्थ हुआ हूं कि न केवल अपने कार्य्य व्यवहार मे उन्नति करके रोटी कमाने लग गया हूं बल्कि उनकी आज्ञानुसार इन पुस्तकों द्वारा जनता की सेवा भी कर रहा हूँ। जो कुच्छ भी इस पुस्तक मे है उसमे मेरा अपना कुच्छ भी नहीं है बल्कि यह सब कुच्छ उस महान आत्मा के प्रकाश के थोड़े से भाग का भी एक तुच्छ सा नमूना है जोकि आपने मुझे अपनी सेवा का सौभाग्य देकर कृपा की है। एक बार फिर मैं आपके पवित्र चरणो मे बडे आदर और प्रेम पूर्वक अपना सीस झुका कर यह तुच्छ पुस्तक आपकी भेंट करता हू और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे शक्ति प्रदान करे कि मै यथा पूर्वक इस शुभ कार्य्य को करता हुआ अपने गुरू जी महाराज की आज्ञा का पालन करने मे समर्थ हो।

मैं हूं आप का प्रय शिष्य

ईश्वर दत्त नासा

❀ ओ३म् ❀

दर्जी-दर्पण

पहला अध्याय

फ़िटिंग की त्रुटियां और उन का सुधार

पहला पाठ

कोटों के नुक्स

नुक्स (ALTERATION)

थोड़े बहुत नुक्स हर एक दर्जी के काम में पड़ते रहते हैं। अथवा कोई भी दर्जी ऐसा नहीं होता जो यह कह सके कि उस के कपड़े सर्वदा फ़िट आते है और उन मे किसी प्रकार का नुक्स नहीं पड़ता। हाँ इतना कहा जा सकता है कि किसी दर्जी के कपड़ों मे प्रायः बहुत से नुक्स पड़ते रहते हैं और किसी दर्जी के काम में कभी कभी नुक्स पड़ते हैं। परन्तु थोड़े अथवा बहुत नुक्स पड़ते हर एक दर्जी के काम मे अवश्य हैं। अर्थात् जब तक दर्जी का काम अथवा कपड़े काटना शरीर की बनावट के अनुसार अथवा (Scientifically) किया जावेगा तब तक हमारे काम में नुक्स ज़रूर पड़ते रहेगे, और जब यह काम ऐसी साधारण रीति से किया जावेगा, कि चाहे वह कपड़े शरीर की

वनावट के अनुसार हों अथवा न हों, केवल उन से शरीर ढकने का काम लिया जावेगा तो फिटिङ्ग के नुक्सों की परवाह नहीं की जावेगी। नुक्स न केवल कपड़ों के शरीर की वनावट के अनुसार न वनाये जाने से पडते हैं वल्कि इस से वचने के वास्ते ग्राहक के विचारों (choice or selection) का समझना भी ज़रूरी है। क्योंकि एक ग्राहक जरूरी नहीं कि दूसरे ग्राहक के अनुसार ही वस्त्र वनवाये वल्कि प्राय: ग्राहकों के विचार (choice) एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

दर्ज़ी कपड़े काटने मे जितना ज्यादा निपुण होगा उतने ही थोड़े नुक्स उस के काम मे पड़ा करेंगे। परन्तु इस मे ज़रूरी नहीं कि हर जगह केवल ज्यादा निपुण दर्जियों के काम मे ही थोड़े नुक्स पड़ें, वल्कि जहा ग्राहक विल्कुल साधारण होंगे वहां पर साधारण दर्जियों के काम मे भी थोड़े नुक्स चुने जावेगे और जहां पर ग्राहक ज्यादा फैशनेवल (fashionable) होंगे वहा वड़े २ निपुण दर्जियों के काम मे भी काफी नुक्स निकाले जाते हैं। इस से सिद्ध हुआ कि कपड़ों मे नुक्स केवल दर्जी की निपुणता की अधिकता, अथवा न्यूनता के कारण ही नहीं पड़ते वल्कि ग्राहक की वुद्धि (tandard of customers) भी नुक्सों के वढ़ाने अथवा घटाने का कारण होती है। अर्थात् ग्राहक जितना ऊंचे दर्जे का होगा उतनी उस मे नुक्स निकालने की अधिक वुद्धि होगी। अथवा ग्राहक जितना अधिक दाम देगा काम भी उतना ही वढ़िया लेगा।

यही कारण है कि बड़ी-बड़ी दुकानों में जो ग्राहक जाते हैं क्योंकि वह काफ़ी दाम देते हैं इस वास्ते वह चाहते हैं कि उन की सब छोटी से ले कर बड़ी बात पर भली प्रकार ध्यान दिया जावे। इसी कारण से बड़ी २ दुकानों के काम मे प्रायः बहुत से नुक्स पड़ते रहते हैं।

—:o:—

दूसरा पाठ

नुक्सों के कारण

(SOURCES OF DEFECTS)

नुक्स प्रायः नीचे लिखे कारणों से पड़ते हैं—

(१) कटाई (CUTTING)

बहुत से नुक्स प्रायः क़टाई के ग़लत अथवा ध्यान न देकर करने से पड़ते है। इस वास्ते प्रत्येक दर्जी, यदि वह चाहता है कि इस के काम मे बहुत नुक्स न पड़े और उस के ग्राहक सदा उस से प्रसन्न रहे जिस से उस के काम की प्रतिदिन वृद्धि हो, उस को चाहिये कि न केवल कपड़े काटना ही भली भांति जानता हो बल्कि काटते समय पूरे ध्यान से काम करे और ऐसा कभी न करे कि अपनी निपुणता के घमण्ड मे आकर लापरवाही (carelessness) से काम करना शुरू कर दे। कटाई एक प्रकार की साइन्स (science) है क्योंकि इस में शरीर की बनावट का ध्यान रखना पड़ता है। और साथ ही कटाई एक

प्रकार का आर्ट (Art) भी है क्योंकि इस मे प्रत्येक प्रकार का चित्र सुन्दर और साफ़ लकीरों से बनाना पड़ता है और इस मे फैशन (style) का और नाप के अनुसार ठीक २ (appropriateness) का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। कटाई मे निपुणता और ध्यान पूर्वक काम करने से नुक्स बहुत थोड़े पड़ते हैं परन्तु नुक्स थोड़े अथवा बहुत पडते जरूर है।

वह कटर (cutter) जिस को कटाई का थोड़ा तजरुबा हो, और वह अभी इस का अभ्यास ही कर रहा हो, चाहे वह थोडी देर काम करने के कारण अथवा वैसे ही कटाई के नियमों को भली भांति न जाने के कारण वह शरीर की बनावट के अनुसार कपडों के काटने के चित्रों मे आवश्यकता अनुसार तबदीली न कर सकता हो अथवा प्रतिदिन के फैशन के बदल जाने पर वह उसे न समझ सकता हो तो उस के काम मे ज्यादा नुक्स पड जाते है। ऐसे आदमी को चाहिये कि वह अपने दर्जी भाइयों (fellow craftsmen) की सगत मे रह कर फैशन इत्यादि को भली भाति समझे। ऐसा करने से उस की बुद्धि (knowledge) इतनी बढ़ जावेगी कि वह बाते जो वह अपने दर्जी भाइयों की संगत मे रह कर सीखेगा वह उसे अपने प्रतिदिन के काम मे बडी सहायता देंगी। यदि प्रत्येक कटर दर्जी के काम के किसी न किसी साप्ताहिक तथा मासिक पत्र का ग्राहक बन कर उस का पाठ करे तथा किसी ऐसी सभा का सभासद् बना रहे जो कि दर्जी के काम की

शरीर पर कपड़े पहिले पहिल विना ट्राई (try) अथवा कच्चा वना कर पहिने विना न केवल फिट आना मुश्किल है वल्कि असम्भव है। परन्तु इस का मतलव यह नही होना चाहिये कि आप यह विचार करके, कि यह कपड़ा ट्राई किये विना ठीक आना तो है ही नहीं इस वास्ते इसे लापरवाही अथवा ढकौंसले से बनाते रहे ताकि ट्राई करते समय जो २ नुक्स मालूम होंगे दूर कर दिये जावेगे। वल्कि आप को हमेशा यह कोशिश करनी चाहिये कि आप इतने यत्न से और विधि-पूर्वक काम करे कि आप के विचार मे इस मे किसी प्रकार का नुक्स पडना ही नही है। अर्थात् आप हर एक काम को ठीक विधि पूर्वक करे और ढकौं-सलेवाजी तथा लापरवाही से काम न करे। क्योंकि काम को पहिले ही विधि पूर्वक अथवा यत्न से करने का परिणाम यह होता है कि पीछे किसी प्रकार का कष्ट नही होता और यदि उलट इस के पहिले केवल ढकौंसलेबाजी अथवा लापरवाही से इस वास्ते काम किया जाये कि ट्राई करते समय सब नुक्स दूर कर दिये जायेगे तो इस का परिणाम यह होता है कि ट्राई करते समय इतने नुक्स मालूम होते है कि सारे के सारे काम को फिर से खोल कर वनाना पडता है जिस से दो गुणा अथवा तीन गुणा काम वढ जाता है। वास्तव मे ट्राई करने का अभिप्राय तो कपड़े को ठीक २ वना कर उसको आवश्यकतानुसार थोड़ा सा ढीला अथवा तङ्ग करना होता है।

(२) बेपरवाही

(CARELESSNESS)

हम सब लोग प्रायः काम को पूरे ध्यान से न करने के कारण से अथवा किसी मित्र, ग्राहक अथवा किसी दूसरे आदमी के काम के समय आकर दखल देने (Interruption) से गलतियाँ कर बैठते हैं। कटर ग्राहक से वार्तालाप करते समय उस की बताई हुई बात को भली प्रकार न समझ कर अथवा नाप लेने मे ग़लती करके वस्त्र का चित्र बनाते और कपड़े मे से वस्त्र काटते समय प्रायः ग़लती कर बैठते है। इस के इलावा कई ग्राहक इतने वहमी होते हैं कि व्यर्थ और छोटी २ बातों के वास्ते इतना तंग करते है जिस से कटर विचारा घबरा कर उस की बातों को फ़ज़ूल और सिर दर्दी का कारण समझ कर उन की ओर ध्यान तक नहीं देता बल्कि केवल मुँह से 'हां जी' 'नही जी' इत्यादि कहता रहता है जिससे ग्राहक समझ सके कि वह उस की बातें ध्यान पूर्वक सुन रहा है। इस का परिणाम यह होता है कि ग्राहक की कुछ जरूरी बाते भी रह जाती हैं। ऐसे नुक्स प्रायः पड़ते ही रहते हैं जिन से ग्राहक नाराज़ हो जाते हैं। इस वास्ते यदि आप ऊपर लिखी बातें ध्यान पूर्वक करेंगे तो आप को इतना कष्ट न होगा अर्थात् शुरू २ में ज़रा परिश्रम और ध्यान से काम करना सब प्रकार के कष्ट दूर करता है।

नापों का ध्यान पूर्वक न लेना अथवा उनको किसी खास

नियत की गई तरतीब से न लेना वस्त्र को छोटा बड़ा बनाने का कारण होता है। और काम को ध्यान पूर्वक न करने अथवा ग्राहक की इच्छा (wish) को भली भांति न समझने से वस्त्रों के फैशन (style) से नुक्स पड़ जाता है।

कभी २ उस कपडे के मुताबिक वस्त्र न बनाने से जिस में से कि वह बनाया जा रहा हो, नुक्स पड जाते हैं। जैसे मोटे कपड़े को पतले कपडे की अपेक्षा जरा ज्यादा ढीला रखना चाहिये। और जब कपडा चारखाने (checks) वाले अथवा लकीरों (stripes) वाले वस्त्र मे से बनाया जा रहा हो तो काटते समय यह देखना ज़रूरी होता है कि आप देख लें कि सिलाई करने पर चारखाना अथवा धारियाँ ठीक २ जोडी जावे और बुरी न मालूम दें।

और अन्त मे यह भी देख लेना चाहिये कि दर्ज़ी (work man) जिस ने आप का काटा हुआ कपड़ा सीना है उसे ग्राहक के शरीर की बनावट के नुक्स अथवा दूसरी आवश्यक बातें जोकि ग्राहक ने आप को बताई हों, आप भली भाँति समझा दे ताकि वह भी उस के अनुसार ध्यान पूर्वक काम करे।

(३) ग़लत सिलाई

(FAULTY WORKMAN-SHIP)

प्राय. ठीक २ कटे हुए वस्त्र यदि अनाड़ी कारीगरों को सीने के वास्ते दे दिए जायें-अथवा निपुण कारीगर ध्यान पूर्वक काम न करे अथवा

वह वस्त्र को आवश्यकता अनुसार लोहे (Iron) से प्रैस करके शरिङ्क (shrink) न करे अथवा न खेचे (stretching) तो उन में नुक्स पड़ जाता है। हर एक कटर के काटने की रीति (system) दूसरे से भिन्न होती है और वह अपने कटे हुए वस्त्रों मे एक दूसरे से भिन्न २ तरह से कारीगरों को काम करना बताते हैं। जैसे एक कटर तो कन्धे को वहुत नीचा गिरा देता है और दूसरा कटर उसी ग्राहक का दूसरा वस्त्र काटते समय उसके कन्धों को सीधा अथवा पहले कटर की अपेक्षा ऊंचा करता है। और यदि दोनों प्रकार के कटरों के काटे हुए वस्त्र को दर्ज़ी एक ही विधि से वना दें तो एक दूसरे की फिटिङ्ग मे बहुत भेद होगा। इस वास्ते न केवल निपुण कारीगर (efficient workman) ही रखना जरूरी है बल्कि हर एक कटर को चाहिये कि वह उन को अपने काटे हुए वस्त्र, जिस तरह बनाने हों, बता दे।

जब कोई कटर किसी दुकान मे पहिले पहिल चला जाता है जिस दुकान के कारीगर उसके नियमों को नही जानते। अथवा जब कटर को अपनी दुकान मे नये कारीगर रखने होते है उस अवस्था मे उसे बहुत कष्ट होता है क्योंकि कारीगर नये होने के कारण उस के नियमों को जल्दी २ नही समझ सकते चाहे वह कितने ही निपुण क्यों न हों। इस त्रुटि को दूर करने के वास्ते अपना बहुत सा समय उनको देना चाहिये।

कई कटरों का स्वभाव ही होता है कि जब भी उनके कपड़ों मे किसी प्रकार का नुक्स पड़ता है तो वह इसे कारीगर

के ही सिर पर डालते है। अथवा वह हमेशा यही कह देते हैं कि यह नुक्स कारीगरों के ध्यान पूर्वक काम न करने के कारण से पड़ गया है चाहे वह नुक्स उनकी अपनी ही किसी ग़लती के कारण से क्यों न पड गया हो। परन्तु उनको ऐसा उस समय तक कभी नही कहना चाहिये जब तक कि वह किसी नुक्स के कारण को भली प्रकार समझ न ले कि वह नुक्स क्यों पडा है। इस का परिणाम यह होता है कि कारीगर जब देखते है कि कटर बिना किसी कारण के ही उन को कोसता रहता है तो वह काम को पूरे ध्यान से नही करते जिस से दुकानदार के व्यवहार मे फर्क पड़ता है। इस वास्ते कटर को चाहिये कि वह कभी २ अपनी गलती भी मान लिया करे जिस से कारीगर यह समझ कर, कि उन का कटर न्यायकारी है, अधिक ध्यान पूर्वक काम करेगे।

(३) ग्राहक के वहम

WHIMS & CAPRICE OF CUSTOMERS

भिन्न २ ग्राहक अपने २ विचारों के अनुसार भिन्न २ फैशन (style) के कपड़े बनवाते है और बहुत से नुक्सों का कारण केवल ग्राहक के अपने विचारों का एक दूसरे से भिन्न २ होना है। कटर को चाहिये कि ग्राहक से आर्डर लेते समय उसे फैशन के बारे मे सब बाते समझा दे कि किस २ प्रकार के कपड़े मे से किस किस फैशन का वस्त्र अच्छा बनता है। परन्तु यह

आवश्यक नहीं कि ग्राहक हमेशा कटर के विचारों से सहमत हो जाय बल्कि कभी २ तो ग्राहक कहते हैं कि चाहे एक वस्त्र फैशन के अनुसार हो अथवा न हो उसे अपनी इच्छा अनुसार बना कर दे दिया जाय और वह कटर के किसी प्रकार के विचारों को समझने की आवश्यकता नहीं समझता। ग्राहक वस्त्रों के बारे मे बड़े दृढ़ विचारों वाले (sensitive) होते है और यदि हर एक दर्ज़ी यह विचार कर ले कि, क्योंकि एक फैशन के वस्त्रों से उसका एक ग्राहक अति प्रसन्न हो कर गया है इस वास्ते वह सब दूसरे ग्राहकों को भी इसी प्रकार के वस्त्र बना कर देने से प्रसन्न कर लेगा तो यह उसकी बड़ी भारी भूल होगी।

यदि कोई ग्राहक यह समझने लगे कि उस का कोट वैसा नहीं जैसा कि वह चाहता है तो वह साथ ही यह भी समझने लग जाता है कि हर एक आदमी, जो उस के कोट को देखेगा, अवश्य उस नुक्स को ताड़ जायगा जिसे उस ने स्वयम् समझा हुआ है। अथवा यदि कोई सज्जन किसी दूसरे को यह कह दे कि उसका कोट उसके शरीर पर फिट नहीं बैठता तो वह शीघ्र ही इस विचार मे पड़ जाता है कि उस का कोट क्योंकि ठीक नही बना इस वास्ते वह उसे बेपरवाही से पहिन २ कर उस का और भी सत्यानाश कर देता है।

सब से अधिक कष्ट उस ग्राहक के कपड़े बनाने मे होता है जो समय २ पर यह कहे कि यह पुराना फैशन है। हर एक बात में नुक्स निकाल (critense) देता है और वह उस नुक्स को

भली भाँति समझा तक भी नहीं सकता बल्कि केवल इतना कह देता है कि यह पुराना फैशन है इत्यादि। ऐसे ग्राहक का आर्डर लेते समय कटर को चाहिये कि वह उस ग्राहक की हर एक बात को उस के आर्डर मे नाप के साथ २ लिख दे। उस के वस्त्र काट कर जब कारीगर को सिलने के वास्ते दिये जाये तो उसे भी सब बातें अच्छी तरह समझा देनी चाहियें। ऐसे ग्राहकों का काम विशेष ध्यान पूर्वक करना चाहिये। यह बातें अधिकतर युवक ग्राहकों मे मिलती हैं।

कई ग्राहक दर्जी की दुकान से तो वस्त्र बनवा कर अपनी तसल्ली करके ले जाते है परन्तु उनके मित्र तथा सम्बन्धी, जो कपडे पहिनने मे उन के विचार मे अधिक निपुण होते हैं, उनके यह कहने पर कि उन के कपड़े ठीक नही बने, वह ग्राहक वापिस दर्जी के पास कपडे ठीक कराने के वास्ते ले आते है और अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों की इच्छानुसार उसे ठीक कराते है। ऐसी अवस्था मे निपुणता से काम नहीं चलता बल्कि चतुरता (tact) से काम लेना चाहिये और ग्राहक को उसके कहने के अनुसार ही काम कर देना चाहिये,

तीसरा पाठ

नुक्सों को दूर करने के नियम

PRINCIPLES OF REMOVING DEFECTS

हर एक नुक्स का कोई न कोई कारण जरूर होता है और जब किसी वस्त्र मे नुक्स पड़ जाय तो उसका कारण मालूम करने का ही यत्न करना चाहिये। क्योंकि जब कारण मालूम हो जायगा तो उस के दूर करने अथवा ठीक करने की विधि आप को स्वयम् ही सूझ जायगी। नुक्सों के दूर करने के नियमों का जानना उतना ही जरूरी है जितना कि किसी वस्त्र का चित्र बनाने के वास्ते उसके नियमों मे अच्छी तरह से निपुण होना। एक (Inexperienced) कटर नुक्स पड जाने पर बार २ नापों की पड़ताल (Checking) करने लग जाता है परन्तु नुक्स का कारण कुच्छ और ही होता है। इस वास्ते जरूरी है कि किसी नुक्स को दूर करने से पहिले उस का कारण मालूम किया जाय जिस से कि वह नुक्स पड़ा हो।

किसी नुक्स का कारण मालूम करते समय कटर को चाहिये कि वह उन बलों अथवा शिकनों (Symptoms) को जोकि नुक्स की शकल मे नजर आते है अच्छी तरह देख ले। यदि शिकनों (Symptoms) से कपड़ा इकट्ठा होता नज़र आय तो समझना चाहिये कि कपड़ा लम्बाई अथवा चौड़ाई मे बड़ा

बनाया गया है। यह ज्यादती उस तरफ नहीं होती जिस तरफ कि शिकन पड़ते हैं बल्कि उसके उलट होती है। अर्थात् यदि ऐसे शिकन दाये तरफ से बाये तरफ को पड़ते हों तो कपड़े को ऊपर से नीचे तक लम्बाई मे उस जगह पर जरूरत से ज्यादा लम्बा समझना चाहिये जिस जगह पर कि शिकन पड़ते नजर आते हैं। और यदि शिकन ऊपर से नीचे को हों तो कपड़े को उस जगह पर चौड़ाई मे जरूरत से ज्यादा चौड़ा समझना चाहिये। और उलट इसके यदि नुक्स कपड़े मे किसी जगह पर खींच (Drag) पडने के कारण से पड़ता हो तो जिस तरफ़ को खींच (Drag or crease) का रुख होगा उस तरफ कपड़े को छोटा समझना चाहिये।

जब नुक्स सिलाई के गलत किये जाने के कारण से पड़ जाये तो कपडे के जुड़े हुए भाग शरीर पर ठीक नहीं गिरते। प्रायः इस प्रकार के नुक्सों का परिणाम यह होता है कि कपड़ा बहुत सी जगहों पर इकट्ठा हो जाता है और जब कपड़ा शरीर पर पहिन लिया जाता है तो नुक्स का कारण कभी २ मालूम करना भी मुश्किल हो जाता है।

यदि ट्राई करने से पहिले कपड़े को अच्छी तरह देख लिया जाय तो इस प्रकार के नुक्स आसानी से दूर किये जा सकते हैं। ऐसा हर एक अवस्था मे करना जरूरी है क्योंकि ऐसा करने मे बहुत थोड़ा समय लगता है और किसी प्रकार के नुक्स पड़ने का भय नहीं रहता।

चौथा पाठ

जरूरी दवाव

(CONCERNING INLAYS)

यदि कपड़े की सिलाइयों के अन्दर दबाव (Inlays) न रखे जायें तो ट्राई करने से किसी प्रकार का लाभ प्राप्त नहीं होता। क्योंकि बिना दबाव के नुक्स दूर नहीं किये जा सकते। अर्थात् दबाव नुक्सों को दूर करने में बड़ी सहायता देते हैं।

यदि वस्त्र पहिले ही भली प्रकार ध्यान पूर्वक काटे जावें तो ट्राई करने से उस में बहुत थोड़े नुक्स नज़र आते हैं। हां यदि उस के फैशन (style) के बारे में कटर के दिल से किसी प्रकार का सन्देह हो तो उस मे कभी २ तबदीली करने की ज़रूरत पड़ जाती है।

बड़े २ दबाव रखना बजाय लाभ के हानि कारक होता है और उनका रखना व्यर्थ होता है। हां जब कभी किसी ऐसे शरीर वाले आदमी का वस्त्र बनाया जा रहा हो जिस के शरीर की बनावट बहुत ही नुक्स वाली (extreme deformity or abnormality) हो तो उस अवस्था मे इस प्रकार के दवाव लाभ दायक हो सकते हैं। इन ग्राहकों के, जो अपने वस्त्रों की सिलाई अधिक देते हैं और चाहते है कि उन के वस्त्र उन की इच्छानुसार ही बनें चाहे वह फैशन से उलट ही वस्त्र क्यों न बनाना चाहते हों जिन्हें (High class customers) कहा

जाता है, के वस्त्र बनाते समय उन्हें कम से कम दो अथवा इस से भी अधिक बार ट्राई करना जरूरी होता है। पहिली बार ट्राई करने के बाद भी ऐसे ग्राहक कोई न कोई नुक्स निकाल ही बैठते हैं। इस वास्ते उन के वस्त्र एक से अधिक बार अवश्य ट्राई करने होंगे। इस से सिद्ध हुआ कि दबाव अवश्य रखने चाहिये।

इस वास्ते इस प्रकार के (High class customers) के वस्त्र बनाते समय कटर चाहे कितना ही निपुण क्यों न हो, पहिली बार बिना ट्राई के फिट बनाना जरा कठिन होता है और यदि कभी २ वस्त्र बिलकुल ठीक ही क्यों न बना हुआ हो ग्राहक क्योंकि सिलाई काफी देते हैं इस वास्ते उन के वस्त्रों के नुक्स ट्राई करने पर ही ठीक हो सकते है।

दरमियाना दरजे के ग्राहकों (Middle class customers) के वस्त्र बनाते समय यदि कटर निपुण हो और पूरे ध्यान से काम करे अथवा ठीक २ नाप लेकर उन के अनुसार ध्यान पूर्वक यदि वस्त्र काट कर बनाये जाये तो वह प्रायः ठीक अथवा फ़िट बनते हैं और ट्राई करने पर भी उन मे बहुत थोड़े नुक्स निकलते हैं। और बड़ी २ फैक्टरियों तथा सस्ती दुकानों (cheaper trades) मे अच्छा तथा बुरा फिटिङ्ग और सिलाई उस के दामों के अनुसार की जाती है। इस वास्ते वस्त्र काटते समय बहुत थोड़ा कपड़ा लगाने का यत्न किया जाता है क्योंकि ग्राहक ऐसा ही चाहते हैं। और वस्त्र काटने से पहिले कागज के नमूने (paper patterns) काट कर इन्हीं की सहायता से इस तरह काटे जाते हैं।

कि कपड़ा जरा भर भी व्यर्थ न जाय और ऐसी अवस्था मे दबाव भी यदि छोटे करने पड़े तो कर दिये जाते है।

अब हम यहाँ पर सब प्रकार के वस्त्रों के ज़रूरी २ दबावों का वर्णन करते हैं जोकि प्रायः प्रत्येक कटर रखता है। और डाट और डैश (dot & dash lines) वाली लकीरों से ऐसे दबाव दिखलाय गये हैं जोकि केवल उस अवस्था मे रखे जाते है जबकि ग्राहक ज्यादा वहमी हो। जिस से इस बात का सन्देह हो कि वह छोटी २ बातों पर अड़ बैठता है और अपनी बात मनवाता है।

(क) कोटों के दबाव
(LOUNGE INLAYS)

पीठ—चित्र सं० १—कोट की पीठ के ऊपर, के सिरे पर, जहाँ कालर जोड़ा जाता है और जिस स्थान को दर्जी लोग टीक कहते हैं, आधे इञ्च के बराबर दबाव रखा जाता है, जोकि यहां पर निशान १ से ज़ाहिर किया गया है। जब कोट के कन्धे सिले जा चुके हों और कोट का कालर कुछ ऊंचा करना हो तो उस समय इसी दबाव की सहायता से कोट के कालर को ऊंचा करके नुक्स दूर किया जा सकता है। जब किसी ऐसे आदमी का कोट बनाया जा रहा हो, जिस का सिर अथवा शरीर आगे की तरफ़ झुका हुआ हो, उस समय यह दबाव बहुत लाभकारी होता है।

पीठ मे एक दबाव घेरे के नीचे भी रखा जाता है जोकि एक इञ्च से लेकर दो इञ्च के बराबर होता है। जब ट्राई

करते समय ऐसा नुक्स प्रतीत हो, जोकि कोट के साईडों (sides) की सिलाई खोल कर पीठ को ऊपर की तरफ चढ़ाने से दूर हो सके, तो उस समय इसी दबाव से ही काम लेकर, पीठ ऊपर चढ़ाने से नीचे से जितनी छोटी हो गई हो,उसे उतना पूरा किया जाता है। यह दबाव साधारण तौर पर कोट के घेरे के नीचे अन्दर की ओर मोड़ दिया जाता है। यह दबाव निशान २ से जाहिर किया गया है।

तीसरा दबाव पीठ की बीच की सिलाई के साथ २ ऊपर से लेकर नीचे तक रखा जाता है। यह दबाव ज़रूरत पड़ने पर पीठ की चौड़ाई के नाप को ज्यादा करने के काम आता है। यह दबाव निशान ३ से ज़ाहिर किया गया है।
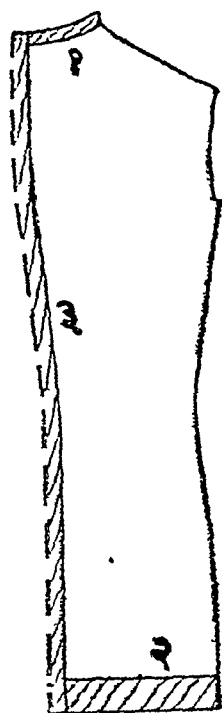
चित्र सं० १

सामना—चित्र सं० २—कोट के सामने में भी पीठ की तरह ही भिन २ दबाव रखे जाते हैं। पहला दबाव कोट के कन्धों के ऊपर, अथवा कन्धों के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक, रखा जाता है। यह चित्र सं०२ में निशान ३-४ और ५ से जाहिर किया गया है। यह दबाव आधा या पौना इञ्च के बराबर रखा जाता है। यह बहुत ही ज़रूरी दबाव है जोकि कोट के कन्धों की ऊंचाई को ठीक करने के काम

आता है। अर्थात् जब कोट के सामने का कन्धा ज्यादा ऊंचा करना हो अथवा इसकी ऊंचाई छोटी हो गई हो और उसे पूरा करना हो तो इस दबाव में से कुछ कपड़ा बाहिर निकाल कर इसे पूरा किया जा सकता है। यह दबाव इसके इलावा कालर की ऊंचाई को भी ठीक करने के काम आता है।

साईड की सिलाई के साथ २ ऊपर से लेकर नीचे तक एक इंच का दबाव रखा जाता है जोकि यहां पर निशान ६ से ले कर ७ तक जाहिर किया गया है। यह दबाव कोट को आवश्यकतानुसार छाती, कमर तथा हिप पर ढीला करने के काम आता है।

सामने के घेरे के नीचे भी पीठ के घेरे के नीचे वाले दबाव के बराबर एक दबाव रखा जाता है। अर्थात पीठ के घेरे के नीचे जितना दबाव रखा हो, सामने के घेरे के नीचे भी उतना ही दबाव रखना चाहिये। यह दबाव इस चित्र में निशान ८ से जाहिर किया गया है।
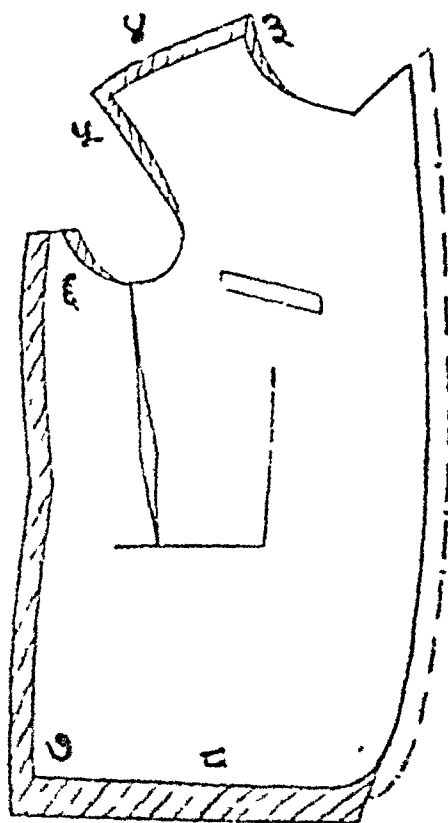
चित्र सं० २

इसके इलावा सामने मे मोंढे की गोलाई मे पीछे की तरफ थोडा सा दवाव रखा जाता है। यह दवाव उस समय काम आता है जबकि कोट छाती पर ढीला हो और उसे छाती पर तङ्ग करने के वास्ते सामने के साईड को निशान ६ पर दवाना हो, तो मोंढे का यह दवाव बाहिर निकाल कर सामने को ठीक किया जाता है। यह दवाव तिरछी लकीरों से जाहिर किया गया है।

आस्तीनें — चित्र स० ३ व ४

आस्तीन का ऊपर का हिस्सा अथवा 'गोला'

चित्र स० ३

चित्र स० ३—आस्तीन के गोल मे डेढ या दो इञ्च का दवाव मोहरियों के आगे रखा जाता है जोकि आस्तीन की मोहरी के अन्दर की ओर मोडने के काम आता है और यदि कफ को पास की तरफ की सिलाई के साथ २ खुला रखना हो, जैसे कि प्रायः गरम कोटों मे किया जाता है, तो इस दवाव को पास, अथवा बाहिर की सिलाई की तरफ चित्रानुसार जरा बड़ा कर देना चाहिये। देखो निशान १६—

आस्तीन के नीचे का हिस्सा अथवा 'ताल'

चित्र सं० ४–ताल मे भी गोले की तरह कफ़ के अन्दर की तरफ़ को मोड़ने के वास्ते उतना दबाव रखा जाता है जितना कि गोले मे निशान १६ पर दिखाया गया है। यह दबाव यहां पर निशान २० से ज़ाहिर किया गया है।
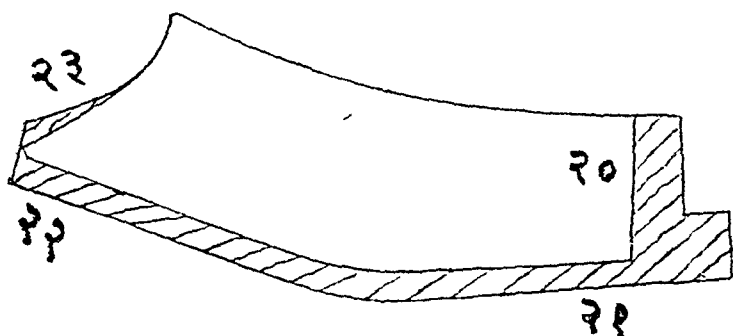
चित्र सं० ४

इसके इलावा पास की सिलाई के साथ २ ताल मे एक इञ्च चौड़ा दबाव रखा जाता है जोकि आस्तीन को आवश्यकतानुसार कफ़, कोहनी अथवा मोंढे पर ढीला करने के काम आता है। यह दबाव इस चित्र मे निशान २२ से २१ तक जाहिर किया गया है।

एक छोटा सा दबाव निशान २३ पर भी रखा जाता है जोकि उस समय काम आता है जबकि आस्तीन को मोंढे पर से तङ्ग करना हो। निशान २२ पर तो मोंढे की चौड़ाई कम कर दी जाती है, और निशान २३ पर के दबाव से काम लेकर मोंढे की गोलाई को ठीक किया जाता है।

ख—वास्कटों के दबाव

पीठ—चित्र सं० ५—कोट की तरह वास्कट की पीठ मे भी ऊपर की तरफ टीक पर पौने इञ्च का दबाव रखा जाता है जोकि निशान ११ से जाहिर किया गया है। यह दबाव आवश्यकतानुसार टीक को ऊचा करने मे मदद देता है।

वास्कट की पीठ के साईड के साथ २ ऊपर से नीचे तक एक इञ्च का दबाव रखा जाता है, जोकि इस चित्र मे निशान ९ से जाहिर किया गया है। यह दबाव वास्कट को ढी ा अथवा खुला करने के काम आता है।
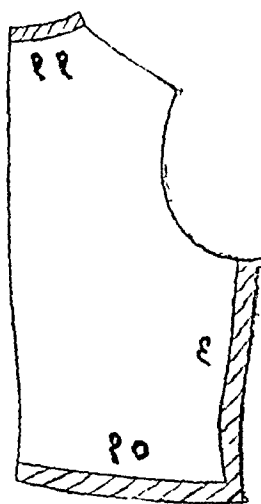
पीठ के घेरे मे भी नीचे की तरफ एक इञ्च के बराबर दबाव रखा जाता है जोकि वास्कट को पीठ पर लम्बा करने के काम आता है और इस चित्र मे निशान १० से जाहिर किया गया है।

चित्र सं० ५

सामना—चित्र सं० ६—

वास्कट के सामने मे भी घेरे के नीचे पीठ की तरह एक इञ्च का दबाव रखा जाता है, जोकि वास्कट को लम्बा करने मे मदद देता है। यह दबाव इतना चौडा होता है जितना कि पीठ मे रखा गया हो। यहा पर इसे निशान १२ से जाहिर किया गया है।

निशान १३ और १४ पर एक २ इञ्च के दबाव इस वास्ते रखे जाते हैं कि कन्धों को जरूरत के समय आगे की तरफ किया जा सके। अथवा यदि हाला बहुत बड़ा बनाया गया हो जिससे कि वास्कट का कन्धा पीछे को चला गया हो तो इस दबाव से, जोकि निशान १३ से
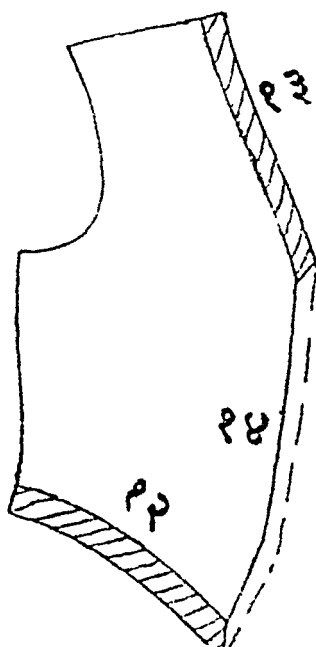
चित्र सं० ६

ज़ाहिर किया गया है, काम लेकर हाले को आवश्यकतानुसार छोटा और कन्धे को आगे की तरफ़ किया जा सकता है। और निशान १४ पर का दबाव सामने को आगे की तरफ़ ढीला से करने के काम आता है ॥

ग—पतलूनों के दबाव

सामना—चित्र सं० ७—पतलूनों के सामने में पाकट के मुंह पर एक इञ्च चौड़ा दबाव पास की सिलाई मे रखा जाता है, जोकि पाकट लगाते समय अन्दर की तरफ मोड दिया जाता है। इसे दर्ज़ी लोग जाती (facing) भी कहते हैं और इस चित्र मे यह निशान १८ से ज़ाहिर किया गया है।

टर्न वाली पतलून के नीचे, इस की लम्बाई के उस नाप मे जितना कि इसे तैयार रखना हो रख कर उससे नीचे साढ़े चार इंच का दबाव रखा जाता है, जोकि पतलून की मोहरी के नीचे की तरफ मोड़ने और मोहरी को ऊपर की तरफ टर्न करने के काम आता है। जैसा कि इस चित्र मे दिखाया गया है। और विना टर्न वाली पतलून की मोहरी के नीचे केवल दो या अढाई इञ्च का दबाव रखा जाता है जोकि केवल मोहरी के नीचे अन्दर की ओर मोड़ दिया जाता है। देखो चित्र सं० ७ क।

पीठ—चित्र सं० ८—पतलून की पीठ मे भी सामने की तरह मोहरी के नीचे दबाव रखे जाते हैं। अर्थात् टर्न वाली पतलून के वास्ते साढ़ेचार इञ्च का दबाव रखा जाता है और विना टर्न वाली पतलून के वास्ते दो या अढाई इञ्च का। देखो चित्र सं० ८ व ८क।

इसके इलावा पतलून की पीठ की पीछे की सिलाई के साथ २ डेढ़ इंच का दबाव रखा जाता है, जोकि चित्र सं० ८ में निशान
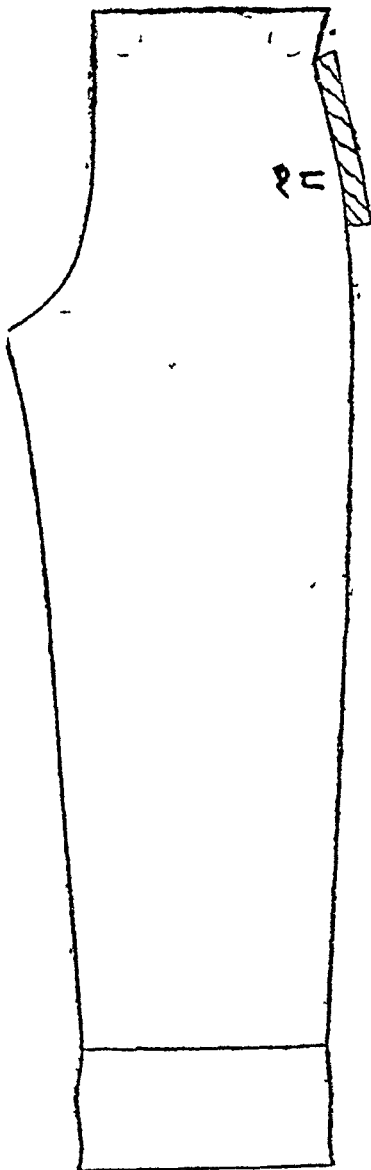
चित्र सं० ७
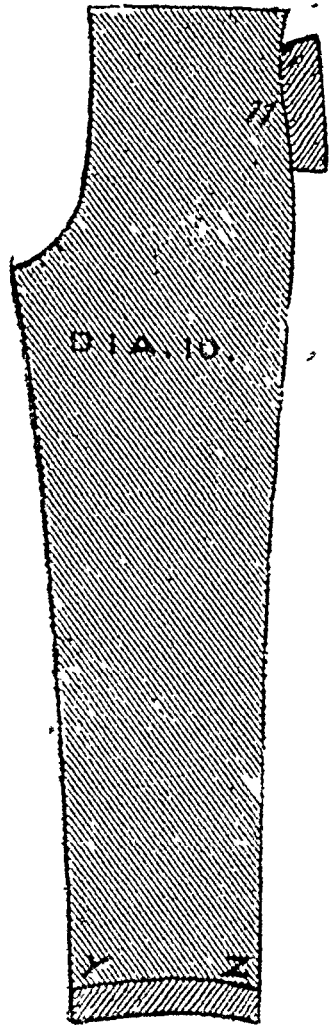
चित्र सं० ७ क

१४ से ज़ाहिर किया गया है। परन्तु इस बात का विचार कर लेना जरूरी है कि यह दबाव निशान १५ पर बिल्कुल न हो ताकि जब इस दबाव वाले फालतू कपड़े को लोहे से प्रैस (Press) करके खोल दिया जाय, अर्थात् फलका कर चीर दिया जाय, तो पहिनते समय यह चूतडो मे न चुभे ।

पीठ की गिद्री की सिलाई के साथ साथ ऊपर से लेकर नीचे तक एक इञ्च चौडा दबाव रखा जाता है जोकि चित्र सं ८ मे निशान १५ से लेकर १६ तक जाहिर किया गया है और जरूरत के समय हिप, घुटने तथा मोहरी को खुला करने के काम आता है।

और पीठ की पास की सिलाई के साथ साथ भी गिद्री की तरह एक इञ्च का दबाव रखा जाता है जोकि चित्र सं० ८ मे निशान १७ से जाहिर किया गया है ।

ख बाड़ी कोटों के दबाव

पीठ—चित्र स० ६—इसकी टीक मे ऊपर की तरफ साधारण कोटों की तरह पौणा इञ्च का दबाव रखा जाता है, जोकि निशान २३ से जाहिर किया गया है।

साधारण कोटों की तरह बाडी कोटों की पीठ के घेरे के नीचे भी दबाव रखा जाता है जोकि यहां पर निशान २४ से जाहिर किया गया है ।

पीठ की बीच की सिलाई के साथ साथ ऊपर से लेकर कमर तक एक इञ्च का दबाव रखा जाता है, जोकि यहां पर निशान
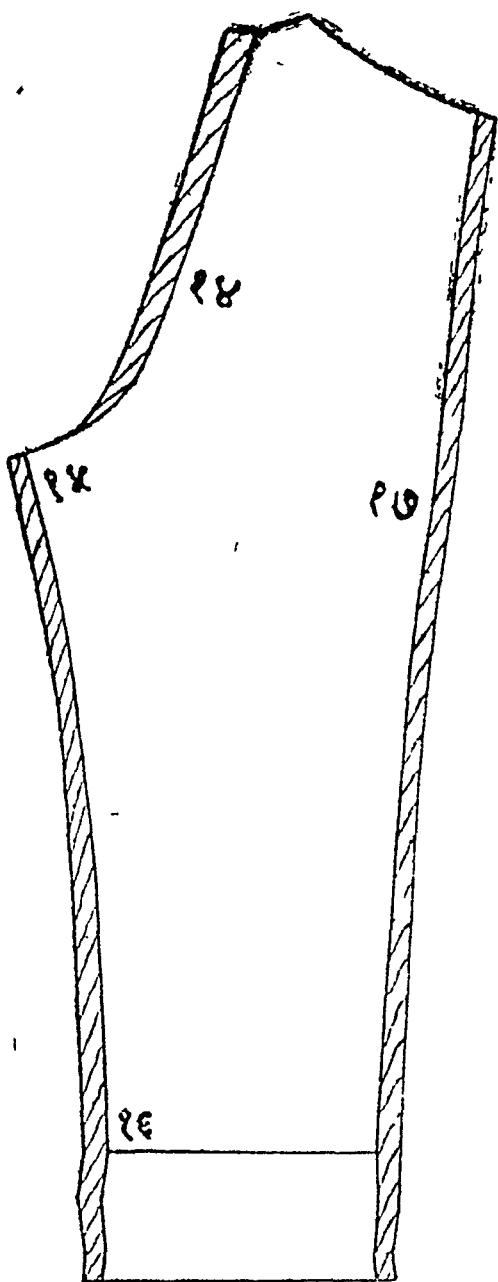
चित्र सं० ८
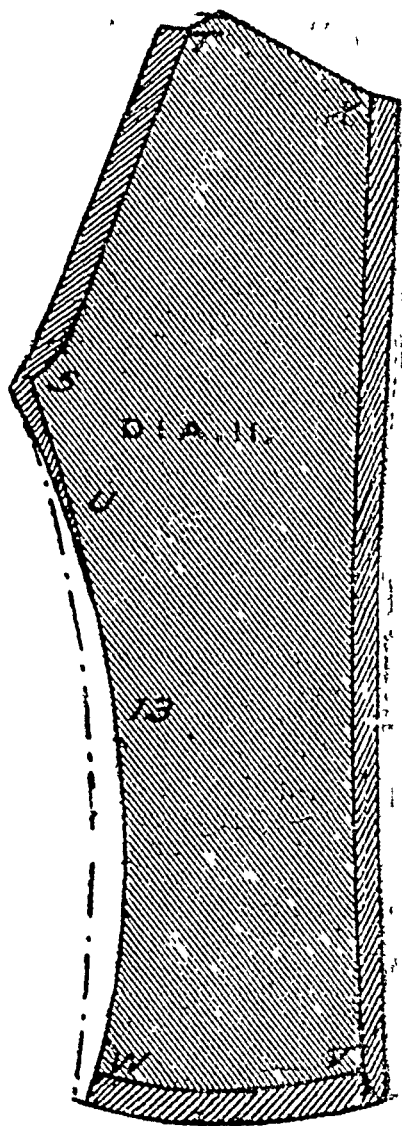
चित्र सं० ८ क

२१ से जाहिर किया गया है और पीठ की चौडाई के नाप को अवश्यकता अनुसार बढ़ाने मे मदद देना है।

और पीठ की बीच की सिलाई के साथ साथ कमर से लेकर नीचे तक डेढ इञ्च का दबाव रखा जाता है जोकि सेट और चाक (opening or slit) के काम आता है और यहा पर निशान २२ से जाहिर किया गया है।

२३

२१

२२

२४

चित्र स० ९

वाडी—(Side Body) चित्र सं० १० बाडी की पीछे की गोलाई के साथ साथ, जिसे दर्जी लोग ब्लेड (Blades) कहते है, पौंने इञ्च के बराबर दवाव रखा जाता है। यह दबाव उस समय वडा लाभकारी होता है जबकि कोट बनाना तो ऐसे आदमी का हो जिस की पीठ की मोंढे की हड्डियाँ वाहिर को उभरी हुई हों जिनको इङ्गलिश भाषा मे (sharp blades) कहते हैं। अर्थात् जब कोट नार्मल शकल वाले आदमी के वास्ते बनाया गया हो और बनाना ऐसे आदमी के वास्ते हो जिस की पीठ पर मोंढे की हड्डिया बाहर को उभरी हुई हों। तो इस दबाव को जरूरत के
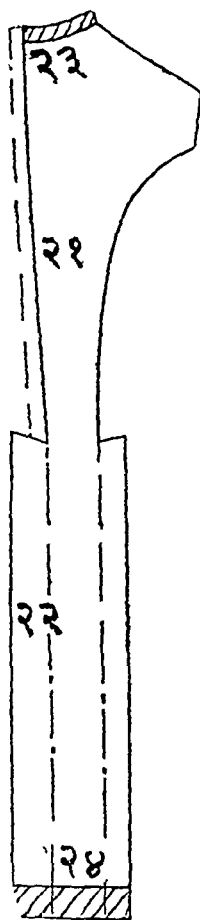
मुताविक बाहर निकाल कर कोट को ठीक किया जा सकता है। यहाँ पर इस दबाव को निशान २५ से जाहिर किया गया है।

बाडी के मोंढ़े पर भी आध इंच के बराबर दबाव रखा जाता है जोकि यहाँ पर तिरछी लकीरों से जाहिर किया गया है।
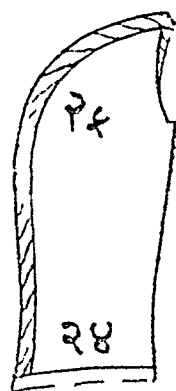
और बाडी के नीचे भी थोड़ा सा दबाव रखा जाता है जो कि यहां पर निशान २४ से जाहिर किया गया है। यह दबाव आवश्यकता अनुसार बाडी को लम्बा करने मे मदद देता है।

चित्र सं० १०

सामना—चित्र सं० ११—सामने मे सब के सब वही
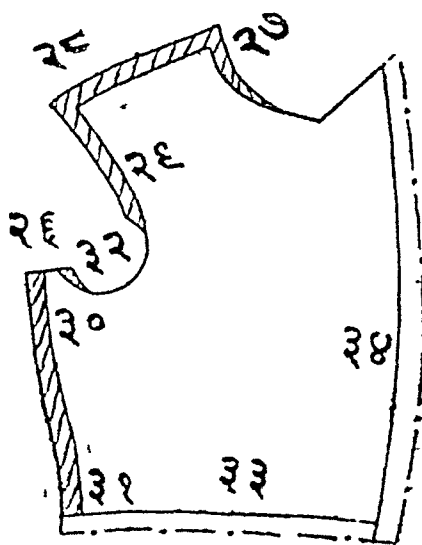
चित्र सं० ११

दबाव रखे जाते हैं जोकि साधारण काटों मे होते है। जैसे कन्धों पर निशान २७ से २८ तक के दबाव। साईड के साथ २ निशान ३० से ३१ तक का दबाव और मोंढे मे निशान ३२ और २६ पर के दबाव। वाडी की तरह सामने के नीचे भी दबाव रखा जाता है जो कि यहाँ पर निशान ३२ से जाहर किया गया है। सामने के आगे के किनारे के साथ २ एक इंच का दबाव रखा जाता है।

घघरी—(skirt) चित्र सं० १२—इस चित्र मे साफ लकीरे तो मार्निङ्ग कोट की घघरी को जाहिर करती है और बिन्दियों वाली लकीरे ड्रैस कोट की घघरी को।

घघरी की पीछे की सिलाई के साथ २ डेढ इञ्च का दबाव रखा जाता है जोकि प्लेट के काम आता है। यह दबाव ३२ से ३३ तक
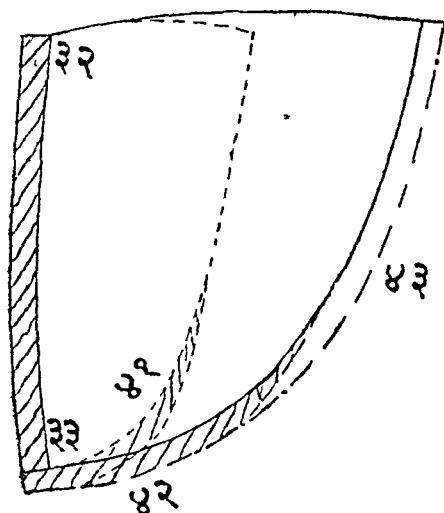
चित्र सं० १२

जाहिर किया गया है। इतना ही दबाव घघरी के नीचे भी रखा जाता है। और यदि जरूरत हो तो घघरी के सामने के साथ २ भी दबाव रख सकते हैं।

ट्राई करना

(TRYING-ON)

उन लोगों के वास्ते, जो किसी कपड़े को तैयार करने से पहिले अधूरा बना कर ट्राई कर लेते है, अथवा जो लोग बिना ट्राई के ही कपड़ों को तैयार कर लेते है, सब के वास्ते नीचे लिखी बातों का समझ लेना आवश्यक है।

ट्राई करना कहते किसे है ? किसी कपड़े को मुकम्मल तौर पर तैयार करने से पहले उसे अधूरा तैयार करके, अर्थात् उसका ढाचा बना कर पहिले ग्राहक को पहिना कर, उसमे जो जो त्रुटियां अथवा नुक़्स हों, उन सब को देख कर ठीक करने के वास्ते निशान लगा लेने का नाम "ट्राई" करना है।

कई लोगों का तो नियम ही यह होता है कि प्रत्येक कपड़े को तैयार करने से पहिले ट्राई कर लेते हैं और उनमे जो जो त्रुटियां हों उनको ठीक करके ही वह कपड़े को तैयार करते हैं। और कई लोग ऐसे भी होते हैं जो कपड़े को पहिले तो तैयार कर लेते है परन्तु जब नुक़्स पड़ जाता तो उसे खोल खोल कर ठीक करते रहते हैं।

हम यहां पर इस बात का निर्णय नहीं कर सकते कि इन दोनों मे किस प्रकार के लोग ठीक नियमानुसार काम करते है अर्थात्

हम यह नही कह सकते कि ट्राई करना एक जरूरी काम है अथवा नही। क्योंकि यह बात दो कारणों पर निर्भर है।

१ **कटर की बुद्धि**—कई कटर ऐसे होते है जिनको अपने काम पर पूरा विश्वास होता है और वह जानते है कि उनके काम मे किसी प्रकार का नुक्स नहीं पड़ेगा। ऐसी अवस्था मे, जबकि उसका यह विचार ठीक हो, ट्राई करने की कोई जरूरत नही।

२ परन्तु इसके साथ ही एक और बात भी है जिससे किसी वस्त्र का ट्राई करना या न करना निश्चय किया जा सकता है। वह ग्राहकों की श्रेणी है। अर्थात् यदि आप ऐसे लोगोंका काम करते हैं जिनको उच्च श्रेणी (High class trade) के लोग कहा जाय तो आप अपने काम मे कितने ही निपुण क्यों न हों,आपके वास्ते ट्राई करना आवश्यक है। क्योंकि जब वह आप को साधारण ग्राहकों से अधिक दाम देगे तो वह आप से काम भी बढ़िया ही लेगे। और यदि आप साधारण श्रेणी के लोगों का काम करते है तो वह आपके छोटे छोटे नुक्सों की भी परवाह नही करेगे। क्योंकि वह आपको पहली किस्म के ग्राहकों की अपेक्षा थोड़े दाम देगे। ऐसी अवस्था मे यदि आपके कपड़े ग्राहक के शरीर पर बहुत ही ज्यादा ढीले अथवा तंग न हों और उनमे कोई विशेष नुक्स भी न हो तो आपका काम चलता जायगा। अर्थात् आपको ट्राई करने की जरूरत नहीं होगी।

इन सब बातों के होते हुए भी यदि आप काम इस विचार से करते है,कि आप ने कपड़े सब प्रकार से फिट बनाने है, अथवा नये नये फैशन के मुताबिक बनाने हैं, तो आपके वास्ते ट्राई करना

अत्यावश्यक है। सब हालतों मे आपने चाहे कपड़े ट्राई करके तैयार करने हों अथवा बिना ट्राई के, आपको काम ऐसा सोच समझ कर करना चाहिए कि इसमे थोड़े से थोड़े नुक्स भी न पड़ें।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि किसी कपड़े को ट्राई करने से पहले उसे कितना तैयार कर लेना चाहिये। यह बात कटर की अपनी इच्छा और बुद्धि पर ही निर्भर है। प्रायः ट्राई करने से पहले कपड़े को दो प्रकार से तैयार किया जाता है। एक तो यह कि इसे पहले बिल्कुल कच्चा कर लिया जाता है। अर्थात् सामने की डाटों की सिलाईयां करके और टिकन (Canvas) अथवा लट्ठे की तह जमा कर साईड और कन्धों को जोड़ दिया जाता है और टिकन अथवा लट्ठे का कालर काट कर कच्चा करके आस्तीनें भी बना कर साथ जोड़ दी जाती है। और ट्राई करते समय इस बात का विचार कर लिया जाता है कि कपड़ा जरूरत से इतना ढीला रक्खा जाय कि इसके अन्दर अन्दरश (Lining) लगाने से भी वह ठीक रहे। दूसरा तरीका यह होता है कि कोट के सामने को बिल्कुल तैयार करके, अर्थात् उसके डाटों की, सिलाईयां करके उनमें पाकट इत्यादि लगा कर सामने टिकन इत्यादि की तह (Stiffening) देकर और फैशन (facing) जोड़ कर सामने तैयार कर लिए जाते हैं। फिर साईड और कन्धों की सिलाई करके, कालर तैयार करके कोट के साथ कच्चा कर दिया जाता है और आस्तीनें भी बना कर कोट के साथ जोड़ दी जाती हैं। पहली प्रकार को बिल्कुल कच्चा करना कहते हैं, क्योंकि इस तरह से कपड़ा बिल्कुल

कच्चा होता है और ट्राई करने के बाद सारा खोल कर अथवा उधेड़ कर नये सिरे से तैयार किया जाता है, और दूसरी प्रकार को कच्चा पक्का करना कहते हैं।

प्राय दूसरी प्रकार अथवा कच्चापक्का बना कर तैयार करना ज्यादा अच्छा होता है. क्योंकि सारा कच्चा करने मे जितना भी समय लगता है, सारा व्यर्थ जाता है और सारा काम उधेड देना पड़ता है। परन्तु दूसरी अवस्था मे कालर पूरा तैयार होने के कारण से उसकी ऊचाई का भी ठीक ठीक ध्यान किया जा सकता है, जबकि पहली अवस्था मे हम ऐसा नहीं कर सकते।

ट्राई करना

कपड़े को ऊपर लिखे दो तरीकों मे से किसी एक के मुताबिक कच्चा करके हमने देखना है कि ट्राई किस तरह किया जाता है। सब से पहले हमको यह देखना जरूरी है कि कपड़ा सब प्रकार से वैसा बना हो जैसा कि ग्राहक मागता है। अर्थात् ग्राहक ने नाप देते समय जो २ बाते बताई हैं वह ठीक है या नही। कोट ग्राहक को ध्यान पूर्वक पहिना कर ट्राई करना चाहिये। यहां पर ज्यादा लिखने की जरूरत नहीं है क्योंकि कोट पहिनते ही बहुत से नुक्स तो स्वयम् ही नज़र आने लग जाते है यदि कोट ग्राहक के शरीर पर ठीक न हो। कोट को इस तरह पहिनाओ कि एक तरफ़ दूसरी तरफ़ से ऊंची अथवा नीची न हो और कोट के सामने मे, जहा बटन लगाने हों सूई अथवा पिन लगा

कर कोट बन्द करो। परन्तु इस बात का विचार जरूर करो कि ऐसा करने से कोट में किसी प्रकार की खिच न पडे। इस के बाद कोट के प्रत्येक भाग को नीचे लिखी श्रेणी से भली भांति देखना चाहिये और जहां जहां किसी प्रकार का नुक्स हो वहां पर उसी प्रकार का निशान लगा लेना चाहिये ।

(१)कोट के कालर की ऊचाई–अथवा सब से पहले यह देखना चाहिये कि कोट का कालर जरूरत से ज्यादा ऊंचा अथवा नीचा तो नही है। यदि कोट का कालर जरूरत से ज्यादा ऊंचा होगा तो एक तो वह ग्राहक की गर्दन को पीठ पर से दबाता रहेगा और दूसरे कालर के नीचे कोट की पीठ पर बल (wrinkles) पड़ते नजर आवेगे। और यदि कोट का कालर जरूरत से थोड़ा ऊंचा अथवा नीचा होगा तो वह ग्राहक की गर्दन से दूर हटा रहेगा। देखो चित्र सं० १३ निशान १ पर।

कालर की उंचाई देख लेने के बाद कोट के साईड का ऊपर का हिस्सा और मोंढे की सिलाई का पीठ पर का हिस्सा देखना चाहिये जोकि चित्र सं० १३ मे निशान २ से जाहिर किया गया है। प्राय: कोट के इस भाग मे बहुत सा फाल्तू कपड़ा इकट्ठा हुआ नजर आता है जिस के कारण इत्यादि आगे वर्णन किये जावेगे ।

(३) कोट की पीठ कमर पर शरीर के साथ फिट होनी चाहिये। प्राय: ऐसा होता है कि कोट इस स्थान पर बहुत ही ढीला होने के कारण न केवल शरीर से बहुत दूर खड़ा रहता है

बल्कि यहा पर कपड़ा थेले की न्याईं इकट्ठा हो जाता है। देखो चित्र सं० १३ निशान ३ पर।
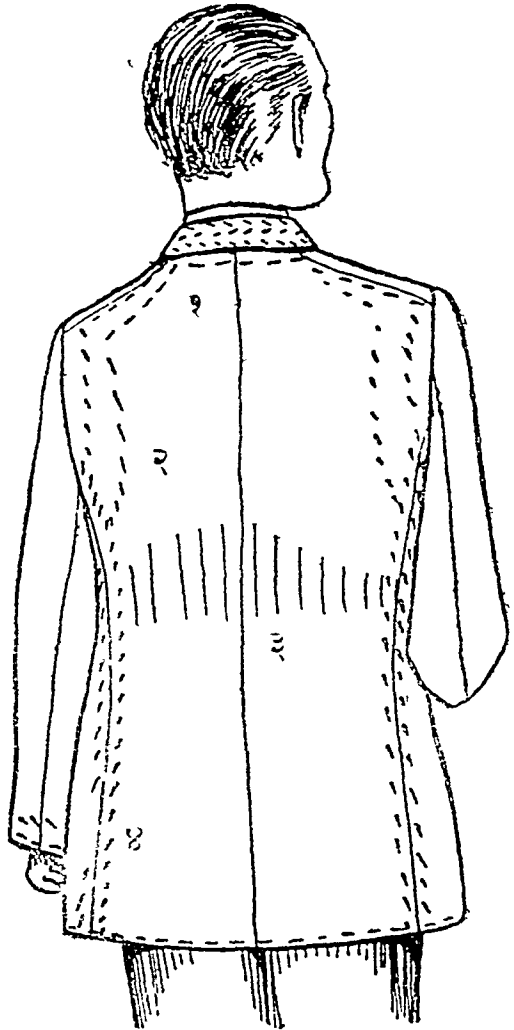
चित्र सं० १३

(४) यदि कोट कमर अथवा हिप पर जरूरत से ज्यादा ढीला होगा तो पीठ को साईड की सिलाई के साथ २ दबाना अथवा छोटा करना पड़ेगा। और यदि कोट तंग होगा तो पीठ की बीच की सिलाई को खोल कर यहां के दबाव को आवश्यकतानुसार बाहिर निकाल कर उस कमी को पूरा किया जायगा।

(५) कोट की पीठ को अच्छी तरह देख लेने के बाद सामने को देखने से पहले आस्तीन के गिराओ (Hang of sleeve) को देखना चाहिये कि एक तो आस्तीन मे किसी प्रकार का शिकन (crease) न पड़े और दूसरे बाजू को आगे ले जाने में किसी प्रकार की तकलीफ़ (inconvenience) न हो। देखो चित्र सं० १४।

(६) जब बाजू नीचे को किये हुए हों उस समय आस्तीन की लम्बाई पडताल कर लेनी चाहिये। कहीं उस समय आस्तीन की लम्बाई की पड़ताल न करो जबकि ग्राहक ने बाजू आगे को किये हों। क्योंकि ऐसा करने से लम्बाई के ग़लत होजाने का डर है।

(७) इस के बाद आस्तीन की कफ़ और कोहनी पर की चौडाईयों को देखना चाहिये। क्योंकि प्रत्येक ग्राहक अपनी २ इच्छा अनुसार आस्तीन को खुला अथवा तंग रखवा लेता है।

(८) इसके बाद कोट के सामने को देखना चाहिये। सब से पहले यह देखना चाहिये कि बटनों की जगह ग्राहक की इच्छानुसार ठीक नियत की गई है। अर्थात् कोट के हाले की लम्बाई अथवा नपेल की लम्बाई ग्राहक की इच्छानुसार है अथवा

उससे छोटी वड़ी। यदि छोटी वडी हो तो उसे ग्राहक जैसा चाहे ठीक कर देना चाहिये। दूसरी वात नेपेलों की चौडाई और गोलाई को देखना है। यह भी प्रत्येक ग्राहक की इच्चानुसार अलग २ चौडाई अथवा गोलाई की वनाई जाती है। और फिर कोट के सामने के आगे की गोलाई को जाचना चाहिये। यह भी प्रत्येक ग्राहक की इच्छानुसार भिन्न २ होती है।
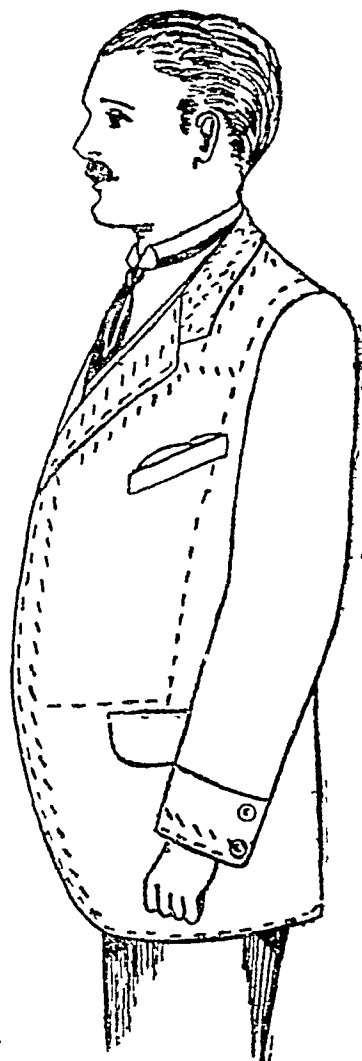
(९) इसके वाद कोट के कन्धो को देखना चाहिये। यह कोट का वहुत जरूरी भाग है। इस वास्ते कोट के कन्धों को भली प्रकार से देखना चाहिये। क्योकि प्राय साईड की सिलाई, पीठ के मोढे और कम्र पर के सारे नुक्स कन्धों के ठीक न जोडे जाने के

चित्र सं० १४

कारण से पड जाते है। कन्धों के नुक्स देखते समय कोट के कालर

की लम्बाई को भी जांचना चाहिये। क्योंकि यदि कोट का कालर छोटा हो तो कोट मे बहुत नुक्स पड़ जाते है।

चित्र सं० १५
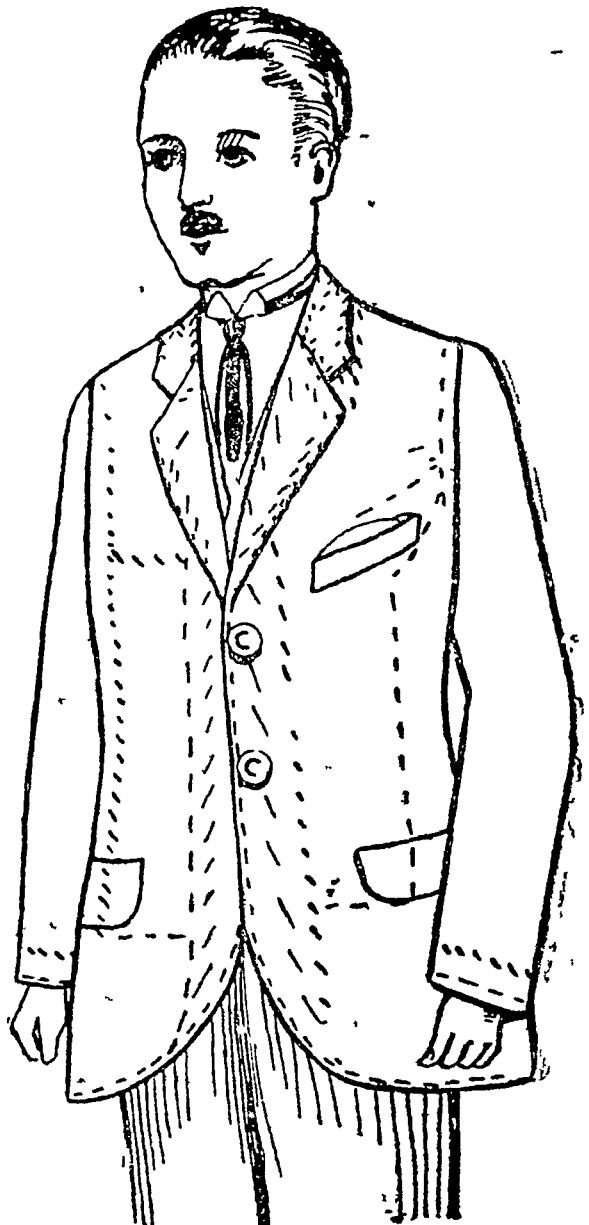
इसके बाद कोट का छाती पर का भाग देखना चाहिये जिसमे सामने का कन्धा मोंढे की सिलाई, कालर और नपेल का भाग (crease row) भी शामिल है। ग्राहक प्राय चिल्लाते हैं कि कोट का मोंढा तंग है। परन्तु वास्तव मे ऐसा नहीं होता बल्कि कोट की टिकन (canvas) और अन्दरश (lining) ठीक २ कोट के सामने के साथ नहीं टाके जाते, जिसे दर्ज़ी लोग टिश्न का टाकना अथवा सटियाना कहते है। जिस का परिणाम यह होता है कि टिकन आदि इकट्ठे होकर मोंढे के पास आकर इकट्ठे हो जाते हैं।

ट्राई करने का कमरा
(FITTING ROOM)

प्राय: उच्च श्रेणी (High class trade) के दर्ज़ी लोग अपनी दुकान मे एक ऐसा कमरा रखते हैं जिसमें कि ग्राहक से कपडा लेते समय उसका नाप इत्यादि लेकर उसके जितने भी कपड़े बनाने हों उन सब की विशेष २ बातें, (special instructions) जो वह अपने कपडों मे बनवाना चाहता हो, सब लिख लेते हैं। इस कमरे को दर्ज़ी लोग ट्राई रूम अथवा फिटिङ्ग रूम (Tryroom or fitting room) कहते हैं।

इसमे प्राय: दो बड़े २ शीशे (Looking glass) इस ढंग से रखे हुये होते हैं कि यदि ग्राहक एक शीशे की तरफ मुह करके खडा हो तो उसी में ही दूसरे शीशे की सहायता से अपनी पीठ की ओर के कपडों की फिटिंग भी देख सके, और उसे किसी भी

तरफ़ को मुड़ना न पड़े। क्योंकि इस कमरे मे ग्राहक को कपड़े पहिना कर ट्राई किये जाते हैं, अथवा ग्राहक के कपड़ों की फिटिंग
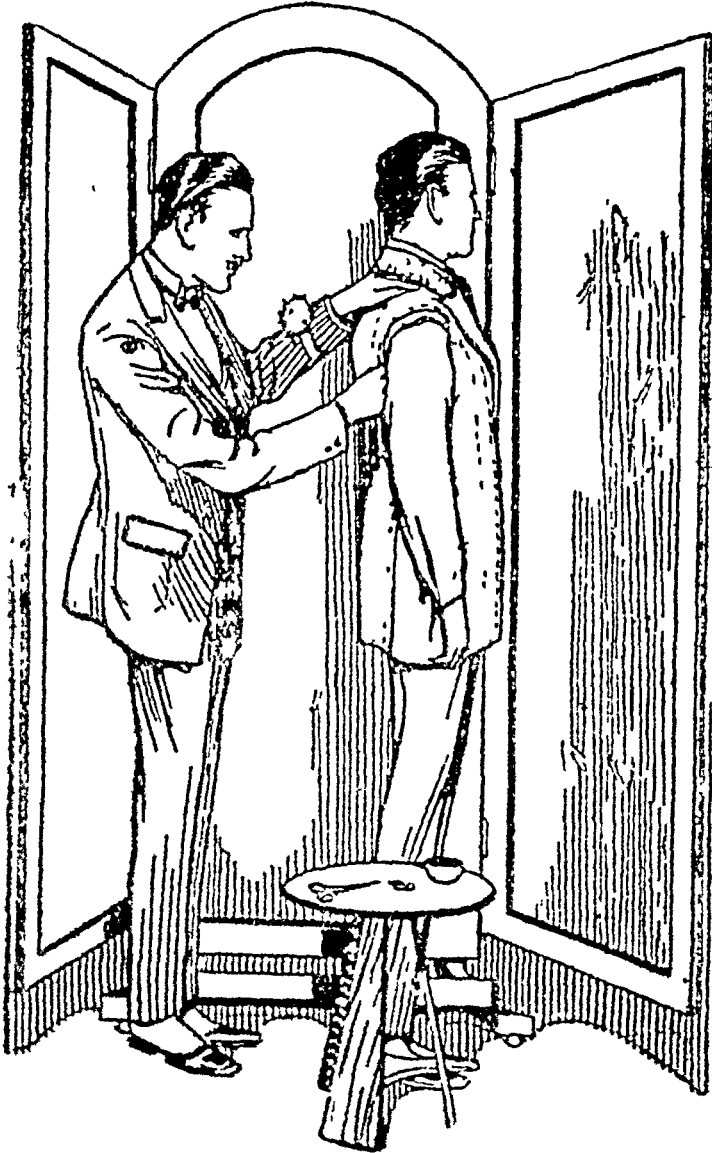
चित्र सं० १६

की त्रुटिया मालूम की जाती है, इस वास्ते इसे ट्राई रूम अथवा फिटिङ्ग रूम कहते है ।

अब हमने देखना यह है कि क्या हमने फिटिङ्ग रूम मे केवल ऊपर बतलाई गई रीति से कपड़े की त्रुटियों के निशान ही लगा देना है अथवा कुच्छ और भी करना है। चित्र सं १६ मे दिखलाया गया है कि किस तरह फिटिङ्ग रूम मे ग्राहक के शरीर पर कपड़े ट्राई किए जाते है। अर्थात् चित्र सं० १६ से फिटिङ्ग रूम का नमूना जाहिर किया गया है ।

कोट की बहुत सी त्रुटियों मे, जोकि कोट के कन्धे, पीठ अथवा सामने अथवा मोंढे मे नजर आती है, प्राय: दर्जी लोग घबरा जाते हैं। इस वास्ते ऐसी अवस्था मे सब से सरल बात यह होती है कि कोट ग्राहक को पहिना कर उसे कन्धो की सिलाई पर से उधेड दो और फिर सामने और पीठ के कन्धों को इस स्थान पर जोड कर देखो जहा से कि कोट शरीर पर ठीक बैठे। अर्थात् सब प्रकार की त्रुटिया, चाहे वह त्रुटिया कोट मे किसी प्रकार की खिच डालती हों या कपडे को किसी स्थान पर इकट्ठा कर लेती हों, दूर हो जाये। अथवा ग्राहक के शरीर पर ही कन्धो की सिलाईया खोल कर कोट को फिट कर लो और जहा २ कन्धे की सिलाई ठीक बैठे निशान लगा कर उसे वैसे ही जोड़ दो।

परन्तु कोट के कन्धे ग्राहक को कोट पहिना कर उसके शरीर पर ही खोलना, जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, कोई साधारण बात नहीं हैं बल्कि इसे भली भॉति ध्यान पूर्वक करना चाहिये

ताकि कोट के शेष भाग अपनी २ जगह पर ही पड़े रहे और अपनी जगह से हिले नही। यदि कन्धों को खोलना हो तो कोट की पीठ को कन्धे की सिलाई से जरा नीचे वास्कट के साथ पिन (Pin) अथवा सूई से टाक दो। इसी तरह कोट के सामने को भी मोंढे की सीध मे वास्कट के साथ टांक दो ताकि कन्धे की सिलाई खोलते समय कोट की पीठ और सामना नीचे को न खिसक जावे।

इस के बाद, अथवा कन्धों की सिलाई का नुक्स दूर करके, कालर को खोलना चाहिये। यदि कालर के छोटा होने के कारण से कन्धे में खिच (Drag) पड़ती हो तो कालर के उधेड़ते ही सब नुक्स दूर हो जाता है। और यदि नुक्स का कारण ही कन्धों की सिलाई का ठीक न होना हो तो कन्धों की सिलाई को खोल कर ठीक करने से नुक्स दूर हो सकता है।

ऊपर लिखी रीति से कोट के कन्धों की सिलाई का नुक्स मालूम करके चाक के साथ सामने और पीठ के कन्धों पर इस तरह निशान लगाओ, जिस से मालूम हो सके कि सामने के कन्धो का कौन सा हिस्सा पीठ के कन्धे के कौन से हिस्से के साथ जोड़ा जायगा।

यदि कोट के सामने मे मोंढे के पास सीधे बल (Horizontal folds) पड़ते हों और साईड की सिलाई के ऊपर के हिस्से पर कोट काफ़ी ढीला मालूम हो तो सामने के कन्धे को गले की तरफ सुरका कर पीठ के कन्धे की जो ज्यादती बाहिर की

तरफ हो जाय, काट कर दूर कर देनी चाहिये। और यदि कोट का सामना मोंढे पर तग हो, जिस के परिणाम के तौर पर बग़लों के नीचे से शुरू हो कर कन्धों पर कालर के नीचे तक तिरछे चल (Diagonal creases) पड़ते नजर आवे तो इस का कारण यह होता है कि कोट का गले से लेकर मोंढे तक का हिस्सा जरूरत से छोटा है।

इस त्रुटि को दूर करने के वास्ते कोट के सामने के कन्धे को बाहिर की तरफ निकाल देना चाहिये और कोट के गले अथवा हाले वाले दबाव से काम लेकर सामने के कन्धे की कमी को दूर करके इसे पीठ के कन्धे के बराबर कर देना चाहिये। ऐसा करने को दर्जी लोग हाले का ऊचा करना (Straightening the neck point) कहते हैं। और पहली प्रकार के ढंग को हाले को झुकाना (Crookening the neck point) कहते है।

ऊपर लिखी रीति से कन्धे का नुक्स दूर कर के इसे गले की तरफ से शुरू करके मोंढे की तरफ को पिन से टाकते जाओ। परन्तु ऐसा करते समय इस बात का विचार जरूर कर लो कि कहीं ऐसा करने से पीठ की बीच की सिलाई अपनी जगह से न खिसक जाय। कहीं ऐसा न हो कि एक नुक्स को दूर करते २ दूसरा नुक्स पैदा कर लो।

कन्धे की सिलाई मोंढे के पास इतनी साफ नहीं हो सकती जितनी कि गले के पास। इस का कारण यह होता है कि

मोंढे के पास इसे जरा ढीला रखा जाता है ताकि एक तो पीठ पर कन्धे के पास रूई की गद्दी (Padding) देने से कोट उस हिस्से पर तंग हो जाय और दूसरे बाजू को घुमाने मे किसी प्रकार का कष्ट न हो।

यदि आप ऐसा नहीं करेगे अर्थात् यदि कोट के कन्धों को मोंढे की तरफ गले वाले हिस्से की अपेक्षा जरा ढीला नही रखेगे तो कोट मोंढों पर बड़ा तंग मालूम देगा और शरीर के साथ जकड़ा रहेगा। जिसका परिणाम यह होगा कि पीठ पर कालर से नीचे की तरफ खिच पड़ती नजर आयगी। और जब ग्राहक कोट को पहिन कर शरीर अथवा बाजूओं को जरा भी हिलायगा तो कोट का कालर पीठ पर गर्दन के ऊपर चढ़ जायगा।

इस वास्ते जब आप कोट के सामने के कन्धों को पीठ के कन्धे के साथ जोड़ने लगे तो पीठ के बाहर वाले अथवा मोंढे की तरफ वाले हिस्से को सामने की अपेक्षा आधे इंच के बराबर ढीला रखे, जिसका परिणाम यह होगा कि कन्धा स्वयम् ही अपनी असली हालत मे आ जायगा।

इस फालतु कपड़े को जोकि पीठ के कन्धे मे सामने के कन्धे की अपेक्षा ज्यादा रखा गया है लोहे (iron or press) से जमा कर पूरा करो। ऐसा करने को दर्जी लोग "नम" मारना कहते है। अर्थात् इस आध इंच फालतु कपड़े को पीठ के कन्धे मे पीठ के मोंढे की हड्डियों के पास नम मार कर बराबर करो। ऐसा करने के बाद कन्धे की सिलाई के आर पार कोट की पीठ

और सामने पर चाक से दो सीधे निशान लगाओ जिस से मालूम हो सके कि पीठ के कन्धे का कौनसा हिस्सा सामने के कन्धे के कौन से हिस्से के साथ जोड़ा जाना है, ताकि कोट को तैयार करते समय फिर किसी प्रकार का नुक्स न पड़ जाय। जब कन्धे अपनी असली जगह से हिला दिये जायेगे तो गले की गोलाई का निशान भी दोबारा लगाने की जरूरत होगी, ताकि यह मालूम हो सके कि कालर पीठ पर और दाये और बाये तरफ ठीक फिट आता है या नहीं।

ऐसा करने से कोट के पिन मे किसी प्रकार का फर्क नहीं पडता परन्तु फिर भी यदि इसे खोल कर दोबारा पिन लगाया जाय तो ज्यादा अच्छा होगा। जहा पर कोट का एक तरफ के सामने का किनारा दूसरी तरफ के सामने के ऊपर उस हालत मे पड़े जबकि बटन या पिन लगाया गया हो, वहाँ पर चाक से निशान लगा लेना चाहिये। और साथ ही बटनों की जगह के निशान भी नियत कर लेने चाहिए।

इसी तरह यदि कोट की सिलाई मे किसी प्रकार का नुक्स हो तो कन्धे की तरह यहाँ पर भी ग्राहक के शरीर पर ही कोट पहिना कर पिन टाक कर नुक्स दूर किया जा सकता है। परन्तु साईड की सिलाई उधेडने से पहले कोट की पीठ को साईड की सिलाई के साथ २ वास्कट के साथ टाक लेना चाहिये ताकि कोट की पीठ अपनी जगह से खिसक न जाय।

ट्राई करके ठीक निशान लगाना

(TRYING ON AND RE-MARKING)

अब हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि प्रत्येक कट्टर (Cutter) को चाहिये कि वह कटाई करते समय ऐसे जरूरी दबाव जरूर रखे जिनकी सहायता से कोट ग्राहक को पहिना कर ऊपर लिखी रीति से सब प्रकार की त्रुटियां दूर की जा सकें।

चित्र सं० १७ में हम एक ऐसी रीति बतलाते हैं जो यदि भली भांति समझ कर याद कर ली जाय तो ट्राई करने के बाद कोट की त्रुटियों को दूर करने के निशान लगाते समय कटर का बहुत सा समय बच सकता है, और किसी प्रकार के अधिक सोचने की भी आवश्यकता नहीं। इसके इलावा यदि आप हमेशा इन्हीं निशानों के अनुसार काम किया करेंगे तो आपके कारीगर (Workmen) भी बिना किसी कष्ट के शीघ्र ही समझ जायेंगे कि अपके निशानों का क्या मतलब है। और आप को हर समय कारीगरों के साथ मग़ज पच्ची नहीं करनी पड़ेगी।

आस्तीन के कफ़ पर निशान १ पर की दो सीधी लकीरें ज़ाहिर करती है कि कोट की आस्तीनों को लम्बाई मे उतना छोटा करना है जितनी कि इन दोनों लकीरों के मध्य मे खाली जगह है। और निशान २ पर की दो खड़ी लकीरें, जोकि कोट की आस्तीन की मोहरी पर लगाई गई है, यह जाहिर करती हैं

कि कोट की आस्तीनों को इतना लम्बा करो जितनी कि इन दोनों खड़ी लकीरों के दरमियान खाली जगह है।

चित्र सं० १७

इसी तरह घेरे और साईड की सिलाई पर जो सीधी लकीरें निशान १ से जाहिर की गई हैं इनका मतलब बारी २ यह है

कि कोट को घेरे पर दबा कर छोटा करो अथवा साईड की सिलाई पर दबा कर तंग करो। परन्तु निशान २ पर की लकीरें, जो घेरे और साईड पर लगाई गई है, उनका मतलब बारी २ कोट की लम्बाई को घेरे के नीचे का दबाव बाहिर निकाल कर ज्यादा करना अथवा साईड पर के दबाव को बाहिर निकाल कर कोट को ढीला करना है।

निशान ३ पर की गोल मोल लकीर का मतलब यह है कि कोट के सामने के इस हिस्से मे, जहां पर कि इस तरह का निशान हो, टेप खेच कर दो और ऐसा करने से कोट के सामने में जो नम आवे उसे लोहे से दूर करो। इस के उलट कालर के नीचे और मोंढे के ऊपर के निशान, जो ४ से ज़ाहिर किये गये हैं, उन का मतलब उस हिस्से को, जहां पर इस प्रकार के निशान लगाये गये हों, लोहे से खेंच कर जोड़ना है।

कन्धे पर निशान ५ से जाहिर की गई गोल लकीर का मतलब यह है कि कन्धे मे रूई की गद्दी (Wedding) कम करो और निशान ६ से जाहिर किये गये डबल क्रास निशानों का मतलब यह है कि यहां पर गद्दी (Wedding) पहले से डबल दो। अथवा यदि पहिले गद्दी बिल्कुल न हो तो अवश्य गद्दी रख दो, और यदि रखी हो तो उसे ज्यादा करो।

आखरी निशान ७ से ज़ाहिर किया गया है जिसका मतलब यह है कि कोट का एक सामना दूसरे सामने पर बटन लगाते समय कहां तक चढ़ता है।

यदि कोट के साईड की सिलाई ठीक हो तो उसे खोलने की जरूरत नही है और साईड का न खोला जाना ही कारीगर को बतला देता है कि कोट साईडों पर ठीक है।

यदि कोट के कन्धों मे किसी प्रकार का नुक्स हो तो ठीक निशान लगा कर पहले निशान को मिटा दो और धागे से लगे हुए निशानों पर से भी धागे निकाल दो ताकि दो प्रकार के निशान लगे रहने से किसी प्रकार की गलती न हो जाय।

यदि किसी नुक्स को दूर करने से कपडे की धारियों (Stripes) या चैक (Cnecks) के बदल जाने का डर हो तो कागज़ के नमूने (Pattarn) पर ही दोबारा निशान लगा कर कपड़े पर उसी नमूने की ही सहायता से निशान लगा लेना चाहिये।

कोट की त्रुटियों को दूर करने के सब प्रकार के निशान ठीक २ लगा चुकने के बाद अपने कारीगरों को ग्राहक की जरूरी बाते, (Instructions) जो वह अपने कपड़े मे बनवाना चाहता हो, भली भाति समझा दो।

अब हम बारी २ सब प्रकार के नुक्सों को दूर करने की रीति विस्तार पूर्वक समझाते हैं। परन्तु इस के साथ ही आपको चाहिये कि आप भली भाति देखे कि किसी प्रकार का नुक्स, कपड़े मे खिच (Drag) अथवा वल, (Crease) किस कारण से पडता है॥

दूसरा अध्याय

कोटों की त्रुटियां

DEFECTS IN LOUNGES

(१) कोट का गर्दन पर बहुत ऊंचा चढ़ जाना

(COAT TOO HIGH AROUND THE NECK)

यह नुक्स ज्यादातर नज़र नही आता है। इसको दूसरे शब्दों मे इस तरह कहना चाहिये कि कन्धों का ज्यादा तिरछा अथवा गिरा हुआ बनाये जाने के कारण से यह नुक्स पड़ जाता है और इसका परिणाम यह होता है कि कोट का कालर ग्राहक की गर्दन के ऊपर चढ़ जाता है। जिस तरह के बल (creases) चित्र सं० १८ में दिखलाये गये हैं, चाहे पड़े अथवा न पड़े, अर्थात् इस प्रकार के बल चाहे नज़र आवे या न आवे परन्तु जब कोट की "टीक," (पीठ की गले पर की गोलाई) जरा छोटी हो तो हमेशा कोट के कालर के नीचे अवश्य बल पड़ने लग जाते हैं। जब ग्राहक कोट पहिन कर बैठ जाता है तो नुक्स साफ तौर पर नज़र आने लगता है और कालर इतना ऊंचा चला जाता है कि सिर तक बालों में जा धंसता है। यह समस्या प्राय: ऐसे कोटों की होती है जो कि ग्राहक ऐसे फिट बनवाते है कि खड़े हुए २ यह बिल्कुल ठीक

चित्र सं० १८

हों और इनमें किसी प्रकार का बल न पड़े। परन्तु यह एक अलग चीज है जिसका इस त्रुटि से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। इस वास्ते हम इसे अब नही छेडते। यह नुक्स चित्र स० १८ से जाहिर किया गया है।

कारण--इस नुक्स का सबसे बड़ा कारण यह है कि कोट के कन्धों को जरूरत से ज्यादा गिरा हुआ बनाया गया है। दूसरे शब्दों मे यूं कहना चाहिये कि गर्दन को कन्धों से जरूरत से ज्यादा ऊंचा बनाया गया है, अथवा कन्धों की ऊंचाई ग्राहक के शरीर के कन्धों की ऊंचाई के बराबर ऊंची नही है बल्कि कम ऊंची हैं जिसे हमने ऊपर ज्यादा गिरे हुए कन्धे अथवा नीचे कन्धे कहा है। यदि नुक्स, गर्दन के जरूरत से ज्यादा कन्धों से ऊंचा बनाये जाने के कारण से हो तो सम्भव है कि कोट बाकी सब जगह पर ठीक हो। परन्तु उस समय जबकि नुक्स का कारण कोट के कन्धों का जरूरत से थोडा ऊंचा होना हो तो कन्धों के बाहिर वाले सिरों पर काफी से ज्यादा दबाव पडता है और प्रायः गर्दन पर भी दबाव पडता रहता है और कोट साईडों पर ग्राहक के शरीर पर से दूर हटा रहता है।

नुक्स दूर करना--ट्राई करते समय कोट को वास्कट के साथ पीछे कन्धों की सिलाई से ज़रा नीचे अथवा पीठ पर मोंढे की हड्डियो (Shoulder blades) के पास और सामने को छाती के पास से वास्कट के साथ पिन (Pin) से टाक लो और कन्धे की सिलाई खोल दो। फालतू कन्धे की लम्बाई को

गर्दन की तरफ सरका दो अथवा गर्दन पर चढ़ा दो और दोबारा टीक (Back neck) का निशान लगाओ जोकि ग्राहक की गर्दन के अनुसार ही हो। परन्तु जब इस नुक्स के कारण से कन्धों पर दबाव(Preasure) अथवा भार पड़ता हो तो कन्धों का केवल बाहिर का थोडा सा सिरा खोल दो नकि कन्धे की सारी सिलाई, जैसाकि पहिले बताया गया है। इसका परिणाम यह होगा कि गर्दन अपनी असली जगह पर बैठ जायगी।

चित्र सं० १६—जब गर्दन कन्धों से जरूरत से ज्यादा ऊंची बनाई गई हो तो निशान १ मे से खेंची गई सीधी लकीर, जोकि कन्धे की लकीर कहलाती है, से बारी २ निशान २ और ३ तक की ऊंचाई कम करो। ऐसा करने के वास्ते निशान २ को
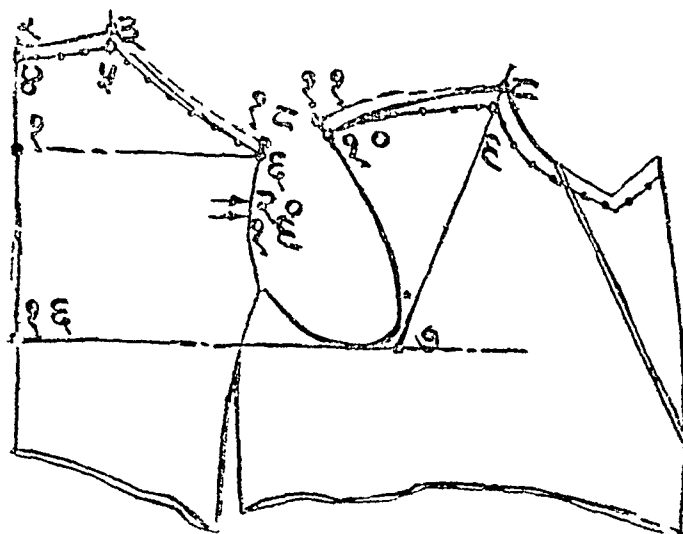
चित्र सं० १६

४ तक और ३ को ५ तक आवश्यकता अनुसार नीचा करो और ४ से ५ तक टीक की गोलाई बनाकर ५ से ६ तक कन्धे की गोलाई

वनाओ जैसा कि बिन्दियों वाली लकीरो से बना कर दिखलाया गया है। परन्तु कन्धे को निशान ६ पर नीचा नही किया गया वल्कि जैसे का तैसा रहने दिया गया है।

सामना–सामने मे निशान ७ को ८ के साथ सीधी लकीर वना कर मिलाओ और ८ से ६ तक को २ से ४ तक अथवा ३ से ५ तक के वरावर नीचा करो। ६ से १० तक कन्धे की गोलाई वनाओ और सामने के हाले को भी बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार नीचा करो।

यदि नुक्स कन्धे की ऊंचाई के कम होने के कारण से हो तो निशान १६ से लकीर १–६ तक का नाप पहिले से ज्यादा करो। ऐसा करने के वास्ते कन्धे के दबाव को आवश्यकता अनुसार ६ से १८ तक वाहिर निकाल कर कन्धे को ऊचा करो और १८ से ३ तक पीठ के कन्धे की गोलाई बनाओ। इसी तरह सामने मे भी १० से ११ तक ६ से १८ तक के बराबर कन्धे का दबाव बाहिर निकाल कर ११ को ८ के साथ कन्धे की गोलाई मे मिलाओ। परन्तु ऐसा करने से आस्तीन के मोंढे की पास की सिलाई वाला निशान भी पहिले से ऊचा कर दिया जायगा जैसा कि इस चित्र मे १६ से २० तक दिखलाया गया है। अर्थात् आस्तीन के मोंढे को भी ६ से १८ तक के बराबर पास की सिलाई पर ऊपर को सरका दो॥

—— ० ——

(२) कालर का बहुत नीचा और गर्दन पर ढीला होना
COLLAR TOO LOW AND LOOSE ROUND NECK.

यह नुक्स बहुत थोड़े कोटों मे पड़ता है परन्तु जब कालर पीठ पर गर्दन से दूर उठ खड़ा होता है और कमीज का गला पीठ पर नजर आने लगता है उस समय ग्राहक को बड़ा दुख होता है। इस नुक्स के कारण से प्रायः कोट का कालर, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, पीठ पर गर्दन से दूर उठ खड़ा होता है और जब इस नुक्स के इलावा कोट के कन्धे भी जरूरत से ज्यादा बड़े हों तो कोट साईड की सिलाई के पास बहुत ही बुरी तरह से इकट्ठा होने लगता है अथवा उस मे झोल पड़ने लग जाता है। देखो चित्र सं० २० ।
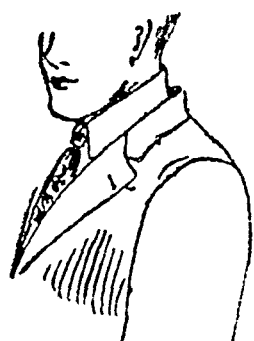
चित्र सं० २०

कारण—इस नुक्स के कारण चित्र सं० १९ वाले नुक्स के बिल्कुल उलट है । कोट बाकी सब प्रकार से तो ठीक है परन्तु कोट के कन्धों को काफ़ी नही गिराया गया अथवा कोट के कन्धे जरूरत से कम नीचे बनाये गये है।

इस नुक्स का कारण यह भी हो सकता है कि ओवर शोल्डर (Over shoulder) जरूरत से ज्यादा बड़ा हो जिसको दूसरे शब्दों मे यों कहना चाहिये कि कन्धों की ऊंचाई जरूरत से ज्यादा बनाई गई हो । या पीठ को ठीक पर-ओर

सामने को गले पर जरूरत से कम ऊंचा बनाया गया हो अथवा ज्यादा नीचा किया गया हो और साथ ही सामने का गला जरूरत से ज्यादा पीछे को चला गया हो।

नुक्स दूर करना—इस नुक्स को दूर करने के वास्ते जरूरत के मुताबिक सामने और पीठ मे गले को ऊंचा करो। अथवा १६ से २ तक, जो पीठ की टीक की ऊचाई है, उसे निशान ४ तक ऊंचा करो। इसी तरह सामने मे भी ७ से ८ तक, जो गले की ऊचाई है, उसे निशान ६ तक ज्यादा ऊचा करो।

दूसरे शब्दों मे २ से ४ तक और ३ से ५ तक मे से प्रत्येक को जरूरत के मुताबिक ऊंचा करके ४ से ५ तक टीक की गोलाई बनाओ और ५ से ६ तक कन्धे की गोलाई बनाओ। ऐसा करने से पीठ की टीक भी जरूरत के मुताबिक ऊंची हो
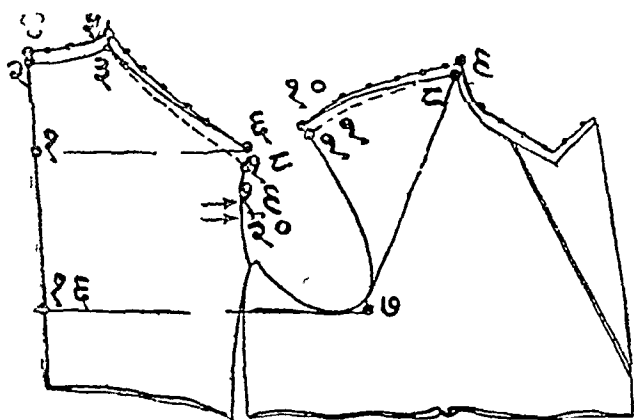
चित्र सं० २१

जायगी और कन्धा भी जरूरत के मुताबिक नीचा हो जायगा। इसी तरह लकीर ७-८ को निशान ९ की तरफ बढ़ा कर ८ से ९ तक को २ से ४ तक अथवा ३ से ५ तक के बराबर बनाओ और ९ से १० तक कन्धे की गोलाई बनाओ। ऐसा करने से सामने का गला भी ऊंचा हो जायगा और कन्धा भी जरूरत के मुताबिक नीचा हो जायगा। जैसा कि चित्र सं० २१ मे बिन्दियों वाली लकीरों से दिखलाया गया है।

परन्तु जब गले की ऊंचाई ठीक हो और कन्धे जरूरत से ज्यादा बडे हों उस समय नुक्स को दूर करने के वास्ते निशान १६ से लेकर निशान १ तक के नाप को कम करो। निशान १ मे से जो लकीर खेची गई है वह कन्धे की ऊंचाई को जाहिर करती है। जब निशान १ की ऊंचाई को कम किया जायगा तो कन्धे स्वयं ही नीचे हो जायेंगे। ऐसा करने के वास्ते कन्धे को बाहिर के सिरे पर निशान ६ से लेकर १८ तक जरूरत के मुताबिक नीचा करो। इसी तरह सामने के कन्धे को भी १० से ११ तक नीचा करो और १८ से ३ तक पीठ के कन्धे और ११ से ८ तक सामने के कन्धे की गोलाईयां बनाओ। जितना सामने और पीठ के कन्धों को नीचा किया हो उतना ही निशान २० को निशान १९ से नीचा करो। यह निशान उस जगह को जाहिर करता है जहां पर कि मोंढे की सिलाई करते समय आस्तीन के मोंढे का वह हिस्सा जोड़ा जाता है जहां पर कि आस्तीन की पास की सिलाई हो।

(३) पीठ पर मोंढे की हड्डियों पर सीधे बल पड़ना
HORIZONTAL FOLDS ACROSS THE BLADES

कोट के बाकी भागों के फ़िटिङ्ग के अनुसार यह शिकन (Creases) भिन्न २ प्रकार के और भिन्न २ स्थानों पर होते है। यदि कोट के कन्धों का गिराओ ठीक हो अर्थात् कोट के कन्धे न ही ज्यादा ऊंचे हों और नही ज्यादा नीचे हों बल्कि ग्राहक के शरीर के अनुसार ही बनाये गये हों तो यह बल प्रायः पीठ पर कन्धे की सिलाई से नीचे मोंढे की हड्डियों पर पड़ते है। देखो चित्र सं० २२ और कोट की पीठ मोंढे के पास बड़ी बेढबी सी नजर आती है। और जब कभी भी बाजू आगे को घुमाया जाय तो पीठ पर मोंढे की सिलाई वाले निशान से लेकर कोहनी तक कोट की आस्तीन मे खिच पड़ने लग जाती है।
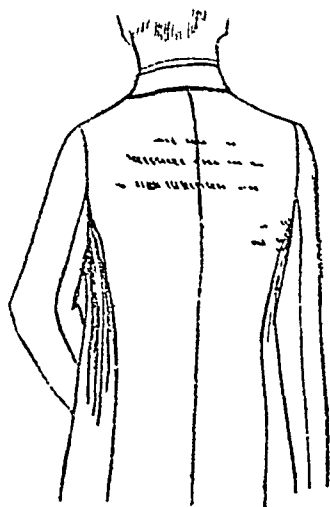
चित्र सं० २२

ऐसे कपड़ों मे, जोकि ज्यादा फिट (Close-fittinggarments) बनाये जाते है, कमर और हिप पर कोट को ढीला करने की जरूरत अनुभव होती है क्योंकि इस की पीठ कमर से :२ ज्यादा ढीली होती है। और यदि कन्धों की ऊंचाई ठीक

हो तो यह बल पीठ पर मोंढे की हड्डियों की बजाय उससे ऊपर को चले जायेंगे और मोंढे से लेकर कालर तक कन्धे की सिलाई के आस पास घूमते रहेंगे।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि कोट की पीठ सामने की अपेक्षा जरूरत से ज्यादा ऊंची है और पीठ का कन्धा भी ज्यादा ऊंचा है।

नुक्स दूर करना—ट्राई करते समय कोट के सामने को वास्कट के सामने के साथ पिन से टांक दो और कन्धे की सिलाईयों को खोल कर कोट की पीठ के फ़ाल्तू हिस्से को ऊपर की तरफ़ सरका दो और पीठ शरीर पर जिस तरह ठीक पड़े
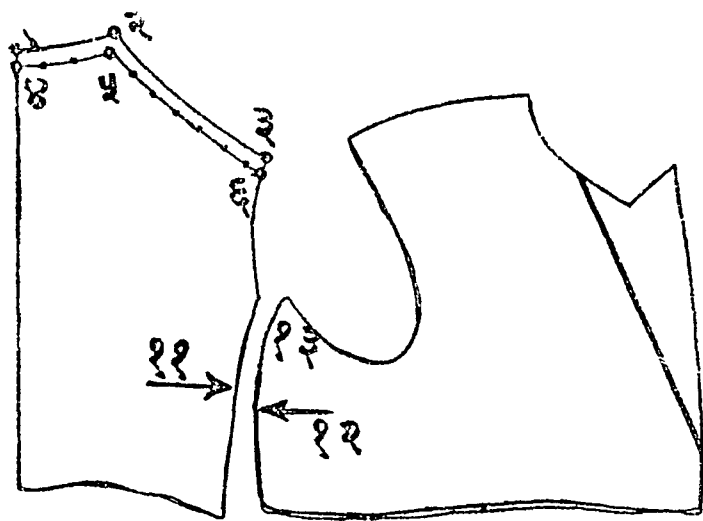
चित्र सं० २३

बिठा कर कन्धे और टीक पर के फाल्तू कपड़े का निशान लगाओ और मालूम करो कि पीठ कितनी ऊपर को जानी है।

अर्थात् चित्र सं० २३ के अनुसार पीठ को ऊपर से निशान १,२ और ३ पर वारी २ निशान ४,५ और ६ तक नीचा करो।

और यदि कोट तैयार हो चुका हो तो कोट के कन्धे और कालर खोलने की बजाय साईड की सिलाईया खोल कर पीठ को साईडों पर नीचे सरका दो या सामने को ज़रा ऊपर चढा दो,जैसा कि निशान ११ से १२ तक पीठ नीचे को सरका कर दिखाई गई है। परन्तु यहा पर इस बात का विचार कर लेना भी ज़रूरी है कि जब इस नुक्स को दूर करने के वास्ते हम साईड की सिलाई खोल कर पीठ को नीचे उतारेगे अथवा सामने को ऊपर चढावेगे तो साईड की सिलाई को ऊपर से ज़रा सा छॉटना भी जरूरी है जैसा कि इस चित्र मे निशान १३ पर दिखलाया गया है।

पीठ पर मोंढे की सिलाई का ठीक न होना, साईड की सिलाई पर कोट का इकठ्ठा होना अथवा पीठ की मोढे की गोलाई के बाकी दोष ऐसी बाते है जिन से बहुत सी त्रुटिया उत्पन्न हो जाती हैं जिन को हमे आज कल के कोटों मे ठीक करना पडता है। अर्थात् आज कल कोटों की बहुत सी त्रुटिया प्राय इन्ही कारणों से पडती हैं।

इन त्रुटियों की सब से बडी विशेषता यह होती है कि प्राय यह उस समय नजर आती हैं जबकि कोट बिल्कुल तैयार हो चुका हो चाहे ट्राई करते समय इस प्रकार के नुक्स का कोई चिन्ह तक भी नजर न आये। जिसका परिणाम यह होता है कि इसे कटर प्रायः दर्जियों (woikmen) की बेपरवाही का नतीजा समझ लेते हैं

और कभी २ मोंढे खोल कर कारीगरों को यों ही डरा धमका कर यह सिद्ध भी कर देते हैं कि कोट के मोंढे ठीक न जोड़े जाने के कारण से यह नुक्स पड़ गया है।

परन्तु ज्यादा गलती कटर अथवा ट्राई करने वाले की होती है जोकि ट्राई करते समय कमर अथवा कन्धे को तो ठीक करने की आवश्यकता अनुभव करता है परन्तु कोट के दूसरे भागों और विशेषकर मोंढे पर की कोई भी परवाह नही की जाती।

यदि कटाई और फिटिंग के नियम जोकि इस पुस्तक के आरंभ मे बताये गये है, याद रखे जाये और ट्राई कर लेने के बाद उन पर भली भांति विचार करके कपड़े पर नुक्स ठीक करने के निशान लगाय जाये तो कोट के तैयार हो जाने पर, जो साईड की सिलाई को बार २ खोल कर ठीक करना पड़ता है, उस की जरूरत भी न रहे।

अब हम आगे कोट की पीठ पर मोंढे के सारे नुक्सों को भली प्रकार समझाते हैं जोकि उन लोगों के वास्ते, जिन को प्रायः इस प्रकार की तकलीफें होती है, बहुत ही लाभदायक होगा।

(४) पीठ पर मोंढे के पास कपड़ा इकट्ठा होना

SAGGING AT THE BACK SCYE

जैसा कि चित्र सं० २४ मे दिखाया गया है कि साईड की सिलाई के ऊपर वाले सिरे पर कोट इकट्ठा होता नजर आता है और यह वल इस से तीन अथवा चार इञ्च नीचे तक चले
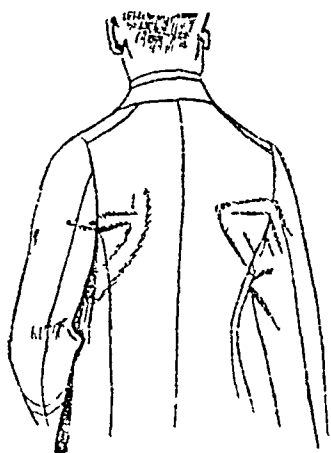
चित्र सं० २४

गये है जोकि कोट को बहुत ही बुरी शकल मे जाहिर करते है। प्रायः इस प्रकार के नुक्स के साथ कोट की टीक भी नीची होती है। परन्तु जब केवल एक तरफ़ ही ज्यादा बल पड़ते नजर आवे तो उस से स्पष्ट ज़ाहिर होता है कि कोट का एक तरफ का कन्धा दूसरी तरफ़ से ज्यादा नीचा है।

कारण—इस नुक्स का कारण कन्धे का कम नीचा होना अथवा ज्यादा ऊंचा होना है। अर्थात् यह नुक्स कन्धे की लकीर, जोकि निशान २ मे से खेची गई है, की छाती की लकीर, जोकि निशान १ से जाहिर की गई है, जरूरत से ज्यादा ऊंचा होने के कारण से पड़ता है। अर्थात् इस नुक्स का कारण निशान २ वाली लकीर का निशान १ वाली लकीर से ज्यादा ऊंचा होना है। निशान २ वाली लकीर कन्धे की ऊंचाई को जाहिर करती है क्योंकि कन्धा इसी लकीर पर के निशान ६ पर गिरता है और निशान १ वाली लकीर छाती की लकीर कहलाती है। दूसरे शब्दों मे इस नुक्स का कारण कन्धे की ऊचाई का ज्यादा होना है। इस नुक्स के साथ ही जब पीठ की चौड़ाई का नाप जरूरत से ज्यादा वड़ा वनाया गया हो अर्थात् जब इस नुक्स के साथ २ पीठ

की चौड़ाई भी ज्यादा बनाई गई हो तो नुक्स ज्यादा परेशान कर देता है और उसे ठीक करना कठिन हो जाता है।

नुक्स दूर करना—ट्राई करते समय कोट की आस्तीन अलग कर लो और कन्धों की सिलाई को कालर के पास एक इञ्च के बराबर छोड़ कर बाकी सब उधेड़ दो। पीठ पर कन्धे की ज्यादती को ऊपर की तरफ़ निकाल दो और कन्धे का निशान दोबारा उस जगह पर लगाओ जहां पर कि कन्धा ग्राहक के शरीर पर ठीक बैठता हो।
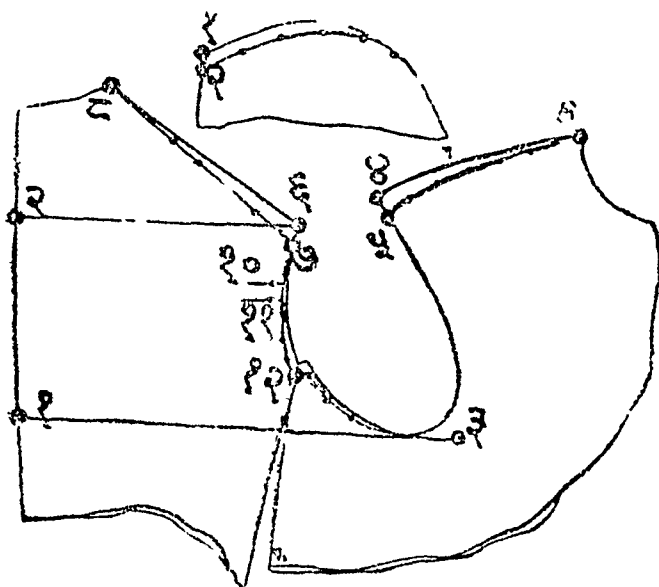
चित्र सं० २५

कोट को चित्र सं० २५ के अनुसार इस तरह से ठीक करना चाहिये कि पीठ पर कन्धे को ८ से ७ तक नीचा करो ताकि ६ से ७ तक का नाप उस नाप के आधे के बराबर बने जितना कि कन्धे

को ऊपर को सरकाना अथवा नीचा करना हो। इसी तरह सामने मे भी कन्धे को ६ से ५ तक नीचा करो ताकि ४ से ५ तक का नाप पीठ के ६ से ७ तक के बराबर बने।

यदि पीठ ज्यादा चौड़ी हो तो साईड की सिलाई को नीचा कर लेना चाहिये जैसा कि निशान १२ पर करके दिखलाया गया है।

निशान १० पीठ पर मोंढे के उस स्थान को जाहिर करता है जहा कि आस्तीन के मोंढे का पास की सिलाई वाला निशान जोड़ा जाता है। निशान १० को ११ पर उतना ही नीचा करो जितना कि ६ से ७ तक कन्धे को नीचा किया हो।

इस के साथ ही कोट की आस्तीन मे भी थोड़ी सी तबदीली करनी पडती है जैसाकि आस्तीन मे १ से २ तक करके दिखलाया गया है। अर्थात् आस्तीन को भी १ से २ तक पास की सिलाई की तरफ से नीचा करके मोंढे की गोलाई बनाओ। ख्याल रहे कि १ से २ तक को १० से ११ तक के बराबर बनाना चाहिये।

(५)साईड की सिलाई के ऊपर खड़े हुए शिकन पड़ना
VERTICAL FOLDS AT THE TOP OF SIDESEAN

साईड की सिलाई के ऊपर के हिस्से पर इस नुक्स के कारण से स्पष्ट तौर पर बल पडते नजर आते हैं। कभी २ इस नुक्स के साथ २ कोट के सामने मे भी मोढे के आगे कपड़ा इकटटा होता

नज़र आता है जिसका परिणाम यह होता है कि मोंढे की सिलाई ग्राहक के बाज़ू से अलग उठ खड़ी होती है। देखो चित्र सं० २६।

चित्र० सं २६

कारण—यह नुक्स उस प्रकार के कपड़ों मे, जो प्राय: एक ही तरीके से काटे अथवा बनाए जाते है, चाहे शरीर की बनावट मे किसी प्रकार का भेद ही क्यों न हो, बहुत पड़ते हैं। खास कर उस समय जबकि कारीगर लोग किसी प्रकार का विशेष यत्न न करें और कन्धों को बिना किसी तरह भी लोहे से खेचने के जोड़ देते हैं तो वह नुक्स ज्यादा पड़ता है क्योंकि ऐसा करने से कन्धा आगे को चला आता है अर्थात् गले के ऊपर चढ जाता है और ऊपर मोंढे पर से दूर होने के कारण से मोंढे पर आगे की तरफ़ दबाव अथवा ज़ोर डालता रहता है और कपड़ा इकट्ठा हो जाता है।
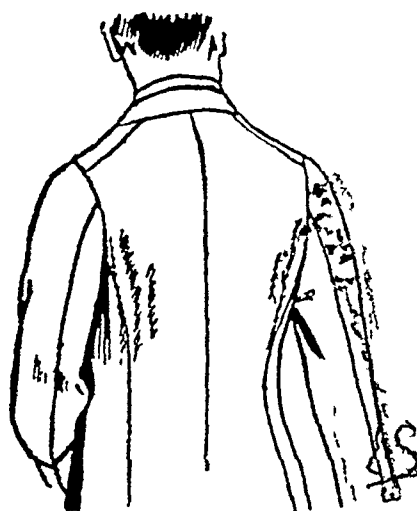
अथवा इस नुक्स का कारण यह है कि पीठ के बीच की सिलाई से छाती की लकीर १–२ पर गले के निशान पर से सकोयर की गई लकीर का नाप जरूरत से वहुत ही ज्यादा है। अर्थात् निशान ३ तो गले को ज़ाहिर करता है और यदि निशान ३ अथवा गले (neck point) मे से एक लकीर छाती की लकीर १–२ पर सकोयर की जाय तो यह लकीर छाती की लकीर को

जिस निशान पर जाकर मिलेगी वह चित्र सं० २७ में निशान २ से जाहिर किया गया है। इस निशान को पीठ के बीच की सिलाई के निशान से, जोकि इस चित्र मे निशान १ से जाहिर किया गया है, जरूरत से बहुत ही ज्यादा दूर होने के कारण से यह नुक्स पड़ जाता है। सरल शब्दों मे इस नुक्स का कारण निशान १ से २ तक के नाप का जरूरत से ज्यादा होना है। निशान २ गले के निशान पर से छाती की लकीर पर एक लकीर स्कोयर करने से मालूम किया गया है, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है।
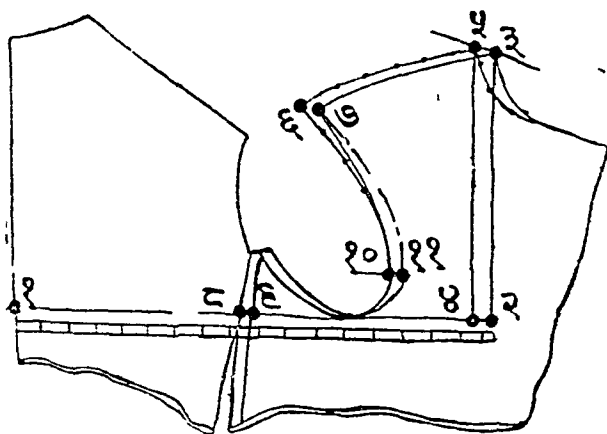
चित्र सं० २७

निशान १ से सामने के मोंढे पर के निशान १० तक का नाप ठीक हो या न हो परन्तु इस से नुक्स पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ता। अर्थात् दोनों हालतों मे नुक्स वैसे का वैसा रहता है। परन्तु हमे इस बात का विचार जरूर करना होगा अर्थात् इस

त्रुटि को दूर करते समय हमे निशान १ से १० तक के नाप का विचार अवश्य करना चाहिये और यदि यह नाप गलत अथवा छोटा बड़ा हो तो उसे ठीक कर लेना चाहिये।

नुक्स दूर करना—ट्राई करते समय कन्धों की सिलाई को खोल कर कोट के सामने के कन्धों को आगे की तरफ सरका दो। अर्थात् कोट के सामने के गले को ग्राहक की गर्दन के ऊपर चढ़ा दो और बाहिर अथवा मोंढे की तरफ़ से कोट के सामने के कन्धे का दबाव बाहिर निकाल कर इस त्रुटी को पूरा करो।

या अगर आप कोट के कालर को तैयार कर चुके हों और आप कालर के खोले बिना ही कोट को ठीक करना चाहते हों तो कोट के सामने के मोंढे को आगे की तरफ़ से छाट दो और पीछे की तरफ़ से मोंढे के दबाव को बाहिर निकाल कर साईड को दबा दो।

चित्र सं० २७ मे बिन्दियों वाली लकीरों से जाहिर है कि टेप का एक सिरा निशान १० पर, जहा कि मोंढे की गिद्री लगाई जाती है, रखो और दूसरे सिरे को सामने के गले पर के निशान ३ पर रख कर पीछे की तरफ़ टेप को घुमाओ और निशान ५ तक ले जाओ। इसी तरह टेप का एक सिरा निशान १० पर रख कर दूसरे सिरे को सामने के कन्धे के बाहिर वाले सिरे ७ से लेकर पीछे की तरफ़ ६ तक घुमा कर ले जाओ। ७ से ६ तक को ३ से ५ तक के बराबर बनाओ। ५ को ६ के साथ चित्रानुसार कन्धे की गोलाई बना कर मिलाओ और ६ से १० तक मोंढे की गोलाई बनाओ और ५ से लेकर गले की गोलाई बनाओ। ऐसा करने से १ से २ तक

का नाप पहले की अपेक्षा २ से ४ तक के बराबर छोटा हो जाता है और नुक्स दूर हो जाता है ।

जब कोट तैयार हो चुका हो तो डैश वाली लकीरों (dot & dash lines) की तरह कोट के साईड को अन्दर की तरफ़ दबा कर उसे तग कर दो जैसा कि इस चित्र मे ८ से ९ तक करके दिखाया गया है। और उस समय जबकि पीठ पर की बीच की सिलाई पर के निशान १ से लेकर सामने के मोंढे पर के निशान १० तक का नाप पहिले ही ठीक हो तो सामने के मोंढे को चित्रा-नुसार १० से ११ तक छाट कर, साईड दबाने से इस नाप मे जो कमी हुई है, उसे पूरा करो। अर्थात् ८ से ९ तक साईड को दबाने से १ से १० तक के नाप मे जो कमी हो उसे सामने के मोंढे को १० से ११ तक छांट कर पूरा करो। जब कोट इस तरह तंग करके त्रुटी दूर की जायगी तो इसके बटनों को ज़रा आगे की तरफ़ लगाने से कोट की तंगी भी दूर हो जायगी।

(६) साईडों की सिलाईयों पर सीधी खिच पड़ना

HORIZONTAL DRAGS AT THE SIDESEAM

ज्यादातर यह नुक्स उन लोगों के कपड़ों मे पड़ता है जोकि ज्यादा फिट कपड़े बनवाते हैं। और यह नुक्स प्राय कुछ दिन कोट पहिन लेने के बाद नजर आता है। साईडो पर प्राय. दो २ अथवा तीन २ बल पडते हैं जिन मे से सब से लम्बा अथवा बड़ा बल (crease) इन सब से ऊपर बाजू के साथ होता है। देखो चित्र सं० २८।

इस नुक्स के कारण से प्रायः कोट के सामने मे साईड से लेकर गले की तरफ खिच पड़ती रहती है। और जब ग्राहक कोट पहिन कर बैठ जाता है तो कोट की पीठ ऊपर को चढ़ने लगती है जिस से कोट के कालर के नीचे पीठ पर बहुत से शिकन पड़ने लग जाते है।
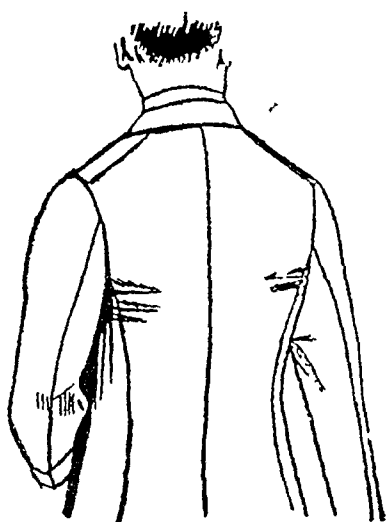
चित्र सं० २८

कारण—इस नुक्स का कारण बिल्कुल चित्र सं० २६ व २७ वाले नुक्स के उलट है। अर्थात् १ से २ तक का नाप जरूरत से थोड़ा है और मोंढा ठीक हो या तंग परन्तु इस का कुछ प्रभाव इस नुक्स पर नहीं पड़ता।

नुक्स दूर करना—ट्राई करते समय चित्र सं० २६ के उलट चित्र सं० २८ मे कोट के कन्धे की सिलाई खोल कर जैसा चित्र सं० २६ मे कोट के सामने को आगे की तरफ किया था अर्थात् कन्धे को गले के ऊपर चढ़ाया था वहाँ चित्र सं० २८ मे सामने के कन्धे को बाहिर की तरफ निकाल दो।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २६ के अनुसार कोट के सामने के गले को आगे की तरफ सरकाओ। अर्थात् चित्र सं० २७ मे जिस तरह सामने के गले को ३ से ५ तक पीछे की तरफ किया था अब चित्र सं० २६ मे उसके उलट सामने के गले

को ३ से ५ तक आगे की तरफ सरकाओ और इसी तरह कन्धे के वाहर वाले सिरे को भी ६ से ७ तक आगे की तरफ करो।
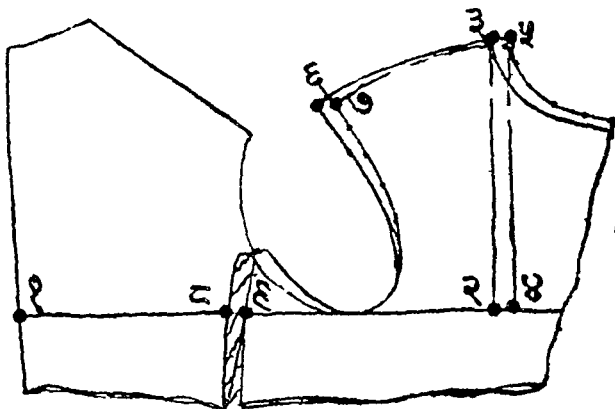
चित्र सं० २९

अर्थात् कोट के सामने के हाले पर का दवाव बाहिर निकाल कर कन्धे को आगे की तरफ से वडा करो और कन्धे को बाहिर की तरफ ६ से ७ तक उतना छोटा करो जितना कि गले की तरफ से इसे बडा किया हो। ५ से ७ तक कन्धे की गोलाई वनाओ। ७ से आगे मोंढे की गोलाई को मुकम्मल करो और ५ से आगे गले की गोलाई वनाओ जैसा कि बिन्दियो वाली लकीरों से वना कर दिखाया गया है।

यदि कोट तैयार हो चुका हो और यह नुक्स बाद मे नज़र पडे तो साईड पर के दवाव को ९ से ८ तक बाहिर निकाल कर कोट को ढीला करो और कोट के सामने के मोढे को पीछे की तरफ से छाट दो और कोट की साईड को नीचे घेरे तक ढीला करो।

ऐसा करने से कोट के बटनों को भी पीछे की तरफ हटाना होगा ताकि साईड का दबाव बाहिर निकालने से कोट जितना ढीला हुआ हो उतना बटन पीछे हटाने से तंग हो जाय।

(७) पीठ पर मोंढे की हड्डियों पर तिरछे वल पड़ना

DIAGONAL CREASES ACROSS THE BLADE REGION

यह बल (creases) उन कपड़ों मे प्राय: पाये जाते हैं जो कि साधारण कपड़ों की अपेक्षा ज्यादा फिट (close fit) बनाये जाते हैं। विशेषता से उस समय यह नुक्स ज्यादा स्पष्ट हो जाता है जबकि कोट के बटन बन्द किये हुए हों। प्राय: इस नुक्स के कारण से साईड की सिलाई के ऊपर के भाग मे कोट तंग मालूम होने लगता है जिस से ग्राहक यह समझने लगता है कि कोट के इस भाग पर जरूरत से बहुत बड़ा होने के कारण से कपड़ा इकट्ठा होकर तंगी का कारण बनता है।

जब कोट के बटन खोल दिए जावें और ग्राहक कोट को पहिन कर अपने बाजुओं को अच्छी तरह घुमाये तो कोट पीठ पर कमर के पास शरीर के साथ नही लगा रहेगा बल्कि शरीर से बहुत दूर हट खड़ा होगा जिस से देखने वाले तथा पहिनने वाले को यह मालूम होगा कि कोट शरीर के इस भाग पर जरूरत से बहुत ही ज्यादा ढीला बनाया गया है और यदि कोट कमर पर काफी ढीला होगा तो इस के सामने पीछे की तरफ को हट जायेगे और इस त्रुटी के कारण से कोट के सामने अपनी असली जगह पर नहीं खड़े

हो सकेंगे। देखो चित्र सं० ३०।

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण पीठ का सामने की अपेक्षा थोडा ऊंचा होना है। अर्थात् दूसरे शब्दों मे यूं समझना चाहिये कि छाती की लकीर पर से लेकर पीठ के गले की ऊंचाई इसी लकीर पर से लेकर सामने के गले की ऊंचाई की अपेक्षा थोडी है। सामने के मोंढे की गोलाई पीठ के मोंढे की गोलाई के ज्यादा नजदीक चली गई है। दूसरे शब्दों मे कोट के सामने और पीठ को जब जोडा जाय तो सारे मोंढे की चौडाई जरूरत से थोडी होगी। इसके साथ ही यह भी हो सकता है कि पीठ की चौड़ाई का नाप जरूरत से ज्यादा हो जिस के कारण से बल (creases) ज्यादा जाहिर होने लग जाते है।
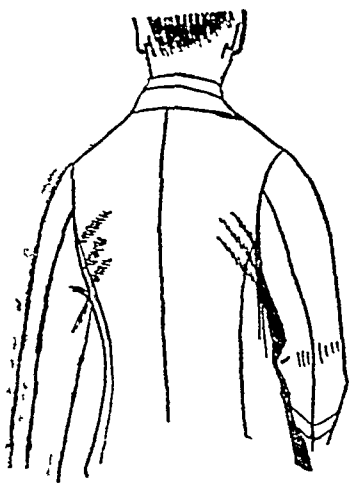
चित्र सं० ३०

ट्राई करते समय ग्राहक को कोट पहिना कर इस बात का विचार जरूर कर लेना चाहिये कि जब कोट के सामने एक दूसरे पर चढा कर बटनों की जगह पिन (pin) लगाये जाये तो कोट का एक सामना दूसरे की अपेक्षा कहीं ऊंचा नीचा न हो जाय। और छाती से जरा नीचे कोट के सामनों को पिन से टाक दो ताकि सामने अपनी असली जगह से न हिल जाये।

कोट का कालर और कन्धों की सिलाईयां खोल कर कोट की पीठ को धीरे २ नीचे की तरफ़ जाने दो और पीठ को उस समय तक नीचा करते जाओ जब तक कि कोट ग्राहक के शरीर पर बिल्कुल ठीक न बैठ जाय। जब कोट अपनी ठीक अवस्था में आजाय और किसी प्रकार का नुक्स बाकी न रहे तो देखो कि पीठ को कितना नीचा उतारने से नुक्स दूर हुआ है और उतना ही आप कोट की पीठ को ऊपर से बड़ा करें जैसा कि हम आगे चित्र सं० ३१ मे करके दिखाते है।

नुक्स दूर करना—यदि कोट की पीठ के कन्धों और टीक पर आवश्यकता अनुसार दबाव रखा गया हो तो उस दबाव को बाहिर निकाल कर चित्र सं० ३१ के अनुसार निशान १ वाली लकीर से लेकर निशान २, ३ और ४ तक के नापों को आधे २ इञ्च के बराबर, या जितना भी जरूरत हो, बड़ा करके नुक्स को दूर करो जैसा कि २ से ५ तक, ३ से ६ तक और ४ से ७ तक करके दिखाया गया है। जब आप ऐसा न कर सकते हों अर्थात् जब कोट के पीठ की टीक और कन्धों पर आवश्यकतानुसार दबाव न रखा गया हो तो इस नुक्स को दूर करने का एक और तरीका भी है जिस से कोट बिल्कुल ठीक हो जाता है। अर्थात् कोट की साईड की सिलाई खोल कर पीठ को ऊपर चढ़ा दो और सामने को नीचे उतार दो। इस काम को दर्जी लोग साईड को नीचे उतारना कहते हैं जैसा कि निशान ८ से ९ तक करके दिखाया गया है। इस अवस्था मे निशान ९ निशान ८ से आधा

इंच या जितना भी जरूरत हो नीचा किया गया है। और साईड की सिलाई करते समय इन दोनों निशानो को आपस मे मिला दिया जाता है। ऐसा करने से कोट की पीठ का छाती की लकीर से
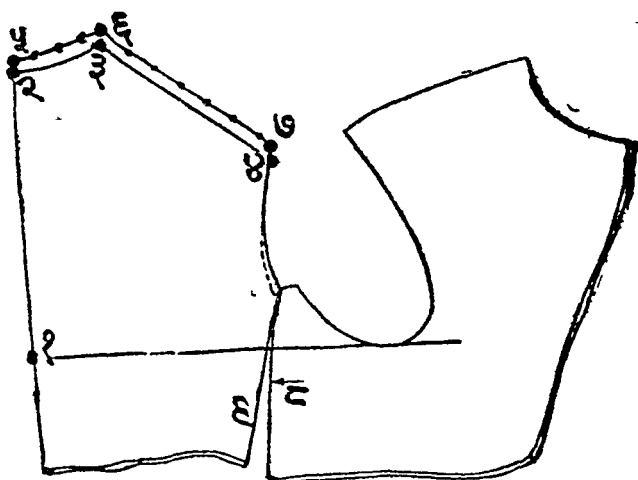
चित्र सं० ३१

ऊपर २ का हिस्सा आवश्यकता अनुसार बड़ा हो जाता है और कोट का नुक्स दूर हो जाता है।

ऐसा करने से पीठ की लम्बाई नीचे से छोटी हो जाती है और पीठ के घेरे पर का दबाव बाहिर निकाल कर इस कमी को पूरा किया जाता है, सर्थात् पीठ की लम्बाई को पूरा किया जाता है। परन्तु जब पीठ के घेरे के नीचे भी किसी प्रक़ार का दबाव न रखा गया हो तो कोट के सामने को घेरे पर से कम लम्बा करके अर्थात् सामने की लम्बाई को घटा कर इसे पीठ के ही बराबर कर दिया जाता है।

(८) साईड की सिलाई से लेकर सामने मोंढे की तरफ़ जाते हुए तिरछे शिकन।

DIAGONAL CREASES RUNNING TO FRONT SCYE

प्रायः यह नुक्स स्वयं नज़र ही नहीं आता जब तक कि कोट बिल्कुल तैयार होकर कुछ दिनों तक पहिना ही न जाय। इस नुक्स के कारण से तीन अथवा इससे भी अधिक शिकन (creases) पड़ने लग जाते हैं जोकि पीठ पर से छाती और कमर के मध्य वाली जगह मे से शुरू होकर तिरछी शकल मे साईड की सिलाई पर से होते हुए कोट के सामने पर मोंढे मे उस निशान तक चले जाते है जहां पर कि आस्तीन की गिद्री सामने से जोड़ी जाती है। और जिस तरफ़ को यह शिकन जाते है उधर स्पष्ट तौर पर कोट मे तंगी मालूम होती है और साईड की सिलाई बहुत ही बुरी नज़र आती है। ग्राहक प्रायः यह कहते है कि कोट का सामना मोंढे पर तंग है जिसके कारण से कोट के सामने के कन्धे मे शिकन पड़ते नजर आते है जैसा कि चित्र सं० ३२ मे दिखाया गया है।
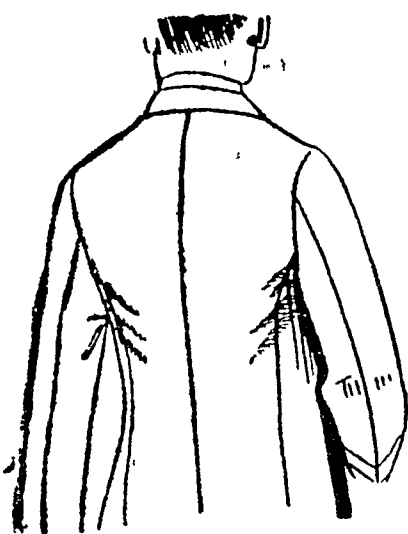
चित्र संख्या ३२

कारण—इस नुक्स का कारण कोट के सामने के गले का पीठ के बीच की सिलाई के कमर पर के निशान से जरूरत से कम दूर होना है। अर्थात् कोट की पीठ के बीच की सिलाई के कमर पर के निशान से लेकर कोट के सामने के गले तक के नापें के जरूरत से कम होने के कारण से यह नुक्स पैदा होता है। दूसरे शब्दों मे यू कहना चाहिये कि कोट के सामने के गले की ऊचाई क कम होने से यह नुक्स पैदा होता है। अथवा फरएट शोल्डर (Front shoulder) का छोटा होना इस नुक्स का मुख्य कारण है। यह भी हो सकता है कि कोट हिप पर काफी ढीला न हो बल्कि नग हो और बटन लगाने से पीछे को खिचा जाने से यह नुक्स पड जाता हो। अथवा कोट की पीठ के बीच वाली सिलाई के साथ २ कोट के तंग होने के कारण से भी यह नुक्स पड जाता है।

ट्राई करते समय कोट की पीठ को वास्कट के साथ कन्धों से कुछ नीचे (मोंढे की, हड्डियों के पास) पिन से टाक दो। कोट के सामने के कन्धों को आवश्यकतानुसार नीचे की तरफ उतार दो ताकि सारे शिकन दूर हो जाये और कोट अपनी असली जगह पर आकर बैठ जाय। फिर कोट के सामने को भी उसी अवस्था मे वास्कट के सामने के साथ २ पिन से टाक दो ताकि मालूम हो सके कि कोट का सामना शरीर पर किस जगह पर फिट बैठता है।

यदि ऐसा करने से भी शिकन पूरी तरह से दूर न हुए हों

तो कोट की साईड की सिलाई खोलनी चाहिये और साईड पर का दबाव बाहिर निकाल कर कोट को ढीला भी कर देना चाहिये ताकि कोट हिप पर फिट हो जाय और पीछे की तरफ़ खिच डाल कर शिकनों का कारण न बने।

नुक्स दूर करना–चित्र सं० ३३ मे बताया गया है कि
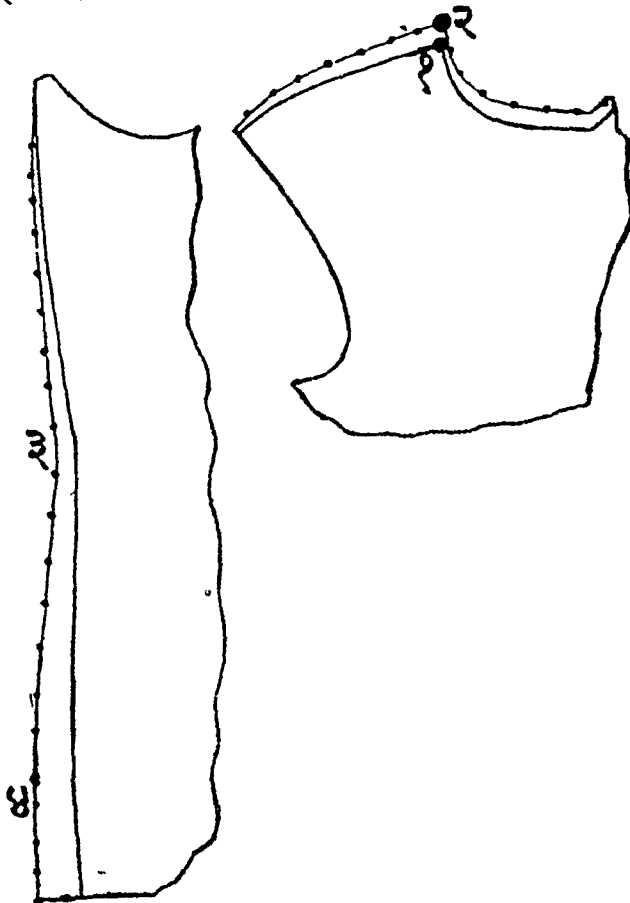
चित्र सं० ३३

किस तरह कन्धे पर के दबाव को निशान १ से लेकर २ तक बाहिर निकाल कर कन्धे को बड़ा किया गया है और गले के

निशान को भी आवश्यकतानुसार ऊंचा किया गया है। निशान २ से लेकर कन्धे के दूसरे सिरे तक बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार कन्धे की गोलाई बनाओ। और आगे की तरफ़ हाले अथवा गले की गोलाई बनाओ। और यदि साईड पर का दबाव बाहिर निकालना हो तो चित्र सं० ३३ के निशान ३ और ४ की तरह साईड पर का दबाव बाहिर निकाल कर नुक्स को दूर करो।

(९) पीठ पर मोंढे के आस पास गोल शिकन पड़ना
CURVED CREASES ROUND BACK SCYE

यह नुक्स प्राय ऐसे कोटों मे पाया जाता है जोकि किसी ग्राहक के शरीर पर से नाप लेकर नही बनाय जाते बल्कि पहिले ही तैयार करके रखे हुए होते है। ग्राहक उन मे से जो सूट अपने नाप और पसन्द का लेना चाहता है वह खरीद लेता है। ऐसे कपडों को (Ready made garments) कहते है जिसका अर्थ है तैयार किये कराये कपडे अर्थात् वह कपड़े जो ग्राहक स्वय कपडा पसन्द करके अपने नाप के मुताबिक न बनवाये बल्कि तैयार किये हुए कपड़ों मे से ही चुन कर वह खरीद लेते हैं। ऐसे कोटों मे पीठ की चौडाई का नाप प्राय' साधारण शक्लों से वडा रखा जाता है। इसी वास्ते इस प्रकार के कोटों मे यह नुक्स पड जाता है। यह नुक्स ऐसे कोटो मे भी पाया जाता है जिन को "वीस्पोक कपड़े" (Bespoke-Garments) कहा जाता है और जिन के मोंढे की गहराई काफी नही होती है अर्थात जिन के मोंढ के नीचे का हिस्सा अच्छा बगल साधारण

तौर से ज़रा ऊंची रखी जाती है। या यह नुक्स ऐसे कोटों मे पाया जाता है जिन के साईड की सिलाई ज़रूरत से ज्यादा आगे को लाई गई होती है अर्थात् पीठ की चौड़ाई ज़रूरत से ज्यादा रखी हुई होती है और सामने की चौड़ाई जरूरत से कम। जिसके परिणाम के तौर पर कोट के साईड की सिलाई
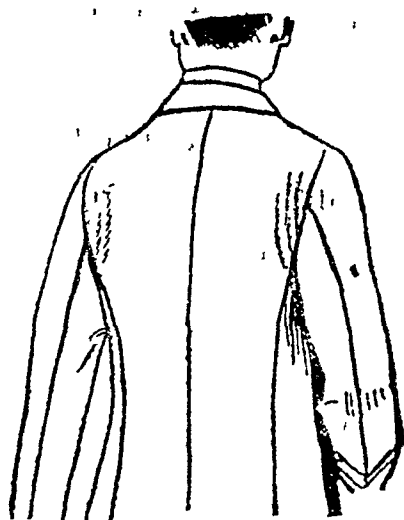
चित्र सं० ३४

ज़रूरत से ज्यादा आगे को चली आती है। जब पीठ के बीच की सिलाई के कमर पर के निशान से लेकर सामने के मोंढे की गोलाई पर के उस निशान तक, जहां पर कि आस्तीन की गिर्द्री जोड़ी जाती है, का नाप जरूरत से छोटा हो तो यह नुक्स और भी ज्यादा स्पष्ट तौर पर नजर आने लगता है जैसा कि चित्र सं० ३४ मे दिखलाया गया है।

कारण—जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि कोट के पीठ की चौड़ाई का नाप ज़रूरत से ज्यादा वड़ा है और मोंढे की गोलाई की चौड़ाई जरूरत से थोड़ी है जिसके कारण से पीठ की फ़ाल्तू चौड़ाई ग्राहक के बाज़ू के ऊपर तो नही जा सकती बल्कि उलटा बाज़ू की सहायता से यह पीठ की फाल्तू चौड़ाई पीछे को धकेली जाती है जो कि पीठ पर मोंढे की गोलाई के आस पास

कपड़े को इकट्ठा करके शिकन (Creases or folds) की शकल पैदा करती है।

जब फैशन ही ऐसा प्रचलित हो जाय कि कोट के पीठ की चौडाई का नाप जरूरत से ज्यादा चौडा रखना जरूरी हो तो इसके साथ ही पीठ के बीच की सिलाई के कमर पर के निशान से लेकर सामने के मोंढे की गोलाई पर के उस निशान तक का नाप भी, जहा पर कि आस्तीन की गिद्री जोडी जाती है, जरूरत से ज्यादा रखना जरूरी होता है। मोंढे की गहराई भी पहले से ज्यादा कर देनी चाहिये अर्थात् मोंढे की गोलाई को भी पहले से ज्यादा नीचे तक लेजाना चाहिये।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट के मोंढे को खोल कर आस्तीने बाकी कोट से अलग कर लो और मोढे के चारों ओर फाल्तू कपड़े को अन्दर की तरफ मोड कर निशान लगाओ कि कितना २ कपडा मोंढे के चारों ओर छाटा जाना है।

नुक्स दूर करना—जब कोट ट्राई करके ग्राहक के शरीर पर से उतार कर निशान लगाना हो तो पीठ की चौड़ई को निशान १ से २ तक आवश्यकता अनुसार कम करो और आगे साईड की सिलाई के ऊपर के सिरे से आगे सामने के मोढे को पीछे की
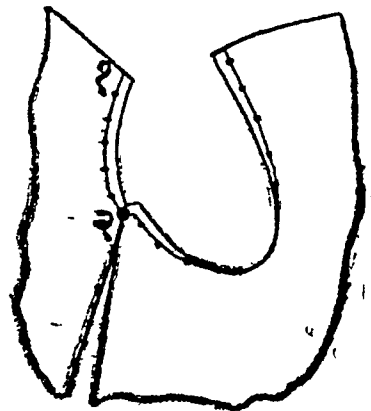
चित्र सं० ३५

तरफ़ चित्र सं० ३५ के अनुसार छांट दो। क्योंकि ऐसा करने से पीठ का कन्धा छोटा हो जाता है। जितना पीठ का कन्धा छोटा हुआ हो सामने के कन्धे को भी बाहिर अथवा मोंढे की तरफ़ से उतना छोटा करके बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार मोंढे की गोलाई दोबारा करो तो नुक्स स्वयम् ही दूर हो जायगा। क्योंकि ऐसा करने से न केवल पीठ की चौड़ाई का नाप पूरा हो जाता है बल्कि मोंढे की चौड़ाई का नाप भी पूरा हो जाता है।

तीसरा पाठ

कोटों के सामनें की त्रुटियाँ

जैसाकि इस पुस्तक के आरम्भ मे अथवा पहिले अध्याय में बताया जा चुका है कि कोट को ग्राहक के शरीर पर पहिना कर ट्राई करते समय सब से पहिले कोट की पीठ पर के नुक्सों पर निशान लगाना चाहिये इस के बाद सामने के नुक्सों को मालूम करना चाहिये। उसी नियम के अनुकूल हम पिछले पाठ मे कोट के पीठ पर की सब त्रुटियों को मालूम करके उनके कारण तथा उन्हें ठीक करने की रीती बतला आये हैं और अब इस पाठ मे हम कोट के सामने पर की त्रुटियों का वर्णन विस्तार पूर्वक करते हैं।

(१) कोट के सामने में मोंढे के नीचे वाले हिस्से पर तिरछे वल पड़ना

VERTICAL CREASES IN FRONT SCYE

यदि हम इस त्रुटि का नाम सामने के मोंढे के नीचे वाले भाग मे शिकन पड़ने की बजाय "मोंढे के आगे कपड़ा इकट्ठा होना" ऐसा नाम रखे तो हमारा भाव पहिले से भी ज्यादा स्पष्ट तौर पर समझा जायगा। अर्थात् यदि इस त्रुटि का नाम यह रखा जाय कि कपड़ा मोंढे के आगे इकट्ठा हो जाता है जैसा कि चित्र सं० ३६ के देखने से मालूम होता है कि कोट का सामना जरूरत से ज्यादा चौड़ा बनाया गया है जिसका परिणाम यह होता है कि मोंढे की सिलाई बजाय इसके कि उस स्थान पर रहे जहाँ पर कि बाजू शरीर से मिलता नजर आता है और जोकि उसकी असली जगह है बल्कि यह सिलाई उलटा बाजू के ऊपर चढ़ने लग जाती है। जब ग्राहक कुछ दिनों तक कोट पहिने रखता है तो उस के बाजू को बार २ आगे की तरफ घुमाने से
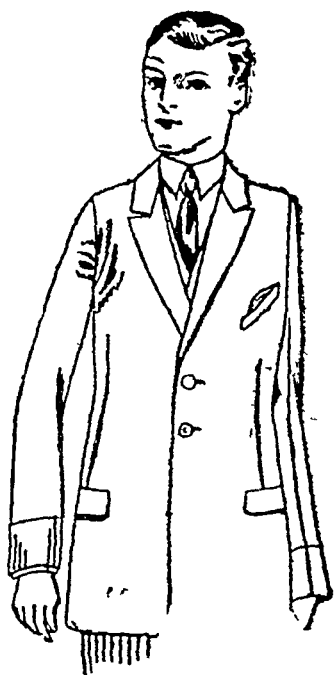
चित्र सं० ३६

अथवा बाजू हिलाने से कोट की आस्तीनों मे भी वल (creases) पड़ने लग जाते हैं। जब पीठ के बीच की सिलाई से लेकर सामने के मोंढे की सिलाई पर के गिद्री वाले निशान तक का नाप जरूरत स थोड़ा हो अर्थात् मोंढे की चौड़ाई जरूरत से कम हो तो बाजू

को आगे की तरफ़ ले जाते समय बाज़ू पर बहुत काफी भार मालूम देगा। और यदि इसके उलट यह नाप ज़रूरत से बड़ा बनाया गया हो, अर्थात् मोंढे की गोलाई जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तो कोट की पीठ पर साईड की सिलाई के पास बहुत सा फ़ाल्तू कपड़ा इकट्ठा होता नजर आयगा। जब ग्राहक कोट पहिन कर बैठ जाता है तो कोट के कन्धे में बहुत बुरा शिकन पड़ने लग जाता है और कोट इस भाग पर अर्थात् कन्धे पर इस तरह ऊपर को उठ खड़ा होता है जैसाकि यहां पर अन्दर की तरफ़ से हवा भर दी गई हो जिससे कोट बहुत बुरा मालूम होता है।

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण कोट के सामने के कन्धे का जरूरत से बहुत ज्यादा आगे की तरफ होना है। अर्थात् निशान १ से लेकर २ तक का नाप जरूरत से ज्यादा होने के कारण से यह नुक्स पैदा होता है। निशान १ तो चित्र सं० ३७ में पीठ के बीच की सिलाई पर के छाती पर के निशान को जाहिर करता है और निशान २ उस जगह को जाहिर करता है जहां पर गले में से नीचे की तरफ सकोयर की गई लकीर छाती की लकीर को जाकर मिलती है।

यदि पीठ के बीच की सिलाई से लेकर सामने के मोंढे की गोलाई तक का नाप जरूरत से छोटा होगा तो उसके सामने में और भी ज्यादा वल पड़ने लग जायेगे और इसके इलावा मोंढे के निचले हिस्से पर अर्थात् बग़लों से नीचे भी इस नुक्स का प्रभाव अवश्य पड़ेगा और साईड की सिलाई की

तरफ स्पष्ट तौर पर सीधे वल पड़ने लग जायेगे।

इस त्रुटि का एक कारण यह भी कहा जा सकता है कि गले वाली लकीर से लेकर मोंढे की गोलाई तक का नाप ज़रूरत से ज्यादा है जैसाकि चित्र सं० ३७ मे २ से ३ तक जाहिर किया गया है। निशान २ तो, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, उस जगह को जाहिर करता है जहां पर गले पर के निशान से सकोयर की गई लकीर छाती की लकीर से जाकर मिलती है और निशान ३ मोंढे की गोलाई पर के उस निशान को ज़ाहिर करता है जहां पर कि आस्तीन की गिद्री जोड़ी जाती है।

इस ज्यादती का कुच्छ हिस्सा, जोकि २ से ३ तक के नाप मे है, तो साईड की सिलाई के आस पास चला जाता है जिस से कोट के इस भाग पर वल पड़ने लग जाते हैं परन्तु इस ज्यादती का वहुत सा भाग तो मोंढे की गोलाई के आगे इकट्ठा हुआ रहता है जोकि आस्तीन के मोंढे की गोलाई के आस पास शिकनों का कारण वनता है। यदि ग्राहक के मोढों को काफी जोर लगा कर पीछे की तरफ़ धकेला जाय अर्थात् यदि ग्राहक के मोढे जबरदस्ती पीछे को जोर लगा कर पकड रखे जाये तो यह सारे शिकन निकल जाते हैं और इससे स्पष्ट तौर पर सिद्ध हो जाता है कि सामने की चौड़ाई जरूरत से ज्यादा रखी गई है जोकि इस त्रुटि का मुख्य कारण है।

जो शिकन कोट की अस्तीनों मे पाये जाते है इनका मुख्य कारण यह है कि वाजू को साधारण अवस्था मे आगे की

तरफ़ करते समय मोंढे की सिलाई बाज़ू के ऊपर के भाग के साथ रुकती रहती है जिस से आस्तीनों का मोंढे पर का हिस्सा बार २ ऐसा करने से पीछे की तरफ़ धकेला जाता है और कोट की आस्तीनों के उस भाग मे वल पड़ने लग जाते है।

जब पुराने जमाने में कोट मोंढे पर जरूरत से ज्यादा ढीले बनाये जाते थे अर्थात् कोट के मोंढे की गोलाई जरूरत से ज्यादा नीचे तक चली जाती थी उस अवस्था में कोट के कन्धे का ज्यादा आगे को होना अर्थात् कोट के कन्धे का ज्यादा सीधा होना लाभकारी होता था परन्तु अब जबकि कोट बिल्कुल फ़िट बनाये जाते हैं कोट के कन्धों का जरा भी सीधा होना अर्थात् जरूरत से ज्यादा आगे की तरफ़ होना इस प्रकार की त्रुटियों के स्वागत का मुख्य कारण है जोकि चित्र सं० ३६ मे दिखाई गई है।

ट्राई करते समय कोट का कालर और मोंढे खोल कर कोट के कालर और आस्तीनों को बाकी कोट से अलग कर लो। कोट की पीठ को शरीर पर वास्कट के साथ मोंढे की हड्डियों के ऊपर अर्थात् कन्धे की सिलाईयों से कुच्छ नीचे पिन से टांक दो और कन्धे की सिलाई को खोल दो। कोट के सामने को आगे की तरफ सुरका दो ताकि कोट का सामना शरीर पर ठीक प्रकार से बैठ जाय। जब ऐसा हो जाय तो कोट के गले को वास्कट के साथ पिन से टांक दो और सामने के कन्धे को बाहिर की तरफ से उतना बढ़ाओ जितना कि कोट के सामने को आगे की तरफ सुरकाने से

इसे छोटा किया हो ताकि यह पीठ के कन्धे की लम्बाई के बराबर हो जाय। फिर कन्धे की सिलाई की लकीर और सामने की आगे की लकीर को दोबारा लगा कर त्रुटी को दूर करो।

नुक्स दूर करना—चित्र सं० ३७ मे गले के निशान ४ को पीछे की तरफ निशान ५ पर लेजाओ। अर्थात् मोंढे के गिद्री वाले निशान ३ पर टेप का एक सिरा रख कर टेप के दूसरे सिरे को सामने के गले वाले निशान ४ पर रख कर पीछे की तरफ उतनी दूरी पर लेजाकर निशान ५ लगाओ जितना कि ट्राई करते समय कोट के सामने का कन्धा आगे की तरफ करके ग्राहक के शरीर पर चढाया हो।

अब कोट के सामने के कन्धे को बाहिर की तरफ से मोंढे पर का दबाव बाहिर निकाल कर बड़ा करो ताकि हमारे कन्धे की लम्बाई ५-७ कन्धे की पहली लम्बाई ४-६ के बराबर हो जाय।

ऐसा करने से कोट के सामने का कन्धा जोकि पहले जरूरत से ज्यादा सीधा था अथवा आगे की तरफ को ज्यादा था अब आवश्यकता अनुसार पीछे को तिरछा हो गया है। चित्रानुसार बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार कन्धे, मोंढे, गले, और सामने की नपेल इत्यादि की गोलाईया बना कर नुक्स को दूर करो।

परन्तु जब कोट बिल्कुल तैयार हो चुका हो अर्थात् कोट के मोंढे, कालर और कन्धे खोलने से बहुत सा नुक्सान होता हो तो इस प्रकार से नुक्स को दूर करना चाहिये। साईड की सिलाई के साथ २ सामने को थोड़ा सा अन्दर की तरफ दबा दो जैसाकि इस

चित्र में ८ से ६ तक करके दिखाया गया है और साईड की सिलाई पर कोट का सामना जितना अन्दर को दबाया हो उतना ही सामने
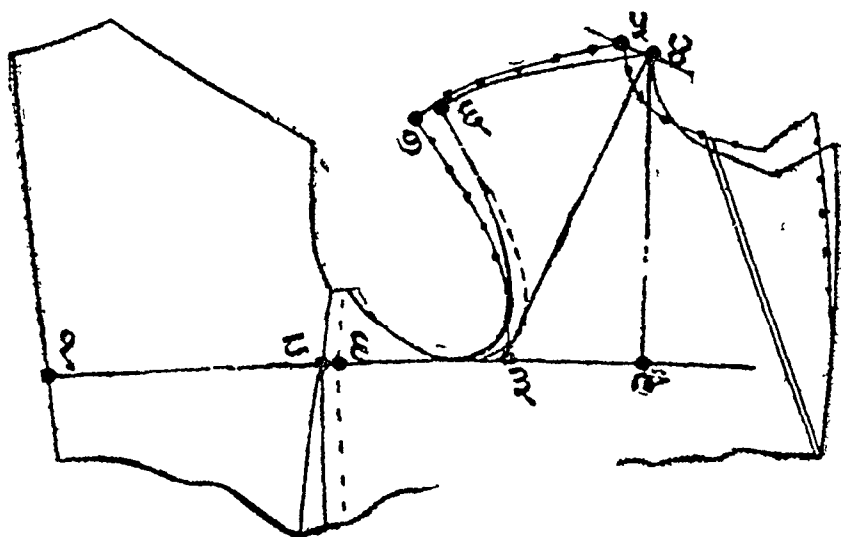
चित्र सं० ३७

के मोंढे की गोलाई को छाँट कर मोंढे की चौड़ाई को खुला करो। ऐसा करने से कोट के बटनों को उतना ही आगे की तरफ करना होगा जितना कि कोट को साईड पर तंग किया हो ताकि साईड की सिलाई के साथ २ कोट का सामना दबाने से छाती और कमर के नापों में जो कमी हुई हो वह पूरी हो जाय।

(२) कोट के बटन पर खिच पड़ना जबकि कोट के सामने में से दो डाट निकाले गये हों।

DRAGGING ON THE WAIST BUTTON IN BREAST DARTED COATS

इस त्रुटि की व्याख्या करने से पहले जरूरत मालूम होती है कि आप को यह बतलाया जाय कि यह डाट, जो सामने में से निकाले जाते हैं, वास्तव मे हैं क्या वस्तु ? जैसाकि दोस्त दर्जियों में कोट के पाठ मे कही बताया जा चुका है कि क्योंकि प्रायः शरीर की कमर पर का भाग छाती की अपेक्षा ज्यादा पतला होता है और यदि सारी की सारी ज्यादती साईड की सिलाई पर से निकाल ली जाय अर्थात् साईड को कमर पर बहुत ज्यादा दबा दिया जाय ताकि कमर के नाप की जो ज्यादती है वह दूर हो सके तो साईड की सिलाई ठीक नहीं बैठेगी बल्कि उस मे खिंच पड़ने लग जायगी। इस वास्ते जरूरी यह समझा गया है कि इस ज्यादती का कुछ भाग तो साईड को कमर पर से ही दबा कर कम किया जाय और कुछ सामने मे से बगलों के नीचे एक डाट कमर पर से निकाल लेने से कम हो जाय। यह तरीका साधारण शरीरों के वास्ते तो ठीक रहा परन्तु ऐसे शरीरों पर कोट ठीक नही बैठता था जिनकी कमर छाती की अपेक्षा बहुत पतली होती थी। इस त्रुटी को दूर करने के वास्ते कोट के सामने मे से एक और डाट निकाली जाने लगी जोकि पहली डाट से जरा आगे की तरफ से निकाली जाती है और इसे ब्रैस्ट डाट (breast dart) कहते हैं। यह दूसरी डाट, जिसका नाम ब्रैस्ट डाट है जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है केवल उस समय काम आती है जबकि कमर का नाप छाती के नाप से बहुत ही छोटा हो परन्तु आजकल के दर्जियों ने से एक प्रकार का फैशन अथवा फैशन का एक जरूरी अङ्ग

समझ कर प्रत्येक ही कोट मे से दो २ डाट निकालना शुरू कर दिया है चाहे कमर का नाप छाती के नाप से केवल एक इंच छोटा अथवा उसके बराबर ही क्यों न हो। इसका परिणाम यह हुआ है कि ऐसी अवस्थाओं मे जबकि कमर का नाप बहुत छोटा न हो कमर तंग-हो जाती है जिस के कारण से कोट के सामने में कमर के बटनों पर खिच पड़ने लगती है जैसाकि यहा पर बताया गया है।

यह नुक्स जैसाकि चित्र सं० ३८ मे दिखाया गया है, और जोकि आजकल के फैशन के कारण से पैदा हो जाता है क्योंकि आजकल कोट पहले की अपेक्षा ज्यादा फिट बनाये जाते है यह फैशन का एक जरूरी अङ्ग बन गया है नकि इसे किसी प्रकार की त्रुटि अथवा नुक्स का नाम दिया जाता है। ऐसा होते हुए भी कई लोग ऐसे मौजूद हैं जो इसको भी एक नुक्स समझ कर इसे दूर कराने के पीछे पड़े हुए हैं इस वास्ते हम भी यहां पर इस को विस्तार पूर्वक लिखते हैं।
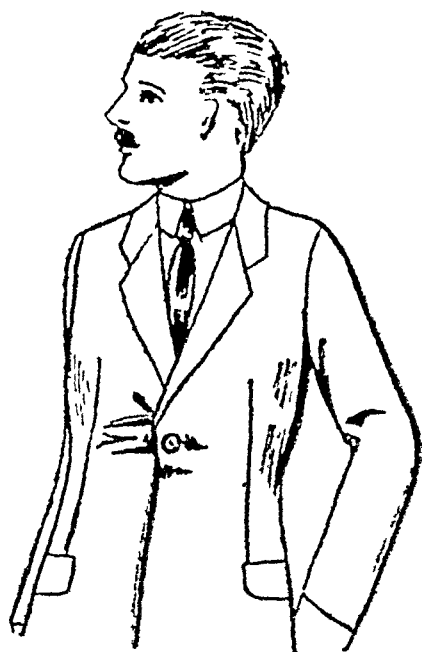
चित्र सं० ३८

कारण—जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है बटनों पर की यह खिच कोट के कमर पर तंग होने के कारण से पड़ती है।

और यदि कोट कमर पर काफी ढीला हो और कोट के कन्धे अपनी असली हालत मे हों अथवा न ही जरूरत से ज्यादा आगे को हों और न ही पीछे को तो इस प्रकार की खिच कभी नहीं पड़ सकसी ।

इस नुक्स का मुख्य कारण कोट के सामने को ब्रैस्ट डाट की सहायता से कमर पर दबाना अथवा तंग करना है परन्तु डाट निकालने का यह तरीका नियम अनुकूल नही है बल्कि अन्धाधुन्ध फैशन के पीछे चल कर कटाई के नियमों का बिल्कुल विचार न करने का यह परिणाम है

साधारण तौर पर मनुष्य का शरीर छाती से नीचे बिल्कुल एक जैसा (Flat) होता है। यह डाट उस समय प्रचल्लित की ाई थी जबकि ऐसे शरीर वाले पुरुष का कोट बनाया जा रहा हो जिसकी कमर साधारण तौर से बहुत ज्यादा पतली हो अर्थात् कमर का नाप साधारण तौर से ज्यादा छोटा हो और छाती ऊपर को उभरी हुई हो। ऐसी अवस्था मे डाट इस प्रकार से निकालने का परिणाम यह होता है कि छाती पर तो कोट बाहिर को उभारा जाता है और कमर पर दबा दिया जाता है। परन्तु जैसा कि पहले बताया जा चुका है आज कल के कट्टरों (Cutters) ने इस प्रकार के डाट का निकालना एक फैशन समझ रखा है और चाहे कमर का नाप साधारण होना तो एक तरफ रहा उस से बडा ही क्यों न हो वह इस डाट का निकालना अत्यावश्यक समझते हैं परन्तु यदि वह कोट को इसके आगे के किनारे पर से

उतना ही कमर पर बढ़ा दें जितना कि डाट निकालने से इसे दबाया हो तो किसी प्रकार का नुक्स पड़ने का सन्देह नहीं रहता।

यदि सब प्रकार के ऐसे कोटों मे जिनमे से इस प्रकार की
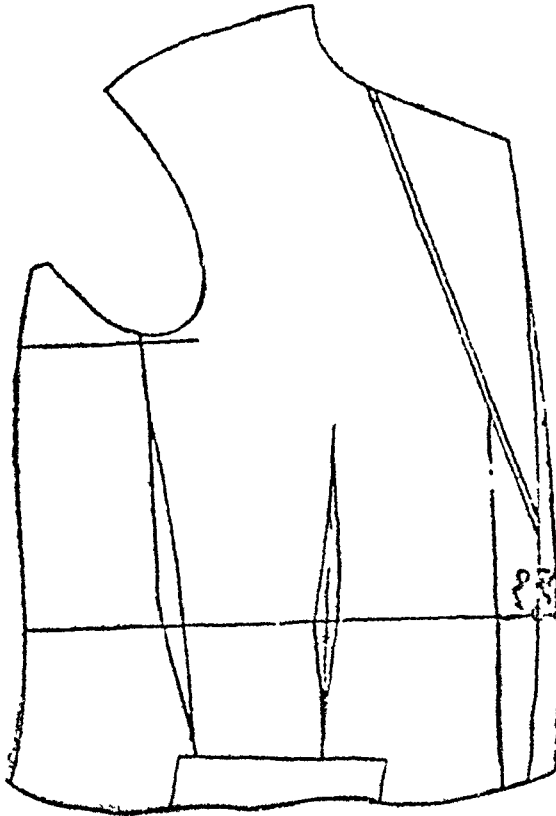
चित्र स० ३६

डाट निकाली गई हो चाहे उनकी कमर का नाप छोटा हो अथवा बड़ा इस तरह उनके आगे के किनारे पर से उन्हे बढ़ा दिया जाय और इस ज्यादती को पीठ अथवा साईडों पर से घटा दिया जाय तो और भी सोने पर सुहागे का काम देगा और कभी भी किसी

तरह ऐसा नुक़्स नहीं पड़ सकेगा।

नुक़्स दूर करना—चित्र सं० ३६ के अनुसार कोट के सामने को आगे के सिरे पर कमर की लकीर पर उतना बढाओ जितना इसे ब्रैस्ट डार्ट (breast dart) के निकालने से कमर पर का नाप छोटा हो गया हो जैसाकि इस चित्र मे १ से २ तक जाहिर किया गया है। अब निशान २ पर से ऊपर और नीचे की तरफ़ बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार गोलाई बना कर कोट के सामने के आगे के किनारे की नई गोलाई बनाओ॥

(३) पीठ पर गले से लेकर सामने की तरफ़ मोंढे के सिरों तक खिच पड़ना

CREASES FROM BACK NECK TO SHOULDER BONE

चित्र संख्या ४० मे इस नुक़्स को भली प्रकार से जाहिर किया गया है। वास्तव मे नुक़्स यह है कि पीठ पर गर्दन के उस स्थान पर से जहा पर कि कोट का कालर जोड़ा जाता है, अथवा जिसे दर्जी लोग टीक कहते हैं उस टीक से लेकर कन्धे की सिलाई पर से होते हुए मोंढे तक कोट मे खिच पड़ती है और कन्धे की सिलाई के आर पार शिकन अथवा वल (ripples) पडते नज़र आते हैं जैसाकि इस चित्र मे दिखाया गया है। यह नुक़्स आज कल के ऐसे कोटों मे वहुत पड़ने लग गया है जोकि पीठ पर शरीर के साथ विल्कुल फिट बनाए जाते है।

यदि कोट के कालर को जोकि उलटाया हुआ होता है ऊपर

चित्र सं० ४०

कोकिया जाय तो स्पष्ट तौर पर मालूम होगा कि कोट के सामने का गला काफ़ी ढीला है अर्थात् कोट का कालर जोड़ते समय इसे गले की गोलाई के साथ ठीक नहीं जोड़ा गया और कोट के सामने के गले पर का हिस्सा काफ़ी ढीला रह गया है।
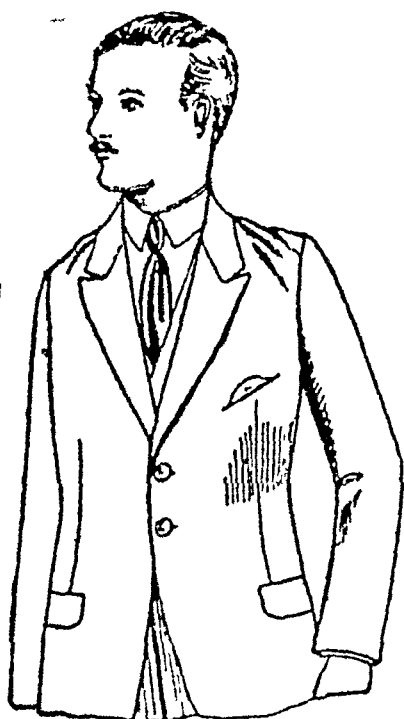
प्रायः ट्राई करते समय जबकि कोट की आस्तीनों को बाकी कोट से अलग कर दिया जाता है अर्थात् मोंढे की सिलाई खोल करकोट के बाजू अलग कर लिये जाते हैं तो कोट का सामना मोंढे की हड्डी के ऊपर तंग मालूम होता है।

कारण—इस नुक्स का सब से बड़ा कारण यह है कि एक तो कोट के सामने के गले से लेकर मोंढे की गोलाई के उस स्थान तक का नाप जहां पर कि आस्तीन की गिद्री जोड़ी जाती है, अर्थात् सरल शब्दों मे इस तरह कहना चाहिये कि कोट के सामने के गले की ऊंचाई जरूरत से छोटी है अर्थात् मोंढे की गोलाई जरूरत से थोड़ी नीची अथवा कम गहरी है। और इस नुक्स का दूसरा कारण यह भी है कि यदि गले पर से एक लकीर नीचे की तरफ़ छाती की लकीर पर सकोयर की जाय और

यह लकीर छाती की लकीर को जिस निशान पर जाकर मिले उस निशान से लेकर पीठ के बीच की सिलाई तक का नाप भी जरूरत से छोटा है। दूसरे शब्दों मे इस नुक्स का दूसरा कारण कोट के सामने के गले का जरूरत से ज्यादा बड़ा होना है।

वास्तव मे कोट के गले की ऊंचाई का नाप थोड़ा नही है चाहे यह नुक्स को ज्यादा करने का कारण ही क्यों न हो अर्थात् इस प्रकार के नुक्स का कारण वास्तव में कोट के सामने के गले की ऊंचाई का छोटा होना नहीं है और यदि इस नुक्स के साथ साथ कोट के गले की ऊंचाई भी जरूरत से कम हो तो यह नुक्स और भी बढ़ जाता है और कटर अथवा टेलर मास्टर को बहुत ज्यादा परेशान कर देता है। परन्तु यह शिकन चित्र सं० ४० वाले शिकनों की तरह तिरछे नही होंगे बल्कि उन से ज़रा सीधे पड़ेगे। जैसाकि कन्धे को जरूरत से ज्यादा पीछे की तरफ लेजाने से हुआ करता है। अथवा जिस तरह आगे को झुके हुए शरीर वाले ग्राहक के कोट मे इस प्रकार के शिकन पड़ते है उसी तरह यहा पर भी शिकन पड़ जाते है।

यदि कोट की पीठ के गले की गोलाई, जिसे टीक़ कहते हैं, जरूरत से छोटी हो तो यह नुक्स और भी ज्यादा बढ जाता है। अर्थात् इस नुक्स का तीसरा कारण पीठ पर टीक का छोटा होना भी हो सकता है क्योंकि टीक के छोटा होने से कोट की पीठ का शरीर पर गर्दन के एक तरफ से लेकर दूसरी तरफ तक छोटा होने के कारण से कोट का कालर टीक पर ठीक नहीं

बैठता और कपड़ा काफ़ी न होने के कारण से टीक पर खिंच पड़ने लग जाती है जोकि टीक से लेकर कन्धे की सिलाईयों की तरफ खिंच अथवा शिकन पड़ने का कारण होती है जैसाकि चित्र सं० ४० में दिखलाया गया है कि इस नुक्स से कोट की क्या अवस्था बन जाती है।

ट्राई करते समय कोट की पीठ को वास्कट के साथ कन्धों की सिलाई से नीचे पिन से टांक दो और सामने को छाती से भी ज़रा नीचे वास्कट के साथ पिन से टांक दो। कोट के मोंढे की सिलाई खोल कर आस्तीनें अलग करो और कालर भी खोल कर अलग करके कन्धों की सिलाईयां खोल दो। कन्धों को एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक खोल दो अर्थात् गले से लेकर मोंढों तक कन्धों की सिलाईयों को खोल दो।

टीक से लेकर सामने के मोंढे तक अथवा कन्धे के बाहिर वाले सिरे तक का नाप, जिसके छोटा होने के कारण से यह नुक्स पड़ गया है, पूरा करने के वास्ते न केवल कोट के सामने को नीचे उतारो बल्कि इसे बाहिर की तरफ भी निकालो अर्थात् इस के गले पर का दबाव बाहिर निकाल कर कन्धे को बाहिर की तरफ सुरका दो अथवा गले के पहले निशान को गर्दन से पीछे हटा दो जिससे टीक से लेकर सामने के मोंढे तक का नाप आवश्यकता अनुसार बढ़ जायगा। जहां पर कोट का सामना शरीर पर ठीक बैठे अर्थात् सामने को जितना नीचा करके और बाहिर की तरफ निकाल कर शरीर पर बिठाने से कोट का सारा

नुक्स दूर हो जाय वहां पर कोट के सामने को रख कर इसे वास्कट के साथ पिन से टांक दो और सामने पर के पहले पिन को निकाल लो ऐसा करने से कोट अपनी ठीक अवस्था मे आजायगा। अब आपने देखना यह है कि कोट के सामने को आपने जितना नीचे उतारा है उतना ही सामने के कन्धे पर का दवाव बाहिर निकाल कर कन्धे की सिलाई की गोलाई का निशान लगाओ और जितना कोट के कन्धे को बाहिर निकाला हो उतना गले पर के दवाव को बाहिर निकाल कर कोट के सामने के गले की गोलाई का निशान लगाओ।

इस के साथ आपको इस बात का विचार करना भी जरूरी है कि क्या पीठ पर टीक छोटी तो नही है। यदि टीक छोटी होगी तो जरूरी तौर पर कोट की पीठ पर टीक से नीचे शिकन पड़ते नज़र आयेगे। यदि यहां इस प्रकार के शिकन पड़ते नज़र आवे तो टीक की गोलाई को आवश्यकता अनुसार नीचा करो जिस से टीक बड़ी हो जायगी और नुक्स भी जाता रहेगा।

नुक्स दूर करना—चित्र सं० ४१ के अनुसार गले के निशान को आगे की तरफ सुरकाओ जैसाकि १ से ३ तक दिखलाया गया है। परन्तु इस बात का विचार जरूर करना चाहिये कि गले के निशान की छाती की लकीर से ऊपर २ की ऊंचाई पहले जैसी रहनी चाहिये। अथवा न ही इसे बढ़ाया जाय; और न ही घटाया जाय। सामने के कन्धे को मोंढे की तरफ से २ से ४ तक को १ से ३ तक के बराबर बढ़ाओ ताकि कन्धे की

लम्बाई जितनी ज्यादा हुई है वह कम हो जाय, और कन्धे का नाप जैसे का तैसा पूरा हो जाय। ऐसा करने से पीठ के नीचे
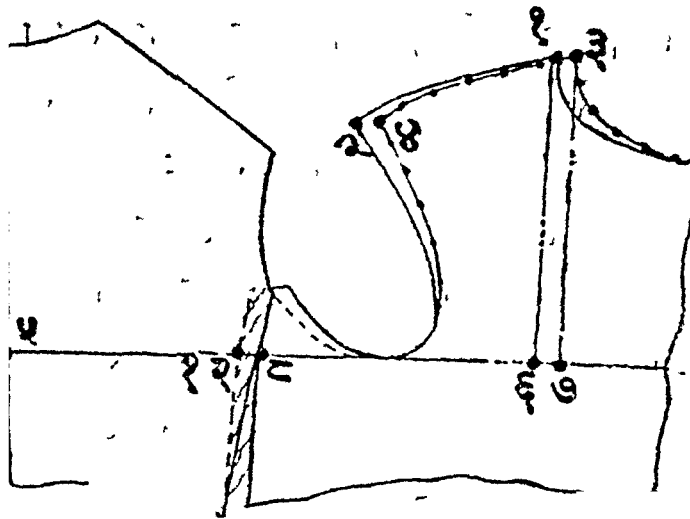
चित्र संख्या ४१

से बहुत ज्यादा काम करना पड़ता हो और साथ ही गले पर का दबाव भी न रखा गया हो जैसाकि प्रायः दर्ज़ी लोग इसे काट दिया करते हैं तो उस अवस्था में नुक्स को दूर करने का आसान तरीका यह होता है कि साईड पर के दबाव को बाहिर निकाल कर कोट को ढीला कर लेना चाहिये जैसाकि इस चित्र मे ८ से १२ तक कर के दिखाया गया है और मोंढे की गोलाई को भी डैश वाली लकीरों (dash lines) की तरह छांट कर नुक्स को दूर करो क्योंकि ऐसा करने से भी पीठ के बीच की सिलाई पर का निशान ५ गले वाली लकीर के निशान ६ से स्वयम् ही पहले से ज्यादा दूर हो जायगा-जबकि साईड पर का दबाव बाहिर निकाल कर कोट को ढीला किया जायगा। परन्तु इस नुक्स के दूर करने का ठीक और वास्तविक तरीका यह नहीं है बल्कि ठीक तरीका तो वही है जोकि पहले बताया जा चुका है और यह तरीका उस समय वरता जाता है जबकि सामने के गले मे दबाव न रखा गया हो, अथवा आपका कोट तैयार हो चुका हो और आप उस पर अधिक मिहनत न करना चाहते हों।

इस के साथ ही पीठ की टीक भी छोटी हो जैसाकि इस नुक्स का कारण मालूम करते समय बताया गया है तो टीक को चित्र सं० ४२ के अनुसार बड़ा करो जैसाकि इस चित्र मे १३ से १४ तक कर के दिखाया गया है। परन्तु इस बात का विचार जरूर कर लेना चाहिये कि इसकी ऊंचाई छाती की लकीर से उतनी ही रहे जितनी कि पहले थी। चित्रानुसार पीठ की टीक

और कंधे की सिलाई की गोलाई की लकरें बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार बनाओ।

जितना पीठ की टीक को बड़ा किया हो उतना ही सामने के गले को नीचा करो जैसाकि इस चित्र मे १६ से १८ तक कर के दिखाया गया है ताकि गले का नाप जहां पर कि कालर जोड़ा जाना है छोटा बड़ा न हो जाय। निशान १८ से लेकर चित्रानुसार सामने के कन्धे की गोलाई बनाओ और नुक्स को दूर करो।

चित्र सं० ४२

(४) गर्दन से लेकर नीचे की तरफ मोंढे तक शिकन पड़ना

CREASES FROM NECK DOWN FRONT SCYE

यह नुक्स चित्र सं० ४३ से जाहिर किया गया है और चित्र सं० ४० वाले नुक्स से बहुत कुच्छ मिलता जुलता है। इस वास्ते इसे भली भांति जांचना चाहिये नहीं तो गलती हो जाने का डर है।

इस नुक्स के कारण से शिकन जैसाकि चित्र सं० ४४ से जाहिर है, गले से शुरू होकर बिल्कुल नीचे की तरफ़ सीधे मोंढे की गोलाई के उस स्थान तक चले जाते है जहाँ पर कि गिद्री जोड़ी जाती है और जब यह नुक्स साधारण से बहुत ज्यादा बढ़ जाता है तो सामने का वह हिस्सा जोकि ब्रेस्ट पाकट के आस पास होता है, बहुत ही बुरा दिखाई देता है

इस नुक्स के कारण से प्राय. कोट के गले अथवा कालर के पास और मोंढे के नीचे उस स्थान पर जहां कि गिद्री जोड़ी जाती है शरीर पर काफी बोझ सा मालूम देता है।

चित्र सं० ४३

कारण—इस नुक्स का कारण फरण्ट शोल्डर(Front shoulder) के नाप का छोटा होना है अर्थात् पीठ पर टीक के बीच के निशान से लेकर सामने मोंढे की गोलाई के गिद्री वाले निशान तक के नाप के जरूरत से छोटा होने के कारण से यह नुक्स पैदा होता है दूसरे शब्दों मे कोट के सामने के गले के निशान का जरूरत से कम ऊंचा होना ही इस नुक्स का कारण है।क्योंकि ऐसा होने से कोट का कालर सामने को ऊपर की तरफ़ खेचता रहता है जिससे न केवल ऊपर वताए गए शिकन ही पडते रहते है वल्कि कोट का सारा बोझ क्योंकि कालर ने खेच रखा होता है, जैसाकि ऊपर वतला आए हैं इस वास्ते गर्दन और मोंढे पर हर समय खिच पड़ती रहती है। क्योंकि कोट के सामने का गला जरूरत से कम ऊंचा है और कालर वाकी कोट को ऊपर की तरफ खेचता रहता है इस वास्ते कोट का मोढा नीचे से खिच कर वगलो के साथ चिमट जाता है और इस

कारण से कोट इस स्थान पर तंग मालूम होता है।

इसके इलावा इस नुक्स का यह कारण भी हो सकता है कि कोट का कालर छोटा बनाया गया हो जिसका परिणाम यह होता है कि न केवल कन्धे पर ही वल पड़ने लगे बल्कि गले से लेकर मोंढे की गोलाई के गिद्री तक के निशान के नाप को भी जरूरत से छोटा कर दे।

ट्राई करते समय सब से पहले कोट का कालर खोल कर अलग करो और देखो कि क्या ऐसा करने से नुक्स दूर हो जाता है? अर्थात् शिकन दूर हो जाते है और किसी प्रकार की खिच अथवा तंगी बाकी नही रहती। यदि कोट का कालर अलग करने से सब नुक्स दूर हो जाय तो समझना चाहिये कि इस नुक्स का कारण केवल कालर का छोटा होना ही है और यदि ऐसा करने से शिकन बिल्कुल दूर न हों तो कन्धों की सिलाई को खोल देना चाहिये और सामने के कन्धे का गले की तरफ़ का दबाव बाहिर निकाल कर सामने को गले की तरफ़ से नीचे को सुरका देना चाहिये। ऐसा करने से सब प्रकार से कोट ठीक हो जायगा और किसी प्रकार का नुकस बाकी नहीं रहेगा।

नुक्स दूर करना—इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट के सामने के कन्धे पर के दबाव को गले की तरफ़ से आवश्यकता अनुसार बाहिर निकालो जैसाकि चित्र सं० ४४ में १ से २ तक करके दिखाया गया है। ऐसा करने से कोट के सामने का गला १ से २ तक के बराबर पहले से ऊंचा हो जायगा

अर्थात् दूसरे शब्दों मे यों कहना चाहिए कि अब हमारे कोट के सामने के गले से लेकर मोंढे की गोलाई के गिद्री पर के निशान तक का नाप जरूरत के मुताबिक पूरा हो गया है जिससे किसी
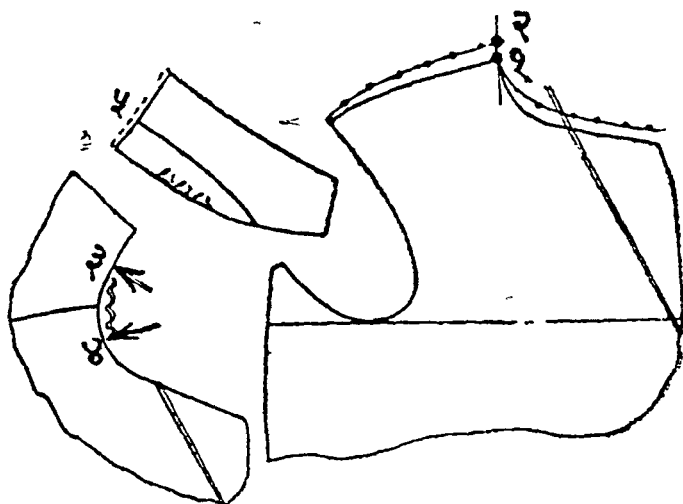
चित्र सं० ४४

प्रकार की खिंच अथवा तंगी पड़ने का कोई भी डर नहीं है। अब निशान २ से लेकर कोट के सामने के कन्धे और गले की गोलाईया बनाओ जैसाकि इस चित्र मे विन्दियो वाली लकीरों की सहायता से बना कर दिखाया गया है।

परन्तु जब कोट का कालर भी छोटा हो अर्थात् कोट के कालर के छोटा होने के कारण से यह नुक्स पड़ता हो तो कालर को भी आवश्यकता अनुसार बढा लेना चाहिये जैसाकि इस चित्र मे निशान ५ पर करके दिखाया गया है।

कोट के कालर को शेष कोट के साथ जोड़ते समय कोट के गले

में उस स्थान पर नम देनी चाहिये जहां पर कि कोट के सामने और पीठ के कन्धों की सिलाई एक दूसरे से की गई जैसाकि इस चित्र में निशान ३ से लेकर ४ तक गोल २ टेढ़ी लकीर की सहायता से दिखाया गया है ।

"नम" देने का मतलब यह है कि कपड़े के एक भाग को जब दूसरे भाग के साथ जोड़ते समय जब एक भाग को तो ज़रा खेंच कर रखा जाय और दूसरे को ज़रा ढीला तो जिस हिस्से को जिस स्थान पर ढीला रख कर जोड़ा जायगा उसे उस स्थान पर नम देना कहते है ।

इसी तरह कालर को भी कोट के साथ जोड़ते समय कोट के सामने और पीठ के गले की गोलाई मे चित्र सं० ४४ पर के निशान ३ से लेकर ४ तक नम देनी चाहिये। अर्थात् कालर का जो हिस्सा इस स्थान पर जोड़ा जाना हो उसे तो खेच कर रखना चाहिये और गले के हिस्से मे जहां कि कालर खेंच कर जोड़ा जा रहा हो और जिसे इस चित्र मे ३ से ४ तक ज़ाहिर किया गया है, नम देनी चाहिये।

(५) कोट के सामनों का आगे की तरफ से खुलना और पीछे की तरफ लटकते रहना।

(FOREPARTS DROOPING & SWINGING AWAY FROM FRONT)

चित्र सं० ४५ की सहायता से यह नुक्स स्पष्ट तौर पर

दिखलाया गया है। प्राय. ऐसे कोट, जिन मे यह नुक्स हो, के यदि सामने के बटन बन्द कर दिये जाये तो जाहिरा तौर पर यह नुक्स नजर नही आता बल्कि कोट सब प्रकार से ठीक ही ठीक नजर आता है। क्योंकि कोट को ट्राई करते समय जब कोट के दोनों सामनों को एक दूसरे के साथ मिला कर, जैसाकि बटन बन्द करते समय किया जाता है, एक सामने को दूसरे के ऊपर जरूरत के मुताबिक ही चढ़ा दिया जाता है। इस तरह से एक सामने के आगे के किनारे को दूसरे सामने के आगे के किनारे के ऊपर जितना चढ़ाया जाता है उसे "वलपट" (overlep) कहते हैं। अर्थात् जब ट्राई करते समय कोट के सामनों को आपस मे मिलाया जाता है तो उनका वलपट ठीक उतना रखा जाता है जितना कि जरूरत हो और कोट के ऊपर वाले और नीचे वाले बटनों के दरमियान बराबर २ जगह रखी जाती है जितनी कि उन के काजों (Button holes) के दरमियान होती है। इस वास्ते जब कोट के बटन बन्द किये जाते हैं तो उन मे किसी प्रकार का नुक्स नज़र नही आता और कोट सब प्रकार से ठीक ही ठीक मालूम देता है।

आजकल के जैण्टलमैन लोग (Fashionable Customers) कोट के बटन जरूर बन्द करते है चाहे केवल एक ही बटन बन्द करे अथवा सारे परन्तु बटन बन्द जरूर करते हैं ताकि कोट के सामने एक दूसरे के साथ मिले रहे। परन्तु ऐसे लोग जोकि कभी भी इस बात का विचार नहीं करते कि आया उनके

कोटों के बटन खुले हुए हैं अथवा बन्द हैं और केवल अपने काम की तरफ ही लगे रहते हैं ऐसे लोगों को साधारण श्रेणी (working class) के लोग कहते है। इसका परिणाम यह होता है कि यदि पहली श्रेणी वाले ग्राहकों के कोटों मे इस प्रकार का नुक्स हो भी सही तो छुप जाता है और किसी प्रकार की तकलीफ़ नही होती क्योंकि बटन बन्द करने से सब प्रकार के ऐसे नुक्स छुप जाते हैं। परन्तु यदि

चित्र सं० ४५

दूसरी श्रेणी के ग्राहकों के कोटों मे इस प्रकार का नुक्स पड़ जाये तो कोट सारे का सारा पीछे की ओर चला जाता है और पीठ पर थैले की तरह इकट्ठा हो जाता है जिसका परिणाम यह होता है कि कोट के सामने नीचे को ढिलक जाते है और कोट के सामने और पीठ का घेरा एक जैसा नजर नही आता बल्कि सामने का घेरा पीठ की अपेक्षा बहुत सा नीचे को उतरा हुआ नज़र आता है और इस के साथ ही कोट के सामनों का सारा बोझ मोंढे के ऊपर ही पड़ता रहता है क्योंकि कोट के सामने पीछे की तरफ दौड़ने की कोशिश करते हैं इस वास्ते सामने के मोंढों के नीचे खिच और शिकन

पड़ते नज़र आते है जैसाकि चित्र मे दिखाया गया है।

कारण—इस नुक्स के दो ही कारण हो सकते है पहला तो यह कि कोट के सामने के गले का छाती की लकीर से जरूरत से ज्यादा ऊंचा होना जिससे सामना नीचे को ढिलक पडता है। और इस नुक्स का दूसरा कारण यह हो सकता है कि कोट के सामने का कन्धा जरूरत से ज्यादा पीछे को हो अथवा गला ज्यादा पीछे को चला गया हो । इन दोनों कारणों मे से किसी एक से ही यह नुक्स पड़ जाता है और जब इस नुक्स के यह दोनों ही कारण हों अथवा ऊपर बताई गई दोनों बाते गलत हों तो नुक्स और भी ज्यादा स्पष्ट हो जाता है और कोट बहुत बुरा नज़र आता है।

गला ऊंचा उस समय हो जाता है जबकि कोट काटा तो नार्मल शकल के अनुसार जाय परन्तु वास्तव मे वह शरीर जिस के वास्ते कोट बनाया जा रहा हो आगे को झुका हुआ होता है। अथवा कोट काटा तो अकड़े हुए आदमी के अनुसार जाय परन्तु वास्तव मे वह ऐसा न हो बल्कि साधारण अथवा नार्मल शकल का हो।

यदि कन्धा जरूरत से ज्यादा पीछे को चला गया हो तो सामने के कन्धे की गोलाई जरूरत से बहुत ज्यादा हो जाती है और गला छाती की लकीर से जरूरत से ज्यादा दूर हो जाता है। और यदि कोट के सामने के कन्धों को इनके दोनों सिरों पर रु अच्छी तरह लोहे से खेंच कर न फलकाया जाय अथवा

सामने के हाले मे से डाट निकाल कर कोट के कन्धे को आगे की तरफ न खेच लिया जाय तो जरूरी तौर पर इस प्रकार का नुक्स पड़ जाता है।

जब कोट मे इस प्रकार का नुक्स हो और सामने के बटन खोल दिये जावे तो पीठ पर कोट थैले की तरह इकट्ठा हो जाता है जैसाकि सैक चैस्टरफील्ड हिप पर इकट्ठा हुआ २ होता है अथवा ढीला होता है।

ट्राई करते समय कोट की पीठ को वास्कट की पीठ के साथ कन्धों की सिलाई से कुछ नीचे पिन से टांक दो। यथापूर्वक कोट के सामनों को जैसाकि बटन लगाते समय तलपट रख कर एक दूसरे से जोड़ते हैं वैसे ही तलपट रख कर पिन लगाओ। परन्तु ऐसा करते समय इस बात का विचार जरूर कर लेना चाहिये कि कोट पीठ की तरफ से कमर और हिप पर बिल्कुल ढीला न हो बल्कि कोट इस भाग पर जितना भी ढीला हो उस ढीलेपन को खेच कर आगे की तरफ ले आना चाहिये।

कोट का कालर उधेड़ कर अलग कर लो और कोट के ऊपर के बटन से लेकर गले तक नपेल पर कपड़ा जितना भी ढीला हो उस सब को खेच कर ऊपर की तरफ ले जाओ और गले के पास जाकर कन्धे की सिलाई के साथ इस ज्यादती को इकट्ठा करके पिन से टांक दो।

जब आप इस तरह से गले की ऊंचाई को ठीक कर ले तो देखे कि क्या नुक्स दूर हो गया है अथवा नही यदि नुक्स

विल्कुल दूर हो गया हो तो यह समझना चाहिये कि इस नुक्स का कारण केवल गले का जरूरत से ज्यादा ऊंचा होना है जिस के ठीक करने से नुक्स दूर हो गया है। और यदि ऐसा करने पर भी नुक्स थोडा वहुत बाकी रह जाय तो समझना चाहिये कि इस नुक्स का कारण न केवल गले का जरूरत से ज्यादा ऊंचा होना है बल्कि कन्धे का जरूरत से ज्यादा पीछे को होना भी इस नुक्स को वढाने का कारण है। और आवश्यकता अनुसार कोट के सामने के कन्धे को बाहिर की तरफ मुरका कर हाले के अन्दर का दबाव वाहिर निकाल कर इसे ठीक कर लेना चाहिये।

नुक्स दूर करना—चित्र सं० ४६ में दिखलाया गया है कि किस तरह सामने के गले को जरूरत के मुताबिक नीचा किया गया है और कन्धे को आगे की तरफ अथवा सीधा करके हाले की चौडाई को छोटा किया गया है जोकि पहले जरूरत से ज्यादा थी।

गले को न केवल १ से २ तक नीचा किया गया है बल्कि इसे पहले से आगे की तरफ भी मुरकाया गया है। ऐसा करने से सामने का कन्धा जितना वडा हो गया है उतना ही इसे इसके वाहिर वाले सिरे पर से निशान ५ से ४ तक छोटा करो ताकि कन्धे की लम्बाई पूरी रहे और साथ ही कन्धे को वाहिर वाले सिरे पर से भी थोडा सा नीचा करदो ताकि इसे केवल गले की तरफ से नीचा करने से कहीं कन्धा विल्कुल सीधा न हो जाय

बल्कि उस मे थोड़ा बहुत झुकाव रहे। बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार कोट के सामने के मोंढ, कंध, गले अथवा आगे की गोलाईयां बनाओ। और जब कोट बिल्कुल तैयार हो चुका हो
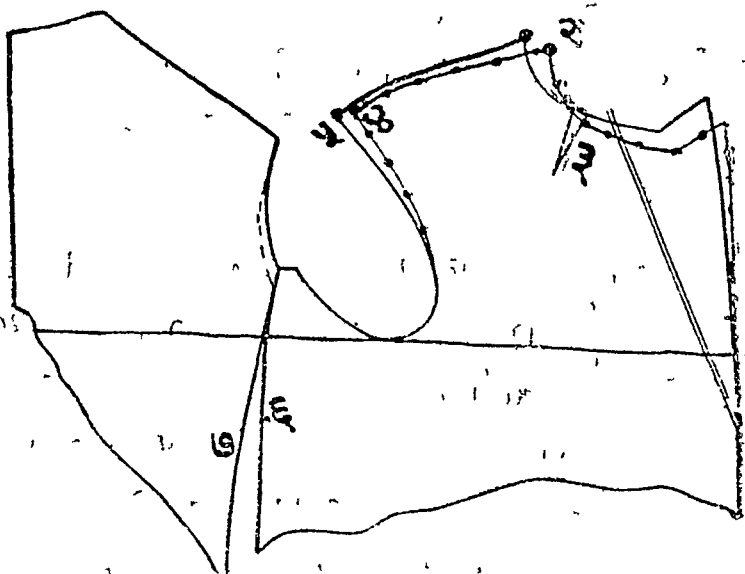
चित्र सं० ४६

उस समय इसे सारा फिर खोल कर ऊपर लिखी रीति से नुक्स दूर करना बहुत महंगा पड़ता है अथवा इस तरह से बहुत सा काम करना पड़ता है। उस अवस्था मे कोट का कालर उधेड़ कर सामने के गले मे से एक डाट निकाल लेनी चाहिये जैसाकि चित्र सं० ४६ मे निशान ३ पर से डाट निकाल कर दिखाई गई है जिससे न केवल कोट का सामना ही खिच कर ऊपर को चला आता है बल्कि कन्धा भी जरूरत के मुताबिक आगे को आ जाता है।

परन्तु इस से कोट के सामने मे खिच पड़ जाने का डर होता है। इस डर अथवा संशय को दूर करने के वास्ते कोट के सामने

की साईड की सिलाई खोल कर नीचे की तरफ उतार देना चाहिये और पीठ को जरा ऊपर को चढा देना चाहिये जैसाकि इस चित्र मे निशान ६ और ७ से जाहिर किया गया है ताकि कोट के सामने स्वयन् ही आगे को चले आवे और उन मे किसी प्रकार की खिच न पडे। ऐसी अवस्था मे कोट की पीठ के मोंढे की गोलाई को भी डैश वाली लकीरों के मुताबिक छाटना जरूरी होता है।

(६) सामने के मोंढे के आगे गोल २ शिकन पड़ना

SEMI CIRCULAR CREASES IN FRONT OF SCYE

यह नुक्स प्राय: बाडी कोटों मे पड़ जाता है परन्तु आजकल क्योंकि साधारण कोट भी बाडी कोटों की तरह बिल्कुल फ़िट बनाये जाते हैं और इनकी कमर पर का भाग भी बाडी कोटों की तरह बिल्कुल शरीर के साथ चिमटा रहता है, इस वास्ते यह नुक्स सब प्रकार के कोटों मे बहुत ज्यादा पड़ने लग गया है। देखो चित्र सं० ४७।

इस चित्र मे मोंढे की सिलाई खिच कर बाजू के ऊपर चली गई है। जिस से प्राय. बाजू को आगे की ओर घुमाते तथा हिलते समय तकलीफ होती है क्योंकि मोंढे की सिलाई, जोकि जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, बाजू के ऊपर चढ़ जाती है और बाजूओं को साधारण अवस्था मे आगे को हिलाते समय इन्हे यह सिलाई पीछे को धकेलती है जिससे कि कष्ट होता है।

कारण—इस नुक्स का कारण कोट के सामने का साईड

चित्र सं० ४७

की सिलाई के साथ २ कमर और हिप पर जरूरत से ज्यादा दबाया जाना अथवा तंग होना है। इसके साथ ही पीठ के बीच की सिलाई से लेकर सामने मोंढे की गोलाई तक के नाप के जरूरत से कम होने के कारण से यह नुक्स और भी बढ़ जाता है। दूसरे शब्दों मे कोट के सामने के मोंढे की गोलाई का आगे की तरफ़ से थोड़ा होना अथवा कम चौड़ा होना इस नुक्स को और भी बढ़ा देता है।
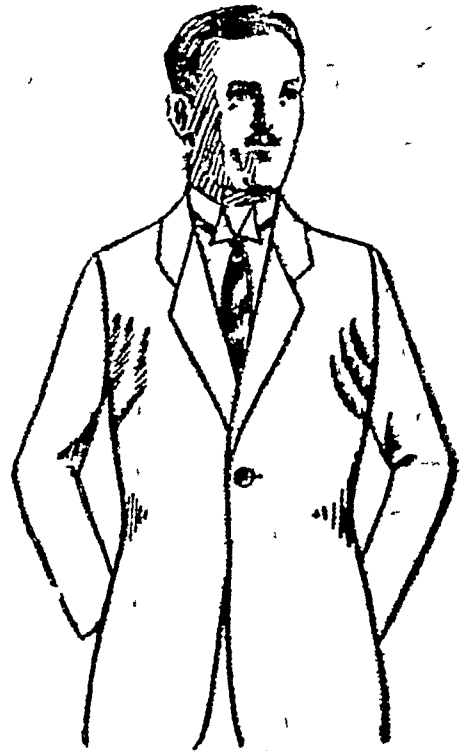
इस नुक्स का मुख्य कारण यह होता है कि कोट बनाना तो एक ऐसे आदमी के वास्ते होता है जिसका साईड बिल्कुल सीधा होता है अथवा छाती और कमर के नापों में कोई ख़ास फ़र्क नहीं होता परन्तु काटते समय इसे आजकल के फ़ैशन के मुताबिक़ ऐसा फिट काट दिया जाता है जैसाकि यह किसी ऐसे आदमी के वास्ते बनाया जा रहा हो जिसकी कमर का नाप बहुत ही पतला हो।

इस नुक्स के साथ २ यदि कोट के सामने को आगे के किनारे से आगे कमर पर काफ़ी बाहिर न निकाला गया हो तो कोट के सामने पीछे को चले जावेंगे जबकि उनके बटन खोल दिये गये हों

जैसाकि पिछले नुक्स को चित्र सं० ४५ मे दिखला आये हैं।

ट्राई करते समय कोट के सामनों को एक दूसरे के साथ पिन से टांक कर अथवा बटनों से बन्द करके साईड की सिलाई पर का दबाव बाहिर निकाल दो या बगल से नीचे वाली कमर से दबाई हुई डाट वाला दबाव बाहिर निकाल दो अर्थात् इन दोनों मे
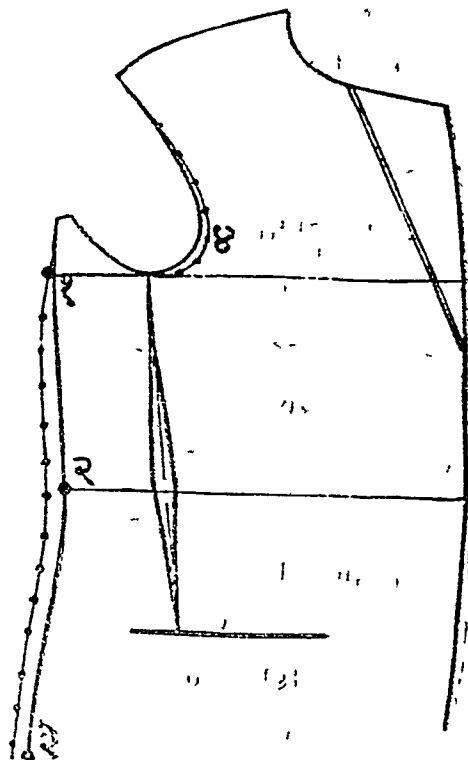
चित्र सं० ४८

से कोई एक बात कर लो और कन्धे की सिलाई खोल कर कोट के सामने को थोड़ा सा आगे की तरफ सुरका दो।

नुक्स दूर करना—इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र संख्या ४८ के अनुसार कोट के सामने के साईड पर के दबाव को इस तरह बाहिर निकालो कि छाती की लकीर पर तो इस दबाव को बिल्कुल बाहिर न निकालो बल्कि यहां से नीचे की तरफ ही दबाव बाहिर निकालना शुरू करो जैसाकि इस चित्र मे निशान

१ पर से शुरू किया गया है। कमर पर के इस दबाव को आवश्यकता अनुसार आधे अथवा पौने इंच के बराबर बाहिर निकाल कर इसे बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार ऊपर छाती की लकीर पर के निशान १ के साथ मिला दो जैसाकि इस चित्र मे कमर पर निशान २ से ज़ाहिर किया गया है। इसी तरह प्रायः यह दबाव नीचे घेरे तक बाहिर निकाला जाता है परन्तु यह ज़रूरी नही कि हमेशा ऐसा किया जावे। अथवा यदि कोट हिप तथा घेरे पर तंग न हो बल्कि केवल कमर पर ही तंग हो तो इस दबाव को घेरे तक बराबर २ बाहिर निकालने की जरूरत नही है बल्कि जिस तरह कमर पर का दबाव निशान २ पर बाहिर निकाल कर इसे ऊपर की तरफ़ छाती की लकीर तक मिला दिया गया है और छाती पर का दबाव बिल्कुल बाहिर नही निकाला गया उसी तरह इसे नीचे की तरफ़ भी हिप के साथ मिला देना चाहिये और हिप पर के दबाव को भी छाती के दबाव की तरह बिल्कुल बाहिर नहीं निकालना चाहिये अर्थात् जैसे ज़रूरत हो वैसे ही करना चाहिये।

(७) मोंढे के नीचे गोल शिकन पड़ना।

(CURVED CREASES UNDER SCYE)

चित्र सं० ४६ मे इस नुक्स को भली भांति जाहिर किया गया है। इस नुक्स मे मोंढे अथवा बग़लों के नीचे कोट इकट्ठा हुआ रहता है। बग़लें ज़ोर से कोट को नीचे की तरफ धकेलती हैं जिससे कपड़ा मोंढे की गोलाई के नीचे २ इकट्ठा हो जाता है।

चित्र सं० ४६

इस नुक्स के कारण से कोट किसी भी और स्थान पर बुरा मालूम नही देता बल्कि बाकी सब तरह से कोट ठीक ही होता है।

कारण–इस नुक्स का कारण स्वयम् जाहिर हो जाता है अर्थात् मोंढे की गोलाई जरूरत के मुताबिक नीची अथवा गहरी नहीं है बल्कि उससे कम गहरी है जिससे शरीर का मोंढा, जोकि इससे बडा है, इसे नीचे की तरफ़ धकेलता है और यह शिकन पैदा होते हैं।

दूसरे शब्दों मे सामने और पीठ के गले से लेकर मोंढे की गहराई तक वाली लकीर, जोकि छाती की लकीर भी कहलाती है, तक का नाप जरूरत से छोटा होने के कारण से यह नुक्स पैदा होता है। कोट वास्तव मे काटना तो एक ऐसे आदमी के वास्ते है जिस की गर्दन लम्बी है अथवा कन्धे नीचे को गिरे हुए हैं परन्तु कोट काटा गया है नार्मल शकल वाले आदमी के मुताबिक।

बाजू को साधारण अवस्था मे हिलाने से कोट बग़लों

के नीचे ज़रूरत से ज्यादा नीचे की तरफ़ धकेला जाता है जिस से कोट के सामने और पीठ पर अथवा दोनों तरफ़ वल अथवा शिकन पड़ते नज़र आते है।

ट्राई करते समय कोट के मोंढे की सिलाई खोल कर आस्तीनें अलग कर लो और ग्राहक के बाजू ज़रा ऊंचे करो। और मोंढे की गोलाई को ज़रूरत के मुताबिक गहरा करने का निशान लगाओ अथवा बग़ल के नीचे की डाट का ऊपर का हिस्सा खोल कर मोंढे की गोलाई का नीचे का वह हिस्सा, जिस में शिकन पड़े हुए हैं और इकट्ठा हुआ हुआ है, मोंढे की गोलाई के अन्दर की तरफ़ उतना मोड़ दो जितना कि यहां पर इकट्ठा किया हुआ हो। क्योंकि उतना ही मोंढे की गोलाई को गहरा करना दरकार होता है जितना कि बाजू ने इसे नीचे को धकेल दिया होता है।

नुक्स दूर करना—इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० ५० के अनुसार मोंढे की गोलाई को आवश्यकता अनुसार गहरा करो जैसाकि यहां पर निशान १ से जाहिर किया गया है।

यदि कन्धों का गिराओ पहले ठीक हो तो ऐसा करने से कन्धों को भी थोड़ा सा और गिराना पड़ेगा जैसाकि इस चित्र मे डैश वाली लकीरों से निशान ३ और ४ पर जाहिर क्रिया गया है। क्योंकि मोंढे को गहरा करने से यदि कन्धे को नीचा न किया जाय तो कोट के कन्धे शरीर पर ऊपर को उठे रहेगे अथवा कन्धे फूलते रहेगे।

यदि कन्धों का गिराओ ठीक हो और इन्हे किसी प्रकार

से और गिराने की जरूरत न हो तो मोंढ़े की गोलाई के गिद्री पर के निशान को उतना नीचा करना जरूरी होता है जितना कि
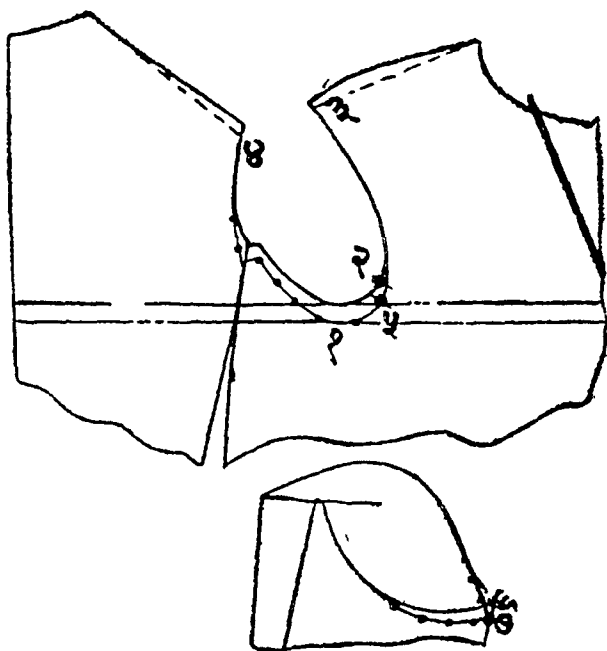
चित्र स० ५०

मोढे को ज्यादा गहरा किया गया हो जैसाकि इस चित्र में २ से ५ तक किया गया है। इसी तरह आस्तीन के गोले और ताल के मोंढे की गोलाईयों को भी गिद्री की तरफ से नीचे किया जाता है जैसाकि इस चित्र मे ६ से ७ तक किया गया है।

दूसरे शब्दों मे कोट के सामने के मोंढे की गोलाई के गिद्री पर के निशान को २ से लेकर ५ तक नीचा करो और उतना

ही आस्तीन की गिद्री को भी नीचे करो जैसाकि इस चित्र मे ६ से ७ तक जाहिर किया गया है ॥

चौथा पाठ

कोटों की आस्तीनों की त्रुटियां

नियम अनुसार हमने दूसरे पाठ में कोटों की पीठ पर की त्रुटियों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया कि किस तरह पीठ पर की ऊपर से लेकर नीचे तक की त्रुटियां मालूम करके उनके न केवल कारण मालूम करना बताया है बल्कि उन सारी त्रुटियों को दूर करने की रीतियां भी चित्रों द्वारा समझाई हैं। इस के बाद तीसरे पाठ में कोटों के सामनों का वर्णन किया अब इस पाठ मे हम कोटों की आस्तीनों की त्रुटियों का वर्णन करते है जिन्हे आप ध्यान पूर्वक पढ़ें और लाभ उठावे।

(१) आस्तीनों के ऊपर से खिच डालते हुए शिकन

(DRAGGING CREASES FROM SLEEVE-HEAD)

यह नुक्स चित्र सं० ५१ से भली भांति जाहिर किया गया है। ऐसे कोट, जिन की आस्तीनों में इस प्रकार का नुक्स हो, न केवल देखने मे बुरे लगते है बल्कि ग्राहक अथवा कोट के पहिनने वाले के कन्धों पर बड़े भारी बोझ का कारण होते हैं जिससे उसे बहुत ही कष्ट मालूम होता है। और वह ग्राहक यह अनुभव करने लगता है कि सारे का सारा कोट कन्धों के ऊपर

ही वोझ डाले हुए है और बाकी सब प्रकार से कोट ठीक प्रतीत होता है।

खिच अथवा शिकन अस्तीन के ऊपर के हिस्से से शुरू होकर तिरछी शकल मे दाये और बाये तरफ अथवा पास और गिद्री की सिलाईयों की तरफ पडने लगते है। जहां गिद्री की सिलाई मोढे के साथ जोडी जाती है उससे बिल्कुल नीचे अथवा गिद्री की सिलाई के ऊपर २ आस्तीन मे इस तरह के शिकन पड़ते नजर आते है जिन से यहा पर कपड़ा इकट्ठा हो जाता है और देखने वाले को ऐसा प्रतीत होता है कि आस्तीन की गिद्री जरूरत से ज्यादा लम्बी है। और पीठ पर आस्तीन के निचले हिस्से, जिसे ताल कहते हैं, के पीछे की तरफ भी बहुत सा कपडा इकट्ठा हुआ रहता है जिससे यह प्रतीत होता है कि

चित्र सं० ५१

यदि सामने के मोंढे को और गहरा किया जाय और ताल के मोंढ की गोलाई को भी गहरा किया जाय तो किसी प्रकार का नुक्स नही रहेगा।

इस नुक्स का आस्तीनों की मोहरियों पर यह प्रभाव पडता है कि यह अथवा आस्तीन की मोहरिया ग्राहक के बाजू से बाहिर की ओर से दूर उठ खडी होती है और गिद्री की

सिलाई पर भी आस्तीन की मोहरियां आगे को निकली हुई नज़र आती हैं जोकि बहुत ही बुरी मालूम देती है।

कारण—जैसाकि दोस्त दर्जिया मे कोट की आस्तीन काटते समय बताया जा चुका है कि कोट की पीठ पर के उस स्थान से लेकर जहां पर कि आस्तीन का पास जोड़ा जाता है ऊपर की तरफ़ कन्धे के बाहिर वाले सिरे तक जो नाप है आस्तीन के गोले के मोंढे की गोलाई की ऊंचाई इसी के अनुसार होनी चाहिए। चित्र सं० ५२ मे कोट के सामने और पीठ को जोड़ कर दिखलाया गया है। इस मे निशान ३ से पीछे जो तीर का सा निशान बना हुआ है वह उस निशान को जाहिर करता है जहां पर कि कोट की आस्तीन के पास अथवा बाहिर की तरफ़ की सिलाई पीठ के मोंढे की गोलाई के साथ जोड़ी जायगी,
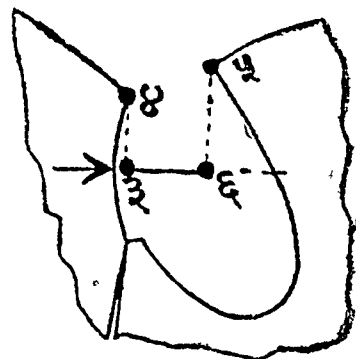
चित्र सं० ५२

निशान ४ और ५ बारी २ पीठ और सामने के कन्धों के बाहिर वाले सिरों को जाहिर करते हैं। उस तीर वाले निशान मे से एक लकीर सकोयर की गई है जोकि निशान ३ और ६ मे से गुज़रती है। अब निशान ४ और ५ मे से इस लकीर पर नीचे की तरफ़ लकीरें सकोयर करो जोकि इस लकीर को बारी २ निशान ३ और ६ पर आकर मिलती हैं।

चित्र सं० ५३ मे १ से २ तक का नाप आस्तीन के गोले की

गोलाई की ऊंचाई (Crown height of sleeve) कहलाती है। यह ऊंचाई चित्र सं० ५२ के ५ से ६ तक और ४ से ३ तक के नापों के फर्क के बराबर होती है। अर्थात लकीर ५-६ लकीर ४-३ से जितनी बडी हो उसके बराबर चित्र सं० ५३ मे १ से २ तक को बनाना चाहिये। परन्तु इस नुक्स वाले कोट मे इसे ऐसा नहीं बनाया गया बल्कि इस गोलाई की ऊंचाई को
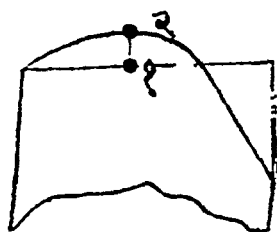
चित्र सं० ५३

जरूरत से छोटा बनाया गया है जिस के कारण से यह नुक्स पड गया है जो चित्र सं० ५१ से जाहिर किया गया है।

आजकल के नये फैशन वाले कोटों के कन्धों की लम्बाई प्रति दिन घटती चली जाती है। अर्थात् आजकल जो फैशन चल पड़ा है उसमे कोट के सामने और पीठ के कन्धों की सिलाई की लम्बाई पहले की अपेक्षा छोटी होती चली जा रही है। ऐसी अवस्था मे जरूरी है कि अस्तीन के गोले की मोंढे की गोलाई की ऊंचाई पहले से ज्यादा हो जाय जैसाकि चित्र सं० ५४ मे करके दिखाया गया है। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो जरूरी है कि कोट की आस्तीन मे इस प्रकार का नुक्स पड जाय।
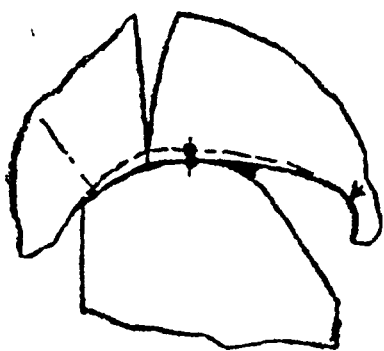
चित्र सं० ५४

ट्राई करते समय कोट के मोंढे की सिलाई को पीठ पर पास की सिलाई वाले निशान से लेकर ऊपर से होते हुए आगे की तरफ़ गिद्री की सिलाई वाले निशान तक खोल दो अर्थात् मोंढे की गोलाई के साथ २ जहां २ आस्तीन के गोले के मोंढे की गोलाई जोड़ी गई हो वहां २ से इसे खोल दो और ताल के मोंढे को जैसे का तैसा जुड़ा रहने दो जैसाकि चित्र सं० ५५ मे ज़ाहिर किया गया है। ऐसा करने से सारे के सारे शिकन अथवा वल स्वयम् ही दूर हो जायेंगे और आस्तीन के गोले का मोंढा कन्धे से कुछ दूर नीचे को चला जायगा। गोले का मोंढा सामने और पीठ के मोंढे की गोलाई अथवा कन्धे से जितना दूर चला जायगा समझना चाहिये कि गोले के मोंढे की गोलाई को उतना ऊंचा करने से नुक्स जाता रहेगा। इस तरह से हमने मालूम कर लिया है कि नुक्स किस तरह दूर किया जा सकता है अब हम आगे इसे दूर करने की रीति बताते हैं।
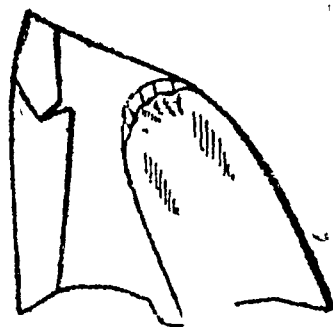
चित्र सं० ५५

नुक्स दूर करना—यदि गोले के मोंढे की गोलाई के ऊपर कुछ दबाव रखा हुआ हो तो उसे बाहिर निकाल कर नुक्स दूर किया जा सकता है जैसाकि चित्र सं० ५६ में १३ से १४ तक करके बिन्दियों वाली लकीरों की सहायत से मोंढे की गोलाई फिर बना कर दिखाई गई है।

परन्तु जब यहां पर किसी प्रकार का दबाव न रखा गया हो

तो मोंढे को गिद्री की तरफ से आवश्यकता अनुसार नीचा करो

जैसाकि चित्र सं० ५६ मे १५ से १६ तक करके दिखाया गया है। इसी तरह इसे पास की तरफ़ से भी उतना ही नीचा करो जैसाकि इस चित्र मे १८ से १६ तक करके दिखाया गया है। अब १६ से लेकर १४ मे से होते हुए १६ तक गोले के मोंढे की गोलाई डैश वाली लकीर के अनुसार बनाओ।
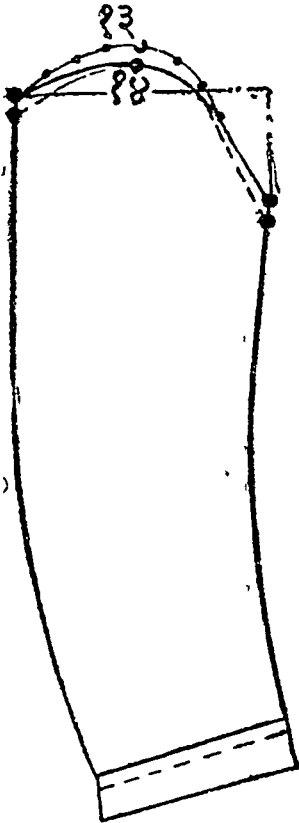
ऐसा करने से आस्तीन के गोले की लम्बाई पहले से छोटी हो जायगी इस कमी को पूरा करने के वास्ते आस्तीन के गोले का मोहरी पर का दबाव उतना ही बाहिर निकालो जितना कि इसके मोंढे की गोलाई को पास और गिद्री की तरफ़ से नीचा किया हो। अर्थात् ऐसा

चित्र सं० ५६

करने से आस्तीन के गोले की लम्बाई मे जो कमी हुई थी वह पूरी हो गई है और नुक्स भी बिल्कुल जाता रहा है॥

(२) आस्तीन के गोले पर ऊपर मोंढे की सिलाई से नीचे सीधे शिकन पड़न। जिनसे यह जाहिर हो कि कन्धा गोले को नीचे की तरफ़ धकेल रहा है।

HORIZONTAL DEPRESSION UNDER SLEEVE-) HEAD WADDING)

चित्र सं० ५७ से यह नुक्स ज़ाहिर किया गया है। यह नुक्स उस समय बहुत पड़ता था जबकि कोट के कन्धों की सिलाई की लम्बाई बड़ी हुआ करती थी परन्तु आजकल यह नुक्स बहुत थोड़ा पड़ता है क्योंकि कोट के कन्धों की सिलाई की लम्बाई प्रति दिन घटती चली जाती है। यह नुक्स उस नुक्स के बिल्कुल उलट है जोकि इससे पहले बताया जा चुका है इस नुक्स को छोड़ कर आस्तीन बाकी सब प्रकार से बिल्कुल ठीक है ? और आस्तीन का गिराओ (Hang) भी ठीक है जिससे देखने वाला यह विचार करने लगता है कि मोंढे की सिलाई मे जो रूई की गद्दी (Wadding) दी जाती है वह जरूरत से ज्यादा दी गई है जिसके कारण से आस्तीन इस भाग पर नीचे को धकेली जाती है और इस प्रकार के शिकन पड़ते नज़र आते हैं।
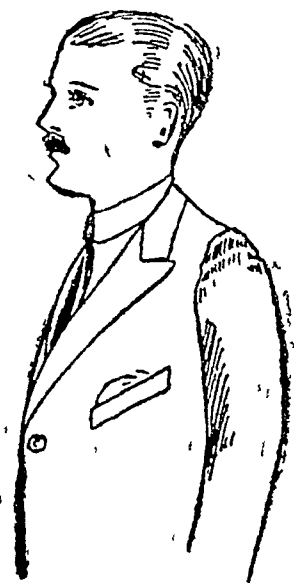
चित्र सं० ५७

ज़ब बाजू बाहिर की तरफ़ उठाया जाता है (आगे की तरफ़ नही बल्कि बाहिर की तरफ़) तो मोंढे के पास बाजू के ऊपर से लेकर नीचे बग़ल तक साफ़ तौर पर खिच पड़ती नज़र आती है जिस से बाजू पर बहुत सा दबाव पड़ता है और बहुत सी तकलीफ़ होती है।

कारण—जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है यह नुक्स ऊपर वाले नुक्स के बिल्कुल उलट है वैसे ही इसका कारण भी उसका उलट है अर्थात् जहां उस नुक्स का कारण गोले के मोंढे की गोलाई की ऊंचाई का थोड़ा होना था वहां यह नुक्स इस ऊंचाई के ज्यादा होने के कारण से पड़ गया है। न केवल गोले के मोंढे की गोलाई की ऊंचाई का ज्यादा होना ही इस नुक्स का कारण है बल्कि मोंढे की सिलाई के इस हिस्से पर जो गोले के मोंढे मे "नम" (Gathering) दी जाती है उसका जरूरत से कम होना भी इसका कारण है अर्थात् न केवल गोले का मोंढा ज्यादा ऊंचा है बल्कि कम चौड़ा भी है।

यह भी हो सकता है कि कोट के कन्धे ग्राहक के कन्धों से ज्यादा लम्बे बनाए गये हों और ग्राहक के बाजू पर आकर गिरते हों परन्तु आस्तीन के मोंढे को यदि उतना ही ऊंचा बनाया जाता जितना कि कन्धे की लम्बाई ज्यादा है तो शायद यह नुक्स न पड़ता परन्तु यहा पर आस्तीन के मोंढे की गोलाई की ऊंचाई को कम नही किया गया जिससे यह फ़ालतु कपड़ा पास की सिलाई के ऊपर वाले सिरे से लेकर, जहा पर कि इसे कोट की पीठ के साथ जोड़ा जाता है ऊपर मोंढे की सिलाई तक इकट्ठा हो जाता है जोकि इस नुक्स की शकल मे नजर आता है।

ट्राई करते समय मोंढे की सिलाई को कन्धे की सिलाई के दोनों तरफ़ उस स्थान पर खोल दो जहांकि कोट का मोंढा गोले के मोंढे की गोलाई के साथ जोड़ा गया है अर्थात् सामने मे जहा

आस्तीन की गिद्री मोंढे के साथ जोड़ी जाती है वहां से लेकर ऊपर से होते हुए मोंढे की सिलाई को उस स्थान तक खोल दो जहां पर कि आस्तीस का पास पीठ के साथ जोड़ा गया है। ऐसा करने से जितना आस्तीन के मोंढे की गोलाई का फ़ल्तु कपड़ा हो उसे कन्धे के ऊपर सुरका दो। जिनना कपड़ा कन्धे के ऊपर चला जाय समझना चाहिये कि आस्तीन के मोंढे की गोलाई उतनी ज्यादा ऊंची है इस ज्यादती को नोट करके निशान लगा लेना चाहिये।

नुक़्स दूर करना—ऐसी अवस्था में केवल आस्तीन के गोले में ही तबदीली करनी चाहिये। जैसाकि चित्र सं० ५८ मे दिखाया गया है। गोले के मोंढे की गोलाई की ऊंचाई को चित्रानुसार १ से २ तक उतना नीचा करो जितना कि ट्राई करते समय निशान लगाया हो। इस के इलावा पास की सिलाई पर के दबाव को बाहिर निकाल कर मोंढे की चौड़ाई को ज्यादा करो ताकि गोले के मोंढे मे नम (Gathering) पूरी आसके और यदि नुक्स का कारण आस्तीने न हों बल्कि कन्धों के जरूरत से ज्यादा लम्बा होने के कारण से यह नुक्स पड़ गया हो और आस्तीनें सब प्रकार से बिल्कुल ठीक हों तो कन्धे की ज्यादती को मोंढे की तरफ़ से
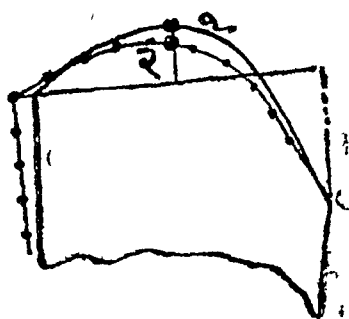
चित्र सं० ५८

छांट कर दूर कर लेना चाहिये और आस्तीनों को जैसे का तैसा रहने देना चाहिये ।

(३) कोहनी से ऊपर २ पास का जरूरत से ज्यादा लम्बा होना

SURPLUS LENGTH FROM ELBOW UPWARDS AT HINDARM—SEAM

इस नुक्स वाला कोट साईड और पीठ पर बहुत बुरा मालूम देता है परन्तु सामना बिल्कुल ठीक नजर आता है जैसाकि चित्र सं० ५६ से जाहिर किया गया है । आस्तीन के पास की सिलाई कुहनी से ऊपर २ बहुत ही बुरी मालूम देती है और यहा पर शिकन ही शिकन नजर आते हैं जिससे आस्तीने न केवल जहिरा तौर पर ही बुरी नजर आती हैं बल्कि तंग भी मालूम होती है । इसके इलावा आस्तीनो की मोहरिया आगे अथवा गिद्री की तरफ से बाजू से अलग दूर उट खडी होती है ।
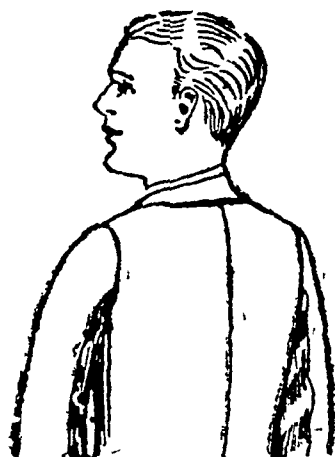
चित्र सं० ५६

मोंढे पर गिद्री के निशान से २ इंच ऊपर से लेकर कुहनी की तरफ को भी थोडी सी खिच पडती रहती है । यह खिच साधारण तौर पर इतनी बुरी नहीं लगती और बहुत स्पष्ट भी

नज़र नहीं आती परन्तु यह खिच होती ज़रूर है और एक प्रकार का नुक्स माना गया है।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि कोट तो बनाना है एक ऐसे आदमी के वास्ते जिसका शरीर अकड़ा हुआ है अथवा बाज़ू नार्मल शकल से पीछे को लटके हुए हैं परन्तु कोट की आस्तीने काटते समय इन्हे ऐसे आदमी के अनुसार काटा गया है जिसका शरीर आगे को झुका हुआ है अथवा आस्तीनें नार्मल शकल की अपेक्षा पीछे को गिरती हैं।

जब ग्राहक कोट पहिन लेता है तो स्वभाविक तौर पर उसके बाजू पीछे को गिरते हैं क्योंकि जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है कि ग्राहक का शरीर अकड़ा हुआ (Erect figure) होने के कारण से उस के बाजू पीछे को जाते है तो उस अवस्था में बाजू के पीछे को जाने से कोट की आस्तीनें भी अपनी असली जगह से पीछे को धकेली जाती है जिससे पास की कुहनी से ऊपर २ की फाल्तु लम्बाई शिकनों मे तबदील हो जाती है जैसाकि चित्र सं० ५६ से जाहिर किया जा चुका है।

ट्राई करते समय आस्तीन के पास की सिलाई जिस जगह पर कोट के मोंढे के साथ जोड़ी जाती है उससे दो २ तीन तीन इंच दोनों तरफ मोंढे की सिलाई को खोल दो और फाल्तु कपड़े को ऊपर की तरफ निकाल दो परन्तु इस बात का विचार जरूर कर लो कि कही इतना ज्यादा कपड़ा भी ऊपर को निकाल दो कि बाजू को जरा भर आगे को ले जाना भी

मुश्किल मालूम हो अर्थात् बाजू को साधारण अवस्था मे आगे पीछे हिलाने के वास्ते जरूर स्थान रखा जाना चाहिये।

कई लोग इस नुक्स को भली प्रकार न समझ कर इसे कारीगरों की ग़लती का परिणाम समझ लेते है और कहते हैं कि कारीगरो ने मोंढे की जड़ाई ठीक तौर पर नही की और कारीगरों को डांट कर कह देते है कि मोंढे को ठीक कर के लगाओ तो नुक्स जाता रहेगा। परन्तु वास्तव मे ऐसा कभी नही करना चाहिये क्योंकि इस नुक्स का कारण वह नही होता जो उन्होंने समझ रखा होता है।

चित्र सं० ६० के अनुसार आस्तीन के गोले के पास को ६ से ९ तक नीचा करो। ६ से ९ तक उतना ही नीचा करो जितना कि ट्राई करते समय आस्तीन के पास को ऊपर की तरफ़ सुरकाया हो। इस बात का विचार जरूर कर लेना चाहिये कि निशान ९ निशान ६ की विल्कुल सीध मे न हो बल्कि उससे जरा बाहिर की तरफ़ हो ताकि ६ से ९ तक नीचे आते समय कोट की आस्तीन का मोंढा जितना तंग हो गया है निशान ९ को वाहिर करने से यह उतना ढीला किया जा सके। निशान ९ से
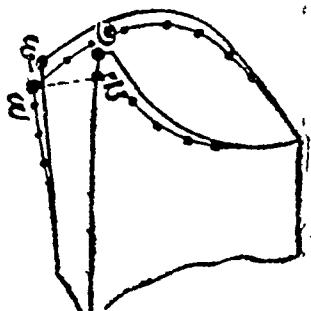
चित्र सं० ६०

नीचे की तरफ़ कोहनी तक आस्तीन की गोलाई बनाओ और ९ से आगे की तरफ़ गोले के मोंढे की गोलाई बनाओ। पास और मोंढे

की गोलाईयां बिन्दियों वाली लकीरों से जाहिर की गई हैं।

इसी तरह ताल को भी पास की तरफ़ से ७ से ८ तक उतना नीचा करो जितना कि गोले को ६ से ६ तक किया था अर्थात् जिस तरह पहले निशान ७ निशान ६ की सीध मे था उसी तरह निशान ८ भी निशान ६ की सीध मे होना चाहिये। निशान ८ से आगे की तरफ़ बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार ताल के मोंढे की गोलाई बनाओ।

(४) गिद्री की सिलाई के आर पार शिकन पड़ना

(CREASES ACROSS FOREARM)

यह नुक्स चित्र सं० ६१ से जाहिर किया गया है जैसाकि इस चित्र मे बाजू के आगे की तरफ़ जहां पर कि आस्तीन की गिद्री की सिलाई गिरती है तीन चार शिकन (Creases) पड़ते दिखलाए गए हैं। यह नुक्स शुरू २ मे इतना ज़ाहिर नहीं होता परन्तु जब कोट कुछ दिन पहिना जाता है, और कोट पहिन कर बाजू को आगे की तरफ़ घुमानेसे यह नुक्स ज्यादा स्पष्ट तौर पर नजर आने लगता है। इस प्रकार के शिकन प्रायः उस समय अधिक स्पष्ट तौर पर नजर आते हैं जबकि बाजू अपनी वास्तविक अवस्था मे अथवा नीचे की तरफ़ लटका हुआ हो। इस नुक्स
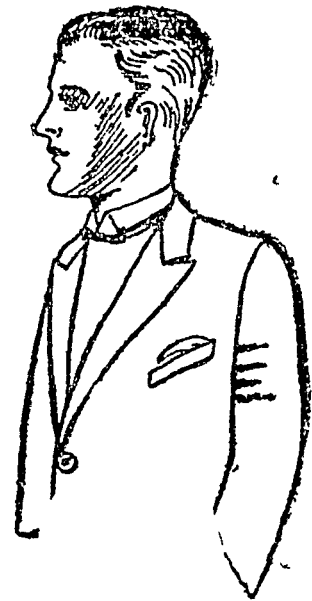
चित्र सं० ६१

के कारण से न केवल ऊपर बताए गये शिकन ही पडते है बल्कि ग्राहक के बाजू के आगे की तरफ़ गुट (Cuff) पर आस्तीन की मोहरी दबाओ डालती रहती है जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि कोट की आस्तीन तो पीछे को जाना चाहती है परन्तु ग्राहक का बाजू उसके अनुसार पीछे को जाने की बजाय उसे आगे को अपनी असली अवस्था मे रोके रखता है जिससे आस्तीन की मोहरी बाजू पर पीछे की तरफ़ दबाओ डालती रहती है। जब कोट पहिन कर बाजू आगे को किया जाता है तो बड़ी भारी तकलीफ होती है अथवा बाजू को ऊपर लेजाने मे भी कष्ट होता है।

कारण —यदि इस नुक्स की जाहिरा शकल यह हो कि केवल आस्तीन मे ऊपर बताये गये शिकन ही पड़ते नजर आते हो जबकि बाजू अपनी वास्तविक अवस्था मे नीचे की तरफ लटके हुए हों तो इस नुक्स का कारण स्पष्ट रूप मे यह होता है कि मोढे की गिद्री और पास की सिलाईयों के निशानों पर यदि गुनिया (square) के बाजू इस प्रकार से रख दिये जायें कि गुणिया का छोटा बाजू तो मोंढे पर के पास की सिलाई वाले निशान पर हो और बडा बाजू गिद्री वाले निशान पर से होता हुआ इस तरह नीचे को जावे जिस तरह कि कोट की आस्तीन का गिराओ (ballance) रखना हो अर्थात् यदि आस्तीन का गिराओ नार्मल हो तो गुणिया के इस बाजू को बाहिर वाली नीचे की फ़क ५ की चौड़ाई के आगे की तरफ वाले आधे हिस्से के ठीक

बीच मे रखना चाहिये और यदि बाजू का गिराओ आगे तथा पीछे को रखना हो तो आवश्यकता अनुसार गुणियां के इस बाजू को भी ऊपर बताई गई रीति से जरा आगे तथा पीछे को रख लेना चाहिये। इस प्रकार से गुणिया को रख कर गुणियां के कोने से लेकर गिद्री के निशान तक को नापने से जो नाप प्राप्त होता है जो चित्र सं० ६२ मे १ से २ तक जाहिर किया गया है, उसे आस्तीन के मोंढे का गिराओ कहते है। यह नाप जरूरत से छोटा होने के कारण से ऊपर का नुक्स पड़ जाता है सरल शब्दों मे इस नुक्स का कारण पास की सिलाई का जरूरत से छोटा होना है।

अर्थात् इस कोट की आस्तीन का गिराओ ज्यादा पीछे की तरफ रखा गया है परन्तु ग्राहक के बाजू उसके प्रतिकूल आगे को गिरते है। जब ग्राहक कोट पहिन लेता है तो बाजू अपनी वास्तविक अवस्था मे कोट की आस्तीन को आगे की ओर खेचता है जिससे गिद्री पर कपड़ा इकट्ठा होकर शिकन पैदा करता है।

ट्राई करते समय मोंढे की सिलाई को पास की सिलाई के साथ २ खोल दो अथवा उधेड़ दो। ऐसा करने से कोट की आस्तीन मोंढे पर के इस भाग से दूर हट जायगी। अब आपने देखना यह है कि आस्तीन बाकी कोट से मोंढे की सिलाई पर कितनी दूर चली जाती है। यह जितनी दूर चली गई हो उतना ही पास की सिलाई का छोटा होना इस नुक्स का कारण होता है। अर्थात् आस्तीन के मोंढे के पास और गिद्री के ऊपर के निशानों अथवा सिरों पर से सक्रोयर को गई लकीरों के दरमियान का

नाप जरूरत से छोटा होने से यह नुक्स पड़ जाता है। इस नुक्स को नीचे लिखी रीति से दूर किया जा सकता है:—

आस्तीन को ठीक करने के वास्ते गिट्री के ऊपर के सिरे को चित्र स० ६२ के अनुसार उतना नीचा करो जितना के पास और गिट्री के ऊपर के सिरों मे से सकोयर की गई लकीरों के दरमियान का नाप छोटा हो अथवा जितना कि पास की सिलाई का नाप जरूरत से छोटा हो। अथवा जैसाकि इस चित्र मे ४ से ५ तक करके दिखाया गया है और आस्तीन को मोहरी
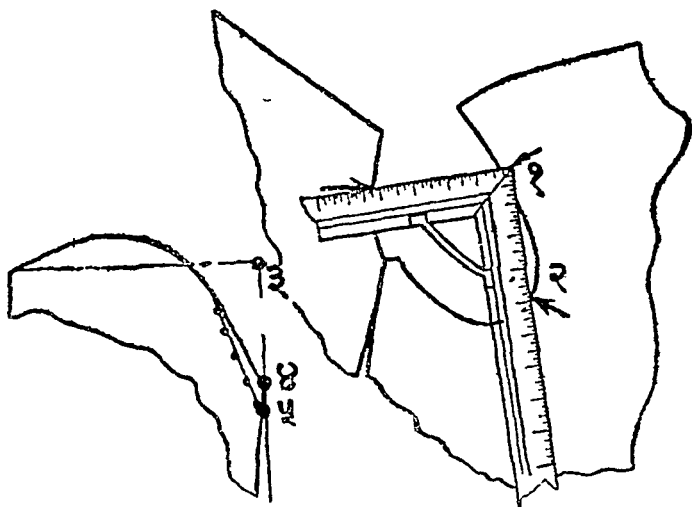
चित्र सख्या ६२

पर से खोल कर उतना लम्बा करो जितना कि आस्तीन की गिट्री को ४ से ५ तक नीचा किया हो। ऐसा करने से पास की सिलाई की लम्बाई भी आवश्यकतानुसार पहले से ज्यादा हो जायगी

और गिद्री नीचा करने से जितनी छोटी हुई है उतनी आस्तीन की लम्बाई बढाने से बड़ी हो जायगी। अर्थात् गिद्री की लम्बाई पहले की तरह ठीक हो जायगी।

परन्तु जब नई आस्तीने बनाई जा रही हों तो चित्र सं० ६२ के अनुसार कोट के मोंढे पर गुणियां इस प्रकार से रखना चाहिये कि इस का छोटा बाजू तो पास के निशान पर हो और बड़ा बाजू गिद्री के निशान पर जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है।

अब गुणियां के लम्बे बाजू को आवश्कतानुसार उतना आगे अथवा पीछे की तरफ़ झुका कर रखो जिस तरह कि आस्तीन का झुकाओ आगे तथा पीछे की तरफ़ रखना हो जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है। अब गुणियां के लम्बे बाजू के साथ २ निशान १ से २ तक के नाप को मालूम करो निशान १ तो गुणियां के कोने को जाहिर करता है जहाँ पर कि इसके दोनों बाजू एक दूसरे से मिलते है और निशान २ इसके लम्बे बाजू पर के उस निशान को ज़ाहिर करता है जहाँ पर कि यह अपनी असली अवस्था मे झुका कर रखा हुआ गिद्री के निशान से मिलता है।

आस्तीनों का चित्र बनाते समय चित्र संख्या ६२ के अनुसार ३ से ४ तक के नाप को हमेशा १ से २ तक के नाप के बराबर रखना चाहिये और इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि कारीगर लोग सिलाई करते समय आस्तीन की गिद्री और पास को मोंढे की गिद्री और पास के निशानों के साथ ठीक ठीक जोड़ें। कहीं ऐसा न हो कि उनके ठीक न जोड़ने से आपकी

कटाई की सारी चतुरता और यत्न मिट्टी मे मिल जाय और फिर नुक्स पडने लग जाय ॥

(५) बाजू आगे करते समय आगे की तरफ बाजू पर दबाव पडना

CONTRACTIONS OVER THE FRONT OF ARM WHEN REACHING FARWARD

प्राय प्रत्येक ग्राहक ऐसा चतुर नही होता कि वह झट प्रत्येक ऐसे नुक्स को समझ सके जिसे कि एक चतुर टेलर अथवा कटर, जिनका दिन रात काम ही यह होता है, आसानी से जान लेता है। परन्तु कई नुक्स ऐसे भी होते है जिनसे कोट पहिनने मे तंग लगता है ऐसे नुक्सों को ग्राहक शीघ्र ही अनुभव कर लेता है।

जब बाजू नीचे की तरफ लटकते रहे तो कोट की आस्तीनों का गिराओ बिल्कुल ठीक होता है परन्तु ज्यो ही बाजू आगे को किये जाते है त्यों ही सामने मे मोढे पर तंगी मालूम होने लगती है और बाजू के ऊपर बहुत सा दबाव पडने लगता है॥ इस से कोट की पीठ पर सीधे शिकनों कीश कल मे खिच पडने से पीठ पर कोट बहुत बुरा दिखाई देता है। खिच पीठ पर मोंढे के पास पडती नजर आती है। यहा पर इस बात का लिख देना भी जरूरी मालूम होता है कि पीठ पर साधारण अवस्था मे किसी प्रकार का नुक्स नजर नहीं आता। जितनी भी तकलीफ अथवा बुराई होती है सब की सब कोट के सामने मे ही होती

है चित्र देखो संख्या ६३।

कारण—इस नुक्स का कारण कोई साधारण नहीं है। इस वास्ते ऐसे नुक्स को दूर करने से पहले इसके कारण को भली भांति मालूम करना अति आवश्यक है। सब से जरूरी बात यह है कि मालूम किया जाय कि नुक्स वास्तव मे कोट की आस्तीनों मे है अथवा बाडी मे। प्रायः इस प्रकार का नुक्स बाड़ी ही मे होता है। इस नुक्स का कारण सामने के कन्धे का जरूरत से कम ऊंचा होना है अथवा मोंढे पर के सामने की तरफ़ के गिट्री वाले निशान से लेकर पीठ के बीच की सिलाई तक के नाप के जरूरत से छोटा होने से यह नुक्स पैदा होता है। इन दोनों मे से कोई एक कारण इस नुक्स का क्यों न हो कन्धे का सीधा होना अथवा आगे की तरफ होना इस नुक्स पर काफी प्रभाव डालता है। और सामने पर की मोंढे की सिलाई बाजू के ऊपर चढ़ जाती है। जब बाजू आगे को किया जाता है तो सामने पर की मोंढे की सिलाई बाजू के ऊपर चढ जाती है और बाजू के उस भाग पर आस्तीन काफ़ी दबाव डालती रहती है। परन्तु जब नुक्स का कारण कोट की बाडी न हो बल्कि नुक्स वास्तव मे आस्तीन मे ही हो तो यह समझना

चित्र सं० ६३

चाहिये कि नुकस आस्तीन के नीचे के हिस्से अथवा ताल मे है। अर्थात् उस अवस्था मे ताल के मोंढे का जरूरत से ज्यादा गहरा होना ही इस नुकस का मुख्य कारण होता है। इस ताल के मोंढे की गहराई के ज्यादा होने से ही शिकन पडते है जो बाजू पर दबाव अथवा वोझ का कारण होते है ऐसी अवस्था मे ताल की मोंढे की गोलाई को पास की तरफ से घटा कर नीचा करो। ऐसा करने से ताल के मोंढे की गहराई तो कम हो जायगी और आस्तीन की लम्बाई जितनी कम हो जाय मोहरी पर के दबाव को वाहिर निकाल कर उस कमी को पूरा करो।

ट्राई करते समय यह मालूम करने के लिये कि नुकस कोट की बाडी मे है अथवा आस्तीनों मे, कोट के मोंढे की सिलाई
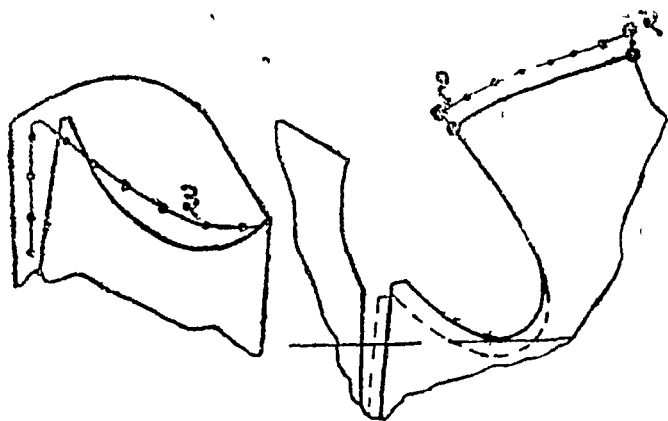
चित्र सं० ६४

खोल कर आस्तीनों को बाडी से अलग करो फिर कोट के मोंढे के बीच मे आगे की तरफ अपने हाथ की उङ्गली डाल कर

मालूम करो कि मोंढा तंग तो नही अथवा मोंढे की गोलाई कही बाज़ू के ऊपर तो नही चढ़ आई। यदि मोंढे की गोलाई सामने की तरफ़ तंग हो अथवा बाज़ू के ऊपर चढ़ आई हो तो नुक्स कोट की बाडी मे समझना चाहिये और यदि यह दोनों बातें ठीक हों तो समझना चाहिये कि नुक्स कोट की आस्तीनों मे है।

यदि नुक्स कोट की बाडी मे हो तो चित्र सं० ६४ के अनुसार कोट के सामने के कन्धे पर के दबाव को बाहिर निकाल दो जैसाकि इस चित्र मे १ से २ तक करके दिखाया गया है। ऐसा करने से कोट के सामने के कन्धे से लेकर मोंढे की गोलाई तक का नाप जिसे फ्रंट शोल्डर (front shoulder) कहते हैं, पहले से बड़ा हो जायगा जिससे मोंढे की तंगी जो इस नुक्स का मुख्य कारण है, जाती रहेगी और नुक्स दूर हो जायगा।

परन्तु उस अवस्था में जबकि कोट के सामने मे कन्धे की सिलाई पर का दबाव न रखा गया हो, इस नुक्स को दूर करने के वास्ते सामने के मोंढे की गोलाई को चित्रानुसार गहरा करो और सामने को साईड पर से पहले की अपेक्षा ऊपर को चढ़ा दो। अर्थात् सामने के साईड को ऊपर से जरा छोटा कर दो और नीचे घेरे पर का दबाव बाहिर निकाल कर साईड की लम्बाई के नाप को पूरा करो। ऐसा करने से कोट का सामना तो ऊपर चढ़ाया जायगा और पीठ को उतना ही नीचे उतारा जायगा जैसाकि इस चित्र मे डैश वाली लकीरों से जाहिर किया गया है। इसके साथ ही ऐसी अवस्था मे चित्रानुसार सामने के साईड पर

के दबाव को भी बाहिर निकालने की जरूरत होती है। ऐसा करने से यदि कोट की बाडी मे ही नुक्स हो तो बिल्कुल ठीक हो जाता है।

परन्तु जब नुक्स कोट की बाडी मे होने की बजाय कोट की आस्तीन मे हो तो जैसाकि पहले बताया जा चुका है, इसका कारण आस्तीन के ताल की मोंढे की गोलाई का जरूरत से ज्यादा गहरा होना है। इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्रानुसार ताल के मोंढे की गोलाई की गहराई को कम करो जैसाकि इस चित्र मे निशान ३ पर बिन्दियों वाली लकीर से करके दिखाया गया है॥

(६) ताल के आगे की तरफ़ के भाग में शिकन पड़ना (CREASES AT THE FRONT PART OF UNDER-SLEEVE)

यह नुक्स चित्र सं० ६५ से जाहिर किया गया है। इस मे आस्तीन का गोला तो बिल्कुल ठीक है। इसमे केवल एक नुक्स की सम्भावना जरूर है। वह यह कि इसकी गिद्री की सिलाई जरूरत से ज्यादा बाहिर की तरफ को होने के कारण से नजर आती रहती है। ताल मे गिद्री की सिलाई पर सामने की तरफ शिकन

चित्र सं० ६५

पड़ते नजर आते है। कभी २ इस के साथ ही पास की सिलाई पर भी कुच्छ शिकन पडते नज़र आते है जिससे यह प्रतीत होता है कि पास की सिलाई की लम्बाई जरूरत से ज्यादा है।

कारण-इस नुक्स का कारण यह है कि आस्तीन को बाडी के साथ जोडते समय इसकी गिद्री मोंढे के साथ जरूरत से ज्यादा आगे अथवा ऊपर को जोड़ी गई है। जिससे गिद्री की सिलाई तो बहुत ज्यादा ऊपर को चली आती है और पास की सिलाई अपनी असली अवस्था मे होती है। जिसका परिणाम न केवल गिद्री की सिलाई का जरूरत से ज्यादा ऊपर को आकर नजर आता रहना है बल्कि इसके साथ ही पास की सिलाई अपनी असली अवस्था मे होने के कारण से ताल के पीछे की तरफ से खिच डालती रहती है जोकि ताल मे गिद्री की सिलाई पर शिकन पैदा करती है।

इसके इलावा इसका कारण यह भी हो सकता है कि कोट का फ्रण्ट शोल्डर (कन्धे से लेकर सामने में मोंढे की गोलाई पर गिद्री तक का नाप) जरूरत से छोटा है और कोट के कन्धे से लेकर मोंढे पर गिद्री तक खिच पड़ती रहती है जिससे मोंढे ऊपर को उठाये जाने से न केवल गिद्री की सिलाई अपनी असली जगह से ऊपर को उठाई जाती है बल्कि ताल मे भी खिच पड़ने के कारण से आगे की तरफ शिकन पडने लग जाते है।

ट्राई करते समय कोट के मोंढे की सिलाई खोल कर आस्तीन को बाड़ी से अलग करो। और फिर अपनी उङ्गली

को मोंढे की गोलाई के बीच मे डाल कर मालूम करो कि क्या मोंढे की गोलाई जरूरत से कम गहरी अथवा ज्यादा ऊंची तो नहीं है। अर्थात् कन्धे से लेकर मोंढे की तरफ खिच पड़ती तो नजर नहीं आती। यदि ऐसा हो तो समझना चाहिये के नुक्स फ्रूण्ट शोल्डर के छोटा होने के कारण से है और यदि उस अवस्था मे कोट सर्व प्रकार से ठीक हो तो इस नुक्स का कारण स्पष्ट तौर पर यह समझना चाहिये कि बाडी के साथ आस्तीन जोड़ते समय गिट्री जरूरत से ज्यादा ऊंची जोडी गई है॥

यदि नुक्स कोट की बाडी मे हो जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है तो उस चित्र सं० ६६ के अनुसार कोट के सामने का कन्धे पर का दबाव बाहिर निकाल कर उसे दूर करना चाहिए जैसाकि इस चित्रमे निशान १ से २ तक और ४ से ३ तक करके दिखाया गया है। ऐसा करने से फ्रण्ट शोल्डर के नाप मे जो कमी थी वह पूरी हो जाने से नुक्स जाता रहेगा।

चित्र सं० ६६

परन्तु जब नुक्स कोट की बाडी मे न हो बल्कि कोट की बाडी तो सर्व प्रकार से ठीक हो और नुक्स केवल आस्तीन की गिट्री को बाडी के मोंढे की गोलाई के साथ जरूरत से ज्यादा ऊंचा जोडा जाने के कारण से हो
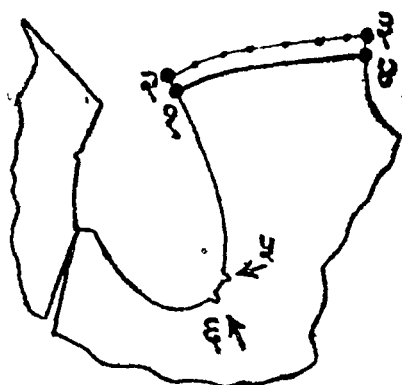
तो मोंढे की गोलाई पर गिद्री के निशान को आवश्यकता अनुसार नीचा करने से नुक्स दूर किया जा सकता है जैसाकि इस चित्र मे ५ से ६ तक करके दिखाया गया है ॥

(७) ताल में पास से लेकर गिद्री तक गोल शिकन पड़ना ।

(CURVED CREASES FROM HINDARM TO FORE-ARM ON UNDERSLEEVE)

कई ग्राहक इस प्रकार के नुक्स की प्ररवाह नही करते बल्कि वह विचार करते हैं कि आस्तीन को बाजू के साथ घुमाने के वास्ते इस प्रकार की ज्यादती का होना अत्यावश्यक है और यदि इस प्रकार की ज्यादती से आस्तीन के ताल मे शिकन भी पड़ने लगे तो उनकी परवाह नही करनी चाहिये । परन्तु कई लोग ऐसे भी होते है जोकि पहली प्रकार के ग्राहकों से भिन्न विचार रखते, हैं वह पहली प्रकार के लोगों की तरह यह नही चाहते कि उनके कोट इतने ढीले हों कि चाहे उनमे शिकन ही क्यों न पड़ जाये वह परवाह नही करते बल्कि वह तो अपने कोट को इतना फिट बनवाना चाहते है कि उनके शरीर का प्रत्येक अङ्ग स्पष्ट तौर पर नजर आता रहे और कोट मे भी न तो किसी प्रकार के शिकन पड़े और न ही इस मे ग्राहक किसी प्रकार की तंगी अनुभव कर सके । वह नुक्स चित्र सं० ६७ से जाहिर किया गया है ।

इस नुक्स का कारण ऊपर वाले नुक्स के कारण से उलट है अर्थात् जहां ऊपर वाले नुक्स का कारण अस्तीन के ताल की कीमोंढे गोलाई का जरूरत से ज्यादा गहरा होना था वहां इस

चित्र संख्या ६७

नुक्स का कारण उसके प्रतिकूल अर्थात् आस्तीनके ताल के मोढे की गोलाई की गहराई का जरूरत से कम गहरा होना है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० ६७ के ही अनुसार ताल के मोढे की गहराई को निशान १३ पर बिन्दियों वाली लकीर की सहायता से ठीक करो और निशान १४ पर ताल के पास की सिलाई के ऊपर के सिरे को पहले से ऊंचा करो तो नुक्स दूर हो जायगा। अब चित्रानुसार पास की सिलाई बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार बनाओ ॥
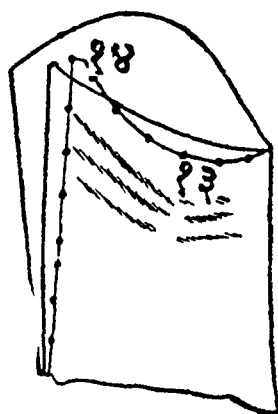
(८) बाजू को उठाते समय आस्तीन का तग अनुभव होना

(SLEEVE TIGHT OVER THE MUSCLE WHEN RAISING THE ARMS)

यह नुक्स चित्र सं० ६८ से जाहिर किया गया है यदि ग्राहक कोट पहिन कर अपने बाजू साधारण अवस्था मे नीचे की तरफ लटकाये रखे तो यह नुक्स बिल्कुल नजर नही आता। परन्तु जब ग्राहक अपना बाजू ऊपर को उठाने लगता है जैसाकि उसे सिर पर टोपी रखते समय अथवा किसी अन्य कार्य्य के कारण से बाजू को ऊपर उठाने की आवश्यकता होती है तो उस अवस्था

मे जबकि कोट के बटन बन्द न किये हुए हों सारे का सारा कोट ही बाजू के साथ ऊपर को उठ खड़ा होता है। कोट का सारा बोझ बाजू के ऊपर आजाने के कारण से बाजू पर बहुत तंगी मालूम होती है और बाजू बहुत ज्यादा ऊपर को आसानी से नही उठाया जा सकता बल्कि थोड़ा सा ऊपर जाकर रुक जाता है।

यदि इस प्रकार के कोट मे जोकि कमर पर फिट हो अर्थात् साधारण अवस्था मे जो कोट जरा ढीले बनाये जाते है वैसा ढीला न बनाया गया हो बल्कि उसकी अपेक्षा ज्यादा फिट हो और उसके सामने के बटन बन्द हों तो उस अवस्था मे यदि ग्राहक अपने बाजू ऊपर को उठाये तो सारे का सारा कोट ऊपर को उठ खड़ा होगा जिससे ग्राहक की गर्दन पर से कोट इतना दूर उठ खडा होगा कि सामने पर कोट के नीचे से वास्कट साईडों पर से नजर आने लगेगी।

कारण--इस नुक्स का मुख्य कारण कोट के मोंढे की गोलाई के नीचे के हिस्से से लेकर ऊपर कन्धे तक की ऊंचाई का जरूरत से ज्यादा ऊंचा होना है। अर्थात कोट के कन्धों की ऊंचाई जरूरत से ज्यादा होने का परिणाम ही यह नुक्स है। दूसरे

चित्र न० ६८

शब्दों मे कोट बनाना तो छोटे अथवा दरमियाना कद वाले आदमी के वास्ते था परन्तु इसके प्रतिकूल बनाया गया ऊचे कद वाले आदमी के मुताबिक है। जिसका परिणाम यह होता है कि जब ग्राहक कोट पहिनता है तो कोट मे मोंढे की गहराई ग्राहक की बगल मे ठहरने की बजाय उसकी बगल से बहुत नीची चली जाती है। जिससे बाजू को हिलाते ही कोट का सार बोझ उसके बाजू पर पड़ने लग जाता है और उसका बाजू ऊपर उठने से रुक जाती है।

इस के इलावा इस नुक्स का एक और कारण भी हो सकता है वह यह कि आस्तीन के ताल के मोंढे की गोलाई की गहराई जरूरत से ज्यादा बनाई गई हो तो भी यह नुक्स पड जाता है।

ट्राई करते समय कोट के मोंढे खोल कर आस्तीनो को बाडी से अलग करो। फिर अपने हाथ को ग्राहक की बगलो के नीचे कोट के मोंढे मे डाल कर मालूम करो कि कोट का मोढा ग्राहक की बगलों से कितना ज्यादा नीचा है। ऐसा करके कोट को कन्धों की सिलाई पर से उतना ऊचा उठाओ जितनी कि कोट के मोंढे की गहराई जरूरत से ज्यादा गहरी हो। इस फाल्तू कपडे को ऊपर कन्धे की सिलाई पर पिन से टाक कर निशान लगाओ कि कन्धों को सिलाई पर कितना २ अन्दर दबाना है। परन्तु जब कोट के मोंढे की गहराई ग्राहक की बगलों के मुताबिक बिल्कुल ठीक हो तो समझना चाहिये कि नुक्स कोट की बाडी मे नही है बल्कि नुक्स वास्तव मे कोट की आस्तीनों मे है। अर्थात् जैसा

कि ऊपर बताया जा चुका है ऐसी अवस्था में जबकि कोट के मोंढे की गहराई ठीक हो तो नुक्स का कारण ताल के मोंढे की गहराई का जरूरत से ज्यादा बनाया जाना और गोले के मोंढे की ऊंचाई का पास की सिलाई की तरफ से जरूरत से ज्यादा ऊंचा बनाया जाना है।

यदि ट्राई करते समय आप को मालूम हो कि नुक्स कोट की बाडी मे है अर्थात् कोट के मोंढे की गहराई जरूरत से ज्यादा हो या कन्धे जरूरत से ज्यादा ऊंचे हों तो नुक्स को नीचे लिखी
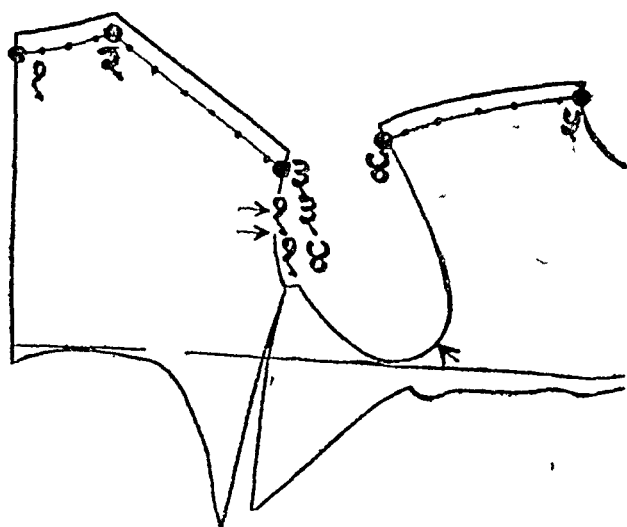
चित्र सं० ६६

रीती से चित्र सं० ६६ के अनुसार दूर करना चाहिये। पीठ पर कन्धे और टीक को चित्रानुसार निशान १,२ और ३ पर नीचा करो इसी तरह कोट के सामने के कन्धे को भी निशान ४ से लेकर ५ तक की लकीर की सहायता से उतना ही नीचा करो जितना कि पीठ को

निशान १, २ और ३ पर नीचा किया हो जैसाकि इस चित्र मे विन्दियों वाली लकीरों से जाहिर किया गया है। इस अवस्था मे पीठ पर जहा मोंढे के साथ आस्तीन के पास की सिलाई निशान १३ पर जोडी गई थी वहा अब इस निशान को १४ तक उतना नीचा करो जितना कि कोट के सामने और पीठ के कन्धे को ऊपर से नीचा किया हो।

जब कन्धों को नीचा किया जायगा तो मोंढे की गोलाई का ऊपर का हिस्सा जहाँ आस्तीन का गोला जोड़ा जायगा पहले से कम हो जायगा इस वास्ते आस्तीन के गोले के मोंढे को पास की तरफ से उतना नीचा करो जितना कि सामने और पीठ के कन्धों को नीचा किया हो जैसाकि चित्र सं० ७० मे निशान ७ से ८ तक करके दिखाया गया है॥
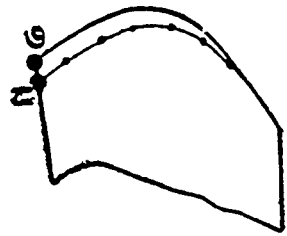
चित्र सं० ७०

परन्तु जब नुक्स कोट की बाडी मे न हो अर्थात् कोट की पीठ और सामने के कन्धे अथवा मोंढे सब प्रकार से ठीक हों और नुक्स का कारण आस्तीन के ताल के मोंढे का ज्यादा गहरा वनाया जाना हो तो चित्र सं० ७१ के अनुसार ताल को पास और गिद्री की तरफ से जरा नीचे करके दोनों तरफ़ से मोंढे की गोलाई को विन्दियों वाली लकीरों के अनुसार निशान ६ तक ले जाकर मिलाओ। ऐसा करने से ताला के

चित्र सं० ७१

मोंढे की गोलाई तो ठीक हो जायगी परन्तु ताल की लम्बाई उतनी छोटी हो जायगी जितना कि उसे पास और गिद्री की तरफ़ से नीचा किया हो। इस कमी को दूर करने के वास्ते ताल की मोहरी के अन्दर दबाये हुए कपड़े को उतना बाहिर निकाल कर इस कमी को पूरा करो जितना कि इसकी लम्बाई का नाप छोटा हो।

यह नुक्स प्रायः ऐसे मास्टरों की कटाई मे पड़ जाता है जो छाती की लकीर से ऊपर के सब नाप छाती के नाप की ही सहायता से मालूम करते है। प्रायः ऐसा होता है कि एक ही छाती के नाप वाले दो आदमियों के छाती से ऊपर २ के भाग के नापों में एक दूसरे से फ़र्क होता है। अर्थात् जो लम्बा आदमी होगा उसके यह नाप बड़े होंगे और जो उससे कम ऊंचा होगा उसके यह नाप उस से उतने छोटे होंगे। इस वास्ते यह नाप छाती के नाप की मदद से मालूम करने की बजाय ग्राहक के शरीर पर से ही नाप लेने से इस प्रकार के नुक्स नही पड़ते॥

(९) आस्तीन के गोले पर मोंढे की हड्डी से लेकर गिद्री तक खिच पड़ना।

(CREASES FROM SHOULDER BONE TO FORE-ARM PITCH ACROSS TOPSIDE)

यह नुक्स चित्र सं० ७२ से भली भांती जाहिर किया गया है। इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि आस्तीन के गोले के मोंढे की गोलाई जरूरत से कम ऊंची है और मोंढा जरूरत से

ज्यादा चौडा है। अर्थात् गोले के मोंढे की गोलाई का ऊपर का सिरा जरूरत से ज्यादा पीछे अथवा पास की तरफ होने से भी यह नुक्स पैदा हो जाता है।

कई लोग कोट की आस्तीने कमीज के आस्तीनों की तरह काटते है जहा कोट की आस्तीन के मोंढे की गोलाई बीच मे होती है वहा कमीज की यह गोलाई जरा पीछे की तरफ होती है। जो लोग कोट की आस्तीने कमीज की तरह काटते है वह यह विचार करते है कि ऐसा करने से आस्तीन का मोंढा ज्यादा चौडा हो जाता है जोकि आस्तीन को बेहतर बनाता है। परन्तु परिणाम इसका उलट होता है अर्थात् जहा कोट के सामने और पीठ के कन्धे ज्यादा ऊचे होते है वहां आस्तीन का गोला कम ऊंचा होता है। जिससे कन्धे से लेकर गिद्री तक आस्तीन का गोला तग अथवा छोटा होने के कारण से इस हिस्से मे खिच पड़ने लगती है जोकि इस चित्र मे जाहिर की गई है।
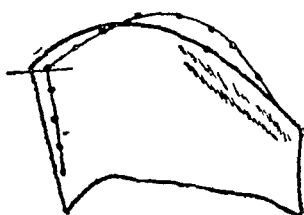
चित्र सं० ७२

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते गोले के मोंढे की गोलाई को न केवल ऊंचा ही करो बल्कि सब से ऊचे हिस्से को पहले से आगे की तरफ ले आओ और गोले की चौडाई को भी ज़रा कम करो। जैसाकि चित्र सं० ७२ मे करके दिखाया गया है॥

(१०) कोहनी से ऊपर की तरफ़ खिच पड़ना।

(STRAIN FROM ELBOW UPWARDS)

ज्यों ही बाजू का कोहनी से नीचे का हिस्सा जरा झुकाया जाता है त्यूं ही यह खिच पड़ने लगती है। और ज्यों २ बाजू आगे की तरफ़ किया जाय यह खिच बढ़ती चली जाती है। गिद्री मे कोहनी से ऊपर और कोहनी पर आस्तीन का कपड़ा इस प्रकार से इकट्ठा होने लगता है कि बहुत बुरे शिकन पड़ने लग जाते है। और पीठ पर मोंढे की गोलाई मे खिच पड़ने लगती है जिस से कि पीठ पर भी शिकन मालूम होते हैं। यह नुक्स चित्र सं० ७३ से जाहिर किया गया है।

चित्र सं० ७३

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण आस्तीन की कोहनी की गोलाई का जरूरत से कम गोल होना अथवा जरूरत से ज्यादा सीधा होना है। और यदि पास की लम्बाई जरूरत से छोटी हो तो यह नुक्स और भी बढ़ जाता है। इस प्रकार के नुक्स प्राय: ड्रैस अथवा डिन्नर कोटों मे पड़ते है। जिनकी आस्तीनें साधारण कोटों की अपेक्षा तंग होती है। यदि आस्तीनों को गिद्री की बजाय पास की तरफ़ से तंग किया जाय तो इस प्रकार का नुक्स पड़ जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते आस्तीनों को कोट से अलग करो और पास और गिद्री की सिलाईया खोल दो। पास मे से कोहनी पर का दवाव बाहिर निकालो जैसा कि चित्र स० ७४ मे निशान १ से जाहिर किया गया है। बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार निशान १ मे से ऊपर और नीचे की तरफ पास की गोलाई वनाओ।
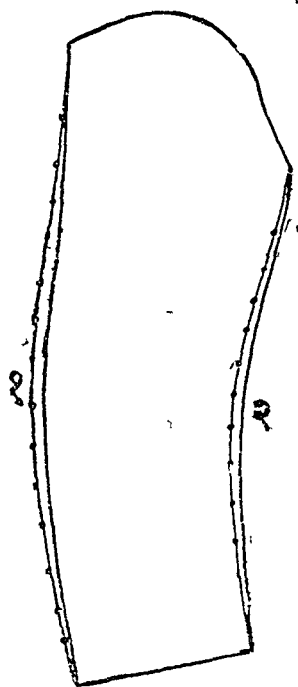
चित्र स० ७४

पास की सिलाई पर के दवाव को कोहनी पर जितना बाहिर निकाला हो गिद्री की सिलाई पर कोहनी को उतना ही अन्दर की तरफ दवा दो जैसाकि इस चित्र मे निाशन २ से जाहिर किया गया है। ऐसा करने का मतलव यह है कि आस्तीन की चौड़ाई जैसी की तैसी रह जाय। बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार निशान २ मे से ऊपर और नीचे की तरफ गिद्री की गोलाई बनाओ॥

(११) गिद्री की गहराई में शिकन पड़ना।

(WRINKLES IN HOLLOW OF FORE ARM)

यह नुक्स प्राय: ऐसे कोटों मे पाया जाता है जिन की आस्तीनों का गोला गिद्री की तरफ से वड़ा अथवा ज्यादा चौड़ा

काटा जाता है और ताल गिद्री की तरफ से उतना छोठा अथवा कम चौडा काटा जाता है।

जब कोट का कपडा जरूरत से इतना छोटा हो कि उसमे से गोला और ताल ठीक २ न निकाले जा सकें तो ज्यादा चौड़ी जगह पर से गोला और कम चौडी जगह पर से ताल काटा जाता है। ताल की चौड़ाइ जितनी जरूरत से कम निकलती हो गोले को उतना ही गिद्री की तरफ से ज्यादा चौडा काटँ लिया जाता है। ऐसा करने से गिद्री की सिलाई तो अपनी असली जगह से नीचे की तरफ चली जाती है और जहां गिद्री की सिलाई वास्तव मे आनी होती है अथवा गोले की जो असली चौडाई होती है वहा पर गिद्री का भान डाल दिया जाता है जोकि गिद्री को जाहिर करता है। यह नुक्स चित्र सं० ७५ से जाहिर किया गया है।
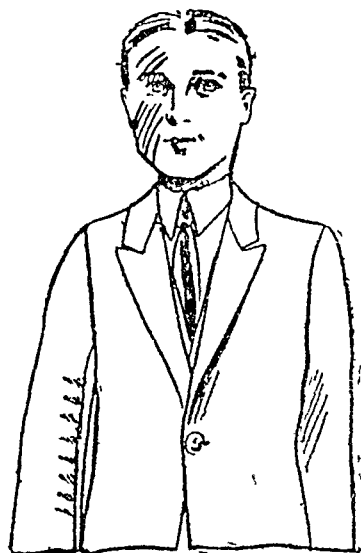
चित्र सं० ७५

इस नुक्स का मुख्य कारण कारीगरों का गिद्री का ऊपर बताया गया भान डालते समय ठीक २ लोहे से न प्रैस करना है। अर्थात् यदि कारीगर लोग यह गिद्री का भान डालते समय लोहे से गिद्री को घुमा कर कोहनी पर इस मे नम मार कर गिद्री की गोलाई ऐसी बनावें जो आस्तीन पर ठीक बैठ सके

तो इस प्रकार का नुक्स कभी नही पडेगा ॥

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते गिद्री की सिलाई खोल दो और गोले की गिद्री की गोलाई के कोहनी पर के हिस्से को लोहे से अच्छी तरह खेचो। जैसाकि चित्र स० ७६ मे निशान १ से जाहिर किया गया है। और गिद्री के किनारे से डेढ इंच पीछे की तरफ गोले मे लोहे से नम मारो अथवा शरिङ्क (Shrink) करो जैसाकि इस चित्र मे निशान २ से जाहिर किया गया है।
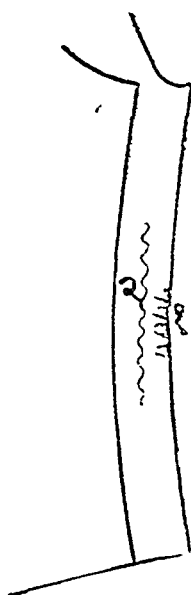
चित्र सं० ७६

गोले की गिद्री को निशान १ पर लोहे से खेचने से गिद्री जितनी वढ़ जाय उस ज्यादती को गिद्री की सिलाई करते समय नीचे अथवा कफ की तरफ वढा कर निकाल दो ॥

——:o·——

पाचवां पाठ

(कोट के कालरों के नुक्स)

(DEFECTIVE COLLARS & TURNS)

कालर के प्राय: दो भाग होते है एक तो नीचे का भाग होता है जिसे स्टैण्ड कहते हैं और दूसरा ऊपर का भाग होता है जोकि फ़ाल कहलाता है। स्टैण्ड (stand) तो फ़ाल (fall) के नीचे अथवा अन्दर की ओर होता है। जिस के ऊपर कालर का

फाल गिरता है। जिस जगह कालर में भान डाल कर स्टैण्ड को अन्दर और फाल को बाहिर की तरफ मोड़ा जाता है उस भान वाली लकीर को अथवा उस भान को कालर का क्रीज (crease) कहते हैं।

(१) फाल का असली क्रीज़ से ऊपर मुड कर पीछे से छोटा नज़र आना

(FALL ROLLING UP SHORT BEHIND)

यह नुक्स चित्र सं० ५७ से जाहिर किया गया है। पीछे की ओर इस चित्र में कालर ऊंचा नज़र आता है और फाल और स्टैण्ड का क्रीज अपनी असली जगह से ऊंचा चला गया है। जिससे एक नया क्रीज पड जाता है। स्टैण्ड का वह किनारा जिसकी सिलाई कोट के गले के साथ की जाती है पीठ पर नजर आता रहता है। वास्तव में स्टैण्ड और इसका नीचे वाला किनारा फाल के नीचे छुपा रहना चाहिये आगे की तरफ से कालर बिल्कुल ठीक है। हां क्रीज़ की लकीर कालर के साइड की तरफ से लेकर पीठ की ओर ऊंची चली गई है

चित्र सं० ५७
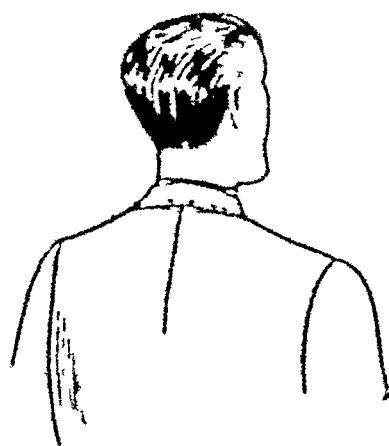
कारण—इस नुक्स का कारण फाल के बाहिर वाले किनारे का लम्बाई में छोटा होना है कालर के फाल का ऊपर का किनारा, जो

कि कालर मे क्रीज डालने से नीचे की तरफ आजाता है, कोट के कन्धों पर जहा पडता है वह जगह कालर के फ़ाल वाले किनारे से वडी है। इस वास्ते जव कालर को कोट के साथ जोडा जाता है तो कालर के फाल का यह किनारा कोट के कन्धों पर ठीक २ नही वैठता है बल्कि अपनी असली जगह से ऊपर की तरफ खिसकना शुरू कर देता है। यह किनारा इतना ऊचा चला जाता है कि कालर का स्टैण्ड और नीचे का सिलाई वाला किनारा भी नजर आने लगता है। क्योंकि कन्धों से ज्यों २ ऊपर की तरफ जाये नाप कन्धो की अपेक्षा घटता चला जाता है इस वास्ते कालर के फाल का यह किनारा वहा पर जाकर बैठता है जहा पर गर्दन का नाप कालर के नाप के बराबर हो और कन्धों पर इस वास्ते ठीक नही वैठता क्योकि कन्धों पर का नाप कालर के इस किनारे से वडा होता है। फाल के किनारे के ऊपर को चले जाने से कालर का क्रीज स्वयम् ही अपनी असली जगह से ऊपर को चला जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते देखो चित्र स० ७८, इसमे पुराने कालर को जिस मे कि इस प्रकार का नुक्स पडता है, बिन्दियों वाली लकीरों की सहायता से ठीक करके दिखाया गया है। इस प्रकार के नुक्स प्राय ऐसे कोटों मे पडते है जोकि फैक्टरियों मे वनाये जाते है या वहुत से कोट इकट्ठे एक दम बना कर रख दिये जाते है ताकि तैयार किए हुए ही वेच दिये जाये अथवा बहुत से आदमियों मे वाटे जाये जैसाकि रेलवे वगैरा के वास्ते वनाये जाते

हैं। क्योंकि इस प्रकार के कारखानों में लोहे वगैरा से बहुत थोड़ा काम लिया जाता है और कोट सारे का सारा मशीन पर रगड़ दिया जाता है। अर्थात् कारीगर लोग कुछ भी मेहनत नहीं करते इस वास्ते इस प्रकार के कोटों में यह नुक्स अधिक पड़ता है।

इस चित्र में कालर के क्रीज वाली लकीर बिल्कुल सीधी है। इसे निशान १ से २ तक जरा पीछे को करके क्रीज को २ से ५ तक जरा गोलाई में करो जैसाकि बिन्दियों वाली लकीर से दिखाया गया है। अब क्रीज की इस नई लकीर २-५ पर निशान २ में से उसके दोनों ओर लकीरें स्कोयर करो जोकि निशान ३ और ४ तक चली जायें। ३ से ४ तक को कालर की पीठ पर की बीच की चौड़ाई के बराबर बनाओ और निशान ३ और ४ में से दायीं ? बिन्दियों वाली लकीरों के मुताबिक कालर के स्टैण्ड और फाल के किनारों की गोलाईयां बनाओ जैसाकि इस में दिखाया गया है। ऐसा करने से कालर के फाल का किनारा जो निशान ४ में से निकाल कर बनाया गया है पहले से बड़ा हो जायगा और नुक्स ठीक हो जायगा।

चित्र नं० ७८

इस अवस्था में जबकि कोट तैयार हो चुका हो अथवा आप

के पास इतना समय न हो कि आप नया ठीक कालर बना कर इस नुक्स को दूर कर सके या आप को ग्राहक से कोट की सिलाई इतनी थोडी मिलने की आशा हो कि आप इतना समय और इस नुक्स को दूर करने मे लगाना न चाहते हों तो इस नुक्स को दूर करने का सरल तरीका यह है कि फाल के इस किनारे को जो जरूरत से छोटा है उस जगह पर से जोकि कन्धों पर पडती है लोहे से अच्छी तरह खेच कर बडा कर दो जिससे नुक्स जाता रहेगा।

यदि कोट के कालर का कटा हुआ नमूना ठीक करना हो तो उसे चित्र सं० ७६ के अनुसार इस तरह ठीक करना चाहिये कि फाल के किनारे को तो लोहे से खेच दिया जाय जिस से यह किनारा अपनी असली जगह पर से हट कर पीछे को चला जायगा जैसाकि बिन्दियों वाली लकीर से जाहिर किया गया है। और २ से ३ तक कालर के दूसरे किनारे के साथ २ कपड़े का टुकडा जोड कर कालर चित्र सं० ७६ को जरा सीधा करो तो नुक्स ठीक हो जयगा।

(२) नपेल का भान अपनी असली जगह से नीचे को चला जाना (LAPEL ROLLING LOWER THAN INTENDED)

यह नुक्स चित्र सं० ८० से जाहिर किया गया है। इस अवस्था मे सामने की नपेलों को भान पर कितना ही ज्यादा लोहा दे कर क्यों न विठा दिया जाय कोट के सामनों के आगे के किनारे वाहर की तरफ मुड़ने शुरू कर देते हैं। और जब

कोट कुछ दिनों तक पहिना जाय तो इस के सामनों मे काजों अथवा बटनों से जरा पीछे बहुत बुरा भान(crease or break) पड़ने लग जाता है सिजसे कोट के सामने इन भानों पर इकट्ठे होने लग जाते हैं। और कोट बहुत बुरा नज़र आने लगता है।
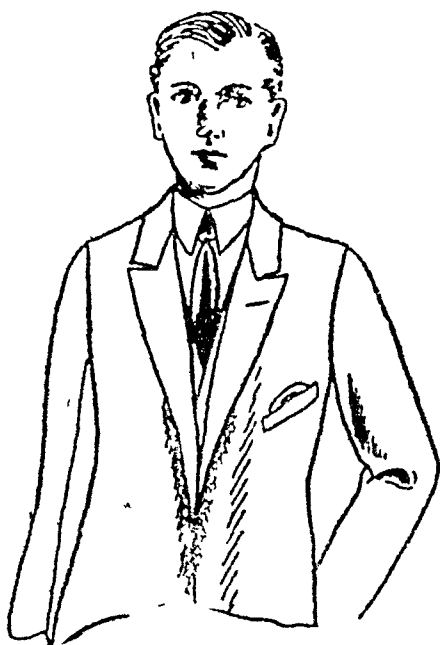
चित्र सं० ८०

चित्र सं० ८१

कारण—इस नुक्स का एक अथवा दो कारण होते है। इसका पहला कारण तो यह हो सकता है कि कोट के कालर की गोलाई कोट के हाले की गोलाई के अनुसार न बनाई गई हो। कालर का वह किनारा जो हाले के साथ सिया जाता है सामने की ओर हाले की अपेक्षा ज्यादा गोल बनाया जाता है जिससे

चित्र सं० ८१ के अनुसार जब कालर को हाले पर रख कर देखा जाता है तो निशान १ पर हाले मे कुछ जगह खाली नजर आने लगती है। यही वह स्थान है जहा पर कि कालर हाले की अपेक्षा ज्यादा गोल बनाया गया है।

इस नुक्स का दूसरा कारण कालर का हाले से छोटा बनाया जाना है अर्थात् जो कालर बनाया गया हो वह कोट के हाले पर के इस भाग से जो आगे की तरफ़ है छोटा हो तो इस प्रकार का नुक्स पड जाता है।

कोट के कन्धों का कम ऊंचा बनाया जाना भी इस प्रकार के नुक्स का कारण हो सकता है अर्थात् जब कोट के कन्धे जरूरत से ज्यादा नीचे अथवा कम ऊचे बनाये गए हों तो सामनों मे इस प्रकार का भान पडने लग जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट का कालर उधेड दो और कालर के सिलाई वाले किनारे के साथ अथवा कालर के उस किनारे के साथ जोकि कोट के हाले के साथ सिला जाता है क्रोज से लेकर आगे की तरफ वाले सिरे तक जरूरत के मुताबिक टुकडा जोड दो जैसाकि चित्र स० ८२ मे ७ से ८ तक जाहिर किया गया है। इस नुक्स को दूर करने
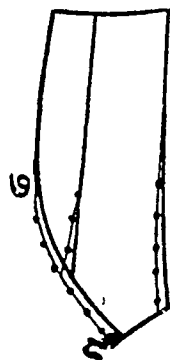
के वास्ते कालर को सब प्रकार से हाले के मुताबिक चित्र सं० ८२ काटना चाहिए जिससे यह नुक्स बिल्कुल न पड़े। जब नया

कालर बनाने के वास्ते कपड़े का फाल्तू टुकड़ा आपके पास न हो तो इस नुक़्स को दूर करने के वास्ते केवल एक ही तरीका रह जाता है वह यह कि चित्र सं० ८३ के अनुसार कालर के फाल वाले किनारे को लोहे से अच्छी तरह खेंच कर फलका लेना चाहिये जिससे नुक़्स जाता रहेगा।

चित्र सं०८३

(३) नपेल के भान से ऊपर, जहाँ कालर कोट के फ़ैशन के साथ जोड़ा जाता है, हाले का ऊपर को उभरना

(BUMP AT BREAK SEAM WHERE THE COLLAR JOINS THE FACING)

यह नुक़्स चित्र सं० ८४ से ज़ाहिर किया गया है। नपेलों के भान से ऊपर कालर उभरना शुरू कर देता है। बजाय इसके कि कालर का भान नपेल के भान से मिल कर एक लकीर हो जाय कालर इस भाग पर तिन-कोनी शकल मे ऊपर को उभरने लग जाता है।
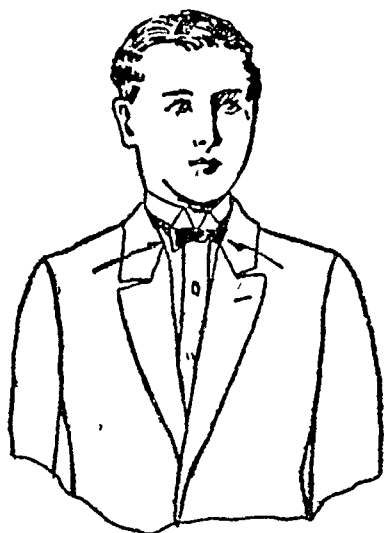
चित्र स० ८४

कारण—इस नुक़्स का कारण यह है कि कोट का कालर बनाते

समय इसके फ़ाल का किनारा जरूरत से ज्यादा लोहे से खेच कर फलकाया गया है। जब इस प्रकार का बनाया हुआ कालर कोट के हाले के साथ जोडा जाता है और कालर मे क्रीज पर भान डाला जाता है तो कालर जोकि लोहे से ज्यादा फलकाया गया होता है जरूरत से वडा हो जाने के कारण से नपेल को नीचे की तरफ़ धकेलता है जिससे नपेल के बाहिर वाले किनारे (न कि भान वाले किनारे) पर नम (Gatheııng) आजाती है जैसाकि चित्र स० ८५ से जाहिर किया गया है । इसका परिणाम यह होता है कि नपेल वहुत वुरी नजरा आने लगती है इससे वचने के वास्ते कारीगर(Workmen) लोग कालर के फल्तू हिस्से को जोकि चित्र सं० ८५

हाले की अपेक्षा वडा होता है आगे की तरफ सुरका कर छॉट देते है जैसाकि चित्र स० ८६ मे निशान ३ से जाहिर कर दिया गया है जव कालर की लम्बाई का फाल्तू हिस्सा चित्र स० ८६ के अनुसार काट दिया जाता है तो कालर का शेप हाले के मुताबिक नही रहता जैसाकि पहले बनाया गया होता है इसका परिणाम यह होता है कि कालर के आगे के सिरे और नपेल के बीच मे तिनकोनी जगह खाली हो जाती है जोकि चित्र स० ८६ चित्र स० ८७ से निशान ४ से जाहिर की गई है और जव कालर को खेच कर नपेल के साथ ठोका वॉधा जाता है अर्थात्

कालर को नपेल के साथ टाँका जाता है तो कालर का यह भाग अपनी असली जगह से पीछे चला जाता है जैसाकि इस चित्र मे डैश वाली लकीरों से ज़ाहिर किया गया है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कालर को कोट से अलग कर लो और चित्र सं० ८८ के अनुसार कालर के फाल के किनारे मे निशान ५ पर नम मारो अर्थात् यह किनारा लोहे से जितना ज्यादा फलका कर बड़ा किया गया हो तागे से उतना ही इसे तान दो और ऐसा करने से इसमे जो नम (Gathering) आजाय उसे पानी और लोहे की मद्द से दूर करो अर्थात् पानी लगा कर लोहे से उस मे नम मारो। कालर का जो आगे का भाग काटा गया है उतना टुकड़ा इस के साथ जोड़ दो जैसाकि चित्र सं ८८ मे निशान ६ से जाहिर किया गया है। ऐसा करने से नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा॥
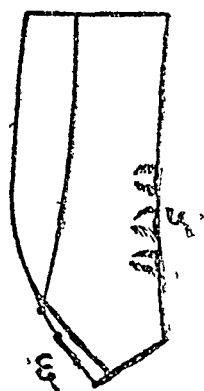
चित्र सं० ८७

चित्र सं० ८८

(४) कालर का छोटा होना

(COLLAR ON TOO SHORT)

कालर के छोटा होने से बहुत से नुक्स पड़ते हैं और कन्धों पर भिन्न २ प्रकार के शिकन पड़ने लगते हैं जिनमे से एक प्रकार

के शिकन चित्र सं० ८६ से जाहिर किये गये है। यह नुकस कालर के हाले अथवा गले की गोलाई की अपेक्षा छोटा होने से पडता है इस चित्र को देखने से मालूम होता है कि कन्धे पर बहुत से शिकन
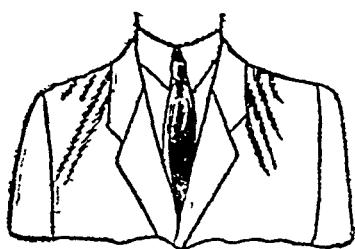
चित्र सं० ८६

पडे हुए है जिनसे कोट बहुत बुरा नजर आता है। कन्धों पर गोल २ शिकन पडते नजर आते है जोकि गर्दन (गले) पर से शुरु होकर सोढे की तरफ जाते नजर आते है। ऐसे हर एक कोट मे ऐसा प्रतीत होता है कि नुकस अथवा खिच या शिकनो का कारण कोट का गला ही है। और जब कोट के बटन खोल दिये जाये तो नपेल अपने असली भान से नीचे की तरफ़ मुडने लग जाती है जिससे काजों की उल्टी तरफ़ का कपडा नज़र आने लगता है जब कालर बहुत ज्यादा छोटा न हो तो इस प्रकार के नुकस पडते है परन्तु जब कालर बहुत ही ज्यादा छोटा हो तो मोंढे के आगे नीचे की ओर खिच पडने लग जायगी और साईड की सिलाई से ऊपर की तरफ़ कपड़े मे नम नजर आयगी अर्थात् कपडा इकट्ठा होता नज़र आयगा।

कारण— इस नुक्स का कारण कारीगरों की वेपरवाही के इलावा और कुछ नहीं है अर्थात् कारीगरों के काम को पूरे यत्न से न करने का परिणाम यह नुक्स है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कालर को उधेड़ दो। ऐसा

करने से कोट के कन्धे बिल्कुल ठीक हो जायेगे, अर्थात् इनमे जो भी खिच है वह जाती रहेगी। फिर कालर को गले अथवा हाले के चारों ओर नाप कर मालूम करो कि कालर जरूरत से कितना छोटा है।

यदि आप चाहते है कि आपके कोटों मे इस प्रकार के नुक्स न पड़े तो अपने कारीगरों को कालर उनके सामने कोट के हाले के मुताबिक नाप कर दिखला दो तो फिर इस प्रकार का नुक्स कभी नही पड़ेगा।

यदि आपके पास फाल्तू कपडा हो तो कोट के हाले के अनुसार नया कालर बना लो। परन्तु जब आपके पास नया कालर बनाने के वास्ते फाल्तू कपडा न हो तो कालर को आगे की तरफ़ से हाले पर से ज़रा पीछे हटा कर लगाओ। ऐसा करने से कालर और नपेल के मध्य मे जो खुली हुई अथवा खाली जगह होती है, जिसे दर्जी लाग हाफ़ कहते है, वह पहले से जरा बडी हो जायगी जैसे चित्र सं० ६० मे निशान ३ पर बिन्दियों वाली लकीर से जहिर किया गया है। ऐसा हम केवल उस अवस्था मे कर सकते है जबकि कोट का कालर बहुत छोटा न हो बल्कि मामूली सा छोटा हो और साथ ही इङ्गलिश कालर के कोट मे नुक्स इस तरह से ठीक किया जा सकता है और जब कोट अमरीकन कालर
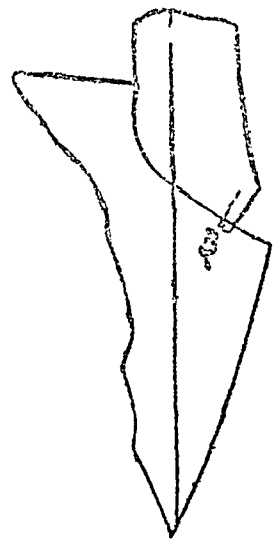
चित्र सं० ६०

का बनाया जा रहा हो तो हम उसे इस तरह से ठीक नही कर सकेगे। यदि अमरीकन कालर के कोटों मे इस प्रकार का नुक्स पड जाय तो उसे दूर करने के वास्ते कम से कम कालर का ऊपर का हिस्सा नया लगाना जरूरी होता है और कालर के नीचे के हिस्से के साथ दोनों तरफ़ अथवा बीच मे एक छोटा सा टुकडा जोड कर इस कमी को दूर करना चाहिए। कालर के दो पले होते है जिनको कालर की दो तहे भी कहते हैं। ऊपर के पले को ऊपर का हिस्सा और नीचे के पले को नीचे का हिस्सा कहते है ऐसा करने से कालर बिल्कुल ठीक तो नही हो जाता मगर जरूरत पूरी जरूर हो जाती है अर्थात् ग्राहक निपट जाता है।
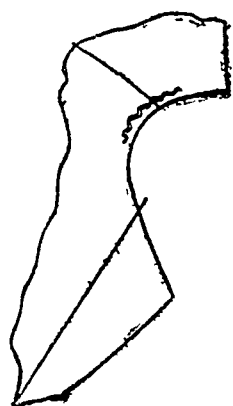
जो कालर ठीक और पूरा बना कर लगाया गया हो उसकी पहिचान यह होती है कि इसके उस किनारे मे जो गले के साथ जोडा जाता है उस हिस्से पर थोडी सी नम [Ease or Gathering] होती है जो हिस्सा कि कन्धों की सिलाई पर आता है। जैसाकि चित्र सं० ६१ मे गोल २ अथवा टेढी लकीर से जाहिर किया गया है।

चित्र सं० ६१

(५) कालर का भान गर्दन से दूर उठ खड़ा होना

(COLLAR CREASE LOOSE & STANDING AWAY FROM THE NECK)

यह नुक्स चित्र सं० ६२ से ज़ाहिर किया गया है। इसमे कालर लपेल के भान के ऊपर के सिरे से लेकर पीठ की ओर टीक के बीच तक ग्राहक की गर्दन के ऊपर ठीक
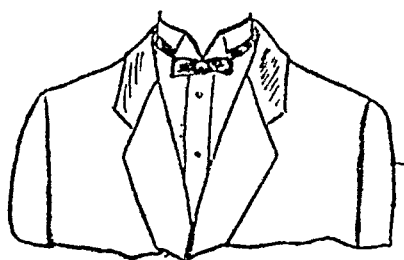
चित्र सं० ६२

नही बैठता बल्कि कालर का यह भाग ग्राहक की गर्दन से दूर रहता है।

कारण—इस नुक्स के कई कारण हो सकते हैं परन्तु क्योंकि अब हम केवल कालरों के नुक्सों पर विचार कर रहे हैं इस वास्ते हम समझ लेते हैं कि यह नुक्स कालर के ठीक न होने के कारण से है इस नुक्स का कारण या तो कालर का जरूरत से ज्यादा बडा होना है जिस से कालर फूल कर गर्दन से दूर उठ खड़ा होता है। या कालर के फाल का किनारा ज्यादा लम्बा है और कालर के क्रीज [भान] को अच्छी तरह लोहे से प्रैस करके घुमाया नही गया जिससे कि वह गर्दन से दूर उठ खडा होता है। यदि कालर के क्रीज को लोहे से अच्छी तरह घुमा कर प्रैस किया जाय तो यह क्रीज जरूरत के मुताबिक छोटा हो जाता है और गर्दन पर ठीक बैठता हैं जिससे इस प्रकार का नुक्स नही पडता।

इसके इलावा इस नुक्स का कारण यह भी हो सकता है कि कोट का हाला [गले की सिलाई] ग्राहक की गर्दन से ज्यादा चौडा बनाया गया हो जोकि पीठ की टीक के, जिसे पीठ की गले की गोलाई कहना चाहिये, जरूरत से ज्यादा वडा होने से हो जाता है इसका परिणाम भी यह होता है कि कोट का कालर ग्राहक की

गर्दन पर ठीक वैठने की बजाय उस से दूर उठ खड़ा होता है क्योंकि ऐसी अवस्था मे कोट का हाला [गले की गोलाई] ग्राहक की गर्दन के साईडों पर से भी दूर उठ खड़ा होता है और कालर के क्रीज को कितना ही क्यों न घुमाया जाय कालर कभी भी गर्दन के साथ नही वैठेगा। क्योंकि ऐसी अवस्था मे नुक्स कोट के हाले मे है न कि कालर मे इस वास्ते कालर को चाहे कितना घुमाते जाओ नुक्स कभी भी दूर न होगा।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते इस वात को चित्रों द्वारा समझाने की कोई जरूरत नही कि कालर यदि वडा हो और केवल यही नुक्स का कारण हो तो उसे किस प्रकार से छोटा करना चाहिये क्योंकि इसमे केवल लम्बाई को ही छोटा करना है जोकि केवल कालर के बीच मे से कपडा काट कर उसे छोटा किया जा सकता है।

कालर बनाकर कोट के साथ जोडने से पहले यदि उसे फट्टे पर रख कर देखा जाय और चित्र सं० ६३ की तरह सीधा नजर आय तो समझ लेना चाहिये कि ऐसे कालर का क्रीज कभी भी ग्राहक की गर्दन के साथ ठीक नही वैठ सकता क्योंकि इसके क्रीज की लम्बाई, जोकि इस चित्र मे १ से २ तक जाहिर की गई है, इसके वाहिर वाले किनारे के ३ से ४ तक के नाप की अपेक्षा वडी है। जोकि कालर के क्रीज़ को लोहे के साथ अच्छी तरह न घुमाने से हो जाती है। ऐसी
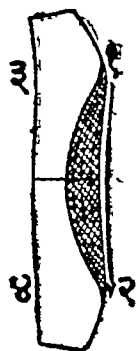
चित्र स० ६३

अवस्था मे कालर के दोनों किनारों को लोहे से अच्छी तरह खेंच कर फलकाओ। कालर के दोनों किनारों का मतलब इसका फाल वाला किनारा, जिसे बाहिर वाला किनारा भी कहते हैं और वह किनारा है जोकि कोट के हाले के साथ सिया जाता है। कालर के दोनों किनारों को ऊपर बतलाई गई रीति से इस तरह फलका कर क्रीज को जरूरत के मुताबिक छोटा करो ताकि यह गर्दन पर ठीक बैठ सके याद रखो कि क्रीज को छोटा करने की

चित्र सं० ६४

रीती यह नही है कि उसे किसी तरफ से काट दो बल्कि क्रीज को जितना लम्बा तैयार रखना हो उतना लम्बा धागा लेकर उससे क्रीज की लकीर के साथ सिलाई इस प्रकार से करो कि क्रीज की लम्बाई की यह ज्यादती सिलाई करते समय नम के जरिये कम हो जाय। अर्थात् इस ज्यादती को नम मे खपा दो और लोहे से नम को मार कर क्रीज़ को घुमा दो तो नुक्स जाता रहेगा और कालर की शकल बिल्कुल ठीक अथवा चित्र सं० ६५ की तरह हो जायगी। क्योंकि अब कालर का क्रीज जरूरत के मुताबिक छोटा हो गया है इस वास्ते अब यह कालर ग्राहक की गर्दन पर बिल्कुल ठीक बैठेगा और उस मे किसी प्रकार का नुक्स नहीं रहेगा।
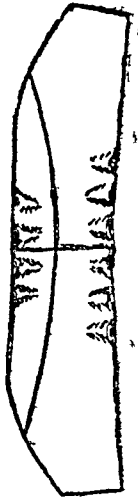
परन्तु जब नुक्स कोट के कालर मे न हो बल्कि चित्र सं० ६०-

नुक्स का कारण कोट की टीक [back neck] का बडा होना हो तो टीक के ऊपर के दबाव की मदद से चित्र सं० ६६ के अनुसार ५ से ६ तक टीक को छोटा करो तो नुक्स जाता रहेगा ॥
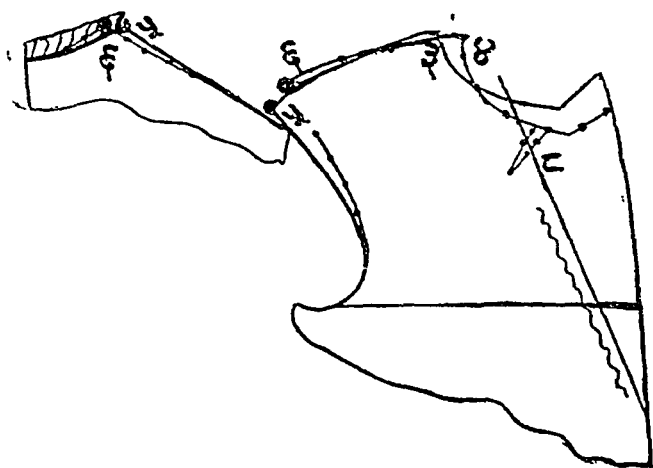
चित्र सं० ६६ वा चित्र स० ६८

(६) कालर का ऊचा अथवा नीचा होना ।
(COLLAR TOO HIGH OR TOO LOW)

यह नुक्स कालर के स्टैण्ड तथा फाल के जरूरत से ज्यादा ऊचे तथा नीचे होने के कारण से भी पड़ सकता है । परन्तु इस नुक्स का मुख्य कारण कोट के कन्धों का ग्राहक के कन्धों के अनुसार न बनाया जाना है। अर्थात् यह नुक्स प्राय: कोट के कन्धो के ग्राहक के कन्धो की अपेक्षा ज्यादा ऊचा अथवा नीचा बनाये जाने से पडता है। यदि कन्धे ग्राहक के कन्धों की अपेक्षा ऊचे होंगे तो उसका परिणाम कोट का कालर भी ऊंचा होगा

और यदि कोट के कन्धे उसकी अपेक्षा नीचे बनाये गये होंगे तो कालर भी नीचा नजर आयगा। यह नुक्स इस पुस्तक के शुरू शुरू मे विस्तार पूर्वक समझाया गया है ॥

(७) कोट के बटन बन्द करने मे कालर का फूल कर उठ खड़े होना ।

(NECK BULDGING OPEN WHEN COAT IS FASTEND)

यह नुक्स प्राय: बहुत से कोटों मे पड जाता है और चाहे कटर कितनी ही चलाकी से ग्राहक को टालना चाहे परन्तु वह नही टलता बल्कि प्राय: इस प्रकार के नुक्स के कारण से ग्राहक नाराज हो जाते है देखो चित्र संख्या ६७ ॥
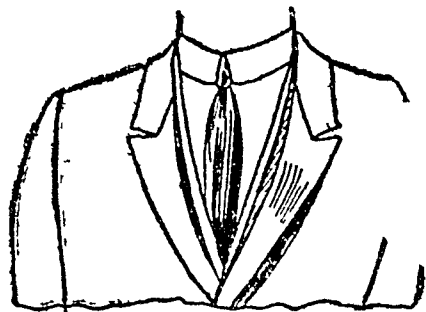
चित्र सं० ६७

यह नुक्स केवल कोट के कालर अथवा गले मे ही नहीं पड़ता बल्कि इस नुक्स के कारण से कोट की सारी नपेल फूलती रहती है जिस से न केवल कोट ही बहुत बुरा नजर आता है बल्कि कोट नपेल के भान से लेकर ऊपर की ओर कालर तक इतना ज्यादा फूल कर उठ खड़ा होता है और गर्दन से अलग रहता है कि कोट के नीचे से वास्कट का बहुत सा हिस्सा भी नज़र आने लगता है ।

इस नुक्स के कारण से प्राय: कन्धों पर इतना दबाओ

(Pressure] पड़ता रहता है कि कोट का सारे का सारा भार कन्धों पर ही पडता नज़र आता है और कोट कन्धों पर तंग मालूम पड़ता है। परन्तु वास्तव मे ऐसा नहीं होता अर्थात् कोट कन्धो पर तंग नही होता वल्कि कोट के कालर मे नुक्स होता है और जव कोट के वटन खोल दिये जाये तो कोट के सामने पीछे की तरफ चले जाते हैं।

कारण—इस नुक्स का कारण कोट के कालर का ग़लत होना नही है वल्कि यह नुक्स कोट के कन्धों के ठीक न होने से पडता है। अर्थात् कोट के कन्धे ज़रूरत से ज्यादा पीछे की तरफ काटे गए है या कोट का हाला जरूरत से ज्यादा चौड़ा काटा गया है। इसके इलावा अर्थात् यदि कोट के कन्धे ठीक काटे गए हों और उनमे ऊपर वताया गया नुक्स न हो तो इस नुक्स का कारण कोट के सामने के कन्धों का जरूरत से ज्यादा फलकाया जाना है जिससे कन्धे ज़रूरत से ज्यादा पीछे को चले जाते है और उस कोट मे ऊपर वताया गया नुक्स पड़ जाता है।

इसके साथ ही कोट के कन्धे भी जरूरत से ज्यादा गिरे हुए अथवा नीचे वनाए गये हैं जिससे न केवल कोट का सारा वोझ कन्धों पर पडता है 'और कोट कन्धों पर तंग मालूम देता है वल्कि गले पर भी कोट ज्यादा फूलने लगता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट का कालर खोल कर अलग करो और कन्धों की सिलाई भी खोल दो। अव सामने के कन्धों को वाहिर की तरफ अर्थात् मोंढ़े की तरफ इतना सुरका

दो कि कोट का कन्धा ग्राहक के शरीर पर ठीक बैठे। सामने के कन्धों को जितना बाहिर की तरफ़ सुरकाया हो उसे उतना बाहिर अथवा मोंढे की तरफ़ से काट दो। ऐसा करने से कोट के सामने के कन्धे जितने छोटे हो गये हों उतना ही सामने के हाले पर का दबाव बाहिर निकाल कर उन्हे पूरा करो।

जब कोट का चित्र ठीक करना हो तो चित्र सं० ६८ के अनुसार सामने के हाले के निशान को आगे की तरफ सुरका दो, अर्थात् सामने के हाले का दबाव बाहिर निकाल कर हाले को निशान ३ की बजाय ४ तक आगे की तरफ़ लेजाओ। ऐसा करते समय सामने के गले के निशान ४ को भी पहले निशान ३ की अपेक्षा जरा नीचा करो। इस तरह से कोट के सामने का कन्धा जितना बढ गया हो उसे बाहिर की तरफ़ से अथवा मोंढे की तरफ़ से छाट कर उतना छोटा करो जैसाकि इस चित्र मे निशान ५ से ६ तक करके दिखाया गया है। (चित्र सं० ६८ पृष्ठ १८४ पर देखो)

यदि आपके ग्राहक की छाती अच्छी तरह बाहिर को उभरी हुई हो तो नपेल के भान मे जो टेप [कपड़े की सीधी फट्टी] दी जाय वह जरा खेच कर अथवा तान कर देनी चाहिये। ऐस करने से इस भान मे जो नम आजाय उसे लोहे से अच्छी तरहा प्रैस करके दूर करना चाहिये ताकि नपेल भान पर फूल न जाय। कई कपड़े ऐसे भी होते है जिनकी नम अच्छी तरह नही मारी जाती ऐसी अवस्था मे कोट के सामने के हाले मे से डाट निकाल लेनी चाहिये जैसाकि इस चित्र मे निशान ८ से जाहिर किया

गया है। चित्र अनुसार बिन्दियों वाली लकीरों के मुताबिक सामने के मोंढे, कन्धे और हाले की गोलाईयाँ बना कर नुक्स को दूर करो।

(८) कालर के फाल का कन्धे की सिलाई पर ऊपर को उलट जाना

(COLLAR EDGE CURLING OVER AT THE SHOU LDER SEAM)

यह नुक्स प्रायः कुबडे आदमियों के कोटो मे पडता है क्योंकि उनकी गर्दन छोटी और कन्धे ऊंचे होते है। और कालर ग्राहक के शरीर की बनावट के अनु-सार अर्थात् कम चौडा बनाने की बजाय नार्मल शकल के मुताबिक बनाया जाता है जोकि ग्राहक की गर्दन की लम्बाई अर्थात् कन्धों के गिराओ के कम होने के कारण से ग्राहक की गर्दन पर ठीक नही बैठता चित्र सं० ६६ बल्कि इसके फाल के किनारे ऊपर को मुड जाते है। जिससे फाल के किनारे से जरा ऊपर जहा पर कि कालर मुड कर ऊपर को उलट जाता है भान पड जाता है और इस हिस्से पर कालर का स्टैण्ड नजर आता रहता है जैसाकि चित्र स० ६६ से जाहिर कियागया है।
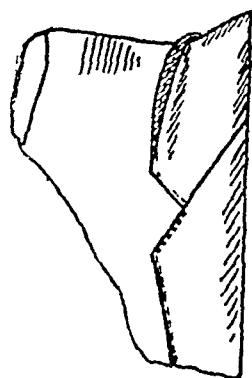
कारण— इस नुक्स का कारण कालर के फाल के किनारे की गोलाई का ठीक न बनाना है यदि इस किनारे को ग्राहक के

शरीर की बनावट के अनुसार गोल (Curve) बना दिया जाय तो ऐसा नुक्स नहीं पड़ता। इसके इलावा यदि कालर ठीक ही काटा हुआ क्यों न हो और यदि फाल के किनारे को इस जगह पर लोहे से अच्छी तरह न फलकाया जाय तो भी इस प्रकार के नुक्स पड़ने का डर है ।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कालर को जरा सीधा काटो जैसाकि चित्र सं० १०० मे बिन्दियों वाली लकीरों से जाहिर किया गया है । जिस ग्राहक की गर्दन छोटी अथवा कन्धे ऊंचे हों उसके कोट का कालर काटते समय इस बात का विचार करना चाहिये कि कालर का स्टैण्ड नार्मल शकल वाले ग्राहक के कालर के स्टैण्ड से कम चौड़ा हो और फाल का किनारा चित्र सं० १०० नार्मल शकल से ज्यादा तिरछा अथवा लम्बा हो ॥

(९) कालर का एक तरफ का नीचे का हिस्सा दूसरी तरफ़ की अपेक्षा ज्यादा नज़र आना

COLLAR EXPOSING MORE LINEN ON ONE SIDE THAN ON THE OTHER

यहां पर कालर एक तरफ ऊंचा है और दूसरी तरफ नीचा। यह नुक्स प्रायः ऐसे ग्राहकों के कोटों मे पाया जाता है जिनका एक कन्धा दूसरे की अपेक्षा ऊंचा अथवा नीचा होता है । जैसाकि
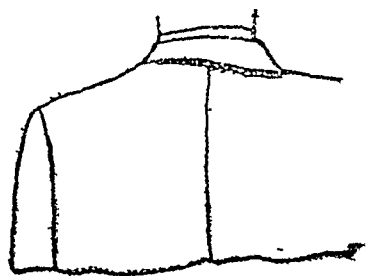
चित्र सं० १०१

चित्र सं० १०१ से जाहिर किया गया है।

कारण—जब तक कारीगर बिल्कुल बेपरवाही से और बे सोचे समझे काम न करे तब तक यह नुक्स नहीं पड़ता। या इस नुक्स का कारण यह हो सकता है कि कालर का स्टैण्ड एक तरफ दूसरी तरफ की अपेक्षा कम ऊंचा अथवा कम चौड़ा है, यदि नुक्स का यह कारण न हो अर्थात् न तो कालर का स्टैण्ड एक तरफ दूसरी तरफ से छोटा बड़ा हो और न ही कारीगर ने काम करते समय गफलत की हो तो निश्चय जानो कि इस नुक्स का कारण ग्राहक के एक कन्धे का दूसरे की अपेक्षा कम अथवा ज्यादा ऊंचा होना है। अर्थात इस नुक्स का मुख्य कारण ग्राहक के कन्धों का एक दूसरे से ऊंचा नीचा होना है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कालर जिस तरफ़ नीचा हो उसी तरफ से हाले पर का दबाव बाहिर निकाल कर कालर को उसकी दूसरी तरफ़ के बराबर ऊंचा करो। और यदि कोट के हाले में दबाव न हो अथवा कारीगर ने गलती से इसे छांट दिया हो तो चित्र सं० १०२ के अनुसार कपड़े का टुकड़ा कोट के सामने के हाले और पीठ के टीक के साथ जोड़ दो जैसाकि इस चित्र में लकीरों वाली जगह से घेर कर दिखाया गया है।
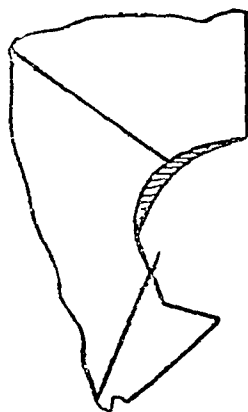
अब इस दबाव से काम लेकर कालर को चित्र सं० १०२

जरूरत के मुताबिक ऊंचा करो। इस नुक्स को दूर करने का यह तरीका बिल्कुल ठीक है। परन्तु जब आप के ग्राहक का एक कन्धा दूसरे की अपेक्षा ऊंचा या नीचा हो तो कोट के कन्धे को भी जरूरत के मुताबिक ऊंचा या नीचा करो जैसाकि शुरू २ में बताया जा चुका है॥

(१०) कालर की नोकों का ऊपर को मुड़ जाना

(POINTS TURNING UP)

इस नुक्स में कालर की नोक ऊपर को मुड जाती है और कालर का नीचे का पला इस जगह पर नजर आने लगता है जैसाकि चित्र सं० १०३ से जाहिर किया गया है।
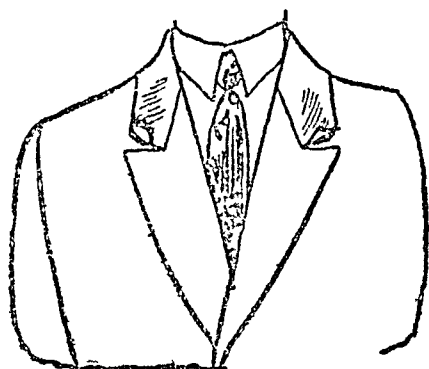
चित्र सं० १०३

इस नुक्स को चित्र सं० १०४ के अनुसार इस तरह दूर करो। यदि आप के पास कपड़ा फाल्तू हो तो कालर का ऊपर का पला नया काटो जोकि फाल के किनारे और हाफ की तरफ़ पहले कालर से चौथाई इंच बड़ा हो। और यदि आपके पास कपड़ा फाल्तू न हो तो कालर के नीचे के पले को आगे की तरफ़ से जरा छाट कर छोटा कर दो ताकि ऊपर का पला जितना छोटा हो नीचे का पला उतना छाटने से दोनों पले बराबर हो जाये और नुक्स जाता

चित्र सं० १०४

रहे। परन्तु जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है ऐसा उस समय करना चाहिए जबकि कपड़े का टुकड़ा बिल्कुल न हो। क्योंकि ऐसा करने से कालर की सुन्दरता मारी जाती है॥

(११) कालर के ठर्न का नपेल तथा बाडी के अनुसार न होना

(TURNS IN DISPROPORTION)

चित्र स० १०५, १०६ तथा १०७ मे भली भाति जाहिर किया गया है कि इन चित्रों मे कालरों के टर्न (fall) कोट की नपेलों के मुताबिक ठीक नही है।

चित्र स० १०५ मे कालर का टर्न ठोके पर नपेले की अपेक्षा ज्यादा चौडा है जोकि देखने से वहुत बुरा मालूम होता है। इस नुक्स को दूर करने के वास्ते बिन्दियों वाली लकीरो के अनुसार कालर के टर्न की चौडाई को कम करो तो नुक्स जाता रहेगा।

परन्तु चित्र स० १०६ मे नुक्स चित्र सं० १०५ से भिन्न है। जहा चित्र सं १०५ मे कालर का टर्न नपेल की सपेक्षा ज्यादा चौड़ा है वहा इस चित्र मे कोट की नपेल का ऊपर का हिस्सा जरूरत से ज्यादा सीधा है। इसी कारण से कोट का कालर भी नपेल के अनुसार इस हिस्से पर जरूरत से कम तिरछा चित्र स० १०५ बनाया गया है। इस नुक्स को भी बिन्दियों वाली लकीरों के अनसार

ठीक करो तो नपेल और कालर दोनों ठीक हो जायेंगे।

चित्र सं० १०५ व १०६ जहां इंगलिश कालर के कोटों को जाहिर करते हैं वहां चित्र सं० १०७ मे अमरीकन कालर का कोट दिखलाया गया है इस को भी बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार ठीक करो।

यदि आप चाहते है कि आप के कोटों मे इस प्रकार के नुक्स न पड़े तो आपके वास्ते जरूरी है कि आप कालरों को समय समय के फैशनों तथा ग्राहकों की इच्छा के अनुसार स्वयम् ही काटे और कालर काटना कारीगरों पर न छोड़ दे जैसाकि प्राय: कटर लोग करते है। क्योंकि कारीगर चाहे कितना ही लायक क्यों न हो वह कालर का फैशन ठीक नही बना सकेगा। इस वास्ते जब तक आप स्वयम् उसके काम की अच्छी तरह देख भाल नहीं करेंगे तो आपका काम ठीक नही हो सकेगा॥

चित्र सं०१०६

चित्र संख्या १०७

छटा पाठ

मार्निङ्ग कोटों के नुक्स

(DEFECTS IN MORNING COATS)

अब तक हमने जितने प्रकार के कोटों के नुक्स बताये हैं वह सब साधारण कोट थे जिनको तीन टुकड़े का कोट भी कहते

हैं। परन्तु अब हम बाडी कोटों का वर्णन करने लगे हैं जोकि साधारण कोटों अथवा तीन टुकडों वाले कोटों से भिन्न होते है। मार्निङ्ग कोट, फ्राक कोट और ड्रैस कोट यह सब बाडी कोट ही कहलाते है।

इस प्रकार के कोटों के नुक्स आदि बताने से पहले यह जरूरी मालूम होता है कि आपको भली प्रकार से समझा दिया जाय कि हम जितने प्रकार के कपड़े काटते है उन सब मे बाडी कोट ही सब से ज्यादा कठिन है। क्योंकि इस के टुकडे साधारण कोट की अपेक्षा ज्यादा होते है और इस मे सिलाईया भी इसी कारण से ज्यादा करनी पडती है और इस के साथ ही सब स जरूरी बात जो इस मे होती है वह यह है कि यह कोट साधारण कोट की अपेक्षा ज्यादा फिट (closefit) बनाया जाता है। इन कारणो से ऐसे कोट को सीने के वास्ते साधारण कोटों की अपेक्षा ज्यादा निपुणता की जरूरत होती है और हर साधारण कारीगर इस प्रकार के कोट नही सी सकता। यही कारण है कि इस प्रकार के कोटों मे नुक्स साधारण कोटों की अपेक्षा ज्यादा पड़ते हैं।

बहुत से ऐसे नुक्स भी होते है जोकि दोनों प्रकार के कोटों मे पाये जाते है इस वास्ते उन नुक्सो का बार २ वर्णन करने की बजाय, जोकि साधारण और बाडी कोटों दोनों मे पाये जाते हैं, यहा पर हम केवल उन नुक्सो का वर्णन करेगे जो केवल बाडी कोटो मे पाये जाते हैं और साधारण कोटो से उनका कोई सम्बन्ध

नहीं है। क्योंकि साधारण कोटों के बारे में हम भली भांति लिख चुके है।

जहां साधारण कोट के तीन टुकड़े होते है, पीठ, सामना और बाजू वहां बाडी कोटों के पांच टुकड़े होते है, पीठ, बाडी, सामना, स्कर्ट, अथवा घघरी और बाजू।

(१) स्कर्ट का चाक पीठ पर खुलना अथवा फटना

(GAPING SKIRTS PLEATS)

यह नुक्स चित्र सं० १०८ से जाहिर किया गया है। प्रायः यह नुक्स उस समय मालूम होता है जब कि कोट के बटन आगे से बन्द कर दिये जायें। हां जब नुक्स बहुत ज्यादा हो तो हर समय नजर आता रहता है चाहे बटन बन्द हों या खुले जैसाकि इस चित्र को देखने से प्रतीत होता है पीठ पर चाक (opening) नीचे घेरे के पास फटता अथवा खुलता नजर आता है इसका परिणाम यह होता है कि स्कर्ट के आगे के किनारों से ले कर चाक तक का नाप बराबर नहीं होता। कई हालतों में नुक्स इतना बढ जाता है कि पीठ पर नीचे से लेकर चाक आधे से ज्यादा खुलता नजर आता है जिस से इस में से पतलून, जोकि वास्तव में इस के अन्दर छुपी हुई होनी चाहिये, नजर आने लगती
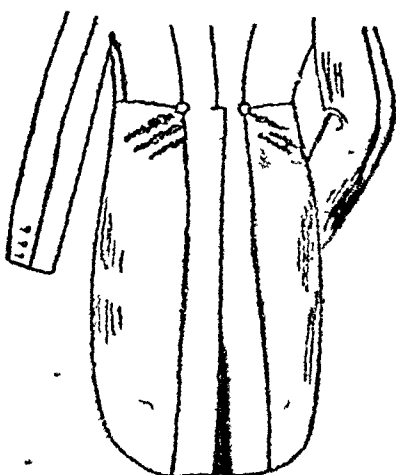
चित्र सं० १०८

है। इसके इलावा स्कर्ट मे हिप पर भी खिच पड़ती नजर आती है और पीठ पर मोंढे की गोलाई भी कई दफा बुरी मालूम देती है।

कारण—इस नुक्स का मुख्य और साधारण कारण स्कर्ट का हिप पर तंग होना है अर्थात् स्कर्ट के हिप की गोलाई ठीक नही बनाई गई बल्कि कम बनाई गई है जिसके कारण से यह नुक्स पडता है। इस तंगी का परिणाम यह होता है कि स्कर्ट मे साईडों पर खिच पड़ने लग जाती है।

इस नुक्स का दूसरा कारण यह हो सकता है कि स्कर्ट की कमर की सिलाई, जिसे स्कर्ट की ऊपर की सिलाई भी कहा जा सकता है, का जरूरत से ज्यादा गोल होना है जिस का परिणाम यह होता है कि सामने मे कमर की 'सिलाई के आगे के किनारे पर से डाट (Vee) निकाली गई मालूम होती है। और जब कमर की सिलाई की जाती है तो स्कर्ट आगे की तरफ खिची आती है और पीठ पर चाक फटने लगता है। नुक्स का यह कारण हो तो सकता है परन्तु ऐसा होता बहुत कम है और प्राय: उस अवस्था मे नुक्स इस कारण से पड़ता है जबकि स्कर्ट काटते समय बाडी और सामने की कमर अथवा घेरे पर की गोलाईयों का विचार बिल्कुल न किया जाय और स्कर्ट की कमर की गोलाई को सामने और बाडी की कमर की गोलाई के अनुसार न बनाया जाय बल्कि स्कर्ट अन्धा धुन्ध अलग काट कर रखा दी जाय तो नुक्स का कारण स्कर्ट की कमर की गोलाई का ठीक न होना

हो सकता है।

इस नुक्स का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि कोट के सामने के कन्धे की ऊंचाई जरूरत से कम बनाई गई हो। अर्थात् कोट बनाना तो अकड़े हुए शरीर वाले आदमी के वास्ते हो और बनाया जाय नार्मल शकल वाले आदमी के वास्ते तो इस प्रकार का नुक्स पड़ जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते स्कर्ट के साईड की सिलाई खोल कर पीठ को स्कर्ट से अलग कर लो। ऐसा करने से इस सिलाई पर पीठ और स्कर्ट एक दूसरे से इतने दूर हो जायेंगे जितनी स्कर्ट के हिप की गोलाई कम कर दी गई होगी। इस तरह से आपको मालूम हो जायगा कि आपने स्कर्ट की गोलाई को कितना ज्यादा करना है।

और यदि नुक्स का कारण स्कर्ट का हिप पर तंग होना न हो बल्कि यह नुक्स सामने के कन्धों की ऊंचाई के जरूरत से कम ऊंचा होने के कारण से हो तो इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कालर को अलग करो। फिर कोट की पीठ को पीछे कमीज़ अथवा वास्कट के साथ पिन से टांक दो और कन्धों की सिलाईयों को खोल कर कोट के सामनों को नीचे की तरफ़ इतना ढिलका दो कि एक तो पीठ पर जो स्कर्ट का चाक फटना था वह ठीक हो जाय दूसरे पीठ पर मोंढे की गोलाई के पास जो शिकन पड़ते थे वह ठीक हो जाये।

चित्र सं० १०६ मे दिखाया गया है कि जब नुक्स का कारण

स्कर्ट का हिप पर तंग होना हो तो स्कर्ट के पीठ की तरफ़ के किनारे पर के दबाव को नीचे की तरफ अर्थात् घेरे पर से तंगी के आधे के बराबर बाहिर निकाल दो। अर्थात् चाक जितना फटता हो स्कर्ट के पीठ की परफ के किनारे पर के दबाव को इस के आधे के बराबर बाहिर निकालो जैसाकि इस चित्र मे २ से ३ तक जाहिर किया गया है। यह दबाव केवल घेरे के पास से ही बाहिर निकालना चाहिए और ऊपर निशान १ के साथ नीचे के निशान ३ को मिला देना चाहिये जैसाकि इस चित्र मे बिन्दियों वाली लकीर १–३ से जाहिर किया गया है।
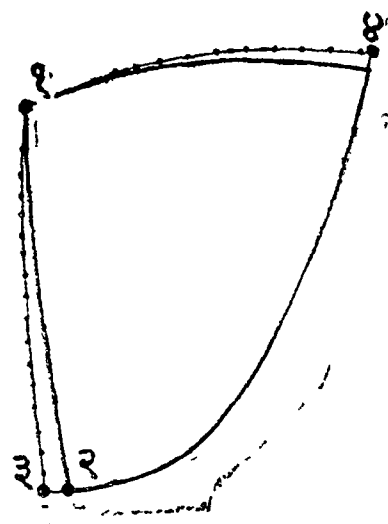
परन्तु जब स्कर्ट के पीछे की सिलाई के किनारे पर इतना दबाव न हो जितना कि बाहिर निकालने की जरूरत हो तो बाकी कमी को स्कर्ट की कमर की सिलाई पर के दबाव को आगे से निकाल कर पूरा करो। जैसाकि इस चित्र मे निशान ४ से जाहिर किया गया है। अब बिन्दियो वाली लकीरों के अनुसार निशान ४ को १ के साथ मिला कर नुक्स को दूर करो।

चित्र सं० १०६

जब नुक्स का कारण स्कर्ट का हिप पर तंग होना न हो

बल्कि नुक्स सामने के कन्धो के जरूरत से कम ऊंचा होने के कारण से हो तो सामने के कन्धों पर के दबाव को चित्र सं० ११० के अनुसार निशान ५ से ६ तक बाहिर निकालो जैसाकि यहां पर विन्दियों वाली लकीरों से जाहिर किया गया है। और यदि सामने के कन्धों की सिलाई पर दबाव न हो तो इस नुक्स को दूर करने के वास्ते साईड की सिलाई को खोल कर सामने को साईड की सिलाई पर से ऊपर को सुरका दो और बाडी को नीचे उतार दो ताकि सामने के साईड की सिलाई का निशान ८ बाडी के निशान ६ के साथ मिल जाय और मोंढे की गोलाई को निशान १० पर डैश वाली लकीर के अनुसार उतना नीचा करो जितना कि सामने को साईड पर से बाडी की अपेक्षा ऊपर को सुरकाया हो। ऐसा करने से सामने के साईड की लम्बाई नीचे से कम हो जाती है क्योंकि सामना ऊपर को सुरका कर मोंढे को छांट दिया जाता है। इस कमी को पूरा करने के वास्ते सामने के नीचे का दबाव, जिसे कमर पर का दबाव भी कहा जा सकता है, बाहिर निकाल कर सामने के साईड को बाडी के साईड के बराबर करो तो नुक्स जाता रहेगा॥
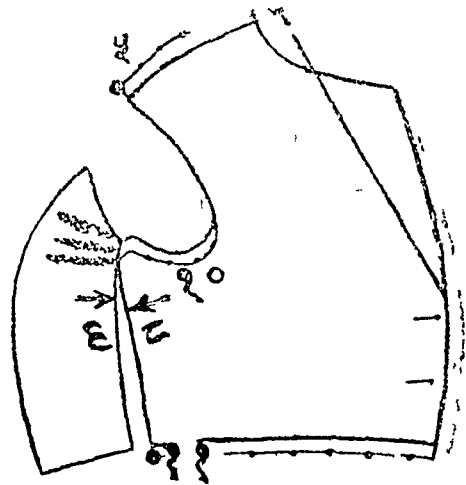
चित्र सं० ११०

(२) स्कर्ट के चाक का जरूरत से ज्यादा एक दूसरे के ऊपर चढ़ना

(PLEATS OVERLAPING TOO MUCH)

इस अवस्था मे कोट बाकी सब प्रकार से ठीक है केवल पीठ पर चाक (Opening) जरूरत से ज्यादा एक दूसरे के ऊपर चढ़ा हुआ है । पीठ ऊपर से लेकर कमर तक बिल्कुल ठीक है । केवल नीचे नुक्स है जोकि चित्र सं० १११ से जाहिर किया गया है ।
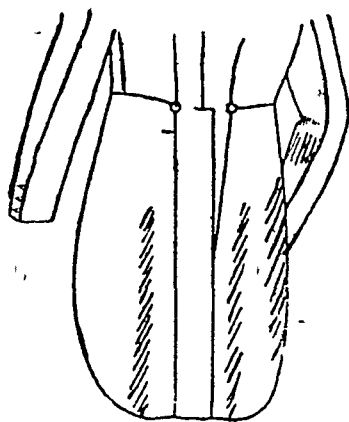
चित्र सं० १११

कारण—यह नुक्स चित्र सं० १०८ वाले नुक्स का बिल्कुल उलट है इसी वास्ते इसका कारण भी उसका उलट अथवा स्कर्ट के हिप की गोलाई का जरूरत से ज्यादा गोल होना है ।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते ग्राहक को कोट पहिना कर स्कर्ट को किसी तरफ अथवा दाये या बाये तरफ इतना खेचो कि चाक बिल्कुल ठीक हो जाय । अर्थात् चाक के तलपट (Overlaping) की ज्यादती को साईड की तरफ खेच कर स्कर्ट को ग्राहक की कमीज अथवा पाजामे या पतलून के साथ पिन से टाक दो जैसाकि चित्र सं० ११२ मे निशान १ से जाहिर किया गया है । ऐसा करने से मालूम हो जायगा कि स्कर्ट हिप

पर कितनी ज्यादा चौड़ी है क्योंकि पिन लगाने अथवा स्कर्ट को पाजामें के साथ टांकने से स्कर्ट की जो ज्यादती होगी वह यहां पर इकट्ठी हो जायगी। स्कर्ट हिप पर जितनी जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो उसके आधे के बराबर चित्र सं० ११२ में ३ से ४ तक नापो। निशान ४ को ऊपर की तरफ निशान २ के साथ बिन्दियों वाली लकीर के
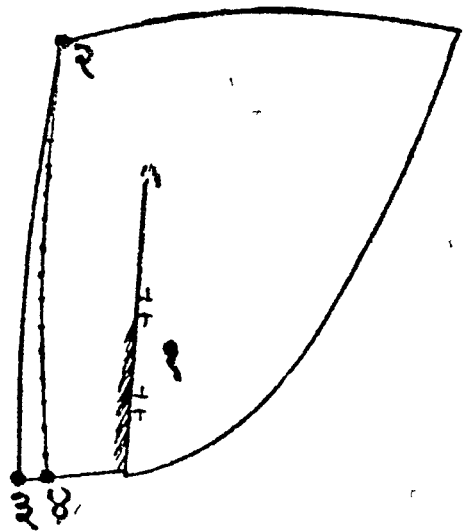
साथ मिलाओ। ऐसा करने से स्कर्ट मे चित्र सं० ११२ से २, ३, ४ वाला टुकडा कम हो जायगा और नुक्स जाता रहेगा॥

(३) चाक का तलपट ज्यादा होना और पीठ का कमर पर शरीर से दूर उठ खड़ा होना।

(PLEATS OVERLAPING & BACK WAIST STANDING AWAY FORM THE FIGURE)

यह नुक्स ऊपर वाले नुक्सों से बिल्कुल भिन्न है अर्थात् जहा ऊपर वाले नुक्सों मे कोट कमर पर बिल्कुल फिट होता था वहां इस अवस्था मे कोट ग्राहक की कमर पर से दूर उठ खड़ा होता है न केवल कमर पर ही यह नुक्स विशेष होता है बल्कि सारी की सारी पीठ ऊपर टीक से लेकर नीचे तक बिगड़ी हुई नज़र आती है। जब कोट के बटन खोल दिये जायें तो बजाय इसके कि कोट

अपनी असली जगह पर खडा रहे इसका बहुत सा हिस्मा पीछे को चला जाता है, और पीठ पर कोट इतना ढीला मालूम होता है, जैसाकि बहुत ढीला सा ओवर कोट बनाया गया हो और कपड़ा पीठ पर थेले की तरह इकट्ठा हो जाता है हालाकि कोट इस हिस्से पर ढीला बिल्कुल नही होता बल्कि नुक्स का मूल कारण कुच्छ और होता है। इसका परिणाम यह भी होता है कि चित्र स० ११३ की न्याई कोट की पीठ मे तिरछे शिकन पडने लग जाते है जोकि कमर से लेकर साईडों की तरफ जाते नजर आते है।

चित्र सं० ११३
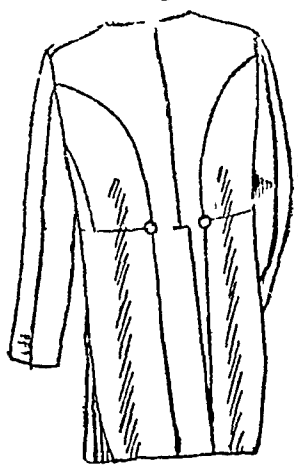
कारण—इस नुक्स का कारण जाहिरा तौर पर यह मालूम होता है कि कोट की स्कर्ट जरूरत से ज्यादा चौडी अथवा खुली बनाई गई है। परन्तु वास्तव मे इस नुक्स का यह कारण नही है बल्कि यह नुक्स पीठ की लम्बाई के जरूरत से कम होने के कारण से पडता है। क्योंकि पीठ कम लम्बी होने के कारण से सारे कोट को पीछे की तरफ खेचती है जिसका परिणाम यह होता है कि इस प्रकार का नुक्स पैदा हो जाता है। इस प्रकार का नुक्स प्राय ऐसे आदमियो के कोटों मे पडता है जिनका शरीर तो आगे की तरफ झुका हुआ हो परन्तु कोट काटते समय ... जाय और कोट

नार्मल शकल वाले आदमी के अनुसार काट दिया जाय। आगे को झुके हुए आदमी की पीठ क्योंकि नार्मल शकल से लम्बाई में ज्यादा होती है इस वास्ते कोट की पीठ उसके शरीर के अनुसार न होने के कारण से कोट में यह नुक्स पड जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट का कालर खोल कर अलग करो और कन्धों की सिलाई को भी खोल कर कोट की पीठ को नीचे की तरफ इतना सुरका दो कि न केवल कोट की कमर अपनी असली जगह पर आजाय बल्कि स्कर्ट के चाक के तलपट का नुक़्स भी जाता रहे।

पीठ की लम्बाई को बढ़ाने के दो तरीके है पहला साधारण तरीका तो यह है कि चित्र सं० ११४ की तरह कोट की पीठ को ऊपर टीक और कन्धों पर से बड़ा कर दिया जाय। जैसाकि इस चित्र में बिन्दियों वाली लकीरों की मदद से निशान १, २, ३ से जाहिर किया गया है अर्थात् ट्राई करते समय पीठ को जितना नीचे की तरफ़ सुरकाने से नुक़्स चला गया हो उतना ही पीठ को ऊपर टीक पर १ से २ तक और कन्धों पर २ से ३ तक बड़ा करो। ऐसा करने से बाडी की सिलाई को भी ठीक करना पड़ेगा जिससे बहुत ज्यादा कठिनाई होगी इस कठिनाई
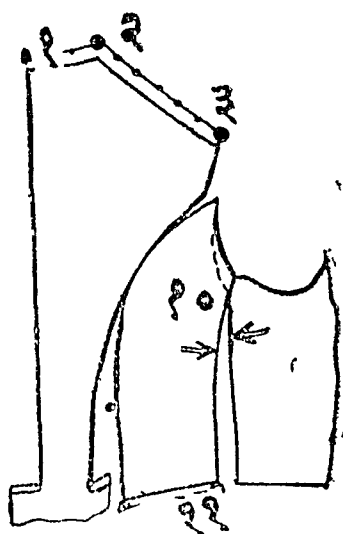
चित्र सं० ११४

को दूर करने का सरल तरीका यह है कि जितना पीठ को कोट और कन्धों पर बडा करने से मोंढे का ऊपर का हिस्सा बडा हुआ हो उतना ही आस्तीन के ऊपर के हिस्से अर्थात् गोले के मोंढे की गोलाई को ऊंचा करो जैसाकि चित्र सं० ११५ मे बिन्दियों वाली लकीरों से जाहिर कर दिया गया है। यदि हम आस्तीन को भी इस प्रकार से ठीक नही करेगे तो जब ग्राहक कोट पहिन कर बाजू आगे को अथवा ऊपर को करेगा तो उसे तकलीफ होगी।
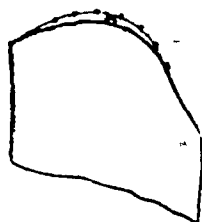
चित्र सं ११५

ऐसा तो हम केवल उस समय कर सकते है जबकि कोट बनाया जा रहा हो परन्तु जब कोट तैयार हो चुका हो और उसमे इस प्रकार का नुक्स नजर आजाय तो ऊपर लिखी विधि से इसे ठीक करने मे ज्यादा काम करना पड़ेगा। इस वास्ते ऐसी अवस्था मे इस नुक्स को नीचे लिखी रीती से दूर करना चाहिये अर्थात् जब कोट की टीक और कन्धों पर दबाव न हो जिसको कि बाहिर निकाल कर कोट की पीठ की लम्बाई को बडा किया जासके तो चाहे कोट कच्चा हो अथवा तैयार हो चुका हो तो नुक्स नीचे लिखी रीती से ठीक किया जायगा।

ऐसी अवस्थाओं मे कोट की बाडी को चित्र सं० ११४ मे डैश वाली लकीरों के अनुसार ऊपर से निशान १० पर छांठ कर इसे सामने से जरा ऊपर की तरफ सुरका दो। ऐसा करने से पीठ स्वयम ही नीचे को चली जायगी परन्तु बाडी नीचे से

छोटी हो जायगी क्योंकि इसे ऊपर की तरफ सुरकाया गया है। बाडी की लम्बाई की कमी को पूरा करने के वास्ते इस के घेरे पर के दबाव को बाहिर निकाल दो जैसाकि इस चित्र मे निशान ११ से जाहिर किया गया है। इसका परिणाम भी वही होगा जोकि पीठ को निशान १, २, ३ पर बड़ा करने से होता है और नुक्स सब प्रकार से दूर हो जायगा॥

(४) कोट का पीठ का मोंढे की हड्डियों पर ढीला होना (HANGING LOOSELY BELOW THE BLADES)

इस नुक्स को चित्र द्वारा इस वास्ते नहीं दिखलाया गया है क्योंकि यह जाहिरा तौर पर लग भग इससे पहले नुक्स की तरह नजर आता है। भेद केवल इतना है कि जहां ऊपर वाले नुक्स मे कोट की सारी पीठ शरीर से अलग उठ खड़ी होती है वहां इस अवस्था मे पीठ के बीच की सिलाई और स्कर्ट तो शरीर पर ठीक बैठते है अर्थात् उनमे किसी प्रकार का नुक्स नही पड़ता परन्तु बाड़ी और पीठ के ऊपर वाली गोल सिलाई पर अर्थात् मोंढे की हड्डियों से नीचे कोट ढीला मालूम होता है और स्कर्ट मे भी कमर से लेकर नीचे की तरफ शिकन पड़ने लग जाते हैं। कोट का गिराओ चाहे बाकी सब प्रकार से ठीक है अर्थात् कमर पर भी कोट किसी प्रकार से ढीला अथवा तंग नहीं है तो भी जब कोट के बटन खोल दिये जाये तो सामने पीछे को खिसकने शुरू कर देते है और कभी २ कोट के सामनों के आगे के किनारे भी एक दूसरे से दूर चले जाते है।

कारण—इस नुक्स का कारण कोट का तंग होना नहीं है और न ही कोट के ढीला होने से यह नुक्स पड़ता है। इस नुक्स का कारण यह है कि कोट के टुकड़े काटते समय जहा २ पर जितनी ढिलाई रखनी थी वहा पर उतनी नही रखी गई बल्कि कही पर ज्यादा और कही पर कम रखी गई है। ऐसा करने से ढिलाई तो पूरी हो गई है परन्तु टुकड़े अपनी २ जगह पर ठीक नही बैठते। जिसका परिणाम यह नुक्स पड़ने लग जाता है। जिस आदमी का शरीर अकडा हुआ हो अथवा पेट बड़ा हो उसके कोट मे यह नुक्स अधिक पड़ता है क्योंकि कोट काटते समय पेट की ज्यादती को नियमानुसार आगे की तरफ से बढाने की बजाय इसको साईड आदि की तरफ से बढ़ा दिया जाता है जिस का परिणाम यह होता है कि इस प्रकार का नुक्स पडने लग जाता है। इस वास्ते ऐसी हालतो मे आगे की ही तरफ ज्यादती की जाती है और साईड को तो नार्मल शकल से भी अधिक पतला काटना चाहिये। स्कर्ट मे जो झोल पडता है उसका कारण ऊपर का बाडी वाला ही हिस्सा है नही तो स्कर्ट मे कि ी प्रकार का नुक्स नही पडता।
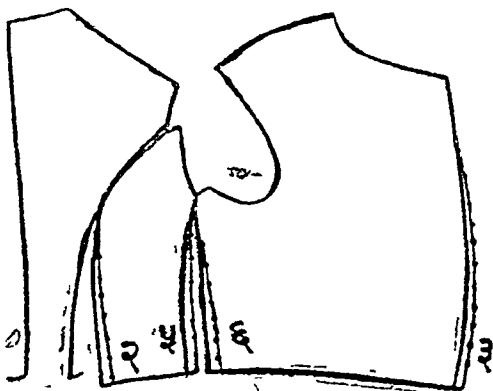
चित्र सं० ११६

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० ११६ की तरह कोट की बाड़ी के पीछे की तरफ़ की सिलाई को निशान २ पर तंग करो और सामने को आगे की तरफ़ निशान ३ पर उतना ही बढ़ा दो । ऐसी अवस्था मे सामने को भी साईड की तरफ़ से निशान ६ पर दबाओ और बाडी को सामने की तरफ़ से निशान ५ पर उतना ढीला करो जैसाकि इस चित्र में बिन्दियों वाली लकीरों से दिखलाया गया है ॥

(५) बाडी के पीछे वाली सिलाई के ऊपर के हिस्से पर कोट का फूलना

(FULNESS AT THE TOP OF BLADE SEAM)

यह नुक्स केवल ऐसे आदमियों के कोटों में पड़ता है जिनका शरीर आगे को झुका हुआ हो अथवा पीठ पर मोंढे की हड्डिया बहुत ज्यादा बाहीर की तरफ निकली हुई हों। यह नुक्स पीठ पर मोंढे की हड्डियों और मोंढे की सिलाई की गोलाई के मध्य मे पड़ता है जैसाकि चित्र सं० ११७ से जाहिर किया गया है। जब बाजू आगे को लाया जाता है तो इन दोनों स्थानों के मध्य मे स्पष्ट तौर पर खिच पड़ती नज़र आती है।
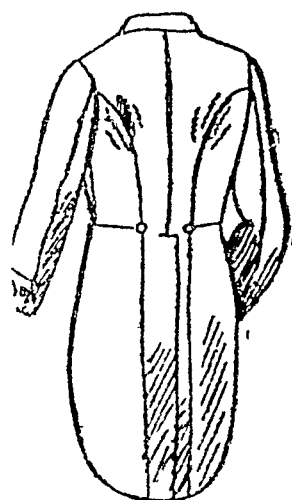
चित्र स० ११७

कारण—क्योंकि, जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, ग्राहक की पीठ पर की मोंढे की हड्डिया बाहिर

को निकली हुई है और कोट काटते समय साईडबाडी को इस भाग पर इतना गोल नहीं किया गया अथवा नीचे कमर पर पूरा २ ढीला नही किया गया जिससे यह नुक्स पड जाता है। ट्राई करते समय भली भाति न देखने से अथवा नुक्स को न समझने से यह कष्ट होता है। मोढे के नीचे कोट को दबा दिया जाता है ऐसा करने का विचार तो यह होता है कि कोट पीठ पर बिल्कुल ठीक हो जाय परन्तु ऐसा होता नही है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट की आस्तीन खोल कर अलग कर दो और मोंढे की हड्डियों पर बाडी की गोलाई को भी थोडा सा खोल दो। ऐसा करने से बाडी की गोलाई पर की खुली हुई जगह कुच्छ खाली हो जायगी। आप यह देख ले कि कितनी जगह खाली हो जाती है यही इस गोलाई की तंगी को जाहिर करती है।

चित्र स० ११८ मे निशान १ पर साईड बाडी अथवा बाडी को मोढे की गोलाई पर बिन्दियों वाली लकीरो की सहायता से थोड़ा सा दबाव बाहिर निकाल कर दिखलाया गया है और इसके साथ ही बाडी के पीछे वाली सिलाई के ऊपर वाले हिस्से को चित्रानुसार दबाया गया है।

इस नुक्स को दूर करने का दूसरा तरीका चित्र सं० ११८ यह भी है कि बाडी की मोंढे की हड्डियों पर की गोलाई

को जरा बाहिर की तरफ़ निकाल दिया जाय जैसाकि चित्र सं० ११६ में बिन्दियों वाली लकीर की सहायता से जाहिर किया गया है परन्तु ऐसा करने से छाती का नाप बढ़ जाता है इस वास्ते इस ज्यादती को दूर करने के वास्ते बाडी और सामने के दरमियान की सिलाई पर से सामने को थोड़ा सा छाती पर से दबा देना चाहिये। जैसाकि इस चित्र मे बिन्दियों वाली लकीरों की सहायता से जाहिर किया गया है। ऐसा करने से न केवल छाती का नाप ही ठीक हो जाता है बल्कि नुक्स भी बिल्कुल जाता रहेगा। इस नुक्स को इन दोनों मे से किसी एक तरीके से दूर किया जा सकता है।

(६) मोंढे की हड्डियों पर फूलते हुए शिकन
(BULDGING OREASES OVER THE BLADES)

चित्र सं० ११६.क की सहायता से यह नुक्स जाहिर किया
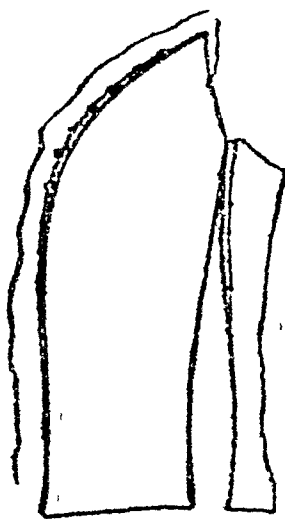
चित्र सं० ११६
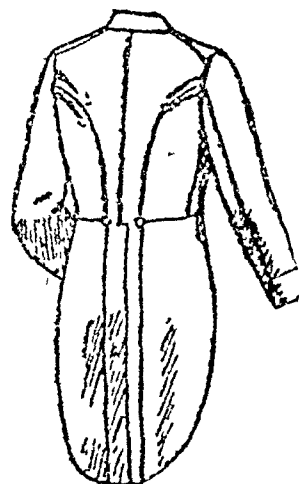
चित्र सं० ११६ क

गया है। यहां पर कोट कमर, टीक अथवा गले पर तो बिल्कुल ठीक

है परन्तु टीक और कमर के मध्य मे अथवा पीठ पर मोंढे की हड्डियों के आस पास कोट इतना बुरा मालूम देता है कि न केवल यहा पर शिकन ही पडते नजर आते है बल्कि कोट यहा पर शरीर से ऊपर उठ खडा होता है जब ग्राहक कोट पहिन कर बैठा हुआ हो तो कोट ऊपर की तरफ़ चढ़ना शुरू कर देता है जिसका परिणाम यह होता है कि कालर के नीचे कपडा दब कर इकट्ठा हो जाता है और शिकन पड़ने लग जाते है।

कारण—इस कोट का नुक्स चित्र सं० ११७ वाले नुक्स से बिल्कुल उलट है अर्थात् जहां चित्र सं० ११७ वाले नुक्स का कारण कोट का मोंढे की हड्डियों पर तंग होना है वहा इस कोट के नुक्स का कारण उसका उलट अर्थात् कोट का मोंढे की हड्डियों पर जरूरत से ज्यादा खुला होना है जिसका परिणाम यह होता है कि यह ज्यादती मोंढे की सहायता से पीछे को धकेली जाती है और पीछे की तरफ़ इकट्ठी हो कर शिकनों का कारण बनती है। इसका कारण कोट का कमर पर की गोल लकीर पर जरूरत से ज्यादा तंग होना हैं। जिस ग्राहक का यह कोट बनाया गया है उसका शरीर अकड़ा हुआ है जिससे उसकी पीठ साधारण अथवा नार्मल शकल से ज्यादा चपटी अथवा सीधी है अर्थात् उसके मोंढे की हड्डिया बाहिर की ओर निकली हुई होने की बजाय अन्दर को धसी हुई हैं। परन्तु कमर को पीठ की गोलाई पर शरीर के मुताबिक बनाये जाने की बजाय उससे बडा बनाया गया है जिससे यह नुक्स पड़ जाता है इस नुक्स का कारण पीठ का ज्यादा लम्बा होना भी हो सकता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट को इस स्थान पर

खोल दो ऐसा करने से बाडी का जो फ़ाल्तू कपड़ा होगा वह पीठ के नीचे अन्दर की तरफ़ सुरका दिया जायगा और शिकन सब प्रकार से जाते रहेगे। अब पीठ की गोलाई के साथ २ बाडी पर इस अवस्था मे पड़े हुए कोट को जबकि सब प्रकार के शिकन दूर हो गए हों चाक से निशान लगाओ जिससे आपको मालूम हो जायगा कि बाडी इस भाग पर जरूरत से कितनी अधिक बड़ी है।

चित्र सं० १२० के अनुसार बाडी के पीछे की तरफ़ की सिलाई को कमर की लकीर पर निशान ४ पर ढीला करो जैसाकि इस चित्र मे यहां पर बिन्दियों वाली लकीर की सहायता से ज़ाहिर किया गया है। इस बात का विचार जरूर कर लेना चाहिये कि छाती पर इसे बिल्कुल ढीला न किया जाय। यदि कमर पहले तंग बनाई गई हो तो नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा परन्तु जब कमर पहले ही पूरी बनाई गई हो तो कोट कमर पर ढीला हो जायगा। इस ज्यादती को दूर करने के वास्ते या तो बाडी को निशान ५ पर
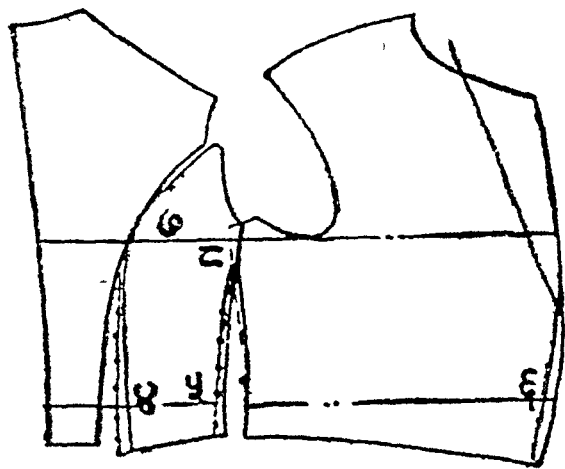
चित्र सं० १२०

तंग करो या सामने को निशान ६ पर छोटा करो ताकि कमर का नाप पूरा हो जाय। ऐसा करने से नुक्स जाता रहेगा।

ऊपर लिखी विधि से कोट उस अवस्था मे ठीक किया जाता है जबकि कोट कच्चा हो। परन्तु जब कोट लग भग सारा तैयार

हो तो उस अथस्वा में ऐसा करने से काम बहुत सा बढ़ जायगा इस वास्ते ऐसी अवस्था मे इस नुक्स को दूर करने का सरल तरीका यह होता है कि बाडी की गोलाई को डैश वाली लकीरों के अनुसार निशान ७ पर आवश्यकता अनुसार घटाया जाय। ऐसा करने से कोट मे जितनी तंगी हो गई हो उसको सामने के साईड पर का दबाव डैश वाली लकीरों के अनुसार निशान ८ पर बाहिर निकाल कर दूर करो। तो नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा।

(७) पीठ की स्कर्ट का कोट को चाक के ठोके पर ऊपर को धकेलना

(BACK SKIRT KICKING UP BELOW TACK)

यह नुक्स चित्र सं० १२१ से जाहिर किया गया है इसमे पीठ की घघरी के बीच वाले किनारे पर चाक के ठोके से ज़रा नीचे शिकन पड़ता है जिससे कपड़ा इकट्ठा होता नजर आता है। कभी २ ऐसा भी होता है कि पीठ से धकेला जाकर सामने की स्कर्ट मे भी झोल पड़ने लग जाता है।

चित्र सं० १२१

कारण-प्राय. कटर लोग इस नुक्स की जिमेवारी कारीगर पर डालते है और यह कहते है कि कारीगर ने चाक का ठोका बाधते समय पीठ के दोनों पले ठीक रख कर नही बिछाये जिससे यह नुक्स पड़ गया है।
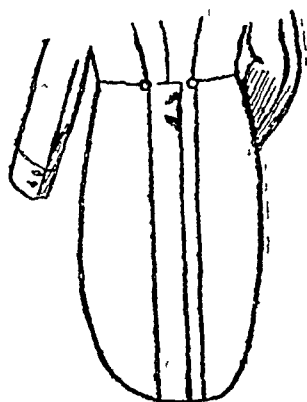
अर्थात् वह लोग इस नुक्स का कारण ठोके का ठीक न बांधा जाना कहते हैं। हम यह नहीं कहते कि ऐसा कभी नही हो सकता बल्कि ऐसा तो प्रायः होता ही रहता है अर्थात् चाक के ठोके के ठीक न बांधे जाने के कारण से यह नुक्स प्रायः पड़ जाता है परन्तु यह नुक्स कटर की ग़लती का परिणाम भी हो सकता है, जैसे कोट की पीठ काटते समय चाक का ऊपर से लेकर नीचे तक का किनारा सीधा होने की बजाय ऊपर ठोके की अपेक्षा घेरे पर अन्दर की तरफ़ चला जाने से यह नुक्स पड़ जाता है जैसाकि चित्र सं० १२२ मे १० से ११ तक बिन्दियों वाली लकीर की सहायता से दिखाया गया है अर्थात् १० से ११ तक की लकीर के सीधा होने की बजाय अन्दर की तरफ चले जाने से यह नुक्स पड़ जाता है। क्योंकि ऐसी अवस्था मे जब स्कर्ट को पीठ के साथ जोड़ा जाता है तो लकीर १०-११ को खेंच कर इसकी असली हालत १०-१२ पर लाने की कोशिश की जाती है जिसका परिणाम यह होता है कि ऊपर का नुक्स पड़ने लग जाता है चाहे कारीगर कितनी मेहनत क्यों न करे वह इस नुक्स को बिल्कुल ठीक नही कर सकते जब तक कि कटर स्वयं इस नुक्स को कटाई मे दूर न कर दे।

इस नुक्स का एक और कारण यह भी हो सकता है कि स्कर्ट की कमर की सिलाई के आगे की तरफ़ की गोलाई की लकीर पूरी गोल न बनाई गई हो अर्थात् यह लकीर जरूरत से कम गोल अथवा सीधी बनाई गई हो जिस से सामने की स्कर्ट

पीछे की तरफ धकेली जाती है। और चाक ज़रूरत से ज़रा ज्यादा एक दूसरे के ऊपर चढ़ने लग जाता है जिससे यह नुक्स पडने लगता है।

इस नुक्स को चित्र सं० १२२ की सहायता से दूर करके दिखाया गया है। इस नुक्स को दूर करने का सरल तरीका यह है कि चाक के ठोके को खोल कर पीठ को चित्रानुसार १३ पर ज़रा ऊपर को उठा लो जैसाकि डैश वाली लकीरों से निशान १३ पर दिखाया गया है। इस से ग्राहक की तसल्ली तो हो जायगी परन्तु नुक्स बिल्कुल ठीक न होगा।

इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने का ठीक तरीका यह है कि पीठ पर का लकीर १०-११ पर का दवाव वाहिर निकाल कर २१ से १२ तक का निशान लगाओ ताकि लकीर १०-१२ सीधी हो जाय। १० से १२ तक पीठ की चौडाई को घेरे पर जितना वढाया हो दूसरी तरफ १५ से २५ तक पीठ को नीचे से उतना घटा दो और निशान १५ को ऊपर की तरफ ठोके तक लेजाकर मिला दो तो नुक्स जाता रहेगा।

नोट—इस चित्र मे त्रिन्द्रियों वाली लकीरे ग़लत चित्र को जाहिर करती है और सीधी लकीरे ठीक चित्र को॥
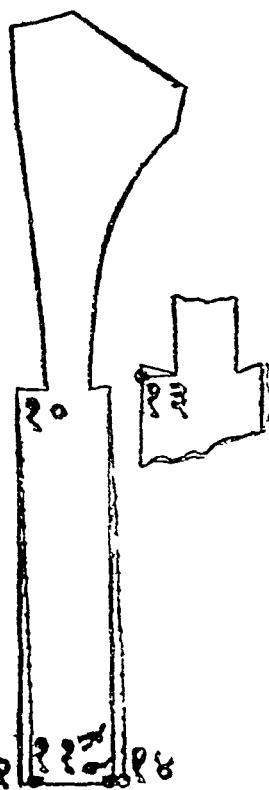
चित्र सं० १२२

(८) कमर की सिलाई और चाक के ठोके का जरूरत से ज्यादा नीचा होना।

(WAIST SEAM & TACK TOO LOW)

कोट की कमर की सिलाई ग्राहक के शरीर पर उस स्थान पर आनी चाहिये जहां पर कि ग्राहक की कमर हो परन्तु इस अवस्था में कोट की कमर की सिलाई ग्राहक की कमर से बहुत नीचे चली गई है जिससे यह प्रतीत होता है कि यह कोट किसी बहुत ऊंचे कद वाले आदमी के वास्ते बनाया गया है देखो चित्र सं० १२३। यह नुक्स प्रायः छोटे कद वाले ग्राहकों के कोटों मे पडता है। क्योंकि कोट की कमर की सिलाई ग्राहक के शरीर पर कमर के ऊपर नही पड़ती इस वास्ते कोट बहुत बुरा दिखाई देता है। इस चित्र मे डैश वाली लकीरें ग्राहक के असल कमर के निशान को जाहिर करती है कोट की कमर की सिलाई इस से बहुत नीचे तक चली गई है जो न केवल देखने मे ही बुरी दिखाई देती है बलिक पहिनने वाले को भी दुख देती रहती है।
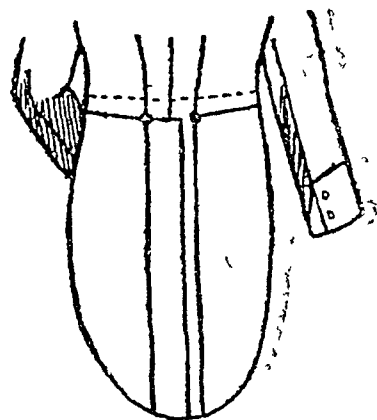
चित्र सं० १२३

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण कमर तक की लम्बाई के नाप का ठीक न लिया जाना है। अर्थात् कोट काटते समय

कटर का ग्राहक के कद आदि को भूल जाना ही इस नुक्स का मुख्य कारण होता है। क्योंकि कोट तो बनाया जा रहा है छोटे कद वाले आदमी के वास्ते और कमर तक की लम्बाई का नाप उस से बहुत बडा रखा जाता है। इस वास्ते कटर को चाहिये कि हमेशा कोट काटते समय विचार कर लिया करे कि कमर की लम्बाई का नाप उस ग्राहक के वास्ते जिस के वास्ते कि वह कोट बनाया जा रहा है ठीक होगा या नही। चाहे कोट के बाकी नाप उस कटर ने ग्राहक के शरीर पर से स्वयम् ही लिये हों अथवा ग्राहक को उसने देखा तक भी न हो वह स्वयम् बाकी नापों की ही सहायता से देख सकता है कि कमर की लम्बाई का जो नाप आर्डर बुक मे लिखा हुआ है वह ठीक है अथवा ग़लत। साधारण कोटों के वास्ते कमर की लम्बाई का नाप दौड़ के नाप के आधे हिस्से से १ इंच ज्यादा के बराबर होता है और बाडी कोटो मे यह नाप साधारण कोटों से तीन इंच बडा होता है। अर्थात् ३१ इंच दौड के नाप वाले ग्राहक के साधारण कोट की कमर की लम्बाई का नाप दौड के नाप ३१ इंच के आधे साढ़े १५ इच से एक इंच ज्यादा अथवा साढ़े १६ इंच के बराबर होता है और बाडी कोटों की कमर की लम्बाई का नाप इससे तीन इंच ज्यादा अथवा साढ़े १९ इंच के बराबर।

इस नुक्स को चित्र सं० १२४ की सहायता से नीचे लिखी रीती से दूर करना चाहिये। यदि कोट की पीठ मे चाक से जरा ऊपर आवश्यकता अनुसार दबाव रखा हुआ हो तो उस दबाव

को बाहिर निकाल कर चाक के ठोके को ऊंचा किया जा सकता है। यही चाक का टोका ही कमर की लकीर को जाहिर करता है। अब बाडी और सामने को भी घेरों पर से छोटा करके कमर की लकीर को ऊंचा किया जा सकता है। परन्तु ऐसा करने से पीठ की लम्बाई तो ठीक रहेगी लैकिन स्कर्ट जोकि सामने और बाडी के नीचे जोड़ी जाती है की लम्बाई छोटी हो जायगी क्योंकि बाडी और सामने को घेरे पर से छोटा किया गया है। इस कमी को दूर करने के वास्ते स्कर्ट के घेरे पर के दबाव को बाहिर निकाल कर लम्बाई को पूरा किया जा सकता है।
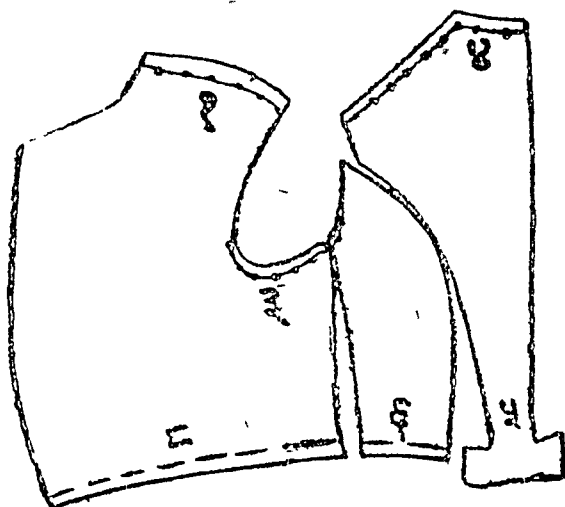
चित्र सं० १२४

परन्तु जब पीठ मे चाक से ऊपर दबाव न रखा गया हो तो सामने और बाडी को तो ऊपर लिखी रीति से ठीक कर लेना चाहिये परन्तु पीठ को मिलिट्री फ्राक-कोटों की तरह चाक का

ठोका जरा ऊपर बांध दिया जाय जिससे नुक्स जाता रहे। ऐसी अवस्था मे बाडी और सामने को आवश्यकता अनुसार निशान ६ और ८ पर डैश वाली लाईनों की सहायता से छोटा किया जाता है ऐसा केवल उस अवस्था मे करना चाहिये जबकि ग्राहक ऐसा कोट लेना मन्जूर करे जिसकी पीठ मिलिट्री कोटों की तरह बनाई गई हो जैसाकि ऊपर बताया गया है ।

अब जबकि पीठ के चाक के ऊपर दबाव भी न रखा गया हो और ग्राहक ऊपर बताई गई रीती से पीठ बनवाना भी पसन्द न करे तो नुक्स नीचे लिखी रीती से ठीक किया जाता है:—

कोट की सारी बाडी को ऊपर से कन्धों की ऊंचाई और मोंढे की गहराई को नीचा करके छोटा करो जैसाकि इस चित्र मे निशान १, ३ और ४ पर बिन्दियों वाली लकीरों से जाहिर किया गया है। ऐसा करने से नुक्स तो बिल्कुल जाता रहेगा परन्तु कोट की लम्बाई छोटी हो जायगी। इस वास्ते घेरे पर के दबाव को चारों ओर से बाहिर निकाल कर लम्बाई के नाप को पूरा करो॥

(९) पीठ में कमर से ऊपर शिकन पड़ना।

(BULDGING IN THE BACK ABOVE THE WAIST)

इस नुक्स वाले कोट की पीठ मे बहुत ही ज्यादा शिकन पडते है। यह सब के सब शिकन कमर की सिलाई से ऊपर २ तिरछी शकल मे पडते है जिससे कोट की पीठ बहुत ही बुरी दिखाई देती है जैसाकि चित्र स० १२५ से जाहिर किया गया है। हिप पर भी स्कर्ट मे बहुत सी खिच और दबाओ पड़ता रहता है। साईड

चित्र सं० १२५

वाडी मे सामने के मोंढे की तरफ़ जाते हुए तिरछे शिकन पड़ते नजर आते हैं। हां यह शिकन प्राय: उस समय नजर आते है जबकि कोट के सामने के बटन बन्द कर दिये जाये।
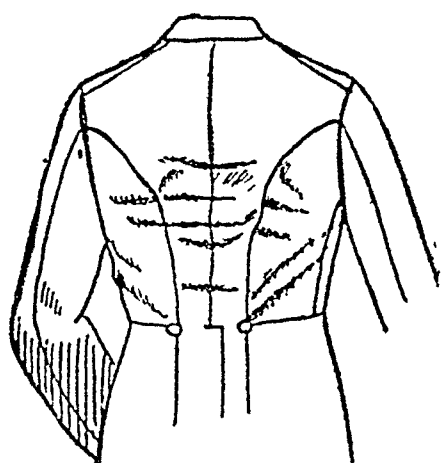
कारण—काम करते समय ध्यान पूरा २ न देना ही इस नुक्स का मुख्य कारण हैं । अर्थात् काम करते समय हाथ तो काम करते हों और दिल कही दूसरी जगह और २ काम करता हो तो आवश्यक तौर पर ऐसे काम का परिणाम ऐसा ही होगा। इस वास्ते कटर को चाहिये कि काम करते समय अपना पूरा २ ध्यान काम की तरफ लगावे कहीं ऐसा न हो कि करता तो काम काटने का रहे और स्वप्न देखता रहे दूसरे कामों के। अर्थात् हाथ तो कपड़े काटने मे लगे हों और दिल और दिमाग़ दूसरे काम करता रहे। यही कारण है कि प्राय: कटर लोग अपना कपड़ा काटने का स्थान एकान्त मे बनाते हैं ताकि काम करते समय उनको किसी प्रकार का दखल न हो सके । कई लोग कहते है कि कटर लोग इस वास्ते एकान्त स्थान मे जाकर काम करते हैं ताकि उनको काटता देख कर कोई कटाई सीख न ले। परन्तु यह उनकी बड़ी भूल है। ऐसा करने का मुख्य कारण यह होता है कि काम करते समय उनका ध्यान कही दूसरी तरफ न चला

जाय। अर्थात् या तो नाप लेते समय नाप ही गलत लिये गए हैं और यदि नाप ठीक हैं तो ध्यान पूर्वक न काटने से यह नुक्स पड जाता है।

यह शिकन, जैसाकि इनको देखने से मालूम होता है, सामने के मोंढे की तरफ जाते मालूम होते है जिससे स्पष्ट तौर पर मालूम होता है कि सामने के मोंढे की गहराई जरूरत से छोटी है और यही इस नुक्स का मुख्य कारण है। और कोट के कमर पर तग होने के कारण से भी यह नुक्स पड़ जाता है।

स्कर्ट की हिप पर जो तंगी मालूम होती है उसका कारण स्कर्ट का हिप पर तंग होना नही है बल्कि उसका मुख्य कारण भी सामने के मोंढे की गोलाई का छोटा होना है। जब मामने के कन्धे कोट को ऊपर की तरफ खेचते हैं तो यह खिच स्कर्ट तक चली जाती है जिससे कोट हिप पर तंग मालूम होता है। वास्तव मे कोट यहा पर तग बिल्कुल नही है। बाडी पर के शिकन भी इसी कारण से पडते है। इससे सिद्ध हुआ कि इस नुक्स का कारण सामने के कन्धों का कम ऊचा होना है चाहे यह गलती नाप लेते समय हुई हो चाहे काटते समय परन्तु इस का मुख्य कारण यही है।

ट्राइ करते समय यदि आप चाहे कि कोट को कही से खोल कर ग्राहक के शरीर पर फिट किया जाय तो यह बात बहुत ही कठिन है। इस नुक्स को दूर करने का तरीका केवल यही है कि ठीक २ नाप लेकर सारे कोट को खोल कर दोबारा उन ठीक नापों की सहायता से निशान लगाओ जैसाकि नीचे चित्र सं०

१२६ की सहायता से दिखाया गया है।

दोबारा निशान लगाते समय सामने के कन्धे को जरूरत के मुताबिक निशान १ से २ तक ऊंचा करो। अर्थात् कन्धे के ऊपर का दबाव बाहिर निकाल कर सामने के कन्धे की ऊंचाई को पूरा करो। परन्तु जब सामने के कन्धों के ऊपर इतना दबाव न हो तो सामने के मोंढे की गहराई को चित्रानुसार नीचा करो ताकि सामने के कन्धे की ऊंचाई ठीक हो जाय। ऐसा करने से सामना साईड बाडी से ऊपर को सुरकाया जायगा और सामने का निशान ३ बाडी के निशान ४ से मिलाया जायगा। इस अवस्था मे जबकि सामना ऊपर को सुरकाया जायगा तो उसकी लम्बाई नीचे से छोटी हो जायगी जोकि घेरे पर के दबाव को बाहिर निकाल कर पूरी की जा सकती है जैसाकि
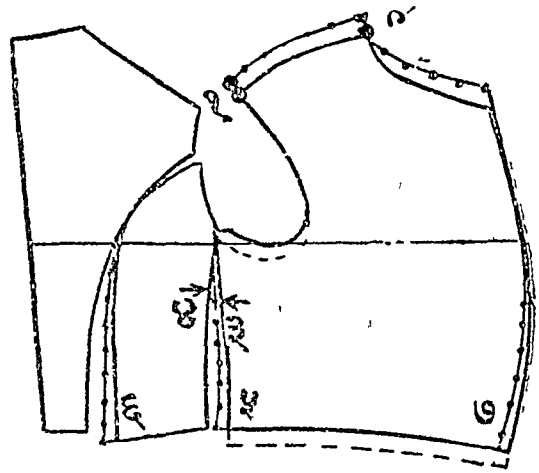
चित्र सं० १२६

इस चित्र मे डैश वाली लकीरों से ज़ाहिर किया गया है। जब सामने को ऊपर को चढ़ाया जायगा तो सामने के साईड का जो हिस्सा फाल्तू ऊपर को नज़र आयगा उसे छांट कर मोंढे की नई गोलाई के साथ डैश वाली लकीरों के अनुसार मिला दो।

मोंढे के नीचे वाली सिलाई को जो सामने और बाडी को मिलाती

है कमर की लकीर पर निशान ५ पर के दबावो को बाहिर निकाल कर कमर के नाप को ढीला करो और इसी तरह साईड बाडी की सिलाई को भी कमर पर से ढीला करके कमर के नाप की बाकी तंगी को पूरा करो जैसाकि निशान ६ पर जाहिर किया गया है। यदि कमर का नाप तंग न हो बल्कि पहले से ही पूरा हो परन्तु निशान ५ और ६ पर की कमर की गोलाईया अन्दर को घुसी हुई होने के कारण से यह नुक्स पडता हो चाहे कमर नाप के मुताबिक पूरी ही क्यों न हो तो भी निशान ५ और ६ पर जरूर इन गोलाईयों को ज़रा सीधा अथवा बाहिर की तरफ़ करने के वास्ते ऊपर बताई गई रीति से ढीला करना होगा और इस ज्यादती को सामने के आगे से निशान ७ पर कम करके कमर के नाप को यथा पूर्वक पूरा करना होगा। हा यदि कमर का नाप तंग बनाया गया हो तो निशान ७ पर ऐसा करने की जरूरत नही॥

(१०) पाठ पर मोंढे से नीचे खड़े शिकन पड़ना

(WEDGE SHAPE FOLD AT BACK SCYE)

इस नुक्स मे जो शिकन दिखाये गये है उनको देखने से मालूम होता है कि कोट इस जगह पर जरूरत से ज्यादा बड़ा बनाया गया है जिससे फ़ाल्तू कपडा शिकनों की शकल मे नजर आता है। यह शिकन पीठ के बीच की सिलाई के थोड़े से फ़ासले से शुरू होकर मोंढे की तरफ़ जाते नजर आते हैं। जिससे यह मालूम होता है कि मोंढे की गोलाई को लोहे से अथवा हाथ से खेच कर लगाया गया है।

यह नुक्स प्रायः ऐसे ग्राहकों के कोटों मे पड़ता है जिनकी पीठ की हड्डी (back bone) आगे को झुकी हुई होती है। सिर आगे को झुका हुआ होता है और कमर मोंढें की हड्डियों से नीचे बिल्कुल पतली हो जाती है। इसी कारण से ऐसे लोगों के कोटों मे यह नुक्स पड़ता है। देखो चित्र सं० १२७।

चित्र सं० १२७
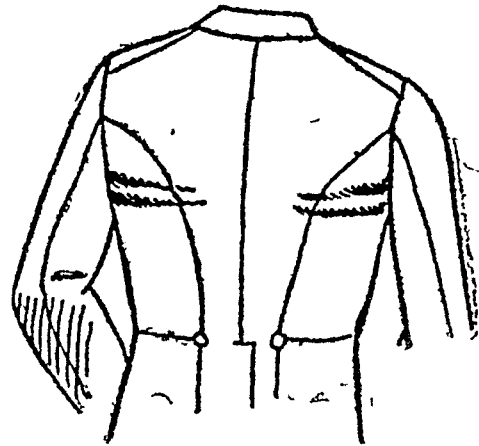
कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि कोट की कटाई करते समय कटर ग्राहक के शरीर की बनावट को भूल गया है यदि वह ऐसा न करता और पीठ के बीच की सिलाई को ऊपर से ग्राहक के शरीर की बनावट के अनुसार आगे को झुका देता तो यह नुक्स कदापि न पड़ता। साईड की सिलाई के जरूरत के मुताबिक ज्यादा गोल करने से नुक्स कुछ न कुछ जाता रहता है परन्तु शरीर की बनावट के मुताबिक जब तक पीठ के बीच की सिलाई को ठीक न किया जाय तब तक नुक्स बिल्कुल ठीक नहीं होता बल्कि उलटा मोंढों पर तंगी और खिच पड़ने लग जाती है।

इस नुक्स को चित्र सं० १२८ की सहायता से नीचे लिखी रीती से दूर करना चाहिये :—

यहां पर बताया जा चुका है कि मोंढे के नीचे जो फ़ाल्तू कपड़ा शिकनों की शकल मे इकट्ठा हो जाता है किस तरह उसे निकाल कर शिकन दूर किये जा सकते है। पीठ को टीक पर से ८ से लेकर ९ तक चित्रानुसार आगे को झुकाओ और पीठ की टीक के गले वाले निशान १० को भी ८ से ९ तक के बराबर आगे को झुकाओ और जहा पर अब टीक का गला बने उसे निशान ११ से जाहिर करो क्योंकि १० से ११ तक ८ से ९ तक के बराबर बनाया गया है इस वास्ते ९ से ११ तक भी ८ से १० तक के बराबर हुआ जोकि टीक को जाहिर करता है निशान ९ को ८ की अपेक्षा जरा ऊंचा बनाओ और ११ को १० से जरा सा नीचा बनाओ। ऐसा उस समय करना चाहिये जबकि ८ से १२ तक मोढे की गहराई पहले ही काफ़ी बनाई गई हो ॥
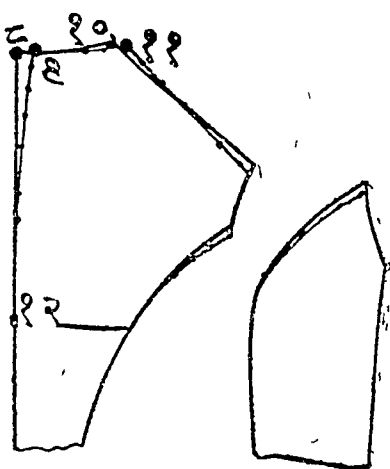
चित्र सं० १२८

(११) कोट का सामना छाती पर तंग होना।

(COAT TOO NARROW ACROS CHEST)

यह नुक्स प्रायः तीन बटन वाले कोठों मे बहुत ज्यादा नजर आता है क्योंकि एक अथवा दो बटन वाले कोटों मे तो ऊपर

का बटन डबल अथवा लिक लगा कर तंगी को दूर किया जा सकता है जैसाकि चित्र सं० १२६ को देखने से मालूम होता है
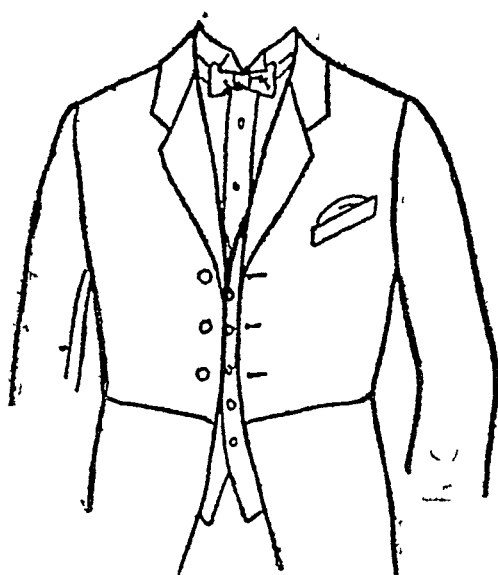
चित्र सं० १२६

कोट के सामने एक दूसरे के ऊपर चढ़ना तो एक तरफ़ रहा एक दूसरे के साथ मिलते भी नही। कोट बाकी सब प्रकार से बिल्कुल ठीक है इस मे किसी प्रकार की खिच अथवा तंगी नही पड़ती।

कारण—क्योंकि कोट बाकी सब प्रकार से ठीक है इस वास्ते इस नुक्स का कारण या तो यह हो सकता है कि कटर ने कोट काटते समय काज और बटनों के वास्ते अथवा एक सामने को दूसरे सामने के ऊपर तलपट चढ़ाने के वास्ते कपड़ा न रखा हो या कोट सामने के मोंढे तक तो बिल्कुल ठीक बनाया गया

हो परन्तु सामने के मोंढे से आगे की चौड़ाई जरूरत से कम रखी हो तो यह नुक्स पड़ जाता है।

प्राय ऐसे नुक्सों को ठीक करना वहुत ही कठिन होता है और इस प्रकार के कोट प्राय रद्दी कर दिये जाते हैं। परन्तु जब कोट के सामने के कन्धों, मोंढे और साईडों पर काफ़ी दवाव रखा हुआ हो तो कोट चित्र सं० १३० के अनुसार नीचे लिखी रीति से ठीक किया जा सकता है।

कोट को साईडों पर १३ से १४ तक जरूरत के मुताबिक ढीला करो। इस के साथ ही कोट के सामने के कन्धो को भी वाहिर अथवा पीछे की तरफ़ खिसका दो अर्थात् कन्धे को गले पर १५ से १६ तक पीछे की तरफ़ सुरकाओ और कन्धे के वाहिर वाले सिरे को १७ से १८ तक उतना ही वाहर की तरफ़ करो। अथवा १७ से १८ तक को १५ से १६ तक के वरावर वनाओ ताकि अब जो सामने के कन्धे की लम्बाई १६ से १८ तक वने वह सामने के कन्धे की पहले की लम्बाई १५ से १७ तक के वरावर वने। ऐसा करते समय इस वात का विचार जरूर कर ले कि नये कन्धे के दोनों सिरे पुराने कन्धों के वरावर ही ऊचे हों अर्थात निशान
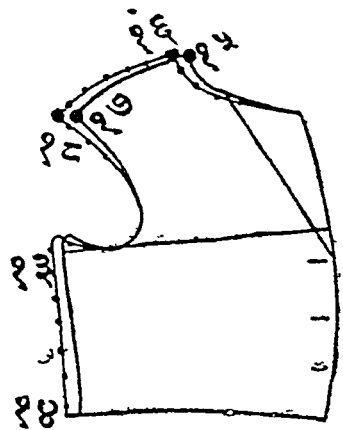
चित्र सं० १३०

१६ तो निशान १५ की सीध मे हो और निशान १८ निशान १७ की सीध मे हो। ऐसा करने से नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा ॥

(१२) कोट का सामना छाती पर बहुत चौड़ा होना

(COAT TOO WIDE ACROSS CHEST)

यह नुक्स चित्र सं० १३१ से जाहिर किया गया है और चित्र सं० १२६ से बिल्कुल उलट है। अर्थात् जहाँ चित्र सं० १२६ मे कोट का सामना छाती पर तंग था वहा इस अवस्था मे कोट यहां पर जरूरत से ज्यादा चौड़ा है। सामने एक दूसरे के ऊपर जरूरत से ज्यादा चढ़ जाते है फिर भी कोट बाकी सब प्रकार से ठीक है उसमे किसी प्रकार का ढीलापन नही है साधारण कोटों मे यह नुक्स बहुत बुरा मालूम होता है हां मर्निंग कोटों मे यह नुक्स थोड़ा बहुत ठीक हो सकता है और इतराज़ नहीं किया जाता।
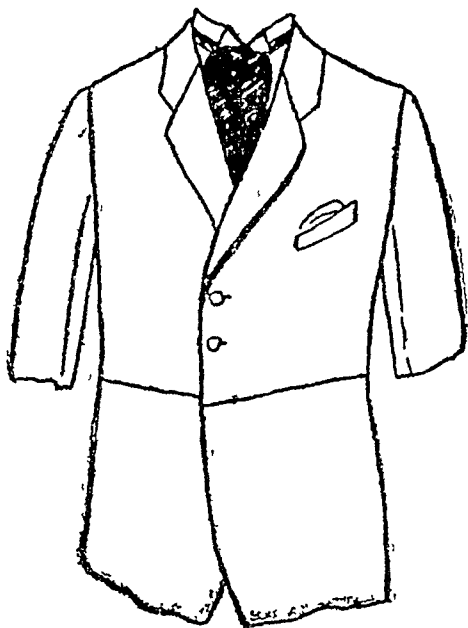
चित्र सं० १३१

कारण—यह नुक्स इससे पहले नुक्स का बिल्कुल उलट है इस वास्ते इसका कारण भी उसका उलट ही होना चाहिये। अर्थात् कोट के सामने के घेरे के नीचे जो दबाव रखा जाता है वह जरूरत

के समय बाहर निकालने के काम आता है जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है। कोट ट्राई करते समय आवश्यकता अनुसार इससे काम लेकर कई लोग बाकी दबाव काट देते है और कई लोग फ़ाल्तू दबाव पर निशान लगा देते है ताकि कारीगर लोग सिलाई करते समय उसे अन्दर की तरफ़ दबा दे। परन्तु इस अवस्था मे न तो कटर ने इस प्रकार का फाल्तू दबाव काटा है और न ही उस पर किसी प्रकार का निशान लगाया है जिससे कारीगर यह समझ सके कि यह फाल्तू दबाव अन्दर को दबाना है और यदि कटर ने निशान लगाया हो अथवा कारीगर को जबानी कह दिया हो तो कारीगर के ऐसा करना भूल जाने से भी यह नुक्स पड जाता है क्योंकि ऐसी अवस्था मे कारीगर लोग इस दबाव को अन्दर दबाने की बजाय इसे सामने का ही हिस्सा समझ कर सिलाई कर देते है जिससे स्कर्ट सामने पर नीचे से फटने लग जाती है और इस प्रकार का नुक्स पड़ने लग जाता है। इससे स्पष्ट हुआ कि इस प्रकार का नुक्स ऊपर वाले नुक्स का बिल्कुल उलट ही है। इसके इलावा साईड पर का जो दबाव है वह कारीगर ने ग़लती से बाहिर निकाल दिया है जिससे कोट छाती पर बहुत ढीला हो गया है और यह नुक्स पड़ने लगा है।

इस नुक्स को चित्र सं० १३२ की सहायता से नीचे लिखी रीति से दूर करना चाहिये.—

यदि कोट बिल्कुल कचा हो अर्थात् तैयार न किया गया हो बल्कि यूं ही टुकड़े जोड़ कर ट्राई ली गई हो तो इस नुक्स को

दूर करने का असली और आसान तरीका यह है कि सामने को आगे के किनारे पर से जरूरत के मुताबिक छांट कर ज्यादती को दूर करो। परन्तु जब कोट तैयार हो चुका हो तो ऐसा करना कठिन है ऐसी अवस्था मे साईड पर ऊपर से लेकर नीचे तक जरूरत के मुताबिक सामने की चौड़ाई की ज्यादती को अन्दर की तरफ दबादो जैसाकि इस चित्र मे १६ से २० तक जाहिर किया गया है। इसी प्रकार से मोंढे की गोलाई को भी बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार अन्दर की तरफ़ उतना ही छांट कर गहरा करो जितना कि साईड को अन्दर दबाया हो।
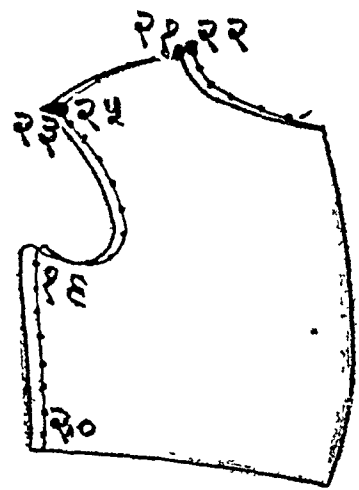
चित्र सं० १३२

ऐसी अवस्था मे सामने के कन्धे को भी आगे की तरफ सुरकाना जरूरी है जिसके वास्ते कन्धे को आगे की तरफ़ से तो २१ से २२ तक का दबाव बाहिर निकाल कर आगे करो और पीछे सथवा मोंढे की तरफ़ कन्धे को २३ से २५ तक उतना छांट दो जितना कि २१ से २२ तक का दबाव बाहिर निकाल कर इसे बड़ा किया हो। ऐसा करते समय इस बात का विचार करना जरूरी है कि कन्धों की ऊंचाई दोनों सिरों पर उतनी ही रहे जितनी कि पहले थी॥

(१३) सामने का निचले बटन पर तंग होना

(FRONT TOO SMALL AT BOTTOM BUTTON)

चित्र सं० १३३ को देखने से मालूम होता है कि इस कोट का नीचे का बटन बन्द करने के वास्ते साधारण से ज्यादा जोर लगाना पडता है। अर्थात् साधारण अवस्था मे जबकि कोट मे यह नुक्स न हो, कोट के दोनों सामनो के आगे के किनारे एक दूसरे के पास स्वयं ही आजाते है और बटन को पकड कर काज के अन्दर दे दिया जाता है। परन्तु इस अवस्था मे दोनों सामनों को खेच कर एक दूसरे के पास लाया जाता है ऐसी अवस्था मे जब कोट के बटन बन्द कर दिये जाते है तो निचले बटन पर चित्रानुसार खिच पडने लग जाती है जोकि बटन के पास छोटे २ शिकनो की शकल मे नजर आती है।

चित्र स० १३३
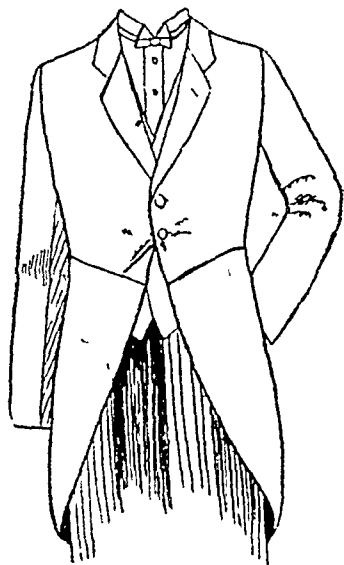
बाकी सब प्रकार से तो कोट बिल्कुल ठीक है केवल एक नुक्स और भी नजर आयगा वह यह कि ऊपर वाले बटन पर कोट जरूरत से ज्यादा ढीला होगा। इसके वास्ते या तो ऊपर के बटन को पीछे हटा कर लगाया जाता है या यह बहुत बुरा नजर आता रहता है क्योंकि कोट यहा पर फूलता नजर आता है।

कारण—इस नुक्स के दो कारण हो सकते है एक तो कोट

के सामने का कमर पर तंग होना और दूसरा कोट के सामने के कन्धे का जरूरत से ज्यादा पीछे को बनाया जाना जिससे कि कोट का सामना नीचे को ढिलक कर इस प्रकार का नुक्स पैदा करता है।

ट्राई करते समय देखना यह होता है कि कोट कमर पर तंग तो नही। यदि कोट कमर पर तंग न हो बल्कि सारा कोट पीछे की तरफ़ ढिलक कर पीठ पर तो शरीर पर से पीछे अथवा दूर हट खड़ा होता हो और सामने मे तंगी पैदा करके इस नुक्स का कारण बनता हो तो कोट का कालर और मोंढे खोल कर कालर और आस्तीने अलग करलो। पीठ को वास्कट अथवा क़मीज़ के साथ टाक कर कन्धों की सिलाईया खोल दो। अब सामने के कन्धों को बाहिर की तरफ़ अथवा मोंढे की तरफ़ सुरका दो और इस तरह से सामने के कन्धे को जोकि गले के पास छोटा हो जायगा, जरूरत के मुताबिक हाले अथवा गले के अन्दर का दबाव बाहिर निकाल कर पूरा करो। ऐसा करने से कोट की पीठ कमर पर जो पहले शरीर से दूर खडी हुई थी, अब शरीर के साथ लग जायगी और कोट आगे को चला आयगा जिससे यह नुक्स जाता रहेगा।

परन्तु जब कोट कमर पर ही तंग हो तो इस अवस्था में सिवाय इसके कि इसे कमर पर से ढीला किया जाय यह नुक्स और किसी तरीके से ठीक नही हो सकेगा।

कोट यदि कमर पर तंग हो तो चित्र सं० १३४ के अनुसार

कमर के निशान २ पर कोट के सामने के साईड पर का हबाव इतना बाहिर निकालो जितना कि कोट के कमर पर तंग होने के आधे के बराबर हो। अर्थात् कोट के सामने के साईड पर के दवाव को कमर पर के निशान २ पर तंगी के आधे के बराबर बाहिर
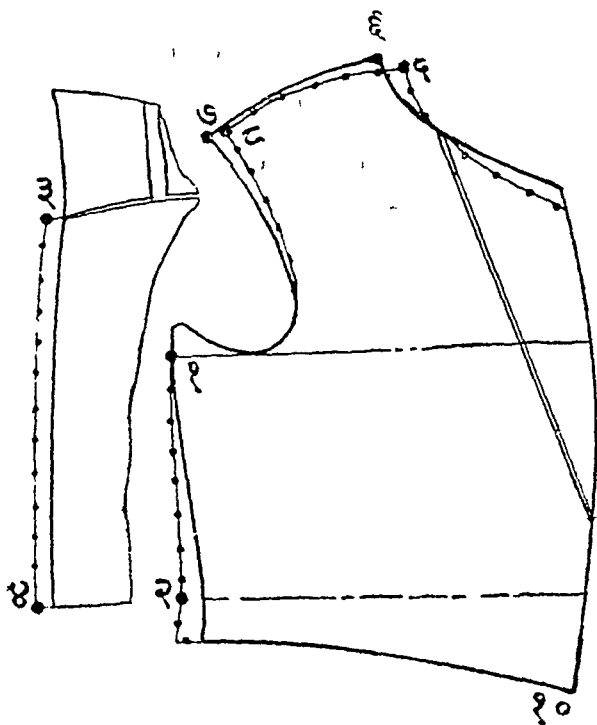
चित्र स० १३४

निकालो और निशान २ को ऊपर की तरफ निशान १ के साथ मिलादो। निशान १ छाती के स्थान को जाहिर करता है जहा पर कोट विल्कुल ढीला नही किया गया। ऐसा करने से कोट का घेरा भी पहले से ज्यादा चौडा हो जायगा जिससे स्कर्ट को

भी उतना ही ज्यादा चौड़ा करने की जरूरत होती है। इसके वास्ते स्कर्ट के पीछे की तरफ़ के दबाव को आवश्यकतानुसार निशान ३ से ४ तक ऊपर से लेकर नीचे तक बाहर निकालो तो सारी तंगी दूर हो जायगी और नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा।

परन्तु जब कोट कमर पर तंग न हो तो इस नुक्स को कन्धा खोल कर ठीक करना चाहिये। कन्धे को आगे की तरफ अथवा सीधा करने के वास्ते निशान ५ से लेकर ६ तक गले पर का दबाव बाहिर निकालो। ऐसा करते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि निशान ६ निशान ५ से बिल्कुल थोड़ा सा नीचे भी चला जाय। ऐसा करने से कन्धे की लम्बाई जो ज्यादा हो जाती है उसे मोंढे की तरफ से निशान ७ से लेकर ८ तक छांट कर पूरा करो। चित्रानुसार बिन्दियों वाली लकीरों के मुताबिक हाले, कन्धे और मोंढे की गोलाईयां बनाओ तो नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा॥

(१४) स्कर्ट के सामने में तिरछे शिकन पड़ना

(PUCKERS DOWN SKIRT FRONT)

यह नुक्स प्रायः स्कर्ट मे पड़ जाता है। कोट पहिनते ही यह नुक्स ग्राहक को नजर आने लगता है जिस से ग्राहक इसे इतना बुरा अनुभव करता है कि वह इसे देखते ही दर्जी पर नाराज होने लगता है।

स्कर्ट के आगे वाले किनारे के ऊपर के सिरे पर से लेकर इसमे चित्र सं० १२५ के अनुसार तिरछे शिकन पड़ने लग जाते

है। यह शिकन नीचे दूर तक चले जाते है। इससे स्कर्ट मे खिच पडने के कारण से यह जरा तग मालूम होने लगती है। साईडों के नीचे घेरे पर स्कर्ट बिल्कुल टागों के साथ चिमट जाती है जिससे साधारण तौर पर चलने फिरने मे कष्ट होता है।
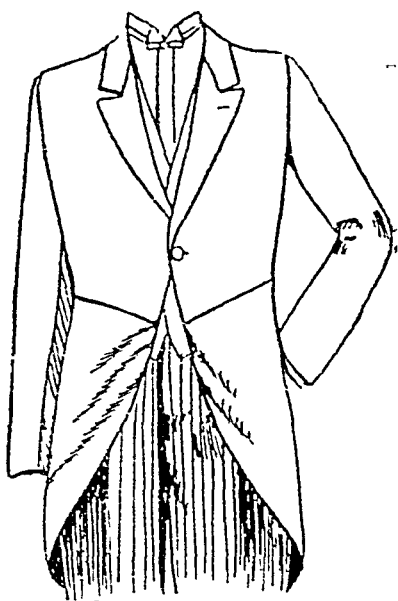
कारण—इस नुक्स के दो कारण हो सकते है पहला तो यह कि कटर से स्कर्ट काटते समय इसका ऊपर का सिरा आगे से जरा नीचा अथवा छोटा काटा छाँटा गया हो और स्कर्ट को बाडी के साथ जोडते समय स्कर्ट के आगे से ऊपर को खिच जाने के कारण से इस प्रकार के शिकन पड़ने लग जाते है।

चित्र सं० १३५

इस नुक्स का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि कारीगर ने कोट सीते समय स्कर्ट के आगे के किनारे के अन्दर जो टेप रखी हो वह जरूरत से ज्यादा खेच कर रखी गई हो जिससे कि स्कर्ट मे खिच पड कर इस प्रकार के शिकन पडने लग जाते है।

अर्थात् इस नुक्स का कारण या तो स्कर्ट के ऊपर के किनारे का जरूरत से ज्यादा आगे पर से गोल बनाया जाना है या टेप

जो स्कर्ट के आगे के किनारे के अन्दर दी जाती है, के जरूरत से ज्यादा खेच कर देने से यह नुक्स पड़ जाता है। जिस से न केवल इस प्रकार के शिकन पड़ते है बल्कि स्कर्ट भी घेरे पर टांगों के साथ चिमट जाती है।

इस नुक्स को दूर करने से पहले देखना यह है कि इस नुक्स का कारण क्या है। यदि नुक्स सामने के किनारे के अन्दर की टेप के खेच कर रखने से पड़ा हो तो स्कर्ट के आगे के किनारे को लोहे से खेच देने से यह नुक्स कुछ न कुछ जाता रहता है। परन्तु बिल्कुल ठीक उस अवस्था मे होता है जबकि इस किनारे को खोल कर उस मे से टेप काट दी जाय। यदि नुक्स का कारण यह हो कि स्कर्ट का ऊपर का किनारा आगे से नीचा काटा गया हो अर्थात् ऊपर का किनारा आगे पर से जरूरत से ज्यादा गोल किया गया हो तो चित्र सं० १३६ के अनुसार स्कर्ट के ऊपर के सिरे पर का दबाव निशान ६ से १० तक बाहिर निकालो। परन्तु जब यहाँ पर किसी प्रकार का दबाव रखा ही न गया हो तो निशान ११
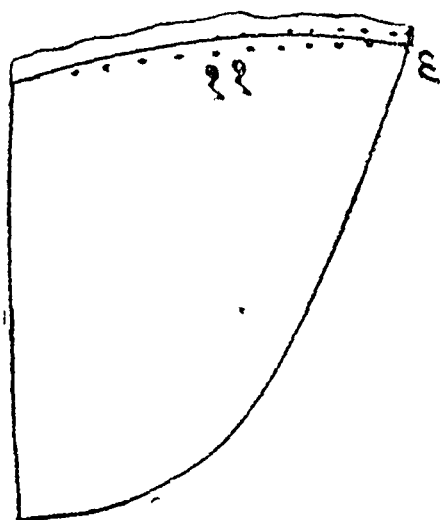
चित्र सं० १३६

पर स्कर्ट को उतना ही और छाँट दो और इस बात का विचार

जरूर कर लो कि ऐसी अवस्था मे स्कर्ट को ऊपर वाले किनारे पर आगे और पीछे की तरफ से बिल्कुल नही छांटना बल्कि केवल बीच मे से छॉटना है और निशान ११ को स्कर्ट के आगे और पीछे वाले सिरों से मिला देना है।

(१५) स्कर्ट के आगे के किनारे में वल पड़ना

(FRONT EDGE OF SKIRT IN RIPPLES)

यह नुक्स चित्र स० १३७ से जाहिर किया गया है। यह नुक्स ऊपर वाले नुक्स का विल्कुल उलट है। अर्थात् जहॉ ऊपर वाले नुक्स मे शिकन यह जाहिर करते थे कि स्कर्ट के इस किनारे पर खिच पड़ती है वहॉ इस चित्र मे यह जाहिर किया गया है कि स्कर्ट का यह किनारा जरूरत से ज्यादा ढीला है। शिकन स्कर्ट के ऊपर की सिलाई से लेकर सामने वाले किनारे के साथ २ नीचे की तरफ़ चले जाते हैं। ऐसी अवस्था मे स्कर्ट साईडों पर शरीर के साथ अच्छी तरह नही जमती बल्कि दूर खडी होती है।
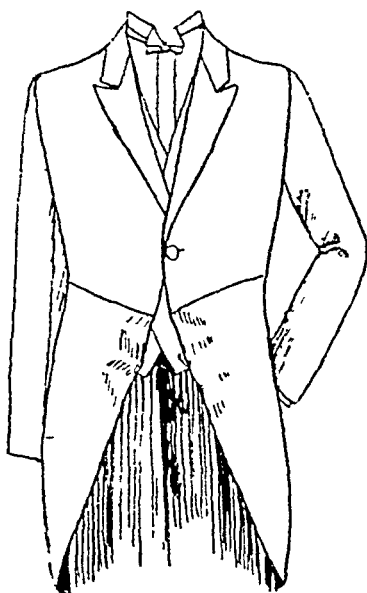
चित्र सं० १३७

कारण—क्योंकि यह नुक्स ऊपर वाले नुक्स का उलट

है इस वास्ते इस के कारण भी ऊपर वाले नुक्स के कारणों के उलट होंगे। अर्थात् या तो स्कर्ट के आगे के किनारे वाली टेप ढीली रखी गई है जिससे लोहा करते समय यह किनारा खिच कर ढीला हो जाता है और इस प्रकार का नुक्स पडने लग जाता है। क्योंकि यह किनारा गोल होता है इस वास्ते यदि इस मे टेप ठीक तौर पर न रखी जाय तो लोहे से खिच कर ढीला पड़ जाता है। इसका दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि स्कर्ट का ऊपर का सिरा आगे पर से पूरा गोल न किया गया हो और जब स्कर्ट को बाडी के साथ जोड़ा जाय तो ऊपर से ज्यादा लम्बी होने के कारण से नीचे को धकेली जाती है और इस प्रकार के शिकन पड़ने लग जाते है।

इस नुक्स को दूर करने के भी दो ही तरीके है। पहला यह कि स्कर्ट के सामने के किनारे को उधेड़ कर इसमे नई टेप तान कर डालो परन्तु टेप को इतना खेच कर रखो कि इस से स्कर्ट के इस किनारे मे जो नम (Gathering) आजाय वह लोहे से दूर की जा सके। परन्तु जब यह टेप पहले ही खेंच कर
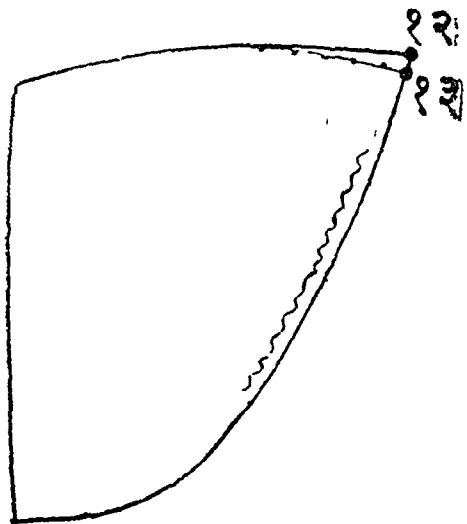
चित्र सं० १३८

रखी गई हो और नुक्स का कारण यह न हो तो चित्र सं० १३८ के अनुसार स्कर्ट के आगे के किनारे को जरूरत के मुताबिक १२ से १३ तक ऊपर से छोटा करो और बिन्दियों वाली लकीर के साथ २ स्कर्ट को काट दो। ऐसा करने से न केवल शिकन दूर हो जायेगे बल्कि साईडों पर भी यह शरीर के साथ लगने लग जायगी ॥

(१६) स्कर्ट का आगे का किनारा ऊपर को उलटना

(FRONT SKIRT CURLING OUTWARDS ON THE EDGE)

यह नुक्स चित्र स० १३६ से जहिर किया गया है। स्कर्ट मे इस प्रकार का नुक्स बहुत ही बुरा मालूम होता है। इस नुक्स का कारण प्राय: स्कर्ट के आगे के किनारे का जरूरत से ज्यादा अन्दर को खेच कर बनाया जाना है और साथ ही जरूरत से ज्यादा नीचे खेचा जाना है। इसके अन्दर का कपड़ा भी ढीला लगाया गाया है।
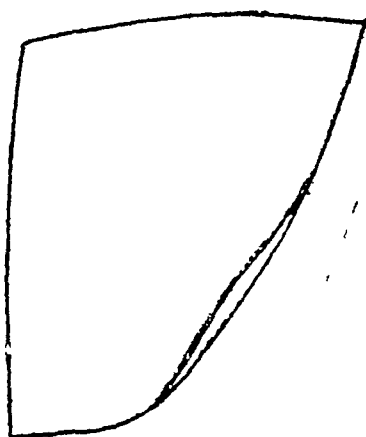
चित्र सं० १३६

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते आसान तरीका यह है कि स्कर्ट के आगे के किनारे को खोल दिया जाय और इसके अन्दर नई टेप रख दी जाय जो कि ठीक जगह पर और पूरी २ खेच कर

लगाई गई हो। इसके साथ ही स्कर्ट के अन्दर का कपड़ा, जिसे फैशन (Facings) कहते हैं, भी ठीक करके लगाना चाहिये ॥

(१७) कन्धे पर दबाव पड़ना और गले पर ढीला होना

(PRESSURE ON THE SHOULDER BONE & A LOOSE NECK)

विशेष तौर पर इस प्रकार के नुक्स ग्राहक को बहुत दुख देते है। ग्राहक हमेशा ऐसे नुक्सों के कारण से इतना दुखी होता है कि वह कोट को देखना तक भी पसन्द नही करता। ऐसी अवस्था मे कोट न केवल कन्धों पर ही बोझ डालता रहता है बल्कि सारे का सारा कोट शरीर पर ठीक नहीं बैठता जिससे न केवल पहिनने वाले को ही बुरा लगता है बल्कि देखने मे भी बहुत बुरा मालूम होता है क्योंकि यह शरीर पर ठीक नही बैठता।

कन्धों पर दबाओ डालने के इलावा इसमे सब से बड़ा नुक्स यह होता है कि इसका कालर ग्राहक की गर्दन पर ठीक नहीं बैठता बल्कि गर्दन से दूर उठ खड़ा होता है जिससे गर्दन और कोट के दरमियान खाली जगह रह जाती है जोकि बहुत बुरी नजर आती है। जैसाकि चित्र सं० १४० मे दिखलाया गया है।
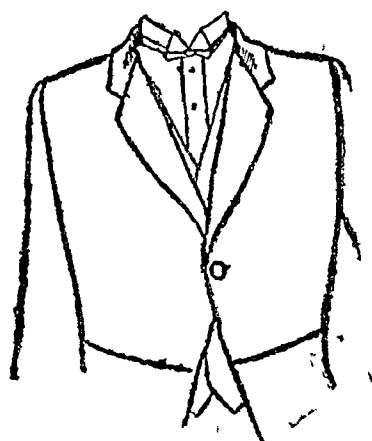
चित्र सं० १४०

कन्धे मे जो गहराई होती है वहां पर कोट ठीक नही बैठता और छाती पर भी इसका गिराओ अथवा

कोट के सामने के कन्धे पर के दबाव को मोंढे की तरफ़ से निशान १ से लेकर २ तक बाहिर निकालो और निशान २ को सामने के गले वाले पुराने निशान के साथ बिन्दियों वाली लकीर के मुताबिक मिलाओ।
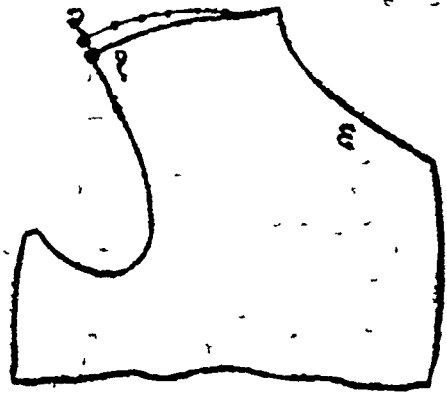
चित्र सं० १४१

इसी तरह चित्र सं० १४२ मे कोट की पीठ पर के कन्धे को भी मोंढे की तरफ़ से निशान ३ से ४ तक ऊंचा करो और निशान ४ को टीक अथवा गले वाले कन्धे के सिरे के साथ बिन्दियों वाली लकीरों के साथ मिलादो।

ऐसा करने से अर्थात् कोट के सामने और पीठ के कन्धों को मोंढे की तरफ़ से ऊंचा करने से मोंढे की गोलाई ऊपर से बढ़ जायगी इस वास्ते आस्तीन के मोंढे की गोलाई को ऊपर से बड़ा करने की ज़रूरत होती है। चित्र सं० १४३ में आस्तीन के ऊपर के हिस्से, जिसे गोला भी कहते हैं,

चित्र सं० १४२

के मोंढे की गोलाई को ज़रूरत के मुताबिक निशान ५ से लेकर ६ तक ऊंचा करो और बिन्दियों वाली लकीर के मुताबिक आस्तीन के मोंढे की नई गोलाई बनाओ तो कोट बिल्कुल ठीक हो जायगा।
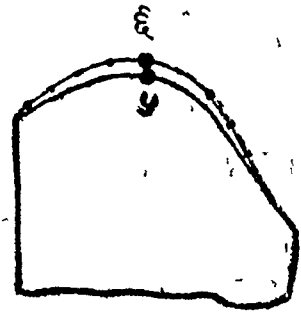
(१८) कमर में हिप से ऊपर शिकन पड़ना चित्र सं० १४३

(WAIST WRINKLING ABOVE THE HIP)

यह नुक्स चित्र सं० १४४ से ज़ाहिर किया गया है। जब कोट के बटन बन्द किये जाये तो बग़लों के नीचे कमर मे शिकन पड़ते नज़र आते हैं। हो सकता है कि इन शिकनों के इलावा कोट मोंढों के नीचे भी तंग हो परन्तु इस तंगी का उन शिकनों से कोई सम्बन्ध नहीं है यह तंगी तो कन्धों के ठीक न होने से होती है। इसके इलावा
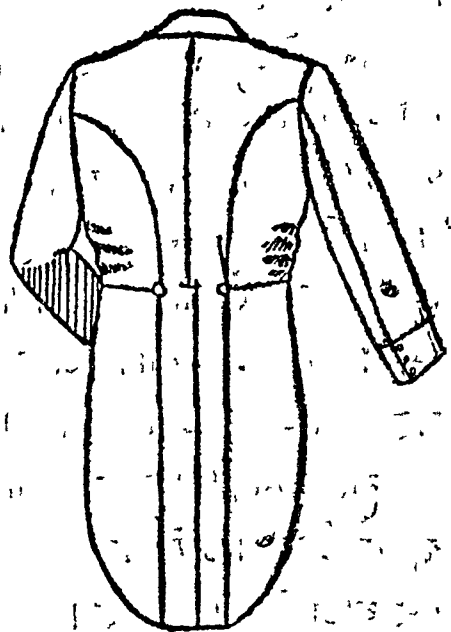
चित्र सं० १४४

निचले बटन पर भी खिच पड़ती है जिससे यह मालूम होता है कि कोट इस हिस्से पर तंग है।

कारण—इस नुक्स का कारण कोट का बग़लों के नीचे

की सलाई पर तंग होना है क्योंकि स्कर्ट की चौड़ाई भी बाडी की चौडाई के मुताबिक बनाई जाती है। जब बाडी ही जरूरत से कम चौडी अथवा तंग बनाई गई हो तो स्कर्ट भी हिप पर तंग होगी जिससे कोट साईडों पर से ऊपर को खिसक जाता है और इस प्रकार के शिकन पडने लग जाते हैं।

यह निश्चय बात है कि कोट कमर पर तंग है जिस से इस प्रकार के शिकन पड़ने लग जाते हैं। यदि ऐसा न होता तो यह शिकन ऐसी शकल मे बिल्कुल न पड़ते।

यदि कोट के कन्धे ज़रूरत से ज्यादा ऊंचे अथवा सीधे बनाये गये हों तो कोट मोंढों के नीचे ढीला मालूम देगा और इस स्थान पर कपड़ा इकट्ठा हो जायगा और जब बाजू आगे को किये जायेगे तो कोट मे यहां पर बहुत सी खिच पड़ने लग जायगी जिससे ग्राहक तो यह समझेगा कि कोट यहां पर तंग है परन्तु इसका कारण, जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, कन्धों का जरूरत से ज्यादा ऊंचा होना है।

ट्राई करते समय कोट के सामने को पिनों अथवा सूई से टांक कर स्कर्ट को पीठ से लेकर बग़ल के नीचे की सिलाई तक खोल कर बाडी से अलग करो। अब बग़ल के नीचे वाली सिलाई को भी नीचे से लेकर ऊपर बग़ल से दो इंच नीचे तक खोल दो और सामने के साईड पर का दबाव जरूरत के मुताबिक बाहिर निकालो अर्थात् इतना बाहिर निकालो कि यह शिकन बिल्कुल जाते रहे।

चित्र सं० १४५ में कोट को इस प्रकार से ठीक कर के दिखाया गया है। निशान ७ पर साईड का दबाव बाहिर निकाल कर उसे ऊपर की तरफ़ निशान ८ के साथ मिलादो। इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि कोट को केवल निशान ७ पर ही ढीला करना चाहिये जोकि कमर को जाहिर करता है और निशान ८ पर कोट बिल्कुल ढीला नहीं करना चाहिये। ऐसा करने से क्योंकि बाडी घेरे पर चौड़ी हो जायगी इस वास्ते स्कर्ट के पीछे की तरफ़ जो दबाव है उसे ६ से १० तक उतना बाहिर निकालो जितना कि बाडी को निशान ७ पर ढीला किया हो। स्कर्ट का दबाव बाहिर निकालते समय इस बात का विचार कर लेना ज़रूरी है कि ६ से लेकर १० तक एक जैसा दबाव बाहिर निकालना चाहिये। कही ऐसा न हो कि एक स्थान पर तो कम कपड़ा निकाला जाय
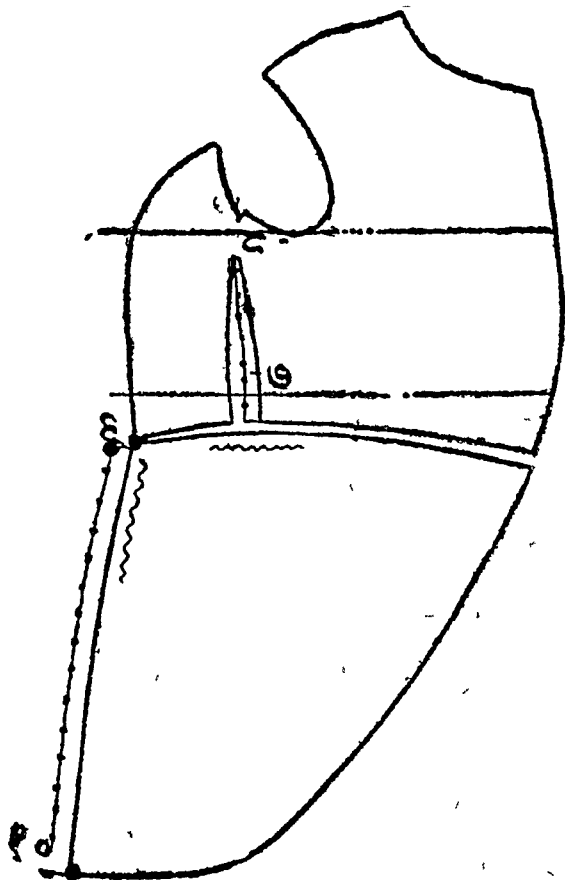
चित्र सं० १४५

और दूसरे पर ज्यादा जिसका परिणाम यह होगा कि पीठ के चाक के फाल मे फर्क पड़ जायगा। इस वास्ते इसे विशेष ध्यान पूर्वक करना चाहिये। जब स्कर्ट को बाडी और पीठ के साथ जोड़ा जाय तो स्कर्ट मे उस स्थान पर जहां पर कि इसमे टेडी र लकीरे लगी हुई है, नम देनी चाहिये ताकि वह ग्राहक के हिप के ऊपर ठीक बैठ सके॥

(१९) साईडों पर कमर की सिलाई का ढीला होना

(LOOSE ON THE WAIST-SEAM AT THE SIDES)

यह नुक्स चित्र स० १४६ से जाहिर किया गया है। और ऊपर वाले नुक्स का बिल्कुल उलट है। अर्थात् इस अवस्था मे कोट कमर पर ढीला है इस वास्ते कमर के साईडों पर शरीर पर से दूर उठ खड़ा होता है। स्कर्ट हिप से इतनी दूर उठ खडी होती है कि देखते ही फौरन मालूम हो जाता है कि इसके अन्दर जगह खाली है अर्थात् यह शरीर से दूर हटी हुई दिखाई देती है। यदि इसमे नम भी ज्यादा हो जाय तो यह बहुत ही बुरी दिखाई देती है और इसमे बहुत बड़े झोल पडने लग जाते है।
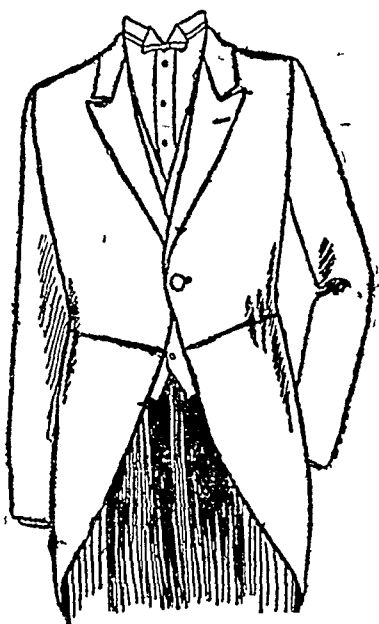
चित्र स० १४६

कारण—क्योंकि यह नुक्स जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, ऊपर वाले नुक्स का उलट है इस वास्ते इसका कारण भी उसका उलट ही होगा। अर्थात् मोंढे के नीचे की सिलाई पर, जिसे सामने का साईड भी कहा जा सकता है, कोट ढीला है और कोट कमर पर ग्राहक की कमर के नाप के बराबर नहीं बनाया गया। यदि यह ठीक बनाया जाता तो कोट साईडों पर कमर के साथ लगा रहता न कि इससे दूर हटा रहता। इस नुक्स से स्कर्ट में भी खराबी पड़ती है, अर्थात् स्कर्ट भी साईडों पर हिप से दूर उठ खड़ी होती है। ट्राई करते समय कोट जितना ढीला हो उतना पकड कर पिन अथवा सूई से दबा दो। इस से आप को मालूम हो जायगा कि कोट कितना ढीला है।
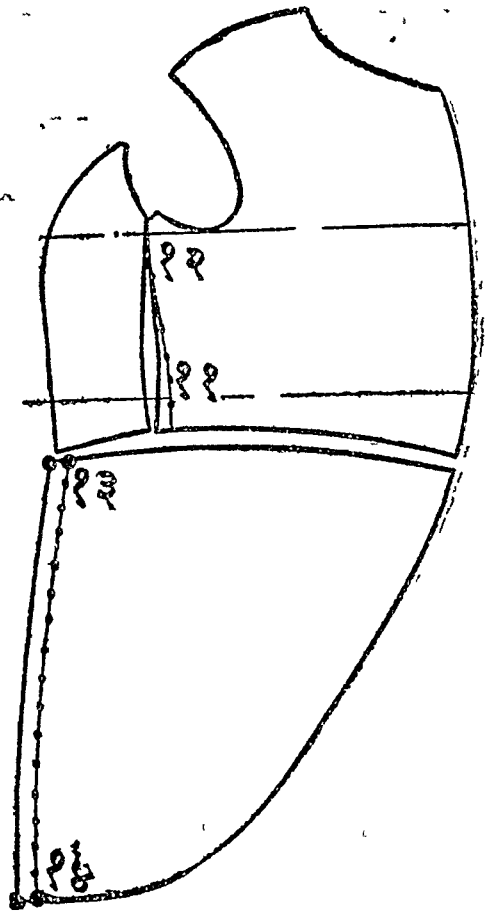
चित्र सं० १४७

इसके बाद चित्र सं० १४७ के अनुसार कमर पर सामने को निशान ११ पर जरूरत के मुताबिक दबादो और निशान ११ को ऊपर की तरफ़

निशान १२ के साथ मिलादो निशान १२ पर कोट बिल्कुल नहीं दवाया गया है।

क्योंकि इस से बाडी के घेरे की चौड़ाई घट जायगी इस वास्ते स्कर्ट को भी १३ से १४ तक उतना ही दबादो ताकि स्कर्ट और बाडी की चौडाई कमर की सिलाई पर एक जैसी हो सके। ऐसा करने से नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा ॥

—:o:—

सातवां पाठ

फ्राक और ड्रैस कोटों के नुक्स

(DEFECTS IN FROCK & DRESS COATS)

पहले हम फ्राक कोटों के नुक्सों का वर्णन करते हैं इसके पश्चात् ड्रैस कोटों के नुक्स लिखेंगे।

(१) स्कर्ट में झोल पड़ना।

(EXCESSIVE DRAPERY IN SKIRT)

यह नुक्स चित्र सं० १४८ से जाहिर किया गया है। इस मे पीठ का चाक ठीक नहीं है बल्कि इस चाक का तलपट ज़रूरत से कम है। इसी तरह स्कर्ट का सामना भी आगे से फटता है अर्थात् इसके आगे के दोनों किनारों का तलपट पूरा नहीं है।

चित्र सं० १४८

परन्तु उलट इसके स्कर्ट का बहुत सा हिस्सा साईड़ों पर हिप के ऊपर इकट्ठा हो जाता है जिससे स्कर्ट बहुत बुरी मालूम होती है। स्कर्ट को देखने से ऐसा मालूम होता है जैसाकि यह किसी हंटिग कोट की स्कर्ट हो जिसमे कि फ़ैशन के तौर पर पलेट बनाये जाते हैं।

कारण:–स्कर्ट का गिराओ बाकी सब प्रकार से ठीक है। न ही पीठ के चाक मे किसी प्रकार का नुक्स है बल्कि स्कर्ट के आगे तथा पीछे का घेरा जरूरत से ज्यादा है इस के इलावा स्कर्ट के ऊपर के सिरे की गोलाई जरूरत से ज्यादा गहरी बनाई गई है। इस सिलाई को कमर की सिलाई भी कहते है। यही इस नुक्स का मुख्य कारण है। अर्थात् कमर की सिलाई का ज़रूरत से ज्यादा गहरा बनाया जाना ही इस नुक्स का मुख्य कारण है। क्योंकि ऐसी अवस्था मे कमर की गोलाई के बीच मे से गहरा होने के कारण से स्कर्ट साईडों पर ऊपर को खिचीं जाती है और आगे तथा पीछे की तरफ से हट कर साईडों पर इकट्ठी हो जाती है।

ट्राई करते समय स्कर्ट मे जो झोल पड़ता हुआ नज़र आये

झोल के उस फाल्तू कपड़े को पिन से टांक कर मालूम करो कि स्कर्ट मे कितना फाल्तू कपडा है ताकि नुक्स दूर करते समय इस वात का अंदाजा लगाया जा सके।

चित्र सं० १४६ के अनुसार स्कर्ट के आगे तथा पीछे के किनारों को घेरे पर से ३ से ४ तक तथा ५ से ६ नक छोटा करो।
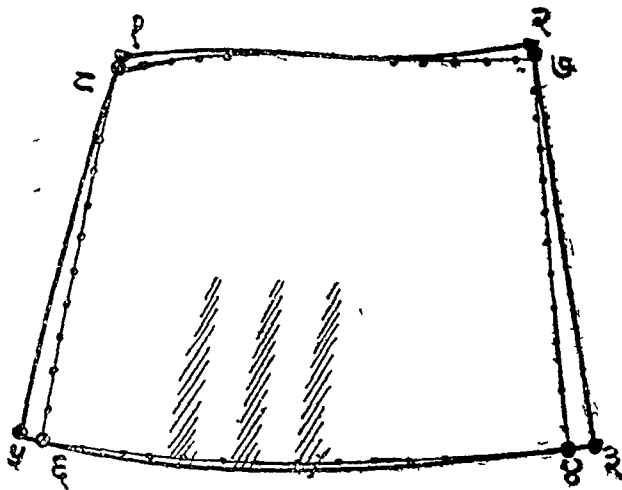
चित्र सं० १४६

३ से ४ तक तथा ५ से ६ तक मे से प्रत्येक उस झोल के आधे के बराबर हो जोकि ट्राई करते समय पिन से टाक कर मालूम किया गया था। अव निशान ४ तथा ६ को बारी बारी निशान २ तथा १ के साथ ऊपर की तरफ़ ले जाकर मिलाओ। निशान २ और १ वारी वारी स्कर्ट के आगे तथा पीछे वाले किनारों के ऊपर वाले सिरों को जाहिर करते है। यहा इस बात का विचार

कर लेना जरूरी है कि जहां स्कर्ट के नीचे वाले दोनों किनारों को दबाया गया है वहां ऊपर के सिरों पर ऐसा बिलकुल नही किया गया।

कमर की गोलाई को कम करने के वास्ते इसे दोनों सिरों पर ज़रा नीचा करो जैसाकि इस चित्र मे २ से ७ तक तथा १ से ८ तक करके दिखाया गया है। अब चित्रानुसार स्कर्ट के आगे, पीछे, ऊपर तथा नीचे के किनारों के नये निशान लगाकर इसे ठीक करो।

नोटः—यदि स्कर्ट के ऊपर कमर की सिलाई मे कुछ दबाव रखा गया हो तो इस गोलाई के बीच मे से जहां पर कि यह ज्यादा गहरी बनाई गई है, उस दबाव को बाहिर निकाल कर भी इसे ठीक किया जा सकता है। ऐसी अवस्था मे इसे आगे तथा पीछे के किनारों पर से नीचा करने की ज़रूरत नहीं होती जैसाकि इस चित्र मे निशान ७ तथा ८ पर किया गया है॥

(२) स्कर्ट के साईडों पर झोल पड़ना तथा पीठ का चाक-फटना।

(EXCESSIVE DRAPERY AT THE SIDES WITH PLEATS GAPPING)

यह नुक्स चित्र सं० १५० से ज़ाहिर किया गया है। इस मे स्कर्ट की साईडों पर झोल तो चित्र सं० १४६ की तरह पड़ते है परन्तु इस अवस्था मे पीठ का चाक भी नीचे से बहुत बुरी तरह खुलता है जिससे पीठ मे हिप पर बहुत भारी खिच पड़ती

रहती है यदि चाक न खुले तथा हिप पर खिच न पड़े तो यह नुक्स सब प्रकार से ऊपर वाले नुक्स की तरह होगा।

कारण—इस नुक्स का कारण भी स्कर्ट के कमर की गोलाई का बीच मे ज्यादा गहरा बनाया जाना है। स्कर्ट की चौड़ाई वास्तव मे बिल्कुल ठीक बनाई गई है परन्तु इस की कमर की गोलाई साईड पर अर्थात् बीच मे जरूरत से ज्यादा गहरी होने के कारण से स्कर्ट पीछे से खिच कर साईडो पर इकट्ठी हो जाती है। जिस से न केवल पीठ का चाक ही फटने लगता है बल्कि स्कर्ट की साईडों पर भी झोल पडने लग जाते हैं।

चित्र सं० १५०

ट्राई करते समय यदि कमर की सिलाई को उधेड दिया जाय और स्कर्ट को जरा नीचे खिसका दिया जाय तो पीठ का चाक अपनी असली हालत मे आ जायगा और स्कर्ट की साईड मे जो झोल पडता था वह भी ठीक हो जायगा। ऐसा करने से आप को मालूम हो जायगा कि स्कर्ट को जितना नीचे खिसकाने से ठीक होना है उतनी ही यह गोलाई ज्यादा गहरी बनाई गई है। इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० १५१ के अनुसार

कमर की सिलाई को दोनों सिरों पर निशान ११ से १२ तक छाँट कर डेश वाली लकीर के अनुसार कमर की गोलाई बनाओ जो कि जरूरत के मुताबिक पूरी गहरी हो यदि यहाँ पर स्कर्ट मे कुछ
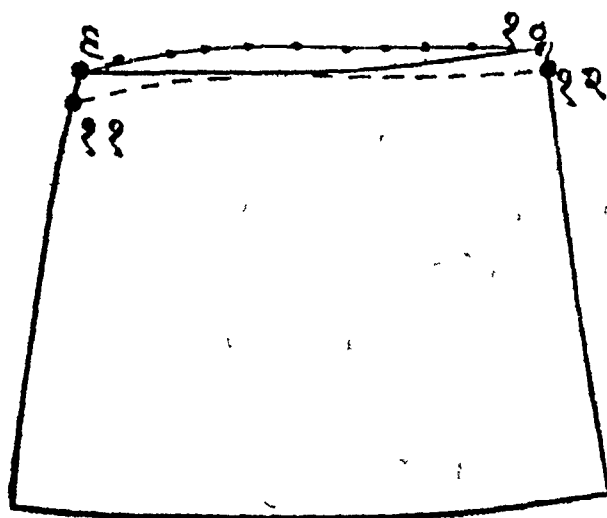
चित्र स० १५१

दबाव रखा हुआ हो तो इस नुक्स के दूर करने का सरल तरीका यह है कि बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार निशान ९ से १० तक दबाव को बाहिर निकाल कर नुक्स को दूर करो।

(३) स्कर्ट का आगे से निचले बटन से नीचे खुलना।

(SKIRT FRONTS RUNNING AWAY FROM BOTTOM BUTTON)

यह नुक्स चित्र सं० १५२ से जाहिर किया गया है। इस चित्र में स्कर्ट के आगे वाले दोनों किनारे सीधे नहीं गिरते जैसाकि

साधारण अवस्था मे होना चाहिये बल्कि सामना खुलने लगता है। इसे दर्जी लोग स्कर्ट का सामने से फटना भी कहते हैं अर्थात् इस अवस्था मे स्कर्ट के आगे के दोनों किनारे ऊपर से नीचे की तरफ सीधे गिरने की बजाय बाहर की तरफ गिरने लगते हैं जिससे कोट का सामना बहुत बुरा दिखाई देता है जैसाकि इस चित्र मे जाहिर किया गया है। इस के इलावा स्कर्ट बाकी सब प्रकार से बिल्कुल ठीक है।
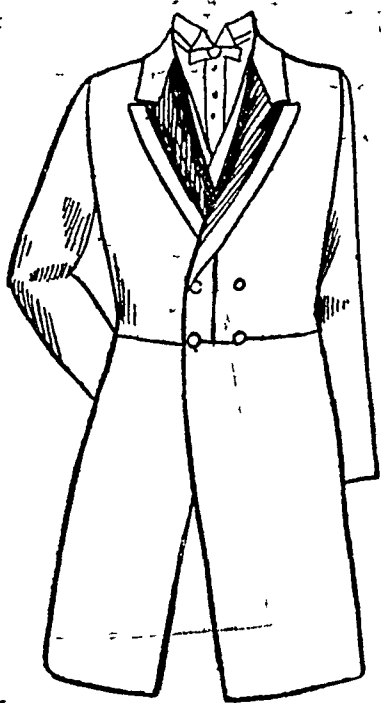
चित्र सं०१५२

कारण—इस नुक्स के दो कारण हो सकते हैं। (१) यह कि स्कर्ट का घेरा आगे की तरफ कम चौड़ा बनाया गया हो जिससे स्कर्ट टॉगों तथा हिप पर से खिंच कर पीछे की ओर चली जाती है और सामने पर से जगह खाली हो जाती है अर्थात् सामना खुलने लगता है।

जब स्कर्ट का घेरा काफी बनाया गया हो और फिर भी यह नुक्स पड़े तो इस का कारण स्कर्ट के ऊपर के सिरे की गोलाई का जरूरत से ज्यादा गहरा बनाया जाना है जिसका वर्णन ऊपर

विस्तार पूर्वक किया गया है।

ट्राई करते समय यह मालूम करना चाहिये कि इस का कारण ऊपर बतलाये हुए दोनों कारणों मे से कौनसा है। यदि पहले कारण की वजा से नुक्स हो अर्थात् स्कर्ट के घेरे का आगे से तंग होना इस नुक्स का कारण हो तो चित्र सं० १५३ के अनुसार स्कर्ट के घेरे को १३ से १४ तक बढ़ा कर नुक्स को दूर करो।
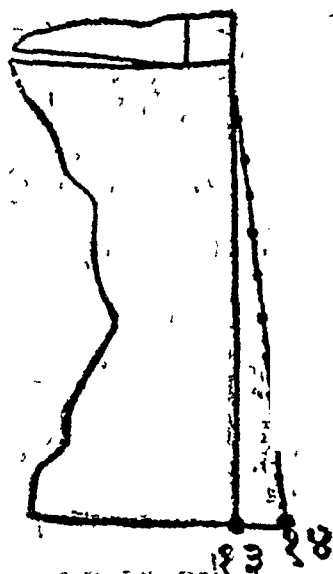
चित्र सं० १५३

परन्तु जब नुक्स का कारण दूसरा हो अर्थात् यह नुक्स कमर की सिलाई के जरूरत से ज्यादा गोल बनाया जाने के कारण से पड़ा हो तो चित्र सं० १४६ और १५१ की सहायता से दूर करो जैसाकि पहले बतलाया जा चुका है।

(४) स्कर्ट के आगे का किनारा गहरा होना
(FRONT EDGE OF SKIRT HOLLOW)

इस अवस्था मे स्कर्ट के आगे के किनारे कमर की सिलाई से लेकर पहले तो ठीक नीचे की तरफ गिरते हैं परन्तु आधी लम्बाई से नीचे जाकर बाहिर की तरफ कोने की शकल बनाते नजर आते है जिससे यह किनारे ऊपर से नीचे तक सीधे गिरने की बजाये कमान की सी शकल बना लेते हैं, जोकि देखने मे बहुत बुरी

मालूम होती है।

कारण—स्कर्ट काटते समय इसे सब प्रकार से ठीक काटा गया है अर्थात् स्कर्ट काटने मे कोई नुक्स नही है परन्तु कारीगरों ने सिलाई करते समय स्कर्ट के आगे के किनारों को जरूरत से ज्यादा लोहे से खेच दिया है जिससे कि यह नुक्स पड गया है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते केवल स्कर्ट के इस सामने वाले किनारे को खोल कर इस मे तान कर टेप दे दो ताकि कारीगरों ने पहले इसे लोहे से फलका कर जितना बड़ा कर दिया हो उतना छोटा हो जाये और नुक्स बिल्कुल जाता रहे।

(५) सामने के किनारों का ज़रूरत से ज्यादा एक दूसरे के ऊपर चढ़ना।

(FRONTS OVER LAPPING TOO MUCH AT THE BOTTOM)

यह नुक्स चित्र सं० १५२ वाले नुक्स के बिल्कुल उलट है अर्थात् इस अवस्था मे स्कर्ट के आगे के किनारे कोट के सामने के आगे के किनारों की सीध मे नीचे की तरफ़ गिरने की बजाये एक दूसरे के ऊपर चढ़ने लग जाते हैं अर्थात् स्कर्ट के दाये तथा बाये तरफ़ वाले हिस्सों के सामने का आपस का तलपट साधारण अवस्था मे तो इतना होता है जितना कि कोट के सामने का तलपट होता है परन्तु इस अवस्था मे यह तलपट स्कर्ट के घेरे पर जा कर बहुत ज्यादा बढ़ जाता है।

कारण:—क्योंकि यह नुक़्स चित्र सं० १५२ वाले नुक़्स का उलट है इस वास्ते इसका कारण भी उस का उलट ही होगा अर्थात् जहां स्कर्ट बाक़ी सब प्रकार से ठीक है परन्तु स्कर्ट का घेरा आगे की तरफ़ ज़रूरत से ज्यादा बनाया गया है और कमर की गोलाई इतनी गहरी नही बनाई गई जोकि घेरे की ज्यादती को नम से बांट सके। यही कारण है कि यह ज्यादती आगे आकर जरूरत से ज्यादा तलपट का कारण बनती है।
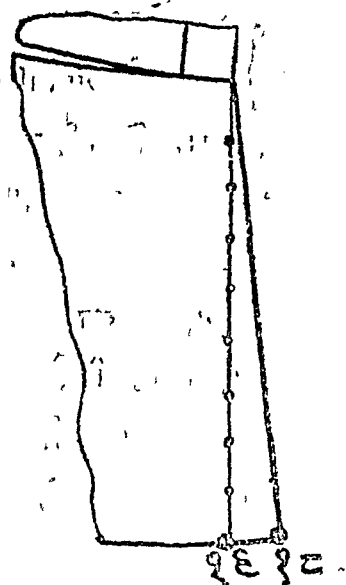
चित्र सं० १५४

इस नुक्स को दूर करना बिल्कुल सरल है अर्थात् क्योंकि स्कर्ट के घेरे का जरूरत से ज्यादा चौड़ा होना ही इस नुक्स का मुख्य कारण है इस वास्ते यदि चित्र सं० १५४ के अनुसार १८ से १६ तक स्कर्ट के घेरे को जरूरत के मुताबिक कम कर दिया जाये तो नुक्स बिल्कुल ठीक हो जायगा ॥

(६) कमर की सिलाई के नीचे शिकन पड़ना।

(CREASES UNDER WAIST SEAM)

यह नुक्स पहले पहल तो इतना नजर नही आता परन्तु जब कोट कुछ दिन पहिन लिया जाय तो यह बहुत ज्यादा नज़र आने

लगता है। यह नुक्स चित्र सं० १५५ से ज़ाहिर किया गया है जिस मे स्कर्ट की साईड पर कमर की सिलाई से नीचे सीधे शिकन पड़ते नजर आते हैं जिससे यह मालूम होने लगता है कि स्कर्ट साईडों पर ऊपर को खिसकना चाहती है इस के इलावा स्कर्ट टांगों के साथ इस तरह चिमटी रहती है कि चलते समय ग्राहक अपने आप को इस मे बन्धा हुआ अनुभव करता है और साधारण अवस्था मे चलने फिरने मे स्कर्ट रुकावट पैदा करती है जिस से साईडों से आगे तथा पीछे की तरफ स्कर्ट मे तिरछे शिकन भी पडने लग जाते हैं।

चित्र सं० १५५

कारण—कई लोग मानिंग कोटों की स्कर्ट की सहायता से फ्राक कोटों की स्कर्ट भी बना लेते है अर्थात् मानिंग कोटों की स्कर्ट के आगे की गोलाई से आगे टुकडा बढा कर इसे सीधा कर लेते हैं और इसे फ्राक कोटों की बाडी के साथ जोड देते है। ऐसा करने से हमेशा यह नुक्स पड़ जाता है और चित्र सं० १५५ वाले शिकन इस मे नजर आने लगते हैं। जब कोट को पहिन कर ग्राहक दो चार कदम चलता है तो यह शिकन शीघ्र ही नजर आने लगते हैं यदि चलते समय स्कर्ट ग्राहक की टागों को दबाती हो तो उस का कारण स्कर्ट के घेरे का कम होना समझना चाहिये। दूसरे सिद्ध हुआ कि इस नुक्स का मुख्य कारण स्कर्ट

का आगे तथा पीछे की तरफ से कम चौड़ा होना और कमर की सिलाई का ज़रूरत से ज्यादा गहरा होना है जिससे कमर की सिलाई में उसकी गहराई के मुताबिक नम न होने के कारण से यह नुक्स पड़ जाता है ।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० १५६ के अनुसार स्कर्ट के आगे के किनारे को लकीर १-३ की सहायता से इस तरह बढ़ाओ कि स्कर्ट का घेरा तो बढ़ जाये और निशान ३ को इस के ऊपर के पहले सिरे १ से मिला दिया जाये। ऐसा करने से स्कर्ट की चौड़ाई ऊपर से उतनी रहेगी जितनी पहले थी। इसी तरह स्कर्ट के पीछे के किनारे को भी लकीर २-४ की सहायता से बढ़ा कर स्कर्ट के घेरे को और बढ़ा दो।
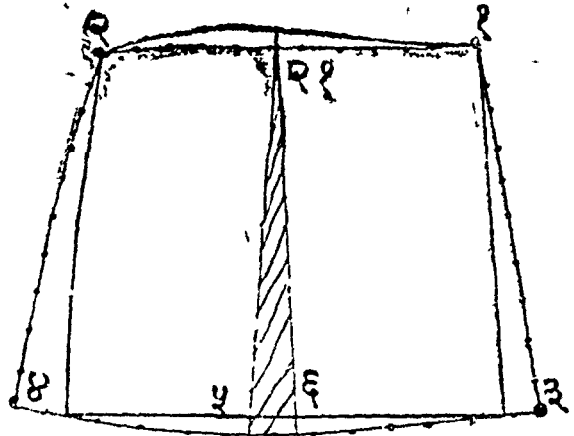
चित्र सं० १५६

अब कमर की सिलाई को बीच मे से ज़रा सीधा कर दो अर्थात् बीच में जो गोलाई ऊपर को उभरी हुई है उसे ज़रा कम करके बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार इसे आगे के निशान १ तथा पीछे के निशान २ के साथ मिला दो। यदि कमर की सिलाई को आप न छेड़ना चाहे तो बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार घेरे के दवाव को बाहिर निकाल कर यही काम पूरा किया जा

सकता है। परन्तु ऐसी अवस्था मे एक बात और भी ज़रूरी है वह यह कि स्कर्ट के आगे तथा पीछे के किनारों को बारी बारी जो निशान ३ तथा ४ तक बढाया गया है ऐसा करने की बजाय स्कर्ट के पुराने खाके के बीच मे तिकूनी टुकड़ा काट कर बढ़ाने की जरूरत होती है जोकि इस चित्र मे ५ से ६ तक दिखलाया गया है। ऐसा करने से न केवल स्कर्ट का घेरा ही बड़ा हो जायगा बल्कि कमर की सिलाई की गोलाई भी जोकि ऊपर को उभरी हुई है स्वयम् ही नीची होकर आपकी इच्छानुसार पहले से सीधी हो जायगी और घेरे की गोलाई बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार पहले से नीची हो जायगी। यह तिकोनी टुकडा जो स्कर्ट के खाके मे काट कर बढाया गया है यहाँ पर तिरछी लकीरों से घेर कर दिखलाया गया है।

(७) कमर की सिलाई का आगे की तरफ़ ठीक न होना
(IRREGULAR RUN OF WAIST SEAM AT THE FRONT)

जब कोट के बटन बन्द किये जाये तो एक तरफ़ की कमर की सिलाई बिल्कुल दूसरी तरफ की कमर की सिलाई के साथ साथ आनी चाहिये परन्तु जैसाकि चित्र स० १५७ मे जाहिर किया गया है यहा पर यह सिलाईया एक दूसरे के ऊपर नही आती। कटर को चाहिये कि नपेलों को मोड़ते समय अथवा नपेलो के करीज का निशान लगाते समय उन से नीचे की सामने की लम्बाईयों को अच्छी तरह देख ले कि दोनों तरफ़ यह बराबर हों

नपेल के भान के नीचे के सिरे से आगे सामने को थोड़ा सा गोल कर देना चाहिये ताकि यह एक दूसरे के ऊपर एक सीध मे आकर गिरे। यदि आप चाहते है कि आपकी एक तरफ की कमर की सिलाई दूसरी तरफ़ की कमर की सिलाई के ऊपर आये तो आपको चाहिये कि आप नपेलों को सामने के ऊपर इस तरह रख कर देखें जैसाकि चित्र सं० १५८ मे डैश वाली लकीरों से जाहिर किया गया है। ऐसा करने से आपको मालूम हो जायगा कि नपेल तथा सामने के घेरे की गोलाईयों मे कोई फ़र्क तो नही है यदि फ़र्क हो तो चित्रानुसार उन को एक दूसरे के मुताबिक़ बना लेना चाहिये।
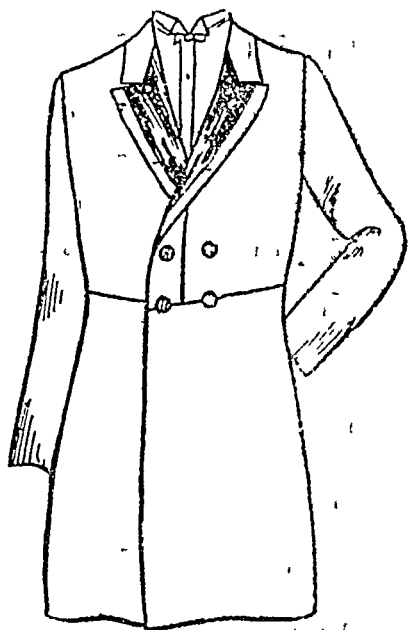
चित्र सं० १५७

चित्र सं० १५६ मे भी नपेल सामने के ऊपर रख कर दिखाई गई है जिसका घेरा सामने के घेरे के मुताबिक नहीं है बल्कि निशान ४ पर डैश वाली लकीरों के अनुसार नीचे को निकला हुआ है। ऐसी अवस्था मे जैसाकि ऊपर बतलाया जा
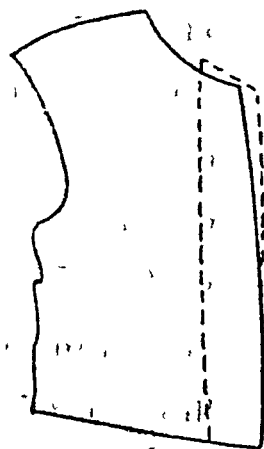
चित्र सं० १५८

चुका है इसे चित्र सं० १५८ के मुताबिक सामने के घेरे के अनुसार बना लेना चाहिये ।

जब इस नुक्स का कारण कटर या कारीगर की गलती न हो बल्कि ग्राहक के दोनों कन्धों के एक जैसा न होने के कारण से यह नुक्स पड़ा हो अर्थात् इस नुक्स का कारण यह हो कि ग्राहक का एक कन्धा दूसरे की अपेक्षा ज्यादा ऊचा या नीचा हो उस अवस्था मे कोट के उस कन्धे को जोकि दूसरे की अपेक्षा ज्यादा नीचा हो ऊपर से दबा देना चाहिये जिससे यह सामना ऊपर को खिचा जायगा और इस की कमर की सिलाई जोकि पहले दूसरे सामने से नीचे को गिरी हुई थी अब बिल्कुल उसके ऊपर आ जायगी । चित्र सं० १६० मे दिखलाया गया है कि किस तरह कोट के एक तरफ के कन्धे को ऊपर से दबा कर कोट को ऊपर खेचना चाहिये यहा पर
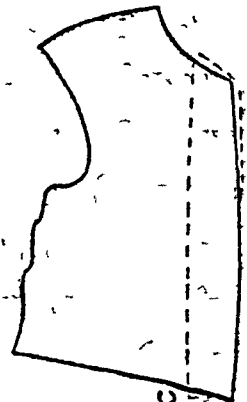
४
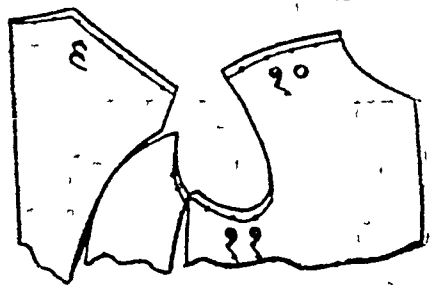
चित्र सं० १५६

चित्र स० १६०

पीठ को निशान ९ पर तथा सामने को निशान १० पर कन्धों पर से दबाया गया है तथा निशान ११ पर मोंढे की गोलाई

को भी उतना ही गहरा किया गया है जितना कि सामने तथा पीठ के कन्धों को दबाने से यह छोटी हो गई थी ताकि मोंढे की गोलाई पहले की तरह पूरी हो जाय तथा कोट का मोंढ़ा तंग न होने पाये।

(८) स्कर्ट का आगे से छोटा होना॥

(SKIRT TOO SHORT IN FRONT)

यह नुक्स प्राय: मोटे पेट वाले आदमियों के कोटों मे पड़ता है या ऐसे आदमियों के कोटों मे पड़ता है जिनका शरीर अकड़ा हुआ हो। यह नुक्स देखने मे बुरा मालूम होता है यह नुक्स चित्र सं० १६१ से जाहिर किया गया है इसमे न केवल स्कर्ट आगे से ऊंची तथा कम नीची है बल्कि यह आगे के किनारे के पास ढीली भी है। इन का तलपट तो बिल्कुल ठीक है तथा ढीलापन झोल की शकल में नज़र आता रहता है।

चित्र सं० १६१

यदि ग्राहक का शरीर अकड़ा हुआ हो तो कोट का सामना भी ऊपर से उसके अनुसार ज्यादा लम्बा होना चाहिये क्योंकि मोटे पेट वाले आदमी का शरीर भी अकड़ा हुआ होता है इस

वास्ते उसके कोट का सामना भी नार्मल शकल वाले मनुष्य के कोट की अपेक्षा ऊपर से ज्यादा ऊंचा होना चाहिये ताकि एक तरफ़ की कमर की सिलाई ठीक २ दूसरी तरफ़ की कमर की सिलाई के ऊपर आ सके। इस नुक्स का कारण यह है कि कोट के सामने की लम्बाई जरा ऊपर से ग्राहक के शरीर के अनुसार नहीं है बल्कि उससे छोटी है जिस से कोट को ग्राहक का शरीर ऊपर को खेच लेता है। तथा न केवल स्कर्ट ऊपर को खिचा जाने के कारण से छोटी नजर आती है बल्कि इसमे ऊपर बतलाये गये झोल भी पडने लग जाते है।

क्योंकि इस नुक्स का कारण, जैसाकि ऊपर बतलाया जा चुका है, कोट के सामने का ऊपर से छोटा होना अर्थात् कन्धे का जरूरत से कम ऊचा होना है इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट के सामने के कन्धे पर के दबाव को बाहिर निकाल कर कन्धे की ऊचाई जरूरत के अनुसार पूरी करो जिससे कोट का सामना नीचे को खिसक आयगा तथा स्कर्ट भी नीचे से बिल्कुल ढीली हो जायगी अर्थात् न तो स्कर्ट नीचे से ऊपर होगी और न ही उसमे किसी प्रकार का झोल पड़ेगा। चित्र सं० १६२ मे निशान
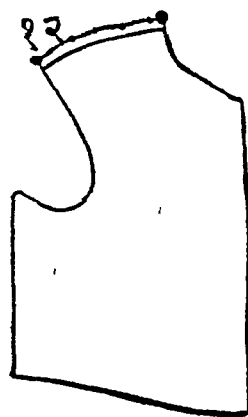
चित्र सं० १६२

१२ से १३ तक कन्धे के दबाव को बाहिर निकाल कर इस नुक्स को दूर करके दिखलाया गया है। जिससे सामने के कन्धे की ऊंचाई पूरी हो गई है।

यदि कोट तैयार हो चुका हो तो इस प्रकार से नुक्स दूर करने से न केवल कन्धे तथा कालर उधेड़ने पड़ेंगे बल्कि कालर भी बिल्कुल नया लगाना होगा जोकि पुराने कालर से ज़रा बड़ा होगा क्योंकि कन्धे की ऊंचाई को बढ़ाने से कोट का गला भी बड़ा हो जायगा इस वास्ते ज़रूरी है कि इसका कालर भी नये गले के अनुसार बनाया जाय जोकि पहले से बड़ा है। ऐसी अवस्था मे इस नुक्स को दूर करने का आसान उपाय यह है कि स्कर्ट की कमर की सिलाई पर के दबाव को आगे से निशान १४ से लेकर १६ तक बाहिर निकालो जैसाकि चित्र संο १६३ मे जाहिर किया गया है। ऐसा करने से भी नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा तथा कोट सब प्रकार से ठीक हो जायगा। परन्तु जब कमर की सिलाई मे स्कर्ट के ऊपर दबाव न रखा गया हो तो उस अवस्था मे सिवाय इस के और कुछ नही हो सकता कि डैश वाली लकीरों के अनुसार स्कर्ट के घेरे को पीछे से दबा कर
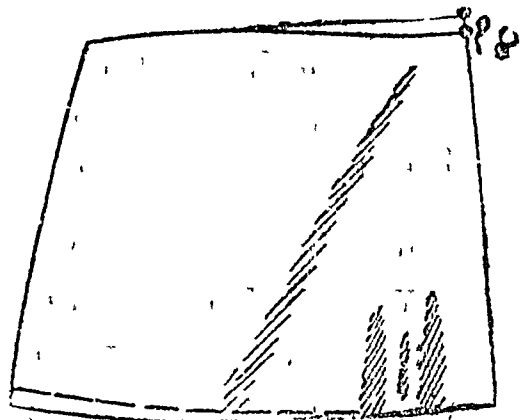
१६
१४

चित्र संο १६३

आगे के बराबर कर दिया जाय जिससे कोट तो जरा छोटा हो जायगा परन्तु नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा।

(९) बटनों के दरमियान नपेल की सिलाई का फूलना (FULNESS ON LAPEL-SEAM BETWEEN THE BUTTONS)

यह नुक्स चित्र सं० १६४ से जाहिर किया गया है इस मे नपेल के भान से जरा नीचे बटनों के बीच मे शिकन पडते नजर आते हैं।

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि सामने का आगे का किनारा जरूरत से ज्यादा गोल किया गया है जैसाकि इस चित्र मे १८ से १६ तक जाहिर किया गया है और नपेल का वह किनारा जोकि सामने के इस किनारे के साथ सिया जाना है इससे बहुत ज्यादा सीधा है। जब एक गोल किनारा दूसरे सीधे किनारे के साथ जोडा जायगा तो इस गोलाई पर सामना फूल जायगा चाहे लोहे से इसे कितना ही क्यों न प्रैस किया जाय यह कभी ठीक नही हो सकता।
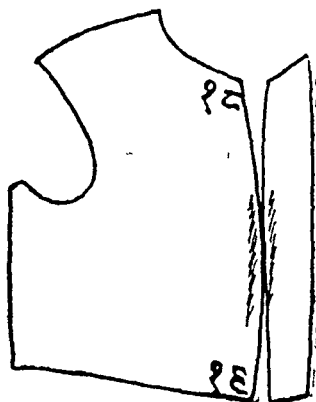
चित्र सं० १६४

इस नुक्स के दूर करने का केवल एक ही तरीका है वह यह कि इस गोलाई को किसी न किसी तरीके से कम किया जाय

अर्थात् सामने के आगे के किनारे नपेल के इसी किनारे के अनुसार गोल अथवा सीधे होने चाहियें। यदि सामने के इस किनारे के आगे दबाव रखा हुआ हो तो चित्र सं० १६५ के अनुसार निशान २० पर बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार इस दबाव को बाहिर निकालो तो यह सिलाई ज़रूरत के मुताबिक सीधी हो जायगी। परन्तु जब इस सिलाई के आगे किसी प्रकार का दबाव न रखा गया हो तो निशान २१ पर गोलाई को दबा कर डैश वाली लकीर के अनुसार गोलाई को कम कर लो तो नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा।
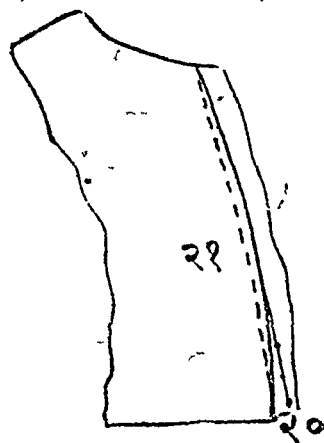
चित्र सं० १६५

(१०) सामने का जरूरत से ज्यादा चौड़ा होना ॥
(FRONTS TOO WIDE)

यह नुक्स मार्निंग कोटों के पाठ में चित्र सं० १३१ तथा १३२ की सहायता से अच्छी तरह समझाया जा चुका है। यदि बटनों को ज़रा पीछे हटा दिया जाय तो यह नुक्स तो दूर हो जाता है परन्तु बटन बीच की सिलाई से उतने दूर नहीं रहते जितना कि नपेल के आगे का किनारा बल्कि यह बटन ज्यादा दूरी पर होते हैं क्योंकि पीछे हटा कर लगाये जाते हैं। इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट के सामने के कन्धे को ज़रा बाहर की तरफ़ सुरका दो और मोंढे तथा बग़ल के नीचे की सिलाई

को बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार छांट कर सामने की ज्यादती को दूर करो जैसाकि मार्निंग कोटों के पाठ मे चित्र सं० १३२ मे दिखलाया गया है।

फ्राक कोटों के नुक्स समाप्त करने के बाद अब हम ड्रैस कोटों के नुक्सों को विस्तार पूर्वक लिखते है।

(११) कन्धों तथा मोंढे की हड्डियों पर कोट का दबाव पड़ना (PRESSURE ON THE SHOULDERS AND THE BLADES)

जिस ड्रैस कोट मे यह नुक्स पड़ जाये उसे पहनते समय बडी तक्लीफ़ होती है। पीठ मे मोंढ़े की हडिड्यों पर दबाव पडने से ऐसा मालूम होता है कि कोट के सारे का सारा बोझ बजाय इस के कि कन्धों पर पडे पीठ पर ही पडता मालूम होता है यह नुक्स चित्र सं० १६६ से जाहिर किया गया है। कोट इस जगह पर इतना तग वनाया गया है कि ग्राहक अपने वाजुओं को बिलकुल आगे पीछे हिला भी नही सकना। सब से ज्यादा दुख उस समय होता है जबकि कोट मे पीठ पर मोंढे के पास खिच पडने लगती है जैसाकि इस चित्र मे शिकनों से जहिर किया गया है। जब कोट कुछ दिनों नक
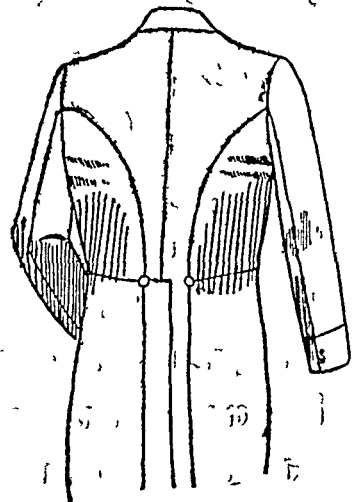
चित्र सं० १६६

पहिन लिया जाये तो इस के सामने के कन्धों में भी शिकन पड़ने लग जाते हैं।

कारण—क्योंकि यह ड्रैस कोट है जिसे टेल कोट (Tail-coat) भी कहते हैं तथा यह कोट हर समय नहीं पहना जाता बल्कि केवल खाने के समय पहना जाता है तथा आजकल इस के सामने ऐसे बनाये जाते हैं कि वह एक दूसरे के ऊपर नहीं चढ़ते अर्थात् उनके बटन बन्द नहीं किये जाते इस वास्ते कोट काटते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि कोट की पीठ जितना हो सके ग्राहक के शरीर के साथ लगी रहे अर्थात् यह कोट शरीर के साथ लगा रहे और यह कोट बिल्कुल फिट बनाया जाता है परन्तु इस अवस्था मे यह कोट हद से ज्यादा फिट अथवा टाईट (Tight) बनाया गया है जिसका यह परिणाम होता है कि कोट का कन्धा अन्दर की तरफ चला गया है और मोंढे की गोलाई भी कम चौड़ी और गोल बन
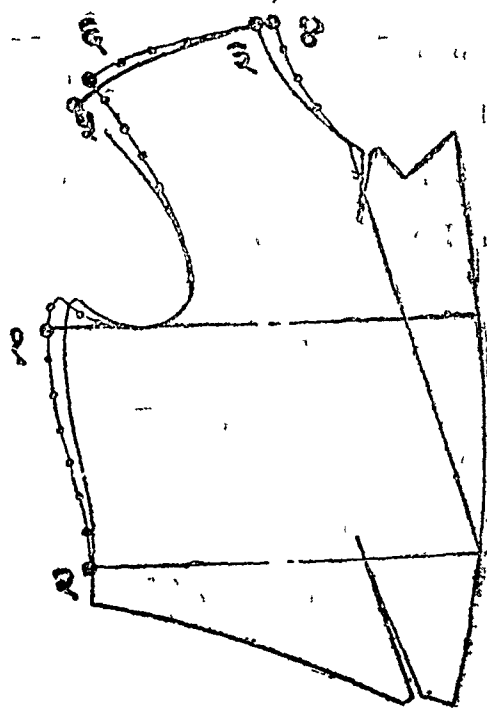
चित्र सं० १६७

गई है जिस से मोंढा इतना तंग हो गया है कि बाजू अच्छी तरह हिलाया नहीं जा सकता।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते बग़ल के नीचे की सिलाई का दबाव बाहिर निकालो जैसाकि चित्र सं० १६७ मे निशान १ से लेकर २ तक जाहिर किया गया है। यह दबाव इतना बाहिर निकालो जितना कि जरूरत हो तथा गले का दबाव बाहिर निकाल कर कन्धे को बाहिर की तरफ़ सुरका दो अर्थात् ३ से ४ तक कन्धे को बढा दो। ऐसा करने से कन्धे की लम्बाई मे जो ज्यादती हुई हो उसे बाहिर की तरफ़ से अर्थात् मोंढे की तरफ से निशान ५ से लेकर ६ तक घटा कर पूरा करो। इस बात का ध्यान रखो कि निशान ६ निशान ५ की अपेक्षा जरा ज्यादा ऊंचा हो जाय ताकि जहाँ कन्धा बाहिर को निकाला जाय वहाँ मोंढे की गहराई भी पहले से ज्यादा हो जाये। क्योकि ऐसा करने से मोंढे की गोलाई ऊपर से बढ गई है इस वास्ते आस्तीन के मोंढे की गोलाई को भी ऊपर से बढाने की जरूरत होती है जिसके वास्ते आस्तीन के ऊपर के भाग, जिसे गोला भी कहते है, के मोंढे की गोलाई को चित्र सं० १६८ के अनुसार निशान ७ पर बड़ा करो॥
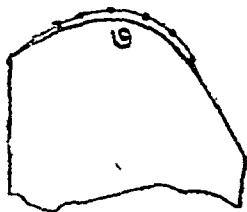
चित्र सं० १६८

(१२) कोट का पीठ पर कमर से दूर उठ खड़ा होना

(HANGING AWAY AT BACK WAIST)

यह नुक्स चित्र सं० १६६ से ज़ाहिर किया गया है। इसमें कोट की पीठ ग्राहक की कमर के साथ लगी रहने की बजाय उस से दूर उठ खड़ी होती है और कमर से नीचे पीठ में इस प्रकार के झोल पड़ते दिखाई देते हैं कि देखने वाले को यही पता लगे कि यहां पर कोट ज़रूरत से ज्यादा ढीला है।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि कोट का सामना अपने असली स्थान पर रहने की बजाय पीछे की तरफ खिसक जाता है इस वास्ते पीठ में झोल पड़ने लगता है तथा कपड़ा इकट्ठा होने लगता है। हालांकि कोट वास्तव मे कमर पर ढीला नहीं है जैसाकि देखने मे मालूम होता है। यह हो सकता है कि कोट के सामने तथा पीठ के कन्धों का गिराओ ठीक न हो परन्तु इस नुक्स का सारा कारण केवल यही नही हो सकता बल्कि इस का मुख्य कारण यह है कि कमर पर का नाप सामने बाडी तथा पीठ मे जरूरत के अनुसार ठीक नहीं रखा गया बल्कि कहीं तो इसे जरूरत से ज्यादा बनाया गया है तथा कहीं कम। जिसका परिणाम यह हुआ है कि कमर का कुल नाप तो पूरा हो
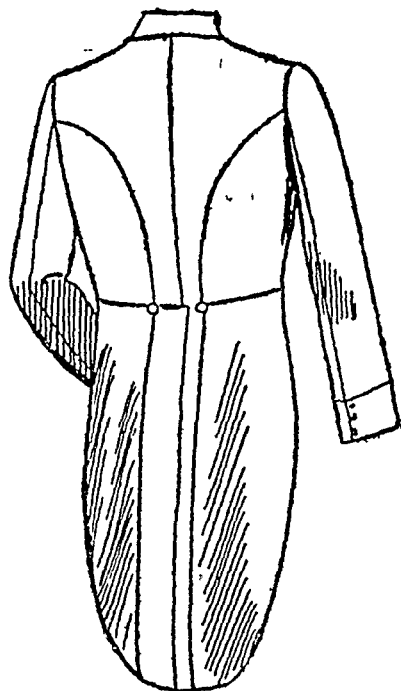
चित्र सं० १६६

गया है परन्तु इस की बॉट ठीक नही की गई अर्थात् कमर को नाप के बराबर बनाते समय सामने का साईड तो जरूरत से ज्यादा छोटा बनाया गया है जिस से कोट सामने पर ठीक नही बैठता बल्कि पीछे की तरफ खिचा जाता है तथा साईड बाडी जरूरत से बड़ी बनाई गई है अर्थात् सामने की कमी को साईड मे ज्यादा किया गया है। इसी प्रकार पीठ बीच मे से तो जरूरत से अधिक चौड़ी बनाई गई है तथा साईड पर से इसे दबा दिया गया है जिससे कोट सारे का सारा पीछे हट कर पीठ पर इकट्ठा हो जाता है तथा इस मे इस प्रकार का नुक्स पडने लगता है।

इस के अतिरिक्त पीठ मे मोंढे की साईडों पर की गोलाई इस प्रकार नही बनाई गई कि वह शरीर के इस भाग पर ठीक आकर पड़े बल्कि यहा पर भी कोट पीछे की ओर खिचा जाता है सामने का साईड पर से जरूरत से अधिक दबाया जाना ही इस नुक्स का मुख्य कारण है कि कोट पीछे को खिचा जाता है तथा सामने मे मोंढे के
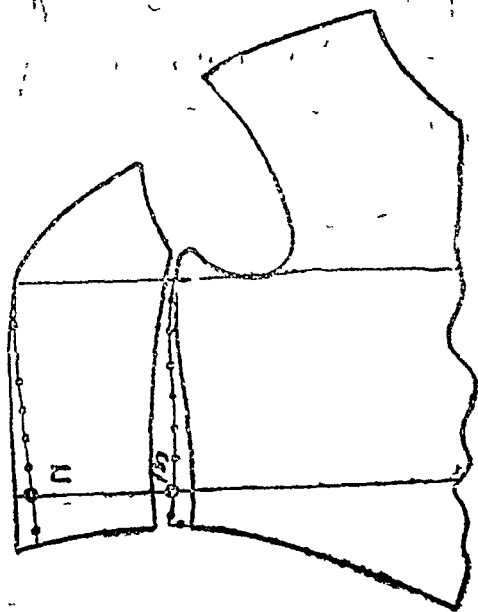
चित्र स० १७०

नीचे शिकन पड़ने लग जाते है। जिस से यह प्रतीत होता है कि कोट बग़ल पर दबाता रहता है तथा इसे पीछे की तरफ़ धकेलने की कोशिश करता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते यदि कोट तैयार हो चुका हो तो बाडी को पीछे की तरफ से कमर पर के निशान ८ पर दबाओ तथा सामने को साईड पर के कमर के निशान ६ पर उतना ढीला करो जितना कि बाडी को निशान ८ पर दबाया हो जैसाकि चित्र सं० १७० मे बिन्दियों वाली लकीरों से ज़ाहिर किया गया है। ऐसा करते समय इस बात का विचार करना ज़रूरी है कि नाप को केवल कमर पर से ही घटाना बढ़ाना चाहिये तथा इसे छाती के निशान से इस प्रकार मिलाना चाहिये कि वह निशान वही के वही रह जायें अर्थात् उन मे किसी प्रकार की कमी तथा ज्यादती न हो।
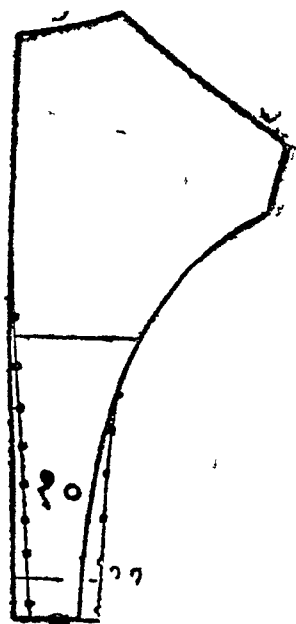
चित्र सं० १७१

ऐसा करने से क्योंकि सामने के घेरे को जितना बढ़ाया गया है बाडी के घेरे को उतना ही घटा दिया है जिससे इस कोट के सामने तथा बाडी का कुल घेरा उतना ही रहेगा जितना कि पहले था अर्थात् पहले की तरह यह स्कर्ट के ऊपर के सिरे के बराबर ही रहेगा। तथा उस मे किसी प्रकार की ज्यादती करने

अथवा घटाने की कोई जरूरत न रहेगी । जैसाकि ऊपर बतलाया जा चुका है कि नुक्स के दूर करने का यह तरीक़ा उस समय वर्तना चाहिये जबकि कोट बिल्कुल तैयार हो चुका हो, परन्तु जब कोट अभी कचा हो तो उस अवस्था मे इसके इलावा पीठ मे भी नीचे लिखी तबदीली करनी चाहिये । जिससे पीठ बिल्कुल ग्राहक की कमर के साथ लग जायगी । चित्र सं० १७१ के अनुसार पीठ को बीच की सिलाई पर निशान १० पर दबाया गया है तथा पीठ को साईड पर कमर की लकीर पर के निशान ११ पर उतना ही बढाया गया है ताकि न केवल कोट पीठ पर बिल्कुल फिट हो जाय बल्कि कमर का नाप भी पूरा हो जाय ॥

(१३) कन्धों में शिकन पड़ना
(WRINKLES IN THE SHOULDERS)

यह नुक्स चित्र स० १७२ से जाहिर किया गया है कोट तो बाकी सब प्रकार से बिल्कुल ठीक है केवल कन्धे मे एक या दो शिकन पडने से कोट की सारी शकल खराब नज़र आने लगती है । यह शिकन कन्धे की सिलाई के आर पार तिरछी शकल मे पड़ते नजर आते है ।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि सामने का कन्धा जरूरत से बहुत ज्यादा गोल बनाया गया है क्योंकि कन्धा इस जगह पर जरा ऊपर को उभरा हुआ होता है इस

प्रकार मिलाकर रखो कि दोनों के बाहिर तथा अन्दर के सिरे एक दूसरे के साथ मिले रहे। उस अवस्था मे आप इस बात का मुकाबिला करे कि सामने के कन्धे की गोलाई पीठ के कन्धे की गोलाई से केवल दो सूत अथवा चौथाई इंच बड़ी हो जैसा कि चित्र सं० १७३ मे निशान १३ से जाहिर किया गया है। इस मे सामने के कन्धे की गोलाई पीठ के कन्धे की गोलाई के ऊपर चौथाई इंच के बराबर चढ गई है यही उस ज्यादती को ज़ाहिर करती है ज़ो सामने के कन्धे मे पीठ के कन्धे की अपेक्षा ज्यादा होनी चाहिए।

(१५) स्कर्ट का हिप पर ढीला होना
(SKIRT LOOSE AT THE HIP)

यह नुक्स दूसरे प्रकार के बाडी कोटों के इलावा ड्रैस कोटों मे ज्यादा पड़ता है। कमर की सिलाई साईड की तरफ़ से शरीर के साथ नही मिलती जैसाकि इसे वास्तव मे होना चाहिए बल्कि यह यहा पर शरीर से दूर उठ खड़ी होती है तथा क्योकि स्कर्ट बहुत छोटी बनाई जाती है अर्थात् स्कर्ट की चौडाई बहुत कम बनाई जाती है तथा यह कम चौड़ी स्कर्ट भी शरीर के साथ लगी रहने की बजाए उस से दूर उठ खड़ी रहती है जिसका परिणाम यह होता है कि पतलून का बहुत सा भाग नज़र आने लगता है।

कारण:— इस नुक्स के दो कारण हो सकते हैं एक यह कि

प्रकार मिलाकर रखो कि दोनों के बाहिर तथा अन्दर के सिरे एक दूसरे के साथ मिले रहे। उस अवस्था मे आप इस बात का मुकाबिला करे कि सामने के कन्धे की गोलाई पीठ के कन्धे की गोलाई से केवल दो सूत अथवा चौथाई इंच बड़ी हो जैसा कि चित्र सं० १७३ मे निशान १३ से जाहिर किया गया है। इस मे सामने के कन्धे की गोलाई पीठ के कन्धे की गोलाई के ऊपर चौथाई इंच के बराबर चढ गई है यही उस ज्यादती को ज़ाहिर करती है जो सामने के कन्धे मे पीठ के कन्धे की अपेक्षा ज्यादा होनी चाहिए।

(१४) स्कर्ट का हिप पर ढीला होना
(SKIRT LOOSE AT THE HIP)

यह नुक्स दूसरे प्रकार के बाडी कोटों के इलावा ड्रैस कोटों मे ज्यादा पड़ता है। कमर की सिलाई साईड की तरफ़ से शरीर के साथ नही मिलती जैसाकि इसे वास्तव मे होना चाहिए बल्कि यह यहा पर शरीर से दूर उठ खड़ी होती है तथा क्योकि स्कर्ट बहुत छोटी बनाई जाती है अर्थात् स्कर्ट की चौडाई बहुत कम बनाई जाती है तथा यह कम चौड़ी स्कर्ट भी शरीर के साथ लगी रहने की बजाए उस से दूर उठ खड़ी रहती है जिसका परिणाम यह होता है कि पतलून का बहुत सा भाग नज़र आने लगता है।

कारण:— इस नुक्स के दो कारण हो सकते हैं एक यह कि

कोट का सामना कमर पर ज़रूरत से ज्यादा ढीला है अर्थात् सामने को साईड की तरफ़ से कमर के नाप के बराबर नहीं बनाया गया बल्कि उसे इस से अधिक बनाया गया है जिससे यह ज्यादती कोट को शरीर के साथ लगी रहने की बजाय उसे शरीर से दूर उठाये रखती है। इस का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि कोट के सामने का कन्धा जरूरत से ज्यादा बाहिर की तरफ़ चला गया है। ऐसी अवस्था मे चाहे कमर का नाप बिल्कुल ठीक क्यों न बनाया गया हो कोट कन्धे के बाहिर की तरफ़ चले जाने के कारण से अपनी असली जगह से खिसक कर दूर उठ खड़ा होता है जिस से यह नुक्स पड़ जाता है। इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० १७४ के अनुसार कोट के सामने के साईड को कमर के निशान १४ पर थोड़ा सा दबा दो जिस से यदि कोट कमर पर ढीला होगा तो ठीक हो जायगा।

चित्र सं० १७४

यदि कोट के कन्धे मे नुक्स हो अर्थात् कोट के कन्धे के ज़रूरत से अधिक बाहिर की तरफ़ बनाये जाने से यह नुक्स पड़ा हो तो कोट के कन्धे को ज़रूरत के मुताबिक बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार छांट लेना चाहिये। जैसाकि इस चित्र मे निशान १८ से जाहिर किया गया है। ऐसा करने से कोट के सामने का कन्धा

जितना छोटा हो गया है हाले के अन्दर से निशान १६ पर से उतना दबाव बाहर निकाल कर कन्धे की लम्बाई को पूरा करो।

ऐसा करने से क्योंकि सामना कमर पर तग किया गया है इस वास्ते जरूरी है कि इसका घेरा भी पहले से छोटा हो जायगा। और स्कर्ट का ऊपर का सिरा जोकि बाडी के मुताबिक पहले ही पूरा चौडा बनाया गया है अब इस अवस्था मे बाडी की चौडाई की अपेक्षा ज्यादा चौडा हो जायगा। इस के वास्ते जरूरी है कि स्कर्ट की चौड़ाई को भी इतना ही कम किया जाय जितना कि सामने को निशान १४ पर छोटा किया गया है। चित्र स० १७५ मे बिन्दियो वाली लकीर की सहायता से ऊपर से लेकर नीचे तक जरूरत के मुताबिक स्कर्ट की चौड़ाई कम करके दिखाई गई है।
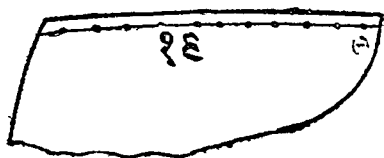
चित्र स० १७५

(१५) सामने में मोंढे के आगे कोट का इकट्ठा होना
(SURPLUS MATERIAL AT FRONT SCYE)

इस अवस्था मे कोट के सामने ग्राहक की बगलों मे घुसने की कोशिश करते है जिसका परिणाम यह होता है कि कोट को मोढे ज्यादा पीछे को नहीं जाने देते और यह मोढे के आगे इकट्ठा होकर झोल डालने लगता है क्योंकि कोट को फिट बनाने के लिये उसे कमर पर कम चौडा बनाया जाता है इस वास्ते कपडा बगलों के आस पास बहुत ज्यादा इकट्ठा हो जाता है तथा

यह नुक्स बहुत बुरा दिखाई देने लगता है। कोट की पीठ मोंढे की गोलाई तथा मोंढे की हड्डियों के पास भी ज़रूरत से बडी है इस वास्ते कोट यहां पर भी ढीला मालूम होता है। यह नुक्स चित्र सं० १७६ से भली भांती जाहिर किया गया है।

कारण —इस नुक्स का कारण कोट का कन्धा ही है अर्थात् कोट का कन्धा जरूरत से ज्यादा अन्दर की तरफ़ बनाया गया है जिससे यह नुक्स पड गया है जैसाकि पहले कही बताया गया है ड्रैस कोटों के सामने बहुत चौड़े नही होते क्योंकि इसके अन्दर जो सुफेद वास्कट पहनी जाती है वह सामने दिखाई देती है हालांकि बाकी कोटों के सामने आगे से बटन लगा कर बन्द किये जाते है जिससे उन के अन्दर की
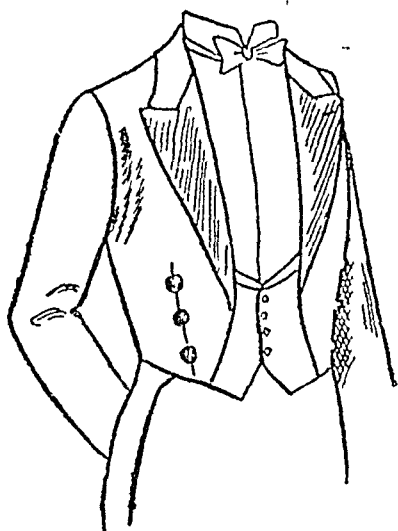
चित्र सं० १७६

वास्कट भी लगभग सारी की सारी छुप जाती है परन्तु ऐसे कोटों मे यह बाहर नजर आती रहती है तथा इस के सामने मे किसी प्रकार के बटन बन्द नहीं किये जाते। इस वास्ते यह कोट काटते समय इस बात का यत्न किया जाता है कि कोट के सामने स्वयम् ही ग्राहक के शरीर पर ठीक २ अपनी अवस्था मे पड़ने लगे। और कोट पीछे की तरफ़ न भागने पाए। ऐसा करने के वास्ते यह

जरूरी होता है कि कोट के कन्धे को साधारण कोटों से जरा ज्यादा मोंढे की तरफ़ अथवा बाहर की तरफ निकाल दिया जाये जिसका परिणाम यह होता है कि कोट पीछे को बिलकुल नहीं जाता आगे की तरफ आने की कोशिश करता है जैसाकि इसे होना चाहिये। परन्तु इस कोट का कन्धा ऐसा नही बनाया गया जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है जिसका परिणाम यह होता है कि कोट पीठ पर शरीर के साथ लगा रहने की बजाये ढीला ढाला मालूम होता है क्योंकि सामने अपनी असली हालत मे रहने की बजाये कोट को पीछे की तरफ धकेलते रहते है । तथा साथ ही मोंढे के आगे भी कोट का सामना इकट्ठा होकर शिकनों का कारण बनता है।

क्योंकि ट्राई करते समय कोट को खेच तान कर अपनी असली हालत मे लाने की कोशिश की जाती है इस वास्ते जल्दी जल्दी उसमे इस प्रकार का नुक्स मालूक नही किया जा सकता जब तक कि कोट बिल्कुल तैयार न हो जाये। परन्तु इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि जब आप को ज़रा सा भी शक पडे कि कोट का सामना मोंढे पर तथा पीठ मोंढे की हड्डियों पर ढीली है तो आप को चाहिये कि कोट का कन्धा उधेड़ दे। उस समय आप को शीघ्र ही मालूम हो जायगा कि कोट का सामना आगे की तरफ़ खिसकाने की जरूरत होती है अर्थात् कोट के सामने के कन्धे को गले की तरफ खिसकाने से यह नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा ।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० १७७ के अनुसार कोट के कन्धे को हाले की तरफ़ से निशान १ से लेकर २ तक छांट दो। ऐसा करने से जहां कोट का कन्धा गले की तरफ़ खिचा जायगा वहां कन्धे की लम्बाई भी छोटी हो जायगी। इस कमी को पूरा करने के वास्ते कोट के कन्धे को इस के बाहिर वाले सिरे पर से निशान ३ से लेकर ४ तक उतना ही बढ़ा दो जितना कि उसे निशान १ से लेकर २ तक
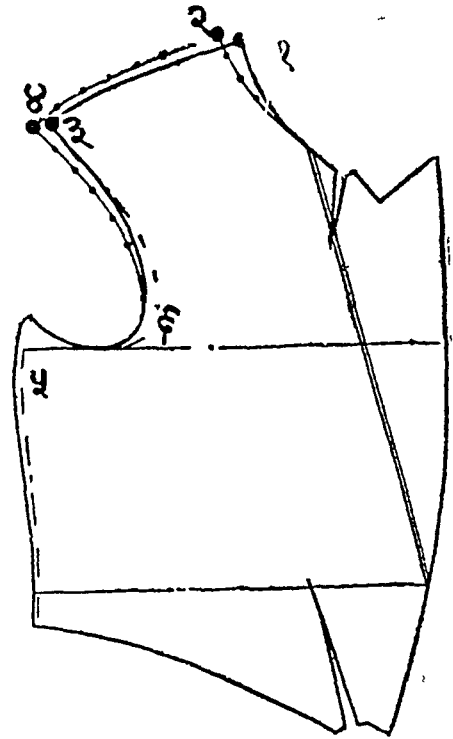
चित्र सं० १७७

छोटा किया हो। इस के साथ ही कन्धे को निशान २ पर निशान १ की अपेक्षा जरा नीचा करने की भी जरूरत होती है ताकि कोट कन्धे पर से ऊपर को खिचा जाने के कारण से कमर के साथ ठीक २ बैठ सके अब बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार सामने के हाले, कन्धे तथा मोंढे की गोलाईया बनाओ।

यदि कोट बिल्कुल तैयार हो चुका हो तथा नुक्स ऊपर बतलाई गई रीति से दूर करने मे कोट का कालर कन्धे तथा मोंढे उधेड़ने पड़ते हों अर्थात् कोट के सामने के मोंढे की गोलाई

पर किसी प्रकार का दबाव न रखा गया हो जिस से निशान ३ से लेकर ४ तक कन्धे की लम्बाई को ज़रूरत के मुताबिक़ बड़ा न किया जा सकता हो उस अवस्था मे ऐसे नुक्स को दूर करने का आसान तरीका यह है कि कोट के सामने के मोंढे को निशान ६ पर डैश वाली गोल लकीर के मुताबिक छाट दिया जाय तथा सामने के साईड को अर्थात् बग़ल से नीचे की सिलाई को निशान ५ पर जरूरत के मुताबिक़ दबा दिया जाय तो नुक्स किसी हद तक जाता रहेगा परन्तु कोट बिल्कुल ठीक उस अवस्था मे होगा जब कि ऊपर बतलाई गई रीति से इस के सामने के कन्धे को ठीक किया जायगा तथा इस दूसरे उपाय से नुक्स केवल उस समय दूर करना चाहिये जबकि ऊपर बतलाई गई रीति से न किया जा सकता हो जैसाकि ऊपर बतलाया गया है।

(१६ स्कर्ट का आगे का किनारा ढीला होना।

(SKRIT EDGE LOOSE)

स्कर्ट का आगे का किनारा गोलाई पर बिल्कुल साफ और शरीर के साथ लगा रहने की बजाय ढीला ढीला मालूम होता है जिस से इस मे यहा पर शिकन नज़र आने लगते है। देखने से ऐसा मालूम होता है कि यह कोट बड़ी बेपरवाही से पहना गया है जिस से कोट मे इस प्रकार के शिकन पडने लग पड़े है। परन्तु वास्तव मे ऐसा नही होता बल्कि स्कर्ट के ठीक न काटे जाने के कारण से यह नुक्स पड जाता है इस को चित्र स० १७८ से जाहिर किया गया है।

कारण—इस नुक्स के दो कारण हो सकते है। पहला तो यह कि स्कर्ट को सिलाई करते समय ज़रूरत से ज्यादा लोहे से फलकाया गया है तथा इस किनारे पर अन्दर की तरफ़ टेप रखते समय इस बात की परवाह नही की गई कि लोहे से फलकाने से यह किनारा जितना बढ़ गया है उतना ही उसके अन्दर की टेप को इस मे तान कर दिया जाय तथा इस ज्यादती को जो इस किनारे मे फलकाने से पैदा हुई है वह टेप के खेच कर रखने से नस मे तब्दील हो जाय तथा लोहे से प्रैस कर के नस को दूर किया जाय।

चित्र सं० १७८

इसका दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि स्कर्ट के ऊपर के सिरे की गोलाई आगे को तरफ़ से बाडी के घेरे के मुताबिक न बनाई गई हो बल्कि यह गोलाई उस गोलाई से कम बनाई गई हो अर्थात् स्कर्ट का किनारा ज़रूरत से कम गोल अर्थात् सीधा बनाया हो जिसका परिणाम यह होता है कि जब स्कर्ट को बाडी के साथ जोडा जाता है तो बाडी स्कर्ट की ज्यादती को नीचे की तरफ़ धकेलती है। जिससे इस प्रकार के शिकन पडने लग जाते है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते स्कर्ट को अलग करके फटे के

ऊपर बिछा दो यदि इस अवस्था मे भी स्कर्ट का यह किनारा ढीला ढीला नजर आय तो समझना चाहिये कि कारीगर ने इसे जरूरत से ज्यादा फलका दिया है। इस के वास्ते जरूरी है कि फलकाने से यह किनारा जितना बड़ा हो गया है उसे पानी लगा कर लोहे से प्रैस कर के दूर किया जाय ताकि यह अपनी असली लम्बाई मे आ जाय। ऐसी अवस्था मे यह ज़रूरी मालूम होता है कि इस किनारे के अन्दर जो टेप रखी जाय वह ज़रा तान कर रखी जाय।

यदि उलट इस के यह स्कर्ट जब फठे पर बिछाई जाय बिल्कुल ठीक हो तथा इस मे किसी प्रकार का ढीलापन न हो तो समझना चाहिये कि इस नुक्स का कारण दूसरा है जोकि ऊपर बतलाया जा चुका है। ऐसी अवस्था मे स्कर्ट के ऊपर के सिरे को चित्र सं० १७६ के अनुसार आगे से निशान ७ पर थोडा सा छाट दो। तथा निशान ७ को स्कर्ट की कमर की सिलाई के बीच के निशान ८ के साथ मिला दो। इसके वास्ते जरूरी मालूम
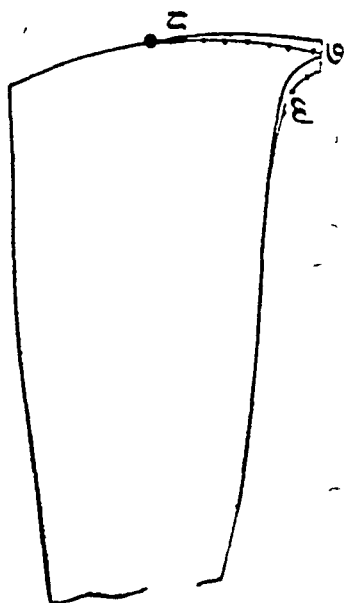
चित्र सं० १७६

होता है कि निशान ७ पर स्कर्ट को बढ़ाने से इसके सामने का जो भाग ऊपर चौड़ा था वह कम हो गया है परन्तु फैशन के मुताबिक उसका वैसा होना बहुत जरूरी है। इस वास्ते स्कर्ट के आगे पर के किनारे के दबाव को निशान ६ पर बाहिर निकाल कर बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार इस किनारे की नई गोलाई बनाओ तो नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा तथा स्कर्ट की शकल तथा गोलाई भी बिल्कुल ठीक हो जायगी।

(१७) सामने का पीछे को दौड़ना
(DROOPING FRONTS)

यह नुक्स चित्र सं० १७६ तथा १७७ मे बतलाये गये नुक्स के साथ मिलता जुलता नजर आता है अर्थात् इस अवस्था मे कोट का सामना उस कोट के साथ थोड़ा २ मिलता जुलता है परन्तु पहले बतलाये गये नुक्स मे पीठ में भी झोल पड़ता था जबकि इस अवस्था मे केवल सामने मे ही नुक्स पड़ता है यह नुक्स चित्र सं० १८० से जाहिर किया गया है इस मे सामने नीचे को ढिलक कर पीछे की
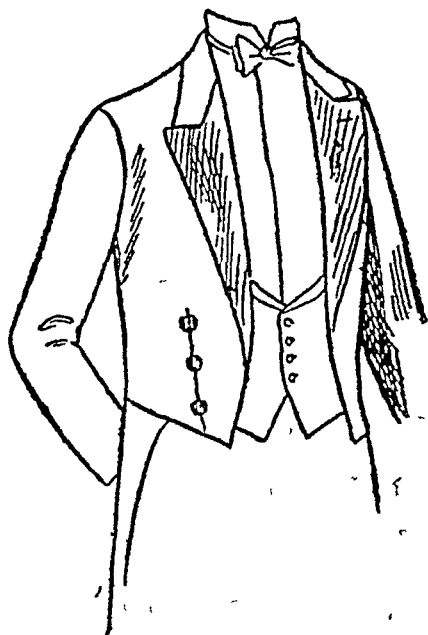
चित्र सं० १८०

तरफ दौडने की कोशिश करते है। जिसका परिणाम यह होता है कि कोट की पीठ मे न केवल बहुत बड़ा झोल पडने लग जाता है बल्कि कमर की सिलाई ग्राहक के शरीर से बहुत दूर उठ खडी होती है तथा पीठ के चाक का नलपट भी जरूरत से ज्यादा हो जाता है क्योंकि सारे का सारा कोट पीछे की तरफ भागने का यत्न करता है तथा सामने का बहुत सा भाग पीछे जाकर इकट्ठा हो जाता है। इस के इलावा क्योंकि कोट का सामना नीचे को ढिलकता है इस वास्ते जरूरी है कि कमर की सिलाई भी अपनी असली जगह से नीचे को खिसक जाये। वास्तव मे कोट की कमर की सिलाई ग्राहक की कमर पर ही आनी चाहिये परन्तु इस अवस्था मे यह उससे नीचे चली गई है।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि सामने का कन्धा जरूरत से ज्यादा ऊंचा बनाया गया है यह ऊंचाई या तो काटते समय जरूरत से ज्यादा रखी गई है जिससे यह कोट के सामने को नीचे की तरफ धकेल देती है या इसका कारण यह भी हो सकता है कि कोट के सामने के आगे के किनारे मे टेप पूरी तरह तान कर न रखी गई हो जिससे यह किनारा बहुत ढीला बनाया हो तथा जब कोट का कालर चढाया गया हो तो यह किनारा कोट के कालर से नीचे की तरफ़ धकेला जाकर सारे कोट के सामने को नीचे की तरफ़ धकेल देता है जिससे यह नुक्स पैदा होता है।

ट्राई करते समय कोट की पीठ को ग्राहक की वास्कट अथवा कमीज के साथ पिन अथवा सूई के साथ टांक दो अब कोट के कन्धों की सिलाई को खोल कर सामने के कन्धों को हाले की तरफ़ से ज़रा ऊंचा खेचो तो कोट का सामना ऊपर को खिंच आयेगा और पीठ पर का सारा नुक्स दूर हो जायगा यदि ऐसा करने पर भी पीठ पर से तो कोट ठीक हो जाय तथा सामना भी ऊपर को खिंचा जाय परन्तु सामने की नपेल की भान पर कपड़ा ढीला रहे तो सामने के कन्धे को थोड़ा सा बाहिर की तरफ़ खिसका देना चाहिये ताकि यह नुक्स भी दूर हो जाय। ऐसा करने से कोट का कन्धा आगे की तरफ़ से जितना छोटा हो जाय हाले के अन्दर उतना दबाव बाहिर निकाल कर उस कमी को पूरा करो।
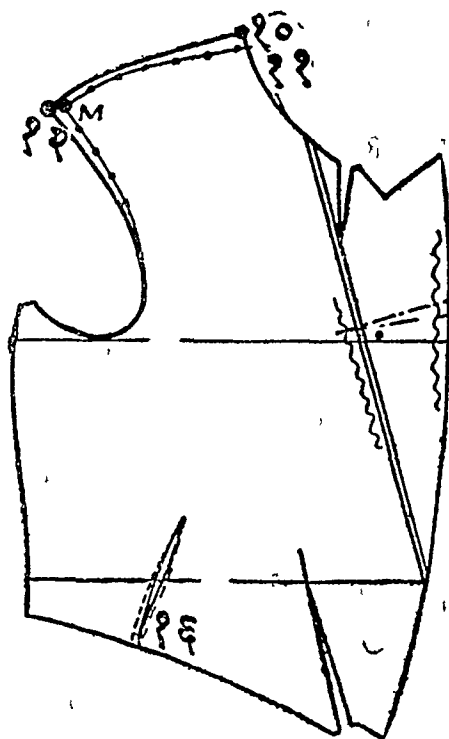
इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० १८१ के अनुसार कोट के सामने के कन्धे को आगे की तरफ़ से निशान १०

चित्र सं० १८१

से लेकर ११ तक नीचा करो। ऐसा करते समय इस बात का भी ख्याल करो कि निशान ११ निशान १० से थोड़ा सा आगे चला आय। ऐसा करने से कोट के कन्धे की लम्बाई जो बढ़ गई है उसे १२ से १३ तक बाहिर की तरफ़ से अर्थात् मोंढे वाले सिरे की तरफ से १० से ११ तक के बराबर छोटा करो ताकि कन्धे की लम्बाई पहले के अनुसार पूरी हो जाय। अब चित्रानुसार बिन्दियों वाली लकीरों की सहायता से हाले, कन्धे तथा मोंडे की गोलाईया बनाओ। ऐसा करते समय इस बात का ध्यान करना ज़रूरी है कि जहां सामने के कन्धे को आगे की तरफ़ से १० से लेकर ११ तक नीचे भी किया गया है वहा निशान १३ को निशान १२ की बिल्कुल सीध मे रखा गया है अर्थात् उस से ऊंचा अथवा नीचा नही किया गया।

(१८) सामने का कमर से नीचे बाहिर को उठ खड़ा होना

(FRONTS STANDING OFF BELOW THE WAIST)

यह नुक्स प्राय: ऐसे मनुष्यों के कोटों मे पड़ता है जिनका पेट बढा हुआ हो अर्थात् मोटे पेट वाले मनुष्यों के कोटों मे यह नुक्स पड़ता है क्योंकि उनका पेट अथवा तोंद बाहिर को निकली हुई होती है तथा उससे नीचे शरीर जल्द ही गोल की तरह पतला होना शुरू हो जाता है। परन्तु कोट काटते समय इस बात का ध्यान नहीं किया जाता जिसका परिणाम यह होता है कि कोट तोंद से नीचे आगे को उठ खड़ा होता हैं।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० १८२ के अनुसार

निशान १४ पर सामने के घेरे की डाट को, जोकि तिरछी शकल मे बनाई जाती है, जरा अधिक दबादो जैसाकि इस चित्र मे डैश वाली लकीरों से करके दिखाया गया है। ऐसा करने से कोट का सामना घेरे पर से अन्दर को खिचा जाता है तथा ग्राहक के शरीर पर बिल्कुल ठीक गिरता है।

यदि सामने के घेरे मे साईड पर से भी डाट दबाया गया हो जैसाकि चित्र सं० १८१ मे निशान १६ से जाहिर किया गया है तो उस डाट को भी चित्रानुसार जरा ज्यादा दबा देना चाहिये।
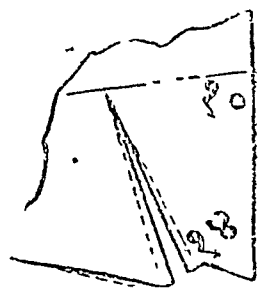
चित्र सं० १८२

(नोट) पीठ पर चाक का फूलना अथवा जरूरत से ज्यादा एक दूसरे पर चढ़ना और स्कर्ट के सारे नुक्स हम पहले मानिंग कोट तथा ड्रैस कोट मे बतला आये है उनको यहां पर भी वैसा ही समझना चाहिये इस वास्ते उन्हे दुबारा लिखने की जरूरत नही।।

आठवां पाठ

(DEFECTS IN CHESTER FIELDS)

चैस्टरों के नुक्स

(१) नपेल के भान का अधिक लम्बा होना

CREASE ROW APPEARS TOO LONG

यह नुक्स चित्र सं० १८३ से जाहिर किया गया है जिस मे रीफर (Reefer) कोट का नुक्स जाहिर किया गया है इसमे नपेल के भान की लम्बाई ज़रूरत से ज्यादा है। जिसका परिणाम यह है कि जब इसके बटन बन्द किये जाये तो नपेल के भान पर कोट इकट्ठा हो जाता है तथा गले पर कोट गर्दन से दूर उठ खडा होता है। इस की कमर में भी शिकन पड़ते नजर आते हैं।

चित्र सं० १८३

कारण—इस नुक्स के दो कारण हो सकते हैं। पहला यह कि कोट के सामने का कन्धा ज़रूरत से ज्यादा बाहिर की तरफ़ चला गया हो जिस से गले से लेकर ऊपर तक के बटन तक का नाप जरूरत से ज्यादा हो जाता है तथा इस प्रकार का नुक्स पड़ जाता है। इस का दूसरा कारण यह है कि ग्राहक की छाती बाहिर को उभरी हुई है। परन्तु कोट का सामना उस के मुताबिक नहीं बनाया गया जिस से कोट के तैयार होने पर यह नुक्स नज़र

लेना चाहिये ताकि नपेल ऊपर को खिची जाय तथा इस मे जो ढीलापन है वह दूर हो जाय।

जब कोट का कन्धा जरूरत से ज्यादा बाहर की तरफ़ बनाया गया हो उस अवस्था मे उसे चित्र सं० १८४ के अनुसार निशान १ पर बाहर की तरफ़ से छांट दो। ऐसा करने से कन्धे की लम्बाई मे जो कमी हो गई है निशान २ पर हाले के अन्दर का दबाव बाहर निकाल कर उसे पूरा करो। परन्तु जब नुक्स का कारण यह हो कि कोट के कन्धे की ऊंचाई ज़रूरत से ज्यादा बनाई गई हो तो उस अवस्था मे कन्धे को आगे की तरफ़ से निशान ३ पर दबा कर नीचा कर लेना चाहिये तथा निशान ३ को बिन्दियो वाली लकीर के अनुसार कन्धे के बाहर के सिरे के साथ मिलाकर कन्धे की सिलाई की नई गोलाई बनाओ जिस से नुक्स जाता रहेगा। यदि ग्राहक की छाती बाहर को उभरी हुई हो तो नपेल के भान वाली लकीर के अन्दर की टेप तान कर रखनी चाहिये। तथा कोट के हाले मे से एक तिरछी डाट निकालनी चाहिये जैसाकि इस चित्र मे निशान ४ पर दिखलाया गया है। ऐसा करने से फाल्तू लम्बाई जाती रहेगी॥

(२) नीचे वाले बटन से नीचे कोट के सामनों का पीछे खिचा जाना।

BOTTOM OF FRONTS PULLiNG AWAY BELOW BOTTOM BUTTON)

यह नुक्स बिल्कुल साधारण है तथा हर एक मनुष्य इसे आसानी से समझ सकता है क्योंकि यह नुक्स प्रायः बहुत से मनुष्यों के कोटों मे पड़ जाता है इस वास्ते इसे चित्र द्वारा दिखलाने की ज़रूरत नहीं।

कारण:–इस नुक्स का कारण यह है कि कोट का घेरा जरूरत से कम चौड़ा बनाया गया है जिससे ग्राहक को चलते फिरते समय टांगों पर बोझ मालूम होता है जिससे कोट पीछे की तरफ़ चला जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट के सामने के घेरे को साईड पर से बढ़ा दो जैसाकि ऊपर की चित्र सं० १८४ मे निशान ५ पर डैश वाली लकीर पर से दिखाया गया है॥

(३) कालर का नीचा तथा गले पर ढीला होना।
(COLLAR LOW & LOOSE ROUND NECK)

यह नुक्स चित्र सं० १८५ से जाहिर किया गया है। इस मे ओवर कोट (Over-coat) का कालर गर्दन पर ढीला है जिससे इसके नीचे का कोट नज़र आने लगता है। तथा सामना साईडों की तरफ़ चला जाता है। जिससे इसमे झोल पड़ने लगता है। यह झोल कमर से लेकर नीचे घेरे तक चला जाता है जहा पर जाकर यह झोल बहुत ही वड़ा हो जाता है। सामने तथा पीठ के मोंढे बिल्कुल ठीक है।

कारण–इस नुक्स का मुख्य कारण कोट का हाला है

जोकि ज़रूरत से बहुत ज्यादा ऊंचा बनाया गया है। इसके इलावा कन्धे का जरूरत से अधिक बाहिर को बनाया जाना भी इस नुक्स को बढ़ाने में मदद देता है। हालें का बड़ा बनाया जाना अर्थात् जरूरत से ज्यादा ऊंचा बनाया जाना कालर को गर्दन पर ढीला बना देता है तथा कन्धे को जरूरत से ज्यादा बाहिर को बढ़ाने से कोट साईडों की तरफ़ दौडने लगता है।

चित्र सं० १८५

ट्राई करते समय कोट की पीठ को पिन या सूई के साथ ढांक दो तथा कन्धे की सिलाई को उधेड़ दो। अब सामने के हाले को जरूरत के मुताबिक इतना ऊपर को उठाओ कि कालर जो गर्दन पर ढीला दिखाई देता है ठीक हो जाय। तथा इस के साथ हाले के अन्दर का दबाव बाहिर निकाल कर सामने के कन्धे को मोंढे
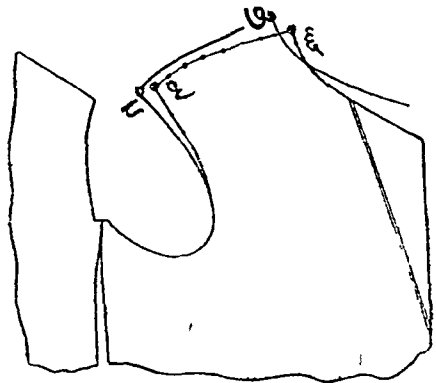
चित्र सं० १८६

की तरफ धकेल दो।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० १८६ के अनुसार सामने के गले को निशान ६ पर नीचा करो तथा इस के साथ ही हाले के अन्दर का दबाव बाहिर निकाल कर निशान ६ को निशान ७ से अन्दर की तरफ़ सुरका दो। ऐसा करने से कोट के सामने का कन्धा ७ से ६ तक के बराबर बड़ा हो गया है। इस वास्ते इसे इसके दूसरे किनारे पर से निशान ८ से ९ तक ७ से ६ तक के बराबर छोटा करो जहां निशान ६ निशान ७ से नीचे किया गया था वहां इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि निशान ९ बिल्कुल निशान ८ की सीध मे हो अर्थात् उससे नीचा ऊंचा बिल्कुल न हो। ऐसा करने से न केवल कोट के सामने का हाला नीचा हो गया है बल्कि कन्धा भी पहले से हाले की तरफ़ बनाया गया है इस वास्ते नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा॥

(४) पीठ पर झोल पड़ना तथा घेरा टांगों के साथ लगा रहना

(FOUL IN BACK AND CLINGING TO THE LEGS AROUND THE BOTTOM)

यह नुक्स चित्र सं० १८७ से जाहिर किया गया है। इस के इलावा हिप पर भी कोट तंग नजर आता है तथा कोट का घेरा टांगों के साथ लगा रहता है जिससे चलने फिरने मे रुकावट पैदा होती है।

कारण—यह नुक्स बडा कठिन है यदि दो तीन मनष्यों से इस का कारण पूछा जाय तो उन मे से हर एक इस का कारण भिन्न २ बतायगा। इस वास्ते आप इसे भली प्रकार समझने की कोशिश करे। इस मे शक नही कि कोट की पीठ मे बहुत काफी कपड़ा है जिसका कुछ भाग सामने के तंग होने के कारण से हिप के ऊपर खिचा गया है। इस के इलावा पीठ की लम्बाई भी जरूरत से ज्यादा नज़र आती है। जिसका कारण या तो यह मालूम होता है कि पीठ के कन्धों की ऊंचाई ज़रूरत से अधिक बनाई गई है या सामने के कन्धों की ऊंचाई ज़रूरत से कम बनाई गई है। अब देखना यह है कि क्या कोट के सामने के कन्धे की ऊचाई को बढाने से नुक्स दूर हो सकता है या पीठ को ऊपर की तरफ सुरकाने से। इन दोंनों मे से जिस चीज की जरूरत हो वही इस नुक्स का कारण समझना चाहिये।

चित्र सं० १८७
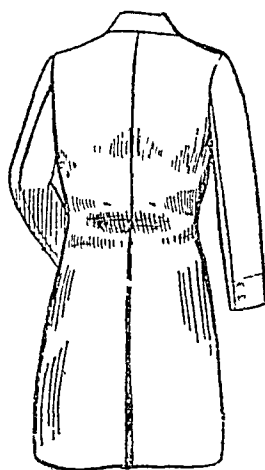
ट्राई करते समय कोट की साईडो को नीचे से लेकर कमर तक खोल दो तो हिप पर का दबाओ तथा घेरे का टागों के साथ लगा रहना तो दूर हो जायगा परन्तु इस अवस्था मे कोट के साईड जहा पर खोले गये है वहा पर सामने तथा पीठ मे जगह खाली नजर आने लगेगी जिससे आप यह अन्दाजा लगा सकेंगे

कि कोट के सामने का घेरा कितना छोटा है अर्थात् कोट के सामने का घेरा जितना छोटा होगा उन साईडों पर उतनी जगह खाली नज़र आने लगेगी।

इस के बाद कोट की पीठ के ऊपर के भाग को पिन अथवा सूई से टांक दो तथा कोट के सामने को नीचे की तरफ़ इतना खिसकाओ कि पीठ पर के सारे शिकन तथा झोल दूर हो जाये। अब सामने को इस अवस्था मे जबकि यह नीचे को सुरकाया जा चुका हो पिन अथवा सूई के साथ टांक दो ऐसा करने से कोट के सामने तथा पीठ के कन्धों के नीचे जितनी जगह ख़ाली नज़र आयगी वह यह ज़ाहिर करेगी कि कोट के सामने का कन्धा इतना कम ऊंचा है अर्थात् इसे इस खाली जगह के बराबर ऊंचा करने से नुक्स जाता रहेगा।

अब आप ने देखना यह है कि सामने को नीचा करने से कही कोट की बग़ल तो ज़रूरत से ज्यादा नीची नही होगई। यदि ऐसा हो गया हो तो समझना चाहिये कि कोट के सामने को नीचे खिसकाने से काम न बनेगा अर्थात् इस नुक्स का कारण कोट के सामने के कन्धे का कम ऊंचा होना नही है बल्कि पीठ के कन्धे के ज़रूरत से ज्यादा ऊंचा बनाया जाने से यह नुक्स पड़ गया है। इस वास्ते पीठ के कन्धे को ऊपर की तरफ़ खिसकाने की ज़रूरत होगी।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० १८८ के अनुसार छाती से लेकर घेरे तक कोट के सामने के साईड का

घेरा इस प्रकार बढ़ाओ कि छाती पर तो यह बिल्कुल न बढे तथा ज्यों २ नीचे चले जायें यह ज्यादती बढ़ती जाये जैसाकि इस चित्र मे १० से ११ तक जाहिर किया गया है।

यदि मोंढे की गहराई पहले ही पूरी गहरी न हो अर्थात् कोट की बगले जरूरत के मुताबिक नीची न बनाई गई हों तो सामने पर के कन्धे के दबाव को १२ से लेकर १३ तक बाहर निकाल कर कन्धे की ऊचाई जरूरत के मुताबिक ज्यादा ऊंची करो अर्थात् सामने को नीचे की तरफ खिसका लो। अब बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार कोट के हाले, कन्धे तथा मोंढे की गोलाईया बनाओ। ऐसा करने से कोट के मोंढे की गोलाई ऊपर से बढ जायगी जिस क वास्ते आस्तीन के ऊपर के भाग के मोंढे की गोलाई बढाई जावे जैसाकि चित्र सं० १८६ मे बिन्दियों वाली लकीरों से करके दिखाया गया है।
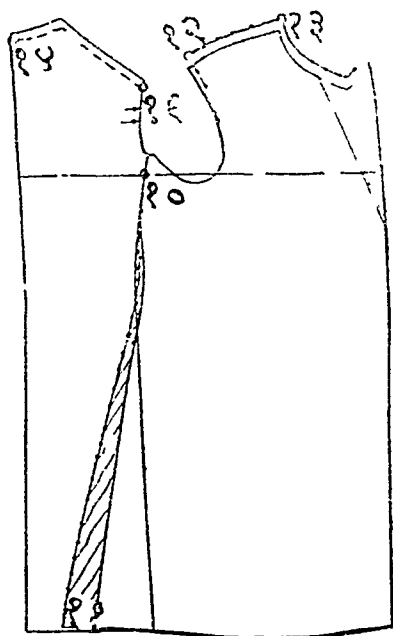
चित्र सं० १८८

परन्तु जब मोढा पहले ही काफी गहरा बनाया गया हो तो

उस अवस्था मे जैसाकि ऊपर बतलाया जा चुका है इस नुक्स का कारण पीठ के कन्धे की ऊंचाई का जरूरत से ज्यादा लम्बा होना समझना चाहिये। इस अवस्था मे चित्र सं० १८८ के अनुसार पीठ को ऊपर से डैश वाली लकीर के अनुसार १४ से लेकर १६ तक छोटा करो। ऐसा करने से पीठ पर आस्तीन के पास को जिस निशान से जोड़ा जाता है वह भी नीचा करना होगा। क्योंकि पीठ

चित्र सं० १८६

का कन्धा पहले से नीचा हो गया है इस लिये मोंढे की गोलाई भी ऊपर से छोटी हो गई है जिस के वास्ते आस्तीन के ऊपर के भाग के मोंढे की गोलाई का घटाना ज़रूरी है जैसाकि चित्र स० १६० मे डैश वाली लकीरों से करके दिखाया गया है।

(नोट) यदि कोट बिल्कुल तैयार हो चुका हो तथा नुक्स को ऊपर बतलाई गई रीति से ठीक करने के वास्ते कोट के साईड के इलावा कालर, कन्धे तथा मोंढे भी खोलने पड़ते हों तो इसका आसान तरीका यह है कि १० से ११ तक साईड को ढीला करते समय जब सामने तथा पीठ के दबाव को निकाला जाय तो सामने को जरूरत के मुताबिक नीचे उतार देना चाहिये तथा पीठ को उतना ही ऊपर को चढ़ा देना चाहिये। ऐसा करने से कोट का कालर,

चित्र सं० १६०

कन्धे तथा मोंढे उधेड़ने की ज़रूरत न होगी। इस प्रकार से
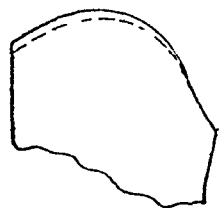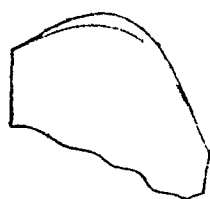
कोट का नुक्स बिल्कुल दूर तो नहीं होगा परन्तु काम तो जरूर चल जायगा जोकि इतनी बडी मेहनत को बचाने के मुकाबले मे किसी सूरत मे भी मंहगा न होगा।

(५) बाडी का ज़रूरत से लम्बा होना

(LONG BODY EFFECT)

यह कोई विशेष नुक्स नही है बल्कि आज कल के फैशन के चस्टरों मे, जोकि कमर पर ज्यादा फिट बनाये जाते है, बहुत पडता है। क्योंकि ऐसी अवस्था मे कोट को केवल कमर पर या उससे कुछ ऊपर फिट बनाने की बजाय उससे काफी नीचे तक भी फिट बनाया जाता है अर्थात् यह कमर की गोलाई हिप तक चली जाती है। जिससे इसकी बाडी बहुत लम्बी मालूम होती है। जब नीचे कोट का घेरा शीघ्र ही बढ जाता है तो यह नुक्स बहुत अच्छी तरह जाहिर होने लगता है।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि कोट के सामने तथा पीठ की गोलाईयां बनाते समय कमर को इसकी असली जगह से बहुत नीचे तक दबाया गया है तथा हिप की गोलाई कमर की लकीर के नीचे से लेकर बाहिर नकालना शुरू करने की बजाय इसे इससे बहुत नीचे लेजाकर शुरू करते है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० १६१ के अनुसार पीठ तथा सामने के साईड की गोलाईयां बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार निशान १ तथा २ पर बाहिर निकालो।

यदि कोट तैयार हो चुका हो तथा पीठ की साईड मे किसी प्रकार का दबाव न रखा गया हो तो इस कमी को सामने के साईड को बढ़ा कर पूरा करना चाहिये अर्थात् ऐसी अवस्था में सारी की सारी ज्यादती सामने के साईड मे ही करनी चाहिये ॥
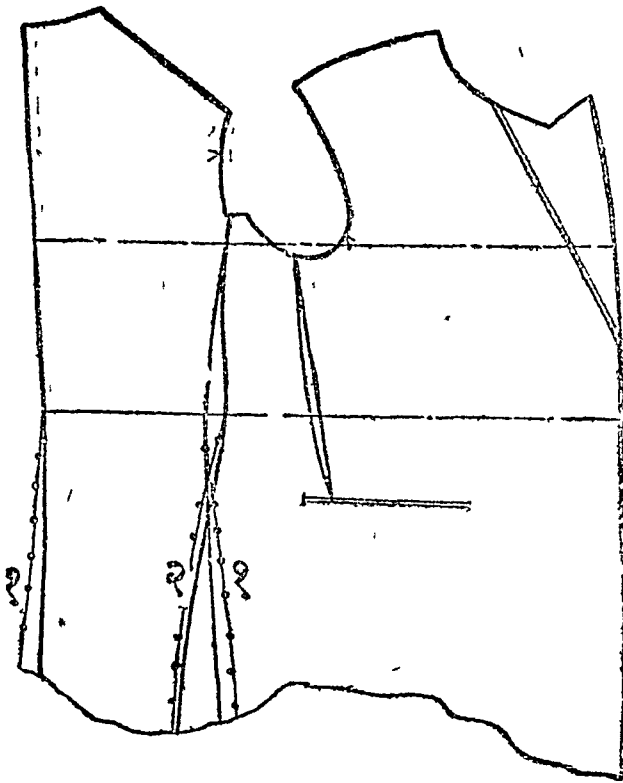
चित्र सं० १६१

(६) कोट को पहनते समय तंगी अनुभव होना
(DIFFICULTY IN GETTING ON THE COAT)

यह नुक्स ग्राहक को बड़ा दुःख देता है तथा ऐसे कोटों तथा

ओवर कोटों मे बहुत पाया जाता है जोकि कमर पर फ़िट बनाये जाते हैं। कई बार जबकि ओवर कोटों की आस्तीनों के अन्दर का कपडा घटिया लगाया जाता है जोकि ओवर कोट पहनते समय कोट की आस्तीनों के ऊपर से जल्दी से नहीं खिसक सकता जिस से कोट के पहिनने मे तंगी मालूम होती है परन्तु प्रायः कोट के मोंढे की गोलाई तंग बनाई जाती है जिससे यह नुक्स पैदा होता है अर्थात् कोट पहिनने मे दुःख होता है तथा चैस्टर पहिनते समय नीचे का सारा कोट ऊपर की तरफ गर्दन के पास चला जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० १६२ के अनुसार कोट के कन्धे के बाहर के सिरे पर के दबाव को बिल्कुल बाहर निकाल दो अर्थात् मोंढे की तरफ़ से कन्धे के ऊपर का सारे का सारा दबाव बाहिर निकालो तथा उसे बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार कन्धे के दूसरे सिरे के साथ इस प्रकार से मिलाओ कि डाले पर कन्धे का दबाव बिल्कुल बाहर न निकाला जाय। ऐसा करने से
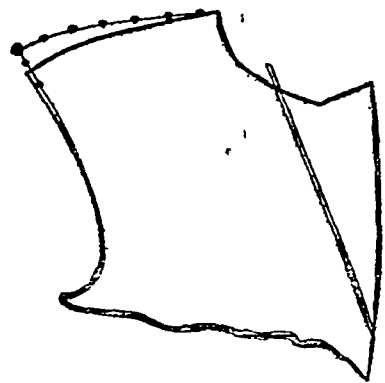
चित्र सं० १६२

कोट का मोंढा बडा हो जायगा। इस अवस्थ मे आस्तीन के गोले के मोढे की गोलाई भी ऊपर से बढानी होगी इस से कोट का

मोंढा ढीला हो जायगा तथा नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा।

(७) फ़लाई का ऊपर के बटन का काज नज़र आना
(TOP BUTTON HOLE OF FLY SHOWING)

आज कल चैस्टरों के उस सामने के नीचे जिस मे कि काज बना कर बटन बन्द किये जाते हैं आगे के किनारे की अन्दर की तरफ़ अढाई 'च चौड़ी पटी उतने भाग मे लगाई जाती है जिसमे कि काज बनाये जाते हैं। इस पटी को दर्जी लोग फ़लाई कहते हैं। यह इस वास्ते लगाई जाती है कि जब बटन बन्द किये जायें तो वह बटन बाहर नज़र न आवें।

इस अवस्था में जब कोट के बटन बन्द किये जायें तो इसके कारण से ऊपर का काज नजर आने लगता ह। यह फलाई वाले कोटों का सब से बड़ा नुक्स है। इस के दो कारण हो सकते हैं पहला तो यह कि कालर के फाल का बाहिर का किनारा ज़रूरत से कम बनाया गया हो जिससे कोट का कालर ग्राहक के कन्धों पर ठीक नहीं बैठता तथा वह नपेल को ऊपर की तरफ़ खेंचने की कोशिश करता है जिससे यह नुक्स पड़ जाता है अथवा इस का दूसरा कारण यह हो सकता है कि कोट का कालर छोटा बनाया गया हो जो पहले कालर की तरह स्वयम् अपनी असली जगह पर जाने के लिये कोट की नपेल को अपनी तरफ़ खेचता है जिससे यह
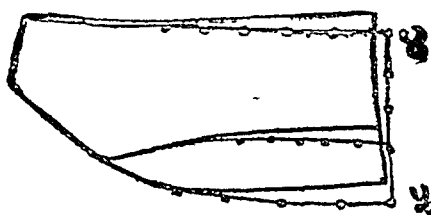
चित्र सं० १६३

नुक्स पड़ जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते नया कालर बनाने की ज़रूरत होती है क्योंकि यह कालर किसी भी अवस्था मे ठीक नही हो सकता। नये कालर का भेद इस पुराने कालर से जो होगा वह चित्र स० १६३ मे बिन्दियों वाली लकीरों से निशान ४ तथा ५ से जाहिर किया गया है जिसमे न केवल कोट के कालर को बड़ा किया गया है बल्कि उसके फाल के बाहिर वाले किनारे को भी जरूरत के मुताबिक बढाया गया है।

(८) ऐसा डबल ब्रैस्ट कोट जो बन्द गले का भी बन सके (FAULTY THROAT FASTENING IN A TWO WAY COLLAR)

कई लोग जोकि प्रायः सरदी से काम करते रहते है यह चाहते है कि उन का डबल ब्रैस्ट चैस्टर ऐसे तरीके से बनाया जाय कि जरूरत पडने पर गले का बटन बन्द करके इससे बन्द गले के कोट का काम भी लिया जा सके जैसाकि पारसी कालर का
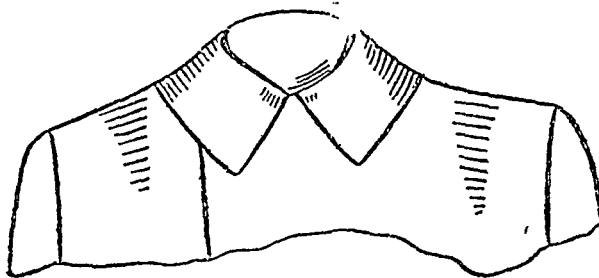
चित्र सं० १६४

कोट होता है जोकि चित्र सं० १६४ से जाहिर किया गया है।

ऐसा करने से तीन प्रकार का दुःख होता है। पहला यह कि जब नपेल का भान खोल कर गले का बटन बन्द किया जायगा तो नपेल के ऊपर का सिरा चित्र सं० १६५ के अनुसार कालर
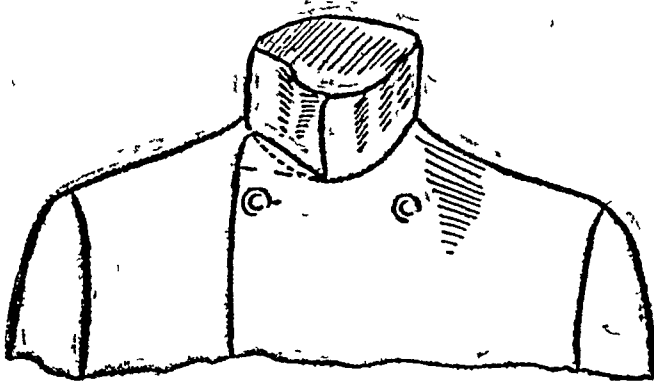
चित्र सं० १६५

के ऊपर चढ़ जायगा जोकि इसे नीचे को धकेलने की कोशिश करेगा जिससे कोट के सामने मे झोल पड़ने लगेगे।

दूसरी तकलीफ यह होती है कि जब बटन बन्द किये जाते हैं तो नपेल के ऊपर के सिरे जिन को ठोके भी कहते हैं या तो एक दूसरे के ऊपर चढ़ जाते हैं या एक दूसरे के साथ बिल्कुल
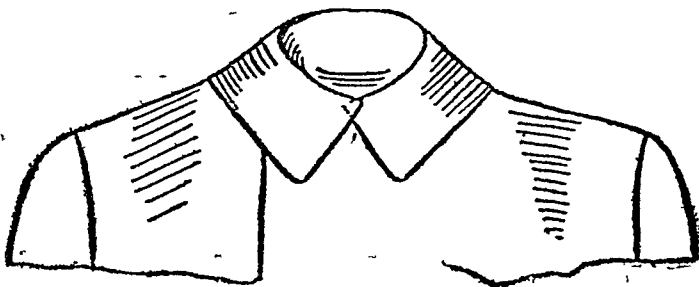
चित्र सं० १६६

मिलते ही नही जैसाकि चित्र सं० १६६ के अनुसार जाहिर किया गया है।

तीसरा दुःख इस अवस्था मे यह होता है कि कालर के फाल का बाहिर का किनारा इतना बड़ा नही होता कि पारसी कालर का काम दे सके जिस का परिणाम यह होता है कि कन्धे के ऊपर खिच पड़ने लग जाती है तथा प्राय यह किनारा छोटा होने के कारण से ऊपर को उलट जाता है।

इससे सिद्ध हुआ कि इस प्रकार का काम करना कठिन है कि डबल ब्रैस्ट कोट बन्द गले के कोट का भी काम देसके क्यों कि पारसी कालर का बाहर का किनारा डबल ब्रैस्ट कोट के बाहर के कालर की अपेक्षा बहुत बड़ा होता है इस वास्ते ऐसी अवस्था मे केवल एक बात ही लाभ दायक हो सकती है वह यह कि कालर काटते समय इस बात का ध्यान रखा जाये कि यह न तो बिल्कुल पारसी कालरं के कोट की तरह बिल्कुल बड़ा हो तथा न ही खुले गले वाले कोट की तरह बिल्कुल छोटा हो बल्कि इन दोनों के दरमियान के नाप वाला हो ताकि यह दोंनों काम देसके।

कालर बनाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि नपेल का ऊपर का सिरा भान से आगे बिल्कुल सीधा होना चाहिये न कि तिरछा जैसाकि चित्र सं० १६७ मे निशान १ से २ तक जाहिर किया गया है यदि आप चाहते हैं कि चित्र सं० १६६ के अनुसार गले के बटन बन्द करते समय यह सिरे एक दूसरे के ऊपर न चढ़े तो निशान १ को बिल्कुल निशान ३ की सीध मे

चित्र सं० १९७

रखो जोकि सैन्टर लाईन को जाहिर करती है।

डैश वाली लकीर खुले गले वाले कोट के कालर को ज़ाहिर करती है। इस में लपेल के भान की लकीर निशान ४ तथा ५ से ज़ाहिर की गई है।
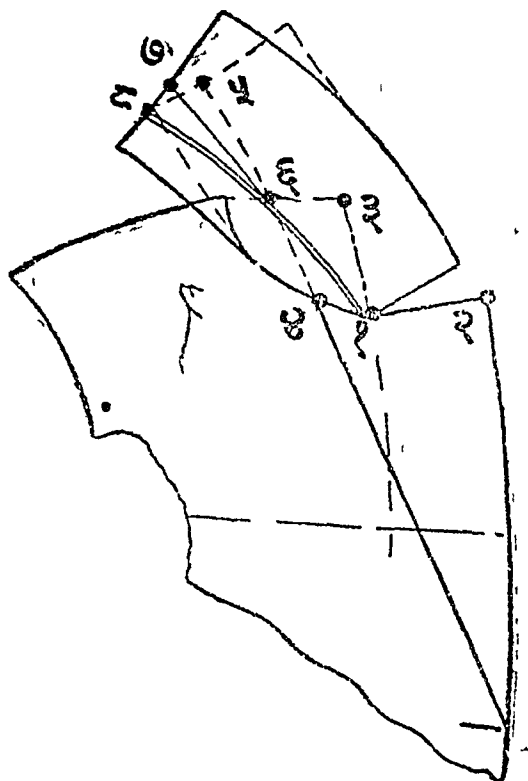
निशान ६ बिल्कुल गले की सीध मे है। निशान १ से लेकर ६ मे से होते हुए ७ तक एक नई लकीर बनाओ। इस बात का ध्यान रक्खो कि निशान ८ से ७ तक का नाप कालर के सटैंड तथा फ़ाल के फ़रक के बराबर हो। अब इस लकीर के दोनों तरफ़ निशान ७ मे से लकीरे सकोयर करो तथा कालर के सटैंड तथा फ़ाल नापो।

पुराने ज़माने के दर्ज़ी इस काम को पूरा करने के वास्ते चित्र सं० १९८ के अनुसार टिकन को लोहे से फलका दिया करते थे दो भिन्न २ टुकड़े काट कर एक दूसरे के साथ रखे जाते थे जैसा कि निशान ८ से जाहर किया गया है। इसे देखने से स्पष्ट यह

चित्र सं० १६८

मालूम होता है कि जो दो लकीरे साथ २ बनी हुई है वह टिकन के दो टुकड़े भिन्न २ ज़ाहिर करती है।
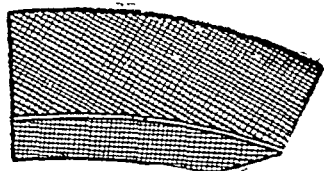
नवां पाठ

मोटे पेट वाले मनुष्यों के कोटों के नुक्स।

(TROUBLES OF THE CORPULENT)

(१) पेट से नीचे कोट में झोल पड़ना।

(DRAPPERY BELOW THE STOMACH IN THE LOUNGE)

जब कोट के बटन बन्द किये जाते है तो पेट के नीचे कोट इतना ढीला दिखाई देता है कि देखने मे झुलझला सा मालूम होता है। इस का परिणाम यह होता है कि कोट के सामने के घेरे मे शिकन पड़ने लग जाते है कोट जितना अधिक लम्बा होगा यह नुक्स उतना ही ज्यादा नज़र आयगा जो कोट प्राय. मशीन से सिले जाते हैं या जिनमे हाथ की सिलाई का नाम तक नहीं लिया जाता उनमे यह नुक्स बहुत ज्यादा नजर आता है तथा विशेष कर ऐसे कोटों मे जिनका घेरा गोल नही होता अथवा

आगे से बिल्कुल सीधा होता है उन में यह नुक्स बहुत ही ज्यादा नज़र आता है ।

कारण–इस नुक्स का कारण यह है कि ग्राहक का शरीर तो आगे से गोल है अथवा पेट बाहिर को निकला हुआ है परन्तु उसका कोट उस के शरीर के मुताबिक नही बनाया गया बल्कि उसे बिल्कुल सीधा ही बनाया गया है जिस का परिणाम यह होता है कि जब कोट का सामना ग्राहक के पेट के ऊपर से होकर नीचे की तरफ़ सीधा जाता है तथा उसका पेट नीचे जाकर गोलाई मे अन्दर को जाता है जिससे कोट पेट से नीचे शरीर के साथ लगा रहने की बजाय उससे दूर उठ खडा होता है तथा इस मे शिकन पड़ने लग जाते है जोकि इस नुक्स का मुख्य कारण बनते है। इस वास्ते जरूरी है कि कोट का सामना काटते समय इस बात का ध्यान रखा जाय कि कोट का सामना बीच मे से इस प्रकार से बाहिर को उभारा जाय कि वह पेट की गोलाई के ऊपर ठीक २ बैठ सके तथा उससे नीचे का भाग शरीर के उस भाग के साथ जोकि गोलाई से अन्दर को चला गया है ठीक २ बैठ सके ।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते यदि कोट के सामने के किनारों से पेट से नीचे टेप को खेच कर रक्खा जाये तथा इस प्रकार से इस किनारे मे जो नम आ।जाये उसे लोहे से प्रेस करके मार दिया जाये तो कुछ न कुछ नुक्स जाता रहेगा। इस प्रकार के काम को दर्जी लोग टांगा देना भी कहते हैं परन्तु ऐसा करने से नुक्स बिल्कुल दूर नहीं होता तथा कई कपड़े ऐसे भी होते हैं जो इतने

सख़्त होते हैं कि चाहे उन्हे लोहे से कितना ही प्रैस क्यों न किया जावे उन मे नम बिल्कुल मारी ही नही जाती । इस वास्ते इस प्राकर के कपड़ों के कोटों मे इस तरह नहीं किया जा सकता ।

इस नुक्स को दूर करने का बिल्कुल ठीक उपाय यह है कि इस के ख़ाके के सामने के घेरे मे से इस प्रकार से डाट निकालनी चाहिये कि सामने की बग़ल के नीचे की डाट पाकट के सिरे के साथ मिले न कि उस के बीच के किसी निशान से। अब इस डाट को काट दो तथा पाकट के निशान के साथ २ भी सामने को काट दो तथा कोट के सामने के आगे के किनारों मे से पेट के नीचे अथवा घेरे पर से डाट निकालो जोकि चित्र स० १६६ मे निशान १ से ज़ाहिर किया गया है। इस डाट को ऊपर की तरफ़ पाकट के आगे के सिरे के साथ जोकि इस चित्र मे निशान २ से ज़ाहिर किया यगा है मिलाओ।
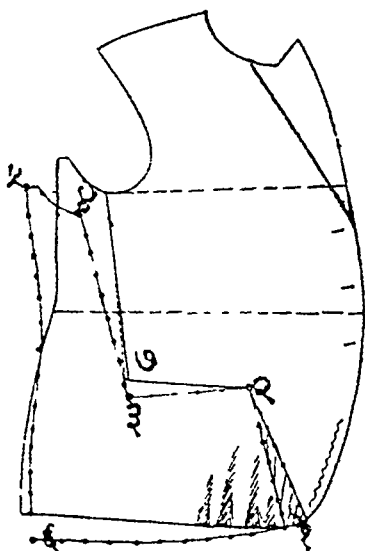
चित्र सं० १६६

ऐसा करने से पाकट का मुंह निशान ३ पर और बग़ल के नीचे का डाट निशान ४ पर खुल जाता है और कोट के सामने के ख़ाके की शकल फिर कर बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार

हो जाती है जोकि इस चित्र मे निशान ५ और ६ से ज़ाहिर की गई है क्योंकि जैसाकि ऊपर बतलाया जा चुका है पाकट का मुंह और डाट खुल जाते है इस वास्ते पाकट के मुंह का नीचे का किनारा ऊपर के किनारे की अपेक्षा बड़ा हो जाता है। इस लिये ऊपर के किनारे को डैश वाली लकीरों के अनुसार बड़ा करो जैसाकि इस चित्र मे निशान ७ से ज़ाहिर किया गया है ताकि पाकट का ऊपर का किनारा भी नीचे के किनारे के बराबर हो जाये और पाकट लगाते समय किसी भी किनारे मे झोल अथवा खिच न पड़े। जब बग़ल के नीचे की डाट को सिया जायगा तो सामना पाकट के आगे के सिरे पर फूलने लगेगा जिससे यह ग्राहिक के पेट अथवा तोंद पर बिल्कुल ठीक आकर बैठेगा और इससे नीचे भी कोट का सामना ग्राहक के शरीर पर ठीक गिरेगा अथवा उसमे किसी प्रकार का नुक्स नही रहेगा।

(२) गर्दन की साईड पर कोट का ऊपर को चढ़ना।

(COAT HIGH AT SIDE OF NECK)

यह नुक्स मोटे पेट वाले मनुष्यों के कोटों मे बहुत पड़ता है तथा इस के साथ ही कोट के सामने का कन्धा कम ऊंचा तथा ज्यादा चौड़ा बनाया जाता है अर्थात् कन्धे की ऊंचाई तो ज़रूरत से कम बनाई जाती है तथा चौड़ाई ज़रूरत से ज्यादा जिसका परिणाम यह होता है कि कोट के मोंढे की सिलाई ग्राहक के मोंढे पर पड़ने की बजाये उससे नीचे को खिसक कर बाजू के ऊपर चली जाती है और पीठ पर कालर के नीचे शिकन पड़ते नज़र आते हैं जिससे यह मालूम होता है कि कोट का

कालर बाकी कोट को नीचे की तरफ धकेल रहा है इसके साईड मे शिकन पड़ते नज़र आते हैं जिससे साईड मे खिच भी पड़ती रहती है। जब ग्राहक कोट पहिन कर बैठ जाता है तो कोट का कालर पीठ की तरफ से ऊपर को उठने लगता है जिससे न केवल कमीज का कालर ही छुप जाता है जोकि साधारण अवस्था मे थोड़ा सा कोट के कालर के बाहिर नजर आता रहता हैं बल्कि कोट का कालर ग्राहक की गर्दन पर बालों तक चढ जाता है और कोट के कन्धे मे बहुत से गोल २ शिकन पडने लग जाते हैं।

कारण—इस नुक्स का कारण कोट के कन्धे की ऊंचाई है जोकि ग्राहक के कन्धे की ऊंचाई से बहुत कम बनाई गई है। मोटे पेट वाले ग्राहक की गर्दन प्राय' छोटी होती है और कन्धे ज्यादा ऊचे और लम्बाई मे छोटे होते है परन्तु इस अवस्था मे कोट के कन्धो को ज्यादा नीचा बनाया गया है अर्थात् कोट के कन्धों का बाहिर का सिरा जोकि मोंढे की तरफ़ होता है जरूरत से ज्यादा नीचा बनाया गया है जिससे न केवल कोट के कन्धे की ऊचाई ज़रूरत से कम हो जाती है बल्कि इसकी लम्बाई भी बढ जाती है। इस के साथ ही कोट के गले का निशान भी अपनी असली जगह पर नही है जहा पर कि होना चाहिये बल्कि उससे जरा ज्यादा आगे को है। इस का परिणाम भी यह होता है कि कन्धे की लम्बाई बढ़ जाती है जिससे न केवल कन्धे मे ही शिकन पड़ने लग जाते हैं बल्कि कोट के सामने

मे मोंढे से आगे कपड़ा इकट्ठा हो जाता है और झोल पड़ने लग जाते हैं।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २०० के अनुसार कोट के सामने तथा पीठ पर के कन्धों के दबाव को बाहिर अथवा मोंढे की तरफ से बाहर निकालो अर्थात् सामने और पीठ के
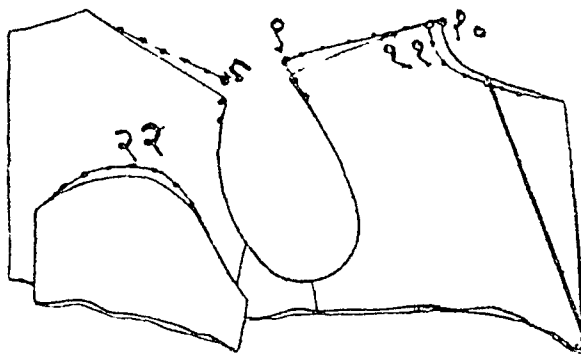
चित्र सं० २००

कन्धों को जरूरत के मुताबिक ऊंचा करो जैसाकि इस चित्र में बिन्दियों वाली लकीरों से निशान ८ और ६ से जाहिर किया गया है और इस के साथ ही कोट के सामने के कन्धे को हाले की तरफ से १० से ११ तक दबा दो जिससे न केवल कन्धा जरूरत के मुताबिक छोटा हो जायगा बल्कि सामने का कन्धा आगे की तरफ खिचा जायगा। इसी तरह इसे बाहिर के सिरे पर से भी निशान ६ पर बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार दबा दो।

ऐसा करने से क्योंकि कोट के सामने और पीठ के कन्धों की ऊंचाई ऊपर से बढाई गई है इस वास्ते जरूरी है कि मोंढे की गोलाई भी ऊपर से बढ गई है इस लिये जरूरी है कि

आस्तीन के गोले के मोंढे की गोलाई भी बढ़ाई जाये ताकि यह तंग न हो जाये जैसाकि इस चित्र मे बिन्दियों वाली गोलाई के अनुसार निशान २२ से जाहिर किया गया है ।

(३) जब कोट के बटन खोल दिये जायें तो कोट का पीछे को भाग जाना ।

HANGING AWAY BEHIND WHEN UNFASTENED

यह नुक्स सब प्रकार के कोटों मे पड़ जाता है चाहे वह ढीले बनाये जाते हों अथवा फिट । ज्यों ही सामने के बटन खोल दिये जाते है और ग्राहक बाज़ू हिलाता है कोट पीछे को खिसकना शुरू कर देता है जिसका परिणाम यह होता है कि पीठ मे बहुत से झोल पड़ने लग जाते है जोकि देखने मे बहुत बुरे मालूम होते है और कोट का साईड ऊपर की तरफ तो पीठ के साथ लगा रहता है और बाकी सारे के सारे कोट मे झोल पडने लग जाते है ।

कारण—जबकि ग्राहक का पेट बाहिर को निकला हुआ हो तो पीठ मे प्रायः थोड़ा सा झोल पडने लगता है । क्योंकि इस मे गर्दन के पास बहुत सा कपड़ा रखा जाता है ताकि यह पेट की गोलाई के ऊपर कोट को लाने मे सहायता दे सके । कभी २ कोट के सामने के कन्धे की ऊंचाई का जरूरत से ज्यादा होना भी इस नुक्स का कारण हो सकता है परन्तु ऐसी अवस्था मे कन्धे की ऊंचाई केवल हाले वाले सिरे से ज्यादा होती है न कि मोंढे

वाले सिरे से।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते ट्राई करते समय सामनों को पिन अथवा सूई से टांकने से पहले अर्थात् बटन बन्द करने से पहले ग्राहक को कहना चाहिये कि वह अपने बाजू इस तरह हिलाये जिस तरह कि वह साधारण अवस्था मे किया करता है। इस के बाद आप देखे कि कोट अपनी असली हालत से पीछे की तरफ़ तो नही खिसक गया जहां पर कि उसे बाजू हिलाने से पहले रखा गया था।

यदि ऐसा करने से कोट पीछे की तरफ़ चला जाये तो कोट के कन्धों की सिलाई को हाले की तरफ़ से खोल कर सामने को धीरे २ कन्धे पर से ऊपर को खिसकाओ और इसे उस समय तक खिसकाते जाओ जब तक कि कोट अपनी असली हालत मे न आजाये जब कोट के तमाम झोल दूर हो जाये अर्थात् सामना अपनी असली हालत मे आजाये तो सामने को पिन अथवा सूई से टांक दो। अब मालूम करो कि कोट के कन्धे को कितना ऊपर उठाने से यह नुक्स दूर हो गया है। जितना कन्धे को ऊपर उठाया गया हो समझना चाहिये कि कोट के कन्धे की ऊंचाई हाले की तरफ़ से उतनी ही ज्यादा ऊंची है जिससे यह नुक्स पड़ जाता है।
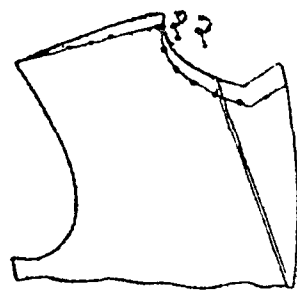
चित्र सं० २०१

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २०१ के अनुसार कोट के सामने के कन्धे को हाले की तरफ़ से निशान १२ पर उतना ही नीचा उतारो जितना कि ट्राई करते समय कोट के सामने के कन्धे को हाले की तरफ़ से ऊपर को उठाया हो। अब चित्रानुसार बिन्दियों वाली लकीर की सहायता से हाले तथा कन्धे की, गोलाईया बनाओ तो नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा और सामना सब प्रकार से ठीक हो जायगा ॥

(४) कमर के बटन पर कोट का तंग होना

(TIGHTNESS AT THE WAIST BUTTON)

इस नुक्स वाले कोट के बटन बन्द करते समय कोट के सामनों को आगे की तरफ खेंचना पडता है और यह स्वयम् ही अपनी असली अवस्था पर आकर नही पड़ते जिससे कि सामने को खेंचे बगैर कोट के बटन बन्द किये जा सके जैसाकि साधारण अवस्था मे होता है। इस का परिणाम यह होता है कि जब सामने को खेंच कर बटन बन्द किये जाते हैं तो सामने के इस भाग मे शिकन पडने लग जाते हैं जिसको देखने से यह मालूम होता है कि यदि कोट के सामने के बटन खोल दिये जाये तो सामना पीछे की तरफ़ भागने की कोशिश करेगा।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि कोट काटते समय इस की कमर का नाप ग्राहक की कमर के अनुसार नहीं रखा गया। इस मे शक नहीं कि कोट के सामने मे पेट बनाने की

कोशिश की गई है परन्तु इस के मुकाबले में पीठ को इतना बड़ा बनाया गया है कि कोट का सामना पीछे की तरफ ही रहता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २०२ के अनुसार साईड बाडी के पीछे की तरफ़ की गोलाई को नीचे से निशान १३ पर दबा दो और सामने के आगे के किनारे को निशान १४ पर उतना ही बढ़ा दो जैसाकि इस चित्र में बिन्दियों वाली लकीरों से जाहिर किया गया है। ऐसा करने से कोट का सामना तो आगे से बड़ा हो जायगा और बटन लगाते समय इसे आगे की तरफ खेंचने की जरूरत न पड़ेगी और इस तरह से कोट की कमर का नाप जितना बढ़ गया है उसे साईड बाडी के पीछे की तरफ की सिलाई को दबा कर पूरा करो। ऐसा करने से न केवल कोट का नुक्स दूर होजायगा बल्कि उसकी कमर के नाप मे भी किसी प्रकार का फ़र्क नही आयगा अर्थात् वह जैसे का तैसा पूरा रहेगा।
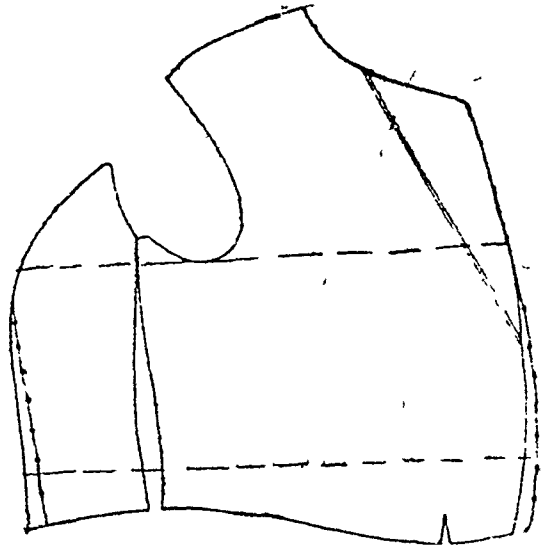
चित्र सं० २०२

यह मालूम करने के लिये कि मोटे पेट वाले आदमी का कोट काटते समय कमर का नाप पीठ और सामने मे किस प्रकार

से बडा अथवा छोटा रखना चाहिये आसान तरीका यह है कि ग्राहक की छाती और हिप के नापों का फर्क मालूम करे जोकि साधारण अवस्था मे एक इंच के बराबर होता है अर्थात् नार्मल शकल वाले आदमी की छाती का नाप हिप के नाप की अपेक्षा १ इंच के बराबर छोटा होता है अथवा हिप का नाप छाती से १ इन्च बड़ा होता है जैसे ४२ इंच छाती और ४३ इंच हिप के नाप वाला आदमी नार्मल शकल वाला आदमी कहलायगा और उसकी कमर का नाप नार्मल शकल की तरह सामने और पीठ मे बाटा जायगा परन्तु जब हिप का नाप छाती के नाप से बड़ा न हो बल्कि इस के बराबर अथवा छोटा हो तो जैसाकि ४२ छाती ४४ कमर और ४१ हिप का नाप हो तो उस अवस्था मे आप असानी से समझ सकते है कि ग्राहक का शरीर पीछे हिप पर से साधारण अवस्था से बहुत पतला है। इस वास्ते ऐसी अवस्था मे कोट काटते समय पीठ को साधारण अवस्था से कम चौड़ा और सामने को ज्यादा चौड़ा बनाना चाहिये अर्थात् कमर के नाप का ज्यादा हिस्सा सामने पर रखना चाहिये और थोडा पीठ पर इस तरह सोच समझ कर कमर के नाप को सामने और पीठ पर बाटने से इस प्रकार का नुक्स कभी नही पड़ता।

और उलट इसके यदि छाती का नाप ४२ इच, कमर ४४ इंच और हिप ४५ इंच हो तो समझना चाहिए कि हिप का नाप नार्मल शकल से बहुत बड़ा है अर्थात् जहा नार्मल शकल मे हिप का नाप छाती से एक इच बड़ा होता है वहा इस अवस्था मे यह तीन इंच

बड़ा है इस वास्ते हिप का नाप छाती से बहुत ज्यादा बड़ा है इस वास्ते ऐसी अवस्था में कमर के नाप की ज्यादती को ज्यादातर पीठ और साईड पर रखना चाहिये और इसका बहुत थोड़ा हिस्सा सामने मे रखना चाहिये। इस प्रकार से सोच समझ कर कोट काटने मे यह नुक्स कभी नही पड़ेगा॥

(५) चैस्टरों की पीठ में मोंढे से नीचे सीधे शिकन पड़ना (HORIZONTAL CREASES AT BACK SCYE IN SAC CHESTERFIELD)

यह नुक्स जैसाकि ऊपर बतलाया गया है उस चैस्टर का नुक्स है जोकि बहुत ढीला बनाया जाता है और इसकी पीठ ग्राहक के शरीर पर ठीक नही बैठती। और विशेषतर पीठ के मोंढे का हिस्सा जहां पर कि शिकन बग़लों से नीचे जाते नजर आते हैं बिल्कुल खराब होता है।

कारण—: इस नुक्स के दो कारण हैं पहला यह कि कोट के सामने का कन्धा जरूरत से ज्यादा बाहिर की तरफ़ चला गया है अथवा गला जरूरत से ज्यादा मोंढे की तरफ़ चला गया है दूसरा कारण यह है कि सामने के मोंढे की गोलाई इस तरह की गई है कि इस हिस्से पर छाती की चौड़ाई जरूरत से ज्यादा रह गई है। अर्थात् मोंढे की गोलाई अपनी असली जगह से पीछे को बनाई गई है ऐसे कोटों मे जोकि चैस्टरों अथवा रैगलन कोटों की तरह ढीले बनाये जाते है जरूरी है कि कोट की पीठ मोंढे की गोलाई से नीचे अथवा साईड पर काफ़ी चौड़ी बनाई जावे ताकि यह पीठ

की चौडाई की ज्यादती जोकि इस के साईड मे की गई है आगे की तरफ़ चली जाए और इस तरह से कोट का सामना आगे को झुक जाए अर्थात् उस का गला अपनी असली हालत मे चला जाए।

इस अवस्था मे क्योंकि कोट के सामने का कन्धा जरूरत से ज्यादा बाहिर अथवा मोंढे की तरफ़ चला गया है अर्थात् सामने का गला जरूरत से ज्यादा पीछे की तरफ़ बनाया गया है जिस से सारा कोट पीठ पर से खिचा जाता है और मोंढे की हड्डियों पर कोट इकट्ठा हो जाता है यदि ऐसे कोटों को जोकि ज्यादा फिट बनाये जाते है जैसाकि बाडी कोट, फ्राक कोट, ड्रैस कोट इत्यादि तो उस अवस्था मे यह बात लाभ दायक मालूम होती है क्योंकि हमारी कोशिश यह होती है कि ऐसे कोट यहा पर इतने फिट बनाये जाये कि बिल्कुल शरीर के साथ लगे रहे और इस के इलावा बाडी कोटो मे यदि कन्धा इस तरह बाहिर की तरफ़ बनाया जाय तो उन की स्कर्ट शरीर से दूर नही उठ खडी होती बल्कि बिल्कुल असली हालत मे खड़ी रहती है। परन्तु ऐसे कोटों मे जोकि चैस्टरों की तरह ढीले बनाये जाते है यदि कन्धा ज्यादा बाहिर को बनाया जाय तो नुक्स पैदा करता है जैसाकि यहा पर जाहिर किया गया है

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र स० २०३ के अनुसार दो तरीकों के काम लिया जा सकता है। पहला यदि कोट यार हो चुका हो तो साईड पर के दबाव को बाहिर निकालो

जैसाकि इस चित्र में डैश वाली लकीर से निशान १ पर ज़ाहिर किया गया है। ऐसा करने से कोट के सामने में जो गर्दन की
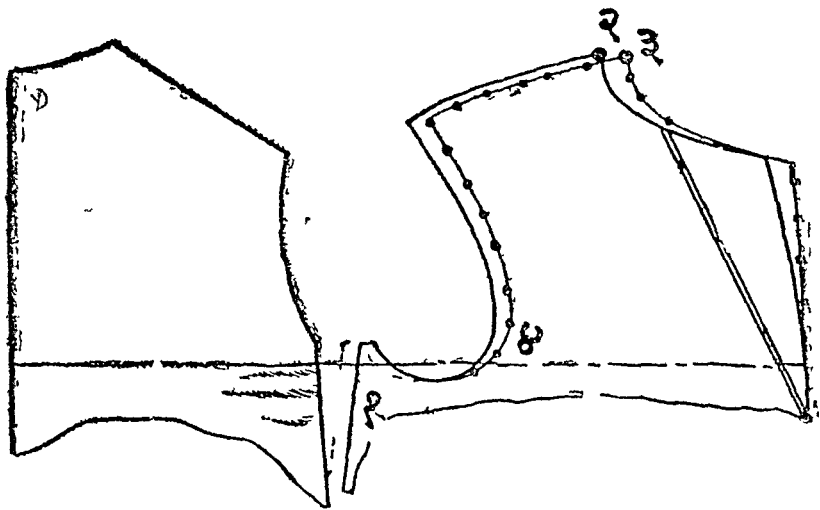
चित्र सं० २०३

तरफ़ से खिच पड़ रही है जिससे कोट की पीठ में मोंढे की गोलाई से नीचे जो शिकन पड़ते नज़र आते हैं वह सब स्वयम् ही ठीक हो जायेंगे। क्योंकि इस तरह से कोट साईड पर से ढीला हो जायगा और इस का सामना आगे की तरफ़ चला जायगा जिससे इसमे न केवल खिच पड़नी दूर हो जायगी बल्कि पीठ पर के शिकन भी दूर हो जायेंगे। परन्तु इससे कन्धे का नुक्स बिल्कुल दूर न होगा। ऐसा केवल उस समय किया जाता है जबकि कोट बिल्कुल तैयार हो चुका हो और कन्धे, कालर और मोंढे इत्यादि खोलने से बहुत कठिनाई होती हो।

इस नक्स को दूर करने का ठीक तरीका यह है कि चित्रा-

नुसार सामने के गले को निशान २ से लेकर ३ तक पौने इंच के बराबर आगे की तरफ़ सुरका दो। अर्थात् २ से ३ तक हाले का दवाव वाहिर निकालो। ऐसा करने से न केवल सामने का कन्धा आगे को चला आयगा बल्कि यह जरूरत से बड़ा भी हो जायगा इस ज्यादती को दूर करने के वास्ते कन्धे को वाहिर के सिरे पर से २ से ३ तक के बराबर छोटा करो और बिन्दियों वाली गोलाई के अनुसार मोढे की गोलाई बनाओ जोकि पहली गोलाई से ज़रा आगे की तरफ़ बनाई जाय जैसाकि निशान ४ पर जाहिर किया गया है। ऐसा करने से जहां कोट का कन्धा और मोंढे की गोलाई जरूरत के मुताविक आगे को चले आयेंगे वहा यह नुक्स भी सब प्रकार से दूर हो जायगा॥

(६) फ्राक कोट की स्कर्ट में झोल पड़ना

(FROCK SKIRT FULL BELOW ABDOMEN)

जैसाकि चित्र स० २०४ को देखने से मालूम होता है इस के घेरे की चौडाई आगे की तरफ़ से जरूरत से ज्यादा है जिससे इस मे शिकन पड़ते नजर आते हैं।

कारण–मोटे पेट वाले ग्राहकों के फ्राक कोटों मे यह नुक्स प्राय पड जाता है। इसका कारण यह होता है कि सकर्ट के घेरे को आगे और पीछे की तरफ से घटाया जाता है ताकि इस प्रकार के झोल इसमे न पड़ने लगे। नार्मल शकल वाले ग्राहकों के फ्राक कोटों मे तो ऐसा करना लाभ दायक हो सताक

है परन्तु मोटे पेट वाले आदमियों के कोटों मे ऐसा नही होता। बल्कि वास्तव मे इस के वास्ते स्कर्ट की ऊपर की सिलाई को जिसे कमर की सिलाई भी कहते है, जरूरत के मुताबिक सीधा कर लेना चाहिये। कमर की सिलाई जरूरत से ज्यादा गहरी बनाई गई है जिससे कोट की पीठ का चाक भी खुलने लगता है और यह झोल भी स्कर्ट मे पड़ता रहता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २०४ के अनुसार स्कर्ट की कमर अथवा ऊपर की सिलाई पर का दबाव बाहिर निकाल कर इसे बीच मे से जरा ऊंचा करो। यह पहले जैसा
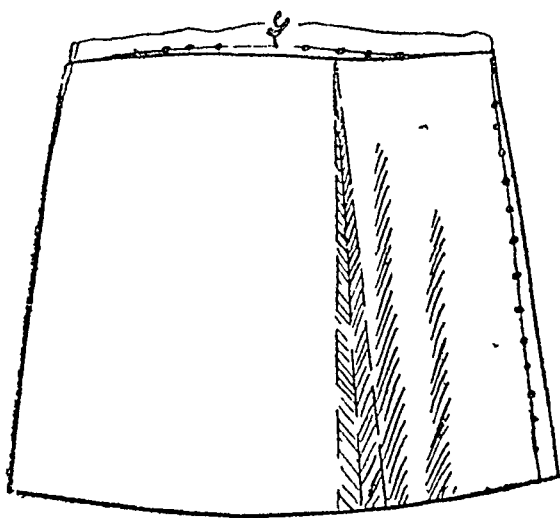
चित्र सं० २०४

कि ऊपर बताया जा चुका है जरूरत से ज्यादा गहरी है इस वास्ते इसे ऊंचा अथवा सीधा बनाओ जैसाकि इस चित्र मे निशान ५ पर बिन्दियों वाली लकीर से जाहिर किया गया है। और इस के साथ ही स्कर्ट के घेरे को आगे के किनारे पर से दबादो।

ऐसा करने से स्कर्ट की कमर की सिलाई इसे बीच मे से नीचे की तरफ धकेलेगी जिससे न केवल स्कर्ट के झोल ही जाते रहेंगे बल्कि कोट की पीठ का चाक,जोकि पहले खुलता रहता था, ठीक हो जायगा ॥

(७) ड्रेस कोट का छाती पर बड़ा होना

(DRESS COAT FULL OVER THE BREAST)

इस नुक्स मे कोट के सामने छाती पर फूलने लगते है जिस से यह मालूम होता है कि कोट का सामना छाती पर बड़ा है। अर्थात् कोट के सामने की छाती की चौड़ाई जरूरत से ज्यादा बनाई गई है।

कारण–इस नुक्स का कारण यह है कि कोट के सामने के आगे के किनारे को लोहे से ज़रूरत से ज्यादा प्रैस करके सामने मे पेट की गोलाई ज़रूरत से ज्यादा बनाई गई है। परन्तु वास्तव मे ग्राहक का पेट इतना बाहिर को निकला हुआ नहीं है जितना कि इसके वास्ते सामने मे प्रबन्ध किया गया है जिसका परिणाम यह होता है कि जब कोट के बटन बन्द किये जाते है तो सामने की गोलाई की ज्यादती पीछे को धकेली जाती है जिससे इसमे झोल पड़ने लगता है। क्योंकि जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, ग्राहक का पेट न तो इतना उभरा हुआ है और न ही उस का शरीर इतना अकड़ा हुआ है जिसका कि कोट का सामना काटते समय प्रबन्ध किया गया है। इस के इलावा कोट

के सामने में से जो डाट निकाले जाते हैं वह भी ज़रूरत से ज्यादा निकाले गये हैं जिससे कोट कमर पर तो तंग हो गया है और छाती पर कमर की अपेक्षा ढीला हो जाने के कारण से फूलने लगता है। जैसाकि इस पाठ के शुरू मे बताया गया है इस में सब कोट ऐसे बताये गये हैं जोकि मोटे पेट वाले आदमियों के है। इस वास्ते उनकी छाती कमर की अपेक्षा अन्दर को धसी हुई होती है। जब कोट छाती पर कमर की अपेक्षा ढीला हो तो जरूरी है कि यह वहां पर फूलने लगे। इस नुक्स का एक कारण यह भी है कि नपेल के भान को ज़रूरत से ज्यादा लोहे से प्रैस किया गया है जिससे छाती पर यह भान सामने को पीछे की तरफ़ धकेलने की कोशिश करता है और यह झोल पड़ने लग जाते है।

इस नुक्स को दूर करने का एक तरीका यह है कि सामने के आगे के किनारे के अन्दर की टेप को निकाल कर नई टेप रक्खी जाय जोकि पहले की तरह खेंच अथवा तान कर न रक्खी जाय और सामने के इस किनारे को ज़रा लोहे से खेच दिया जाय जिस से नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा ॥

(८) पैट्रोल कोट में सामने के ऊपर शिकन पड़ना (PATROL WRINKLING ABOVE THE STOMACH)

पैट्रोल कोट एक प्रकार का मिलट्री कोट है जिसे प्रायः फ़ौजी लोग अर्थात् अफ़सर लोग पहिनते है। यह नुक्स प्रायः ऐसे आदमियों के कोटों मे पाया जाता है जो बहुत मोटे होते हैं। इस नुक्स के कारण से कोट का सामना बटनों से ऊपर को सुरकने लगता

है और प्रायः पेट से ऊपर इस मे झोल पड़ते नजर आते हैं। जब कोट के बटन बन्द कर दिये जाये तो सामने मे ऊपर की तरफ़ झोल ही झोल पडते नजर आते है।

कारण.—दूसरे बहुत से नुक्सों की तरह इस नुक्स के भी कई कारण हो सकते है। इस नुक्स का एक कारण तो यह हो सकता है कि सामना आगे की तरफ से इतना बडा नही काटा गया जोकि पेट के ऊपर पूरा आसके। अर्थात् सामने के आगे को ग्राहक के पेट की गोलाई के मुताबिक गोल नही बनाया गया जिस से बटन लगाने से कोट का सामना आगे को खिचा आता है और न केवल पेट पर कोट मे शिकन तथा खिच पड़ती है बल्कि इस से ऊपर भी कोट के सामने मे झोल पडने लग जाते है। इस का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि सामने के कन्धे की ऊंचाई ज़रूरत से ज्यादा बनाई गई हो। इस अवस्था मे कोट के सामने नीचे की तरफ़ खिसक जाते है और जब बटन लगाने के वास्ते इन को खेच कर पेट पर लाया जाता है तो पेट से ऊपर कोट के सामने के आगे वाले किनारों मे झोल पड़ने लग जाते है। और छाती पर इस मे शिकन भी पड़ते नज़र आते है जिस से यह मालूम होता है कि इस जगह पर सामने मे खिच पड़ रही है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते पहले कोट की कमर के नाप को देखना चाहिये कि क्या यह ग्राहक की कमर के नाप से छोटा तो नही है यदि यह नाप छोटा रक्खा गया हो तो जरूरत के मुताबिक सामने को आगे के किनारे पर बढा कर कमर के

नाप को पूरा करो तो नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा।

परन्तु जब कोट की कमर का नाप पूरा बनाया गया हो तो भी सामने को आगे के किनारे पर से चित्र सं० २०५ के अनुसार निशान ७ पर बढ़ाओ। ऐसा करने से कमर के नाप मे जो ज्यादती हो गई है उसे साईड पर से घटाओ जैसाकि इस चित्र मे निशान ८ पर बिन्दियों वाली लकीर से जाहिर किया गया है।
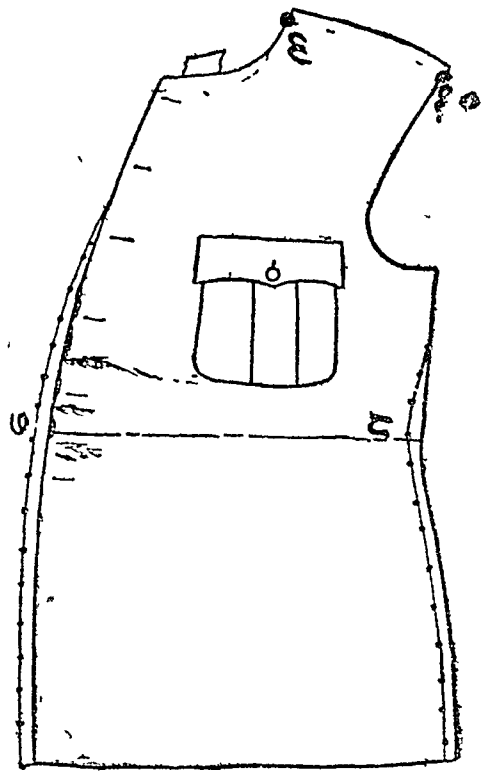
चित्र सं० २०५

जब नुक्स का कारण सामने के कन्धे का जरूरत से ज्याद ऊंचा होना हो तो डैश वाली लकीरों के अनुसार कोट के सामने के कन्धे को ऊपर से दबादो जैसाकि इस चित्र मे ९ से १० तक जाहिर किया गया है। ऐसा करने से नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा॥

(९) मार्निङ्ग कोट की स्कर्ट के आगे के किनारे में झोल पड़ना

(SKIRT EDGE LOOSE AND WAVY IN MORNING COAT)

मोटे पेट वाले आदमियों के मानिङ्ग कोट के सामने जब स्कर्ट के साथ जोड़े जाते है तो स्कर्ट का आगे का किनारा जरूरत से ज्यादा बडा रक्खा जाता है जिस से सामना स्कर्ट को नीचे की तरफ धकेलता है और स्कर्ट का आगे का किनारा न केवल ढीला मालूम होता है बल्कि उस मे झोल भी पडते नजर आते हैं। यदि स्कर्ट और बाडी के बीच मे से कमर की सिलाई पर आगे की तरफ़ से थोडा सा कपड़ा छाट दिया जाय अर्थात् स्कर्ट को ऊपर कमर की सिलाई पर आगे की तरफ़ से यदि छांट दीया जाए और स्कर्ट जब सामने के साथ जोड़ी जायगी तो यह पेट की गोलाई के ऊपर ठीक २ बैठ जायगी और कोट मे किसी प्रकार का नुक्स नही रहेगा ।
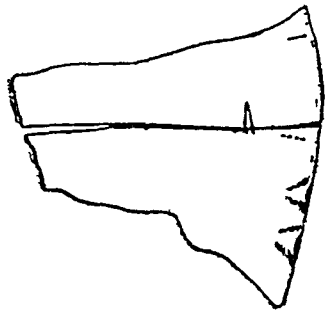
चित्र स० २०६

चित्र सं० २०६ मे बिन्दियों वाली लकीर से स्कर्ट के ऊपर के किनारे को आगे की तरफ़ से आधे इच के बराबर छाटा गया है ॥

नोट— कोटों का अध्याय समाप्त करने से पहले हम एक बहुत जरूरी बात लिखना चाहते हैं वह यह है कि कोट के मोंढे यदि तंग हों तो किस तरह ठीक करने चाहिये। जैसाकि पहले कहीं बताया जा चुका है कोट के कालर और मोंढे ही हैं जोकि ठीक होने पर कोट के बहुत से दूसरे नुक्स छुप जाते हैं। कोट के का-

लरों के नुक्स तो हम ऊपर बतला चुके है, अब हम मोंढों की तंगी का वर्णन करके कोटों के अध्याय को समाप्त करेगे।

यह बात कुछ हद तक ठीक है कि मोंढों की तंगी देखने से मालूम नहीं हो सकती बल्कि केवल, अनुभव ही की जा सकती है जैसाकि पुराने जमाने के दर्जी कहा करते हैं। परन्तु कटाई के इतने नियम जान कर भी यदि हम पुराने दर्जियों की तरह केवल इस बात पर निर्भर रहे कि यदि ग्राहक कहे कि कोट उसे मोंढे पर तंग मालूम होता है तो हम उस नुक्स को दूर करने की कोशिश करे। तो पुराने ज़माने के दर्जियों और हम में क्या भेद हुआ। हमे तो चाहिये कि हम कोट के सामने और पीठ के मोंढों की गोलाईयों को ही देख कर यह अन्दाजा लगा सके कि कोट के मोंढे तंग है, अथवा ठीक। जब कोट का मोंढा तंग होगा तो उस में खिच पड़ती नजर आयगी। अच्छा और निपुण कारीगर इन्हीं शिकनों को देख कर अन्दाज़ा लगा सकता है कि कोट के मोंढे की तंगी का क्या कारण है। क्योंकि जिस तरफ़ यह शिकन पड़ते नज़र आयेगे उसी तरफ़ ही कोट की तंगी मोंढे की तंगी का कारण होगी।

जब कोट के मोंढे तंग हों तो उसके कई कारण होते हैं। या तो मोंढे की गोलाई जरूरत से तंग बनाई जाती है या आस्तीन को मोंढे के साथ जोड़ते समय उसे ठीक तरह से नहीं जोड़ा जाता बल्कि असली जगह से आस्तीने फेर कर लगाई जाती हैं। अर्थात् मोंढे का थोड़ा अथवा बहुत तंग होना इस बात पर निर्भर है कि

सामने का कन्धा अथवा गला जरूरत से ज्यादा आगे अथवा पीछे की तरफ़ बनाया गया हो ।

अब हम कुछ उदाहरण देकर यह बताने की कोशिश करेंगे कि कोट के मोंढों की तंगी किस २ प्रकार से पड़ती है और प्रत्येक का कारण किस तरह मालूम किया जाता है तथा उस तंगी को किस तरह दूर किया जाता है ॥

(१०) सामने के मोंढे का कम चौड़ा होना ।

(INSUFFICIENT FRONT SCYE DISTANCE)

इस अवस्था मे कोट की पीठ के बीच से लेकर सामने के मोंढे तक का नाप ग्राहक के शरीर के मुताबिक नही है बल्कि उससे छोटा है जिसका परिणाम यह होता है कि ग्राहक के मोंढे पर पीछे की तरफ़ खिच पड़ती रहती है और मोंढा तंग मालूम होता है। जब बाजू आगे को किया जाता है तो यह तंगी और खिच पहले से भी बढ़ जाती है। सामने के मोंढे से लेकर साईड की तरफ तिरछे शिकन पडते नजर आते है जैसाकि चित्र सं० २०७ से जाहर किया गया है ।

इस नुक्स को दूर करने से पहले देखना यह चाहिये कि सामने का कन्धा जरूरत से ज्यादा बाहिर की तरफ तो नही बनाया गया। यदि ऐसा किया गया हो तो हाले पर का दबाव बाहिर निकाल कर कन्धे को आगे की तरफ से बड़ा करो जैसा कि चित्र स० २०७ मे निशान ४ पर बिन्दियों वाली लकीर से जाहिर किया गया है। अब कन्धे को मोंढे की तरफ से उतना

छोटा करो जितना कि इसे आगे की तरफ़ से निशान ४ पर बड़ा किया हो और बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार मोंढे की
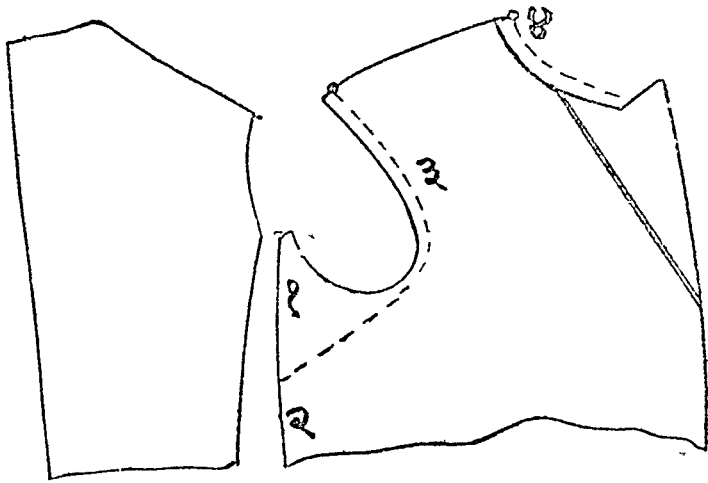
चित्र सं० २०७

गोलाई बनाओ। ऐसा करने से न केवल कन्धा आगे की तरफ़ चला आयगा बल्कि मोंढे की गोलाई भी ज़रूरत के मुताबिक़ बड़ी हो जायगी। परन्तु जब कोट के सामने का कन्धा ज़रूरत से ज्यादा आगे को न बनाया गया हो बल्कि बिल्कुल ठीक हो तो उस अवस्था मे ऐसा करने की ज़रूरत नही होनी बल्कि सामने के साईड पर के दबाव को बाहिर निकालो जैसाकि इस चित्र में निशान १ से २ तक करके दिखाया गया है। जब मोंढे की गोलाई काफ़ी चौड़ी बनाई गई हो तो ऐसा करने की ज़रूरत नही होती बल्कि उस अवस्था मे पीठ की चौड़ाई

को ज्यादा करने की जरूरत होती है जैसाकि इस चित्र मे बिन्दियों से जाहिर किया गया है ।

(११) सामने के कन्धे का छोटा होना
(FRONT SHOULDER TOO SHORT)

इस नुक्स मे कोट के सामने की गर्दन से लेकर मोंढे तक का नाप ज़रूरत से छोटा है जैसाकि चित्र सं० २०८ मे ७ से ८ तक जाहिर किया गया है। इस का परिणाम यह होता है कि कोट के मोंढे मे गर्दन की तरफ से तिरछी शकल मे खिच पडती रहती है जैसाकि चित्र मे जाहिर किया गया है ।

इस अवस्था मे मोंढे पर आगे की तरफ़ इतनी तंगी नही मालूम होती जितनी कि नीचे की तरफ़, अर्थात् मोंढा नीचे अथवा बगल पर से तंग है। कोट का सारा सामना ऊपर को
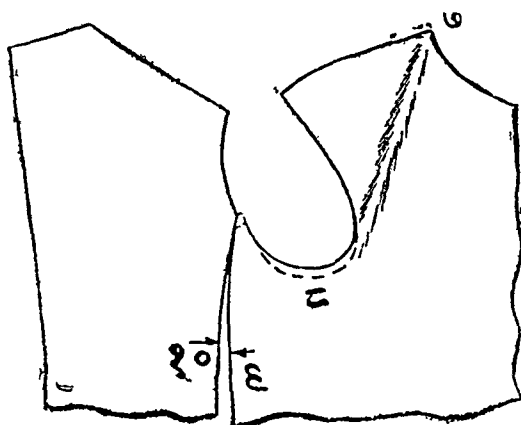
चित्र सं० २०८

खिचा जाता नज़र आता है जिस से कन्धे मे बहुत से तिरछे शिकन पड़ते नज़र आते है।

यदि सामने के कन्धे के ऊपर दबाव रखा हुआ हो तो उसे चित्रानुसार निशान ७ पर बाहिर निकालो जैसाकि यहां पर बिन्दियों वाली लकीर से जाहिर किया गया है। परन्तु जब सामने के कन्धों पर दबाव न रखा गया हो तो सामने के मोंढे की गोलाई को ज्यादा गहरा करो ताकि मोंढे को ज़रूरत के मुताबिक़ नीचे से बड़ा किया जासके। यह चित्र सं० २०८ मे निशान ८ पर जाहिर किया गया है ऐसा करने से कोट के सामने का साईड ऊपर से छोटा हो जायगा। इस वास्ते ज़रूरी है कि सामने को पहले से ज़रा ऊपर को सुरका दिया जाय और पीठ को नीचे कर दिया जाय जैसाकि इस चित्र में निशान ९ और १० से जाहिर किया गया है।

(१२) कालर का छोटा बनाया जाना

(COLLAR TOO SHORT ON)

इस नुक्स मे शिकन बिल्कुल वैसे ही नज़र आते हैं जैसे कि ऊपर वाले नुक्स मे पड़ते थे। यह नुक्स बहुत कम पड़ता है और यह कारीगर की ग़लती से ही पड़ता है क्योंकि वह छोटा कालर चढ़ा देता है। कालर सामने को ऊपर की तरफ़ खेंचता है जिस से न केवल मोंढ़े पर तंगी पड़ती है बल्कि सामने के कन्धे मे भी शिकन पड़ने लग जाते हैं। ऐसी अवस्था मे कोट के कालर को उधेड़ कर अलग कर लेना चाहिये तो न केवल

शिकन दूर हो जायेंगे बल्कि सामने की तंगी भी जाती रहेगी। अब कोट के हाले के मुताबिक कालर काट कर लगाओ तो नुक्स दूर हो जायगा ॥

(१३) कन्धे का ज़रूरत से ज्यादा नीचा बनाया जाना

(SHOULDER TOO SLOPED)

इस अवस्था मे सारी तंगी सामने के ऊपर तथा कन्धों और मोंढे की हड्डियों पर पड़ती रहती है। कालर या तो ग्राहक की गर्दन से दूर उठ खड़ा होता है अथवा कालर से नीचे इस मे शिकन पड़ने लग जाते है।
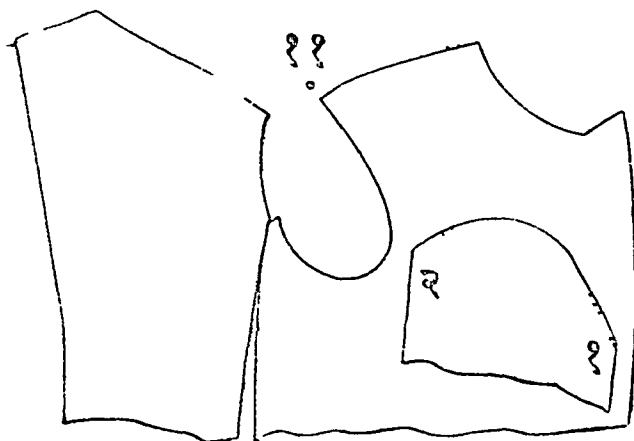
चित्र सं० २०६

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २०६ के अनुसार कोट के सामने के कन्धे पर के दबाव को मोंढे की तरफ़ से निशान ११ पर बाहिर निकालो और निशान ११ को बिन्दियों वाली

लकीर के अनुसार कन्धे के गले वाले सिरे के साथ मिला दो। ऐसा करने से मोंढे की गोलाई ऊपर से बढ़ जायगी और आस्तीन के मोंढे से ऊपर जो नम दी जाती है उसे वाहिर निकाल कर तथा उससे काम लेकर इसे भी कोट के मोंढे के बराबर बनाओ। आस्तीन के गोले के मोंढे की गोलाई की ऊंचाई को बढ़ाने के वास्ते जोकि इस अवस्था मे ज़रूरी होती है इसे गिद्री की तरफ़ से निशान १ पर और पास की तरफ़ से निशान २ पर नीचा करो तो गोलाई स्वयम् ही ऊंची हो जायगी और नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा॥

(१४) कन्धे का ज़रूरत से ज्यादा बाहिर की तरफ़ चला जाना

(SHOULDER TOO CROOKED)
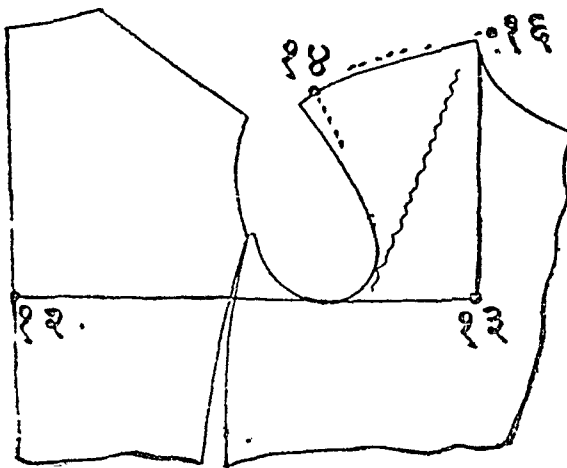
चित्र सं० २१०

यह नुक्स चित्र सं० २१० से जाहिर किया गया है। इस मे निशान १३ से ऊपर को जाती हुई लाईन गले अथवा हाले की लकीर कहलाती है तथा इस नुक्स का कारण यह है कि पीठ के बीच की सिलाई पर के निशान १२ से लेकर हाले की लकीर तक का नाप ज़रूरत से छोटा है जिससे सामने का हाला कोट के मोंढे पर खिच डालता रहता है। जैसाकि इस चित्र मे टेडी लकीर से ज़ाहिर किया गया है। यदि ऐसा न हो अर्थात् यदि कोट की पीठ के बीच की सिलाई से लेकर हाले की लकीर तक का नाप जरूरत से छोटा न हो बल्कि पूरा हो तो समझना चाहिये कि मोढे मे तगी उस समय मालूम होगी जबकि शरीर आगे को झुकाया जायगा तथा बाजू साईडो की तरफ ही लटकते रहे अर्थात् जब ग्राहक कोट पहिन कर साधारण अवस्था मे जरा आगे को झुकेगा और अपने बाजू अपनी असली हालत मे रखेगा तो कोट मे पीठ पर मोंढे के पास खिच पड़ेगी और जब कोट कुछ दिनों तक पहिना जायगा तो इस के कन्धो पर तिरछे शिकन पडने लग जायेगे।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते सामने के हाले पर का दबाव बाहिर निकाल कर निशान १६ पर कन्धे को बड़ा करो और मोढे की तरफ़ से कन्धे को निशान १४ पर दबा दो। तथा चित्रनुसार हाले, कन्धे और मोढे की गोलाईया बनाओ जैसाकि बिन्दियो से बना कर दिखाया गया है।

कई लोग इस नुक्स को दूर करने के वास्ते कोट के सामने को साईड पर ढीला कर देते हैं। परन्तु ऐसा करने से यह नुक्स

बहुत कम दूर होता है क्योंकि इस अवस्था मे मोंढे की गोलाई आस्तीन की चौड़ाई से बहुत बढ़ जाती है और नुक्स घटने की बजाय उलटा बढ जाता है ॥

(१५) ताल के मोंढे का ज्यादा गहरा बनाया जाना

(UNDER SLEEVE TOO HOLLOW)

इस अवस्था मे आस्तीन के ताल का मोंढा गिद्री की तरफ से ज़रूरत से ज्यादा गहरा बनाया गया है जिस का परिणाम यह होता है कि जब ग्राहक बाजू नीचे अथवा साईडों की तरफ़ लटकाये रखे तो कोट मे किसी प्रकार का नुक्स नही पड़ता परन्तु जब बाजू जरा आगे या ऊपर को उठाये जाये तो कोट का मोंढा ग्राहक की बग़लों के साथ चिमट जाता है और तंगी पैदा करता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते ताल के मोंढे को गिद्री तथा पास की तरफ़ से थोड़ा सा छांट दो। ऐसा करने से क्योंकि इस के मोंढे की गोलाई के किनारे ऊपर से दोनों तरफ़ छोटे हो जायेंगे इस वास्ते गोलाई की गहराई स्वयम् ही कम हो जायगी। इस अवस्था मे ताल की लम्बाई, जो छोटी हो गई है, मोहरी के अन्दर का दबाव बाहिर निकाल कर उस कमी को पूरा करो॥

तीसरा अध्याय

वास्कटों के नुक्स

(ALTERATIONS IN THE VESTS)

(१) कन्धे में खिच डालते हुए शिकन

(DRAGING CREASES IN THE SHOULDER)

वास्कट के सारे नुक्सों मे से यही एक ऐसा नुक्स है जो वास्कट मे बहुत ज्याद्दा पड़ता है और जिस से न केवल ग्राहक को ही बहुत सी तकलीफ़ होती है बल्कि कटर लोग भी प्रायः इस से बहुत तंग आजाते हैं।

यह नुक्स चित्र सं० २११ से जाहिर किया गया है। इस में शिकन वास्कट की पीठ पर गले से लेकर, जिसे टीक भी कहते है, कन्धे पर से होते हुए सामने मोंढे की तरफ़ पडते नजर आते हैं। इस नुक्स के साथ ही वास्कट का कन्धा ऊपर से फूलने लगता है तथा वास्कट कन्धे पर से ऊची उठ खड़ी होती है जिससे देखने वाले को यह मालूम होता है कि वास्कट यहा पर ढीली है। परन्तु वास्तव मे ऐसा नही होता बल्कि वास्कट
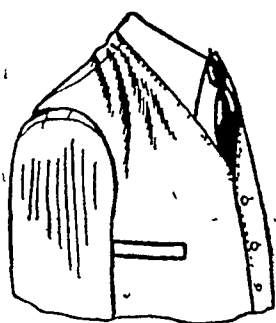
चित्र स० २११

सामने मोंढे पर इतनी तंग है कि यहा पर शरीर को दबाती रहती है।

कारण—दूसरे नुक्सों की तरह इस नुक्स के भी कई कारण हो सकते हैं जिनको नीचे बताया जाता है :—

(क) इसका पहला कारण तो यह हो सकता है कि वास्कट के सामने के कन्धे की ऊंचाई ज़रूरत से छोटी बनाई गई हो अर्थात् कन्धे के हाले वाले सिरे से लेकर मोंढे तक का नाप ज़रूरत से छोटा बनाया गया हो जिससे इन दोंनों स्थानों के दरमियान खिच पड़ती रहती है तथा शिकन पड़ते नज़र आते हैं और मोंढे पर सामने मे वास्कट तंग मालूम होती है।

(ख) इस नुक्स का दूसरा कारण यह हो सकता है कि वास्कट की पीठ के गले की चौड़ाई जिसे टीक भी कहते हैं ज़रूरत से छोटी बनाई गई हो जिसका परिणाम यह होता है कि वास्कट की टीक की चौड़ाई कमीज़ के कालर से छोटी होने के कारण से इस पर ठीक नही बैठ सकती जिससे सामना साईडों पर से बाहिर की तरफ़ धकेला जाता है जोकि दोंनों तरफ़ चला जाता है जैसाकि चित्र सं० २१३ से जाहिर किया गया है। इस मे निशान १ तो वास्कट के गले को जाहिर करता है और २ कमीज के कालर को। इस चित्र को देखने से मालूम होता है कि वास्कट का
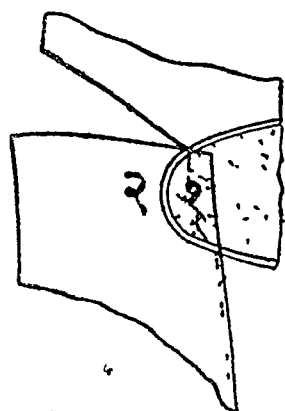
चित्र सं० २१३

गला कमीज के कालर से बहुत छोटा है जिससे यह कमीज़ के कालर के ऊपर ठीक नही बैठता तथा कमीज का कालर वास्कट को गले पर से अपनी तरफ खेचता रहता है और इस प्रकार के शिकन पड़ने लग जाते है ।

(ग) इस नुक्स का तीसरा कारण यह हो सकता है कि सामने का कन्धा जरूरत से ज्यादा मोंढे की तरफ़ बनाया गया हो अथवा यह आगे की तरफ से जरा छोटा बनाया गया हो जिस से कन्धा सामने को गले की तरफ़ खेचने की कोशिश करता है, और इस प्रकार के शिकन तथा खिच पड़ने लगती है।

(घ) वास्कट के गले की गोलाई का ठीक न बनाया जाना जिस का वही परिणाम होता है जोकि वास्कट की टीक के छोटा बनाये जाने से जैसाकि कारण सं० ख. मे बताया जा चुका है।

(ङ) इस नुक्स का एक कारण यह भी हो सकता है कि वास्कट के सामने के कन्धे को जरूरत के मुताबिक अच्छी तरह से प्रैस करके न फलकाया गया हो जिस से यह बिल्कुल सीधा रह जाता है और ग्राहक के कन्धे पर ठीक नही बैठता क्योंकि कन्धे की हड्डी सामने मे गोल और बाहिर को उभरी हुई होती है । इस से ग्राहक का कन्धा वास्कट के सामने को ऊपर की तरफ खेचता है जिससे न केवल इस प्रकार के शिकन पड़ते है बल्कि कन्धे पर भी दबाव अथवा बोझ पड़ता रहता है।

क्योंकि इस नुक्स के कई कारण हैं इस वास्ते इसे दूर

करने के वास्ते भी हमे उन्हीं कारणों के अनुसार बहुत से तरीके वरतने पड़ेंगे जोकि नीचे लिखे जाते हैं :—

सब से पहले चित्र सं० २१२ के अनुसार नुक्स को दूर
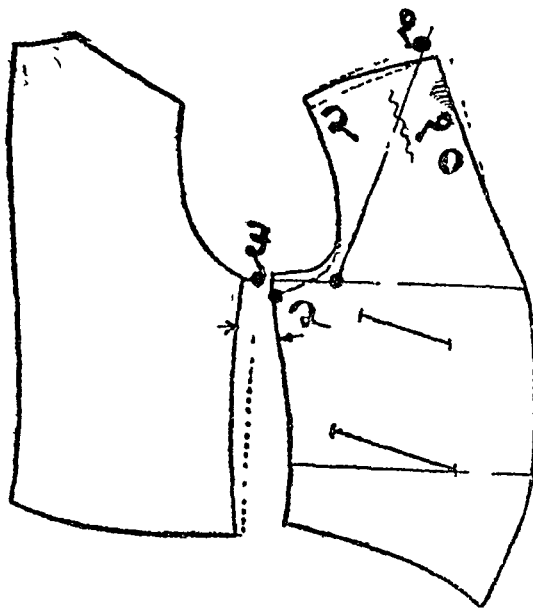
चित्र सं० २१२

करना बताया जाता है। जैसाकि ऊपर बताया गया है कि यह नुक्स वास्कट के सामने के कन्धे के ज़रूरत से कम ऊंचा होने से पड़ता है इस वास्ते इसे दूर करने के वास्ते चित्रानुसार निशान १ पर वास्कट के सामने के कन्धे पर का दबाव हाले की तरफ़ से बाहिर निकालो तो कन्धा ज़रूरत के मुताबिक ऊंचा हो जायगा और यह नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा।

परन्तु जब वास्कट के सामने के कन्धे के ऊपर किसी प्रकार का दबाव न रखा गया हो अथवा वास्कट तैयार हो

चुकी हो तो उस समय ऐसा करने से बहुत कठिनाई होती है अर्थात् जब कन्धे के ऊपर किसी प्रकार का दबाव ही न हो तो इसे ऊपर लिखी रीति से ऊंचा बिल्कुल नही किया जा सकता तथा जब वास्कट बिल्कुल तैयार हो चुकी हो तो उस अवस्था मे चाहे कन्धे के ऊपर दबाव रखा हुआ ही क्यों न हो इस प्रकार से नुक्स दूर करने मे बहुत कठिनाई होती हैं इस वास्ते ऐसी अवस्था मे सरल तरीका यह है कि वास्कट के सामने के कन्धे को पीछे अथवा मोंढे की तरफ़ से थोड़ा सा दबा दो जैसाकि इस चित्र मे निशान २ पर जाहिर किया गया है। अब सामने के मोंढे को भी नीचे की तरफ़ से उतना गहरा करदो जितना कि इस के कन्धों को मोंढे की तरफ से नीचा किया हो। अथवा कन्धे को मोंढे की तरफ से निशान २ पर दबाने से मोंढे की गहराई मे जो कमी हो गई है उसे नीचे की तरफ से छॉंट कर पूरा करो। ऐसा करने से न केवल कन्धे की ऊचाई बाहिर की तरफ़ से जो पहले नीची कर दी गई है अब पूरी हो जायगी बल्कि यह आगे अथवा गले की तरफ़ से भी जरूरत के मुताबिक ज्यादा ऊंची हो जायगी जिससे यह नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा ॥

नोट—यदि आप निशान १ पर कन्धे पर के दबाव को बाहिर निकाल कर कन्धे को ऊंचा करेगे तो उसे गले अथवा हाले पर का दबाव बाहिर निकाल कर आगे की तरफ़ भी वढाना होगा जिससे कन्धे की लम्बाई पूरी हो सके। इस के साथ ही ऐसी अवस्था मे वास्कट की पीठ को साईड पर का दबाव बाहिर

निकाल कर ढीला करने की भी ज़रूरत होती है जैसाकि इस चित्र में निशान ३ पर जाहिर किया गया है ।

उस अवस्था मे जबकि यह नुक्स टीक के छोटा होने के कारण
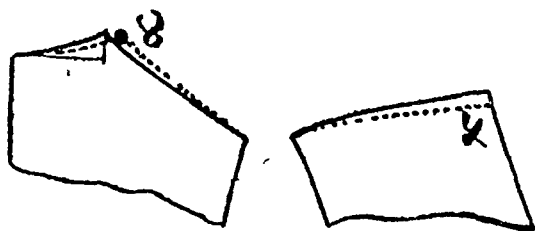
चित्र सं० २१४

से हो उसे चित्र सं० २१४ के अनुसार दूर करना चाहिये अर्थात् निशान ४ पर टीक को ज़रूरत के मुताबिक़ बड़ा करो। ऐसा करने से पीठ के कन्धे की लम्बाई घट जायगी अर्थात् सामने का कन्धा पीठ के कन्धे से बहुत बड़ा हो जायगा। इस वास्ते इसे चित्रानुसार निशान ५ पर छोटा करो जिससे यह भी पीठ के कन्धे के बराबर हो जाय।

इस के इलावा कभी २ ऐसा भी होता है कि कटर लोग टीक को थोड़ा सा छांट लेते हैं अर्थात् वह पीठ पर टीक को पहले से नीचा कर देते हैं और पीठ को ऊपर की तरफ़ सुरका देते है जिस से नीचे की हुई टीक वास्कट के सामने के गले के साथ आ मिलती है और इस तरह टीक की चौडाई भी बढ़ जाती है। ऐसा करने से नुक्स कुछ तो दूर हो जाता है परन्तु ऐसी अवस्था मे जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है पीठ के गले अथवा टीक की ऊंचाई पहले से कम हो जाती है जोकि वास्तव मे

नही होनी चाहिये क्योंकि ऐसा करने से वास्कट की पीठ ऊपर को सुरकाई जाती है इस वास्ते इस का साईड सामने के बराबर नही रहना बल्कि उससे छोटा हो जाता है इस वास्ते ऐसी अवस्था मे या तो पीठ के घेरे पर के दबाव को बाहिर निकाल कर इसे पूरा किया जाता है या जब घेरे पर पीठ मे दबाव न रखा गया हो तो सामने को भी घेरे पर पीठ के बराबर छोटा करने की जरूरत होती है जिस से सारी वास्कट छोटी हो जाती है।

चित्र सं० २१५ मे जो टीक दिखाई गई है वह ठीक नहीं बनाई गई क्योंकि ६ से ७ तक इसका अन्दर का किनारा इसके बाहिर के किनारे ८ से ६ तक की अपेक्षा छोटा है यही इस अवस्था मे नुक्स का कारण है जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है। यदि वास्कट मे किसी प्रकार का कालर लगाना हो तो यह दोंनों किनारे लग-भग एक दूसरे के बराबर होने चाहिये। क्योंकि कमीज़ के कालर की जड़ से पौना इंच ऊंची यदि गोलाई बनाई जाय तो यह गोलाई बहुत छोटी बनती है और कमीज के कालर की जड की गोलाई के बराबर नही होती।
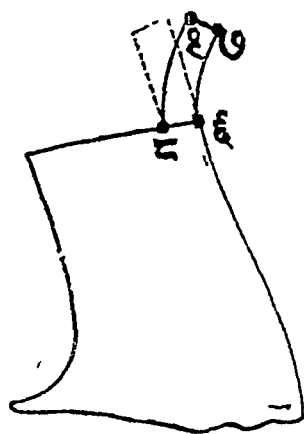
चित्र सं० २१५

अब इस चित्र मे बिन्दियों वाली लकीरों की सहायता से दिखाया गया है कि टीक की गोलाई किस प्रकार से होनी चाहिये जिससे यह नुक्स दूर हो जाय।

यदि यह नुक्स वास्कट के कन्धे तथा हाले को ज़रूरत के मुताबिक लोहे से न खेंचने से पड़ा हो तो चित्र सं० २१२ के अनुसार वास्कट के सामने के हाले को निशान १० पर खेच कर फलकाओ और कन्धे से नीचे बीच मे सामने को पानी लगा कर लोहे से नम मारो जिससे यह बिल्कुल ग्राहक के शरीर के कन्धों के मुताबिक़ हो जायगा और नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा। इस चित्र मे गोल तथा टेडी लकीर से जाहिर किया गया है कि वास्कट के सामने से किस जगह पर नम मारनी चाहिये ॥

(२) वास्कट के सामने में आगे की तरफ़ क़मर पर खिच पड़ना।

(VEST RUCKING UP ACROSS THE FRONT WAIST)

यह नुक़्स चित्र सं० २१६ से ज़ाहिर किया गया है जब इस प्रकार की वास्कट कुच्छ दिन पहिन ली जाय तो इसके सामने ऊपर को चढ़ने लग जाते हैं और इसमे छोटे २ सीधे शिकन पड़ने लग जाते है जब ग्राहक वास्कट पहिन
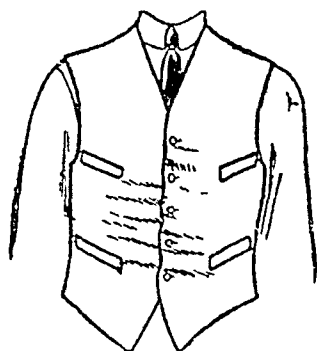
चित्र सं० २१६

कर बैठ जाता है तो वास्कट की टीक गर्दन से इतनी दूर उठ खड़ी होती है कि यहा पर बहुत सी जगह खाली नज़र आने लगती है। और वास्कट कमीज के कालर के ऊपर बहुत ऊची चढ़ जाती है।

कारण—इस नुक्स के दो कारण हो सकते हैं पहला तो यह कि वास्कट कमर पर तंग है जिससे सामने मे खिच पड़ती रहती है और वास्कट ऊपर को चड़ती जाती है। अथवा इस का दूसरा कारण यह हो सकता है कि वास्कट के सामने का कन्धा ज़रूरत से ज्यादा ऊचा और लम्बा बनाया गया हो अर्थात् सामने के कन्धे की ऊचाई जरूरत से ज्यादा हो और यह जरूरत से ज्यादा मोंढे की तरफ़ बनाया गया हो, यदि ग्राहक वास्कट पहिन कर बैठ जाय और उस अवस्था मे पीठ बहुत ज्यादा ऊपर को चढने लगे और गर्दन से दूर उठ खड़ी हो तो समझना चाहिये कि इस नुक्स का कारण निश्चित तौर पर यह है कि सामने का कन्धा जरूरत से ज्यादा ऊंचा अथवा बड़ा है।
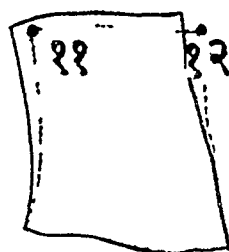
चित्र सं०२१७

क्योंकि इस नुक्स का कारण सामने के कन्धे का ज्यादा ऊंचा होना है जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने के वास्ते सामने के कन्धे को ज़रूरत के मुताबिक नीचा करो जैसाकि चित्र सं० २१७ मे निशान ११ से १२ तक करके दिखाया गया है। क्योंकि वास्कट के कन्धे का

ज़रूरत से ज्यादा बाहिर की तरफ़ बनाया जाना ही इस नुक्स को बढ़ाता है इस वास्ते बिन्दियों वाली लकीरों की सहायता से चित्रानुसार सामने के कन्धे को आगे अथवा हाले की तरफ़ बढ़ा दो और मोंढे की तरफ़ से छांट दो तो नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा ॥

(३) सामने का कमर पर ज्यादा चौड़ा होना

(TOO LARGE AT FRONT WAIST)

यह नुक्स चित्र सं० २१८ से जाहिर किया गया है इसमें वास्कट का सामना कमर पर ढीला तथा बडा है जिससे न केवल इसमे लम्बे २ शिकन पड़ते नज़र आते हैं बल्कि वास्कट का घेरा भी शरीर से दूर उठ खड़ा होता है।

चित्र सं० २१८

कारण—हो सकता है कि कमर का नाप वास्कट मे ठीक बनाया गया हो अथवा वास्कट कमर पर ढीली न हो। ऐसी अवस्था में नुक्स का कारण यह हो सकता है कि सामने के कन्धे की ऊंचाई ज़रूरत से छोटी हो जिससे कन्धा वास्कट के सामने को ऊपर की तरफ़ खेंचता है और न केवल कमर पर सामने मे खड़े अथवा लम्बे शिकन नजर आते है बल्कि सामना ऊपर को खिचा जाने के कारण से वास्कट का घेरा भी ऊपर को उठ खड़ा होता है और शरीर
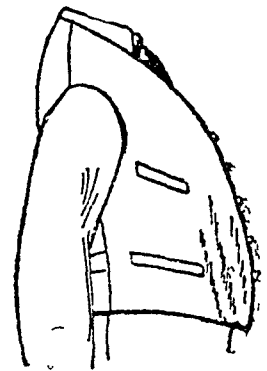
के साथ विल्कुल नही बैठता । इस नुक्स का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि वास्कट का सामना कमर पर ज़रूरत से ज्यादा चौड़ा बनाया गया हो जोकि नाप लेते समय कमर का नाप गलत लिया जाने से हो गया हो।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २१६ के अनुसार सामने के कन्धे को १३ से १४ तक ऊंचा करो। कन्धे की ऊंचाई को वढ़ाते समय इस बात का भी ध्यान रखों कि कन्धा पहले से जरा बाहिर को चला जाय अर्थात् कन्धे को हाले की तरफ़ से थोडा सा दबा दिया जाय और मोंढे की तरफ़ से उसे उतना ही बढा दिया जाय जिससे कन्धे की लम्बाई तो पहले की तरह पूरी हो जायगी और कन्धा पहले से पीछे अथवा मोंढे की तरफ सुरकाया जायगा जिस का परिणाम यह होगा
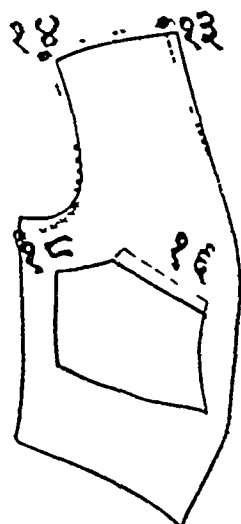
चित्र सं० २१६

कि वास्कट का सामना ऊपर छाती पर से तो ऊपर को खिंचा आयगा और कमर पर से पीछे को खेंचा जायगा जिस से नुक्स दूर हो जायगा। ऐसी अवस्था मे सामने को भी नीचे से छॉट कर ज्यादा गहरा करने की जरूरत होती है जैसाकि इस चित्र मे निशान १८ पर विन्दियों वाली लकीर से करके

दिखाया गया है । यदि वास्कट की पीठ के कन्धे को ऊपर से बढ़ा दिया जाय जैसाकि इस चित्र मे निशान १६ पर ज़ाहिर किया गया है तो इस का परिणाम यह होगा कि वास्कट का सामना नीचे को ढिलक आयगा । दूसरे शब्दों में इस प्रकार से भी वास्कट के कन्धे की ऊंचाई बढ़ सकती है और यह नुक्स दूर किया जा सकता है ॥

(४) वास्कट का कन्धा मोंढे की तरफ़ से ऊपर को उठे रहना

(LOOSE ON SHOULDER END)

इस अवस्था मे वास्कट का कन्धा बाहिर, अथवा मोंढे की तरफ़ से शरीर से ऊपर को उठा रहता है जैसाकि ऊपर चित्र सं० २११ में दिखाया गया है। उस नुकस मे और इस अवस्था मे भेद यह है कि चित्र सं० २११ मे जहाँ वास्कट का सारा दबाव कन्धों पर पड़ता था और सामने मे कन्धों से लेकर मोंढों की तरफ़ जाते हुऐ तिरछे शिकन पड़ते थे वहाँ इस अवस्था में शरीर पर कहीं भी दबाव नहीं पड़ता और न ही सामने में किसी प्रकार के शिकन पड़ते नज़र आते हैं बल्कि केवल वास्कट के कन्धे बाहिर की तरफ़ से अथवा मोंढों की तरफ़ से शरीर पर से ऊपर को उठे रहते हैं जिस से केवल यह समझा जा सकता है कि वास्कट यहाँ पर ज़रूरत से ज्यादा बड़ी बनाई गई है। इस में वास्कट का गला भी सामने और पीठ पर से ग्राहक की

गर्दन पर बिल्कुल ठीक बैठता है।

कारण—जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि वास्कट के कन्धे बाहिर के सिरों
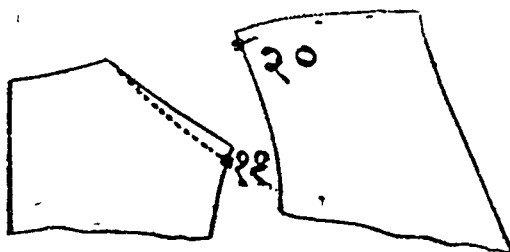
चित्र सं० २२०

पर से अथवा मोंढे की तरफ़ से ज़रूरत से ज्यादा ऊंचे बनाये गये हैं। इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २२० के अनुसार वास्कट के सामने और पीठ के कन्धों को उन के बाहिर के सिरो पर जरूरत के मुताबिक नीचा करो जैसाकि इस चत्र मे निशान २० और १९ से जाहिर किया गया है। अब बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार सामने और पीठ के कन्धे बनाओ तो नुक्स बिल्कुल ठीक हो जायगा ॥

(५) वास्कट के सामने के हाले का फूलना

(GAPPING OPEN AT THE NECK)

यह नुक्स चित्र स० २२१ से जाहिर किया गया है। इस मे सामने का हाला ऊपर कमीज के कालर के साईड से लेकर नीचे की तरफ़ उस स्थान तक, जहाँ से कि ऊपर का अथवा वास्कट का पहला बटन शुरू होता है, यह फूलने लगता

है अर्थात् हाला यहाँ पर इतना ढीला नज़र आता है कि इस में झोल पड़ने लग जाते हैं। जब ग्राहक इस प्रकार की वास्कट पहिन कर बैठ जाता है तो वास्कट का हाला ऊपर को उठ खड़ा होता है जिस से वास्कट के अन्दर से कमीज़ का बहुत सा हिस्सा नज़र आने लगता है।

सामने के आगे के किनारे ऊपर की तरफ़ खिसकने की कोशिश करते हैं जिससे कमर पर बटनों के बीच में सीधे शिकन पड़ते नज़र आते हैं जबकि वास्कट कुच्छ दिनों तक पहिन ली जाय तो यह नुक्स और भी बढ़ने लग जाता है।
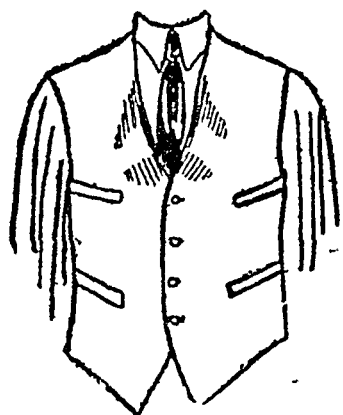
चित्र सं० २२१

कारण—इस नुक्स के भी कई कारण हो सकते हैं पहला यह कि सामने के कन्धे का जरूरत से ज्यादा ऊंचा बनाया जाना जिस से वास्कट के हाले की लम्बाई ज़रूरत से ज्यादा बड़ी हो जाती है और जब बटन बन्द किये जाते हैं तो हाला फूलने लगता है और सामने ऊपर को चढ़ने लगते हैं अर्थात् यह नुक्स पड़ने लगता है। इस का दूसरा कारण यह हो सकता है कि वास्कट का सामना कमर पर तंग बनाया गया हो जिससे बटन बन्द करने से सामने मे खिच पड़ती है और सामना ऊपर को खिसक कर गर्दन से जा टकराता है जोकि इस प्रकार के नुक्स का

कारण बनता है जोकि चित्र सं० २२१ से जाहिर किया गया है। इस के इलावा इस नुक्स का कारण यह भी हो सकता है कि वास्कट का कन्धा जरूरत से ज्यादा बाहिर अथवा मोंढे की तरफ़ बनाया गया हो अथवा यह ग्राहक के कन्धे से ज्यादा बड़ा तथा लम्बा बनाया गया हो। प्रायः इसी कारण से इस नुक्स की ज्यादा सम्भावना होती है क्योंकि ऐसी अवस्था मे सामने का हाला बहुत बढ़ जाता है जिससे यह फूलने लगता है और इस प्रकार का नुक्स पड जाता है।

यदि इस नुक्स का कारण यह हो जोकि यहाँ पर अन्त में बताया गया है अथवा कन्धा जरूरत से ज्यादा ऊंचा और बाहिर की तरफ बनाया गया हो तो इसे चित्र सं० २२२ के अनुसार इस तरह ठीक करो कि १ से २ तक वास्कट के हाले का दबाव बाहिर निकाल कर कन्धे को आगे की तरफ़ सुरका दो। इस तरह से सामने के कन्धे को आगे सुरकाने से कन्धे की लम्बाई मे जो ज्यादती हुई है उसे पीछे अथवा मोंढे की तरफ़ से ४ से ३ तक छांट कर छोटा करो ताकि कन्धे की लम्बाई पूरी हो जाय। ऐसा करते समय इस बात का ध्यान रखना भी जरूरी है कि कन्धे को आगे की तरफ से सुरकाते समय निशान २ को १ से जरा नीचे कर लेना चाहिये और बाहिर की तरफ से निशान ३ को ४ से जरा ऊंचा। जिस से न केवल कन्धा हाले की तरफ चला आयगा और हाले की ऊंचाई छोटी हो जायगी बल्कि कन्धा पीछे की तरफ से भी ज्यादा ऊंचा हो जायगा जिससे वास्कट का हाला बिल्कुल नही फूलेगा और नुक्स सब

प्रकार से दूर हो जायगा ।

परन्तु जब नुक्स का कारण केवल सामने के कन्धे का हाले की तरफ से जरूरत से ज्यादा ऊंचा होना हो तो नुक्स को दूर करना बिल्कुल सरल हो जाता है अर्थात् चित्रानुसार जरूरत के मुताबिक हाले को निशान ५ पर नीचे करके बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार सामने का कन्धा बनाने से नुक्स दूर हो जाता है ॥
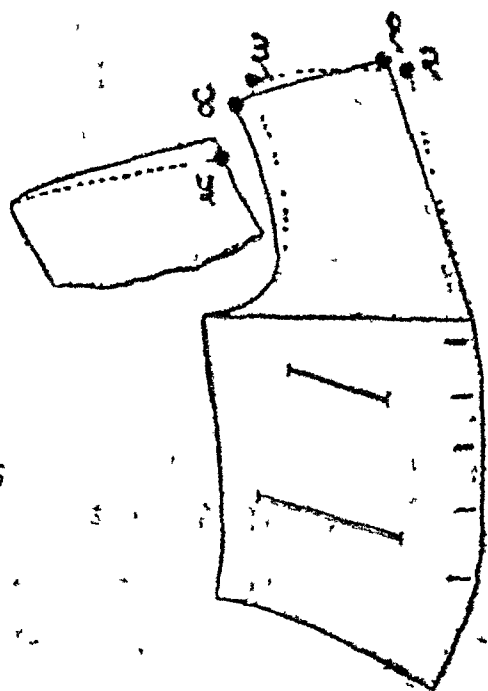
चित्र सं० २२२

(६) वास्कट के कन्धे का मोंढे पर तंग होना

(VEST TIGHT ON SHOULDER END)

इस अवस्था में वास्कट कन्धों पर से तंग है जिस से ग्राहक के कन्धों पर बहुत सा दबाव पड़ता है। यहाँ पर इस बात का बता देना जरूरी मालूम होता है कि केवल उन वास्कटों में यह नुक्स कष्ट का कारण होता है जिन के साथ आस्तीनें भी लगी होती हैं अथवा जिन वास्कटों के साथ आस्तीन बिल्कुल नहीं लगाई जाती उन में यह नुक्स होते हुए भी किसी प्रकार की तंगी नहीं अनुभव की जाती । ऐसी अवस्था में प्रायः वास्कट का गला ऊपर को उठ खड़ा होता है और कालर से दूर उठ खड़ा

होता है। और जब ग्राहक वास्कट पहिन कर बैठ जाता है तो यह कोट से ऊपर निकल कर नज़र आने लगती है। यह नुकस चित्र सं० २२३ से जाहिर किया गया है॥

चित्र सं० २२३

प्रायः पीठ पर टीक से नीचे बहुत से शिकन पड़ते नज़र आते हैं और यदि पीठ के कन्धों की ऊचाई बहुत ही छोटी हो तो कन्धों की सिलाई पर भी बहुत से शिकन पड़ने लग जाते हैं जिस से सारी की सारी वास्कट बहुत बुरी मालूम देती है।

कारण—इस नुकस का मुख्य कारण यह है कि इस अवस्था में वास्कट के कन्धे उन की ऊंचाई के मुकाबले मे बाहिर के सिरों पर ज़रूरत से बहुत ज्यादा नीचे गिराये गये हैं अर्थात् कन्धों की ऊंचाई बाहिर के सिरों पर अथवा मोंढे की तरफ़ से बहुत छोटी है जिससे यह नुकस पड़ जाता है।

क्योंकि इस नुकस का मुख्य कारण वास्कट के कन्धों का बाहिर की तरफ़ से ऊंचा होना है इस वास्ते इस नुकस को दूर करने के वास्ते इस के कन्धों पर के दबाव को बाहिर के सिरों पर से निकाल कर इन्हे जरूरत के मुताबिक ऊंचा करो। जब वास्कट बिल्कुल कची हो उस अवस्था में तो इस तरह से नुकस दूर करना सरल होता है परन्तु जब वास्कट तैयार हो चुकी हो उस अवस्था मे इस तरह से नुकस दूर करना बहुत ही कठिन होता है क्योंकि ऐसी अवस्था मे सामने के कन्धे पर से दबाव

को बाहिर निकालने मे बहुत कठिनाई होती है इस वास्ते ऐसी अवस्था में सारे का सारा दबाव पीठ के ही कन्धे पर से निकालना चाहिये जैसाकि चित्र सं० २२४ में निशान ६ पर किया गया है। सारी की सारी कमी निशान ६ पर पूरी की गई है और सामने को बिल्कुल नहीं छेड़ा गया।

अब निशान ६ को टीक के साथ मिलाओ और इस तरह से पीठ का नया कन्धा बन जायगा जो बाहिर की तरफ़ से पहले कन्धे से इतना ऊंचा होगा कि सामने और पीठ दोनों तरफ़ की कमी को पूरा करेगा।

यदि इसके साथ ही पीठ के मोंढे की गोलाई को नीचे से छांट कर ज़रा ज्यादा गहरा कर दिया जाय जैसाकि इस चित्र मे निशान ७ पर किया गया है तो इससे बहुत सा लाभ होगा। क्योंकि ऐसा करने से वास्कट को पीठ को साईड पर से सामने से ऊपर को सुरकाना पड़ता है और इस तरह से पीठ के घेरे पर के दबाव को बाहिर निकाल कर इसके साईड को सामने के साईड के बराबर बनाया जाता है जिससे वास्कट की पीठ पहले से ज्यादा लम्बी भी हो जाती है और गर्दन पर बिल्कुल ठीक जाकर बैठती है॥
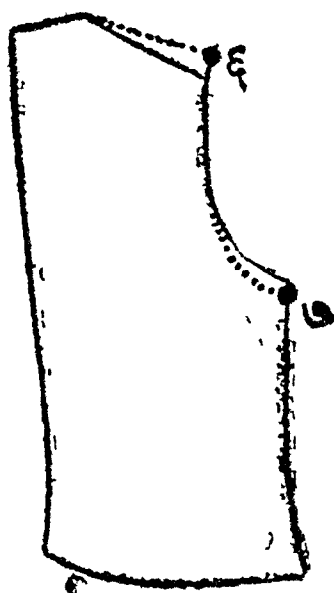
चित्र सं० २२४

(७) वास्कट के सामने का छाती तथा कमर पर तंग होना

(VEST TOO SMALL DOWN THE FRONTS)

यह नुक्स चित्र सं० २२५ से जाहिर किया गया है। जब वास्कट के बटन खोल दिये जाये तो सामने पीछे की तरफ़ दौड़ने लग जाते है और इसकी साईडों पर झोल पड़ने लग जाते हैं। वास्कट के बटन बन्द करने के वास्ते सामनों को खेच कर आगे की तरफ़ लाना पड़ता है और यह स्वयम् इस हालत मे आगे की तरफ़ नही रहते जैसाकि साधारण अवस्था मे इन को होना चाहिए। जब वास्कट के बटन बन्द कर दिये जाये तो सामने मे छाती और कमर पर खिच पड़ने लग जाती है। प्राय साईड की सिलाई पर बहुत सा कपड़ा इकट्ठा हो जाता है और वास्कट यहा भर ढीली मालूम होती है।
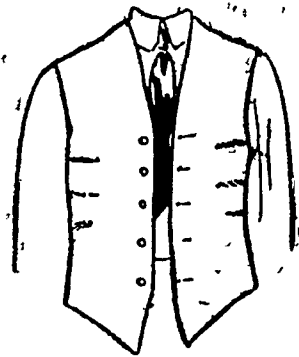
चित्र सं० २२५

कारण-इस नुक्स का कारण यह है कि वास्कट छाती और कमर पर तग बनाई गई है। यदि ऐसा न हो अर्थात् वास्कट की छाती और कमर के नाप छोटे न हों तो इस नुक्स का कारण यह समझना चाहिये कि वास्कट का गला अपनी असली जगह पर नही बनाया गया बल्कि बहुत ज्यादा आगे

को बनाया गया है जिससे वास्कट के सामने नाप में पूरे होते हुए भी पीछे की तरफ़ खिसक जाते हैं और साईडों पर कपड़ा इकट्ठा हो जाता है। ऐसी अवस्था में सामने के मोंढे के आगे भी झोल पड़ने लगता है।

यदि यह नुक्स वास्कट के गले के ज़रूरत से ज्यादा आगे की तरफ़ नोने से पड़ा हो तो वास्कट के सामने के कन्धे को हाले की तरफ़ से दबा दो जैसाकि चित्र सं० २२६ मे निशान ८ पर किया गया है। अब होले को निशान ८ से लेकर
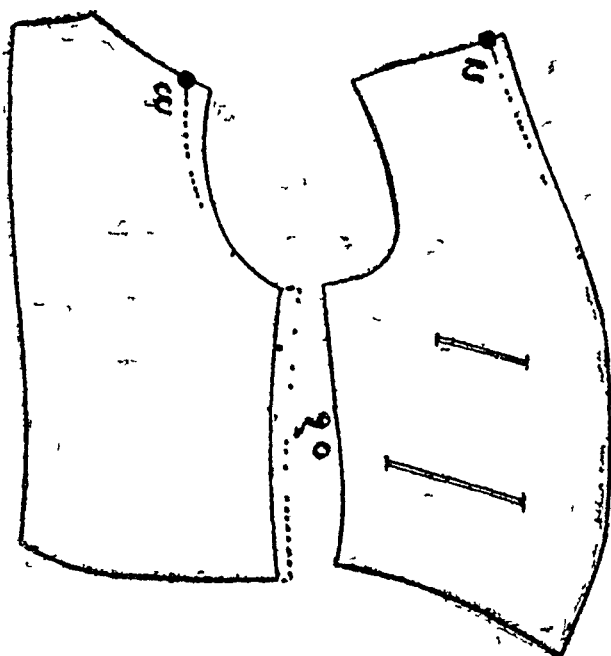
चित्र सं० २२६

ऊपर वाले बटन तक ले जाकर दबा दो दूसरे शब्दों में वास्कट के सामने के हाले को ऊपर से नशान ८ पर दबा कर नीचे की

तरफ़ ऊपर वाले बटन के निशान से मिला दो जैसाकि इस चित्र मे निशान ८ पर बिन्दियों वाली लकीर से किया गया है। ऐसा करने से वास्कट के सामने का हाला अथवा गला उतना पीछे को चला जायगा जितना कि पहले जरूरत से ज्यादा आगे को था। जब पीठ को सामने के साथ जोड़ा जायगा तो पीठ का कन्धा सामने के कन्धे से बढ़ जायगा क्योंकि सामने का कन्धा तो, जैसाकि ऊपर बताया गया है, आगे से छांट कर छोटा किया गया है परन्तु पीठ का कन्धा वैसा ही है जैसाकि पहले था। इस वास्ते पीठ के कन्धे को सामने के कन्धे के बराबर बनाओ और ज्यादती को बाहर अथवा मोंढे की तरफ़ से छांट दो जैसाकि इस चित्र मे निशान ६ पर किया गया है।

जब वास्कट का हाला ठीक बनाया गया हो अथवा नुक्स का कारण यह न हो बल्कि वास्कट के तंग होने से यह नुक्स पड़ा हो तो इस नुक्स को दूर करने के वास्ते वास्कट की पीठ के साईड पर के दबाव को बाहिर निकाल कर इसे जरूरत के मुताबिक ढीला करो जैसाकि इस चित्र मे निशान १० पर किया गया है॥

(८) वास्कट के कन्धे का ज्यादा चौड़ा होना

(SHOULDER TOO WIDE)

कई लोग वास्कट के कन्धे बहुत छोटे बनाते हैं और कई बड़े। यह बात प्रत्येक के फैशन तथा इच्छानुसार बनाई जाती है। परन्तु जब वास्कट के कन्धे इतने बड़े बनाये जाये कि वास्कट के कन्धे मोंढों पर से शरीर को दबाने तथा चुभने लगें तो वास्कट

पहिनने वाले को बहुत कष्ट देती है और इस के साथ ही उस दबाने से वास्कट के कन्धे में भी सामने पर बहुत से शिकन पड़ने लग जाते हैं जैसाकि चित्र सं० २२७ मे दिखाये गये हैं ।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते वास्कट के कन्धों को बाहिर की तरफ़ से जरूरत के मुताबिक छांट दो जैसाकि इस चित्र में सामने के कन्धे को निशान ११ पर छांटा गया है और पीठ के
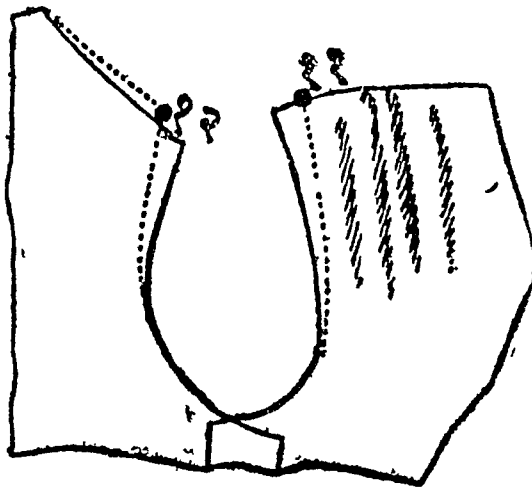
चित्र सं० २२७

कन्धे को निशान १२ पर उतना ही छोटा किया गया है। अब बिन्दियों वाली लकीरों की सहायता से सामने और पीठ के मोंढों की गोलाईयां बनाओ तो नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा ॥

(९) वास्कट का हिप पर दबाते रहना

(BINDING OVER THE HIP BONE)

यह नुक्स चित्र सं० २२८ से जाहिर किया गया है इस में वास्कट कमर से नीचे हिप पर अथवा घेरे पर तंग बनाई गई है जिस से यह ग्राहक के शरीर को यहां पर दबाती रहती है जिस से

वास्कट की कमर मे साईड पर बहुत से शिकन पडने लग जाते है यह नुक्स प्राय: ऐसे ग्राहको के कोटों मे पड़ता है जिन का शरीर सूखा हुआ होता है अथवा उन की हड्डिया बाहिर को निकली हुई नजर आती रहती है।
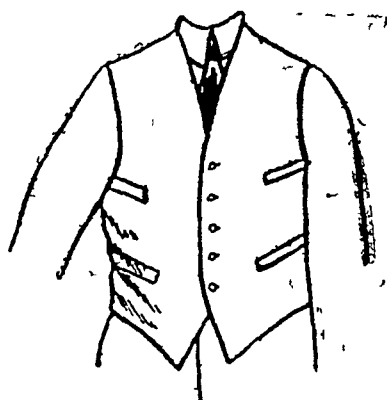
चित्र सं० २२८

जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है यह नुक्स ऐसे ग्राहकों की वास्कटों मे पड़ता है जिनकी हड्डिया बाहिर को निकली हुई होती है इस अवस्था मे भी ग्राहक की कमर तो बिल्कुल पतली है परन्तु साईडों पर कमर से नीचे की हड्डिया, जिन को हिप बोन (Hip bone) भी कहते है, बहुत ज्यादा बाहिर को निकली हुई है। वास्कट काटते समय इसे कमर पर से तो ठीक बनाया गया है बल्कि काफी ढीला बनाया गया हैं परन्तु कमर से नीचे साईडों को बाहिर निकालते समय इस बात का ध्यान नहीं किया गया कि ग्राहक की हड्डिया यहा पर बाहिर को निकली हुई है इस वास्ते इसे भी साधारण से ज्यादा बाहिर को निकाला जाता है बल्कि इसे साधारण तौर पर बाहिर निकाला गया है जिस से वास्कट इस हड्डी पर तंग हो कर ऊपर को धकेली जाती है और साईड मे कमर पर शिकन पडने लग जाते हैं।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २२६ के अनुसार पीठ के साईड पर के दबाव को घेरे पर से बाहिर निकालो जैसा

कि इस चित्र मे निशान १३ पर किया गया है। अब चित्रानुसार निशान १३ को ऊपर की तरफ़ छाती के साथ इस तरह मिलाओ
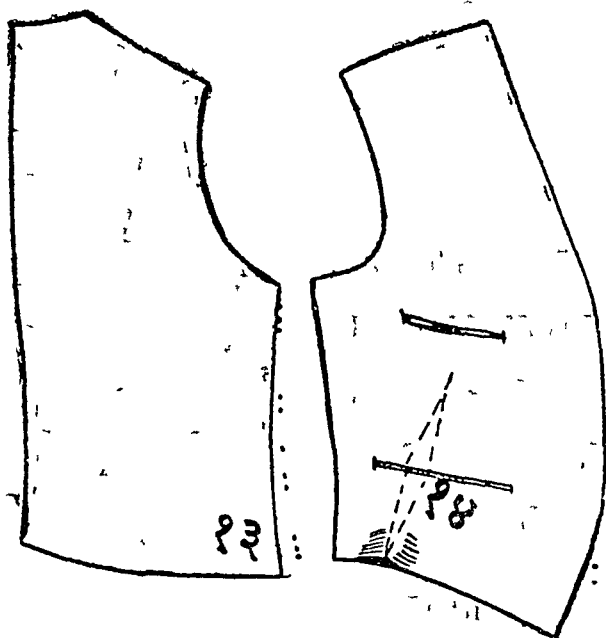
चित्र सं० २२६

कि छाती पर वास्कट बिल्कुल ढीली न हो जैसाकि इस चित्र में बिन्दियों वाली लकीर से ज़ाहिर किया गया है।

जब वास्कट के सामने में पाकटें न लगाई गई हों तो इसमें से कमर पर से एक डाट निकाल लेनी चाहिये जोकि इस चित्र में डैश वाली लकीरों से निशान १४ पर दिखाई गई है॥

(१०) वासकट का ऊपर के बटन पर तंग होना।

(VEST TOO SMALL AT TOP BUTTON)

यह नुक्स चित्र सं० २३० से ज़ाहिर किया गया है। इस

में ऊपर का बटन बन्द करने के वास्ते सामनों को आगे की तरफ़ खेचने की ज़रूरत होती है हलांकि बाकी बटन ऐसा किये बिना आसानी से ही बन्द किये जा सकते हैं। बाकी सब प्रकार से वास्कट बिल्कुल ठीक है केवल इतना ज़रूर है कि मोंढे के पास सामना फूलने लगता है। जब वास्कट का हाला ज्यादा ऊंचा बनाया जाय अथवा जब वास्कट के बटन बहुत ऊपर से ही शुरू हो जाये तो यह नुक्स बहुत जल्दी नजर आने लगता है।
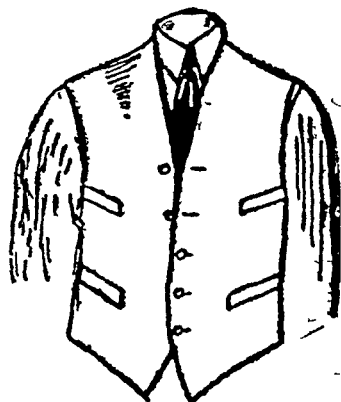
चित्र सं० २३०

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि वास्कट के सामने का हाला अथवा गला ज़रूरत से ज्यादा आगे को बनाया गया है। दूसरे शब्दों मे यह समझना चाहिये कि वास्कट का कन्धा बहुत ज्यादा आगे की तरफ़ बनाया गया है जिससे वास्कट का सामना ऊपर के बटन पर पीछे को चला जाता है और ऊपर का नुक्स पड़ने लगता है। इस नुक्स का दूसरा कारण यह हो सकता है कि वास्कट के सामने का आगे का किनारा जरूरत से ज्यादा लोहे से खेचा गया है जिससे सामना इस स्थान पर पीछे को हट जाता है तथा ऊपर का बटन बन्द करने के वास्ते इसे आगे को खेचने की जरूरत होती है। परन्तु आज कल की वास्कटों मे इस कारण से यह नुक्स इतना नहीं

पड़ता जितना कि पहले पड़ा करता था। आज कल की वास्कटें ऐसे कारण बहुत कम होने देती हैं। इस वास्ते इस नुक्स का मुख्य कारण ही यही समझना चाहिये कि सामने का कन्धा ज़रूरत से ज्यादा आगे को बनाया गया है।

इस नुक्स को दूर करने की रीति चित्र सं० २३१ की सहायता से समझाई गई है। जब वास्कट तैयार हो चुकी हो तो सामने और पीठ के कन्धों की सिलाई खोल कर सामने के कन्धे को हाले की तरफ़ से निशान १ पर छांट दो और निशान १ को ऊपर वाले बटन के निशान के साथ बिन्दियों वाली लकीर की सहायता से मिलादो। ऐसा करने से वास्कट के सामने का हाला
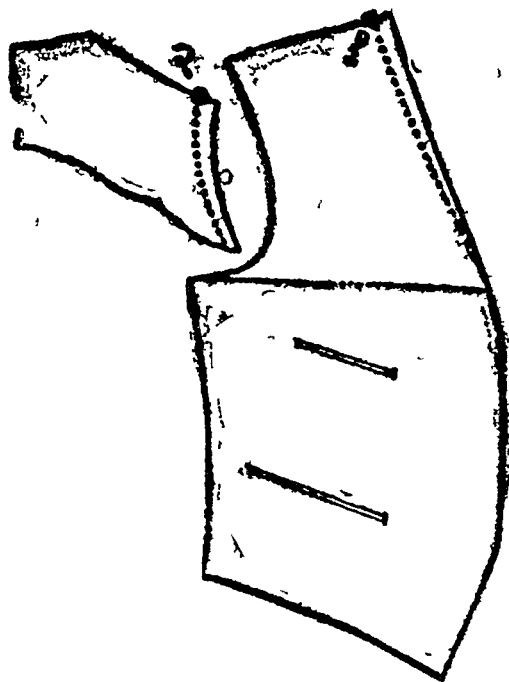
चित्र सं० २३१

ज़रूरत के मुताबिक पीछे को चला जायगा अथवा सामने का कन्धा जोकि पहले ज़रूरत से ज्यादा आगे की तरफ़ बनाया गया था अब अपनी असली जगह पर चला जायगा। अब जब पीठ के कन्धों को सामने के कन्धों के साथ जोड़ा

जायगा तो पीठ का कन्धा सामने के कन्धे की अपेक्षा ज्यादा निकलेगा क्योंकि सामने के कन्धे को आगे की तरफ से छाट कर छोटा किया गया है। इस वास्ते पीठ के कन्धे को भी मोंढे अथवा बाहिर की तरफ से उतना ही छाट दो जितना कि सामने के कन्धे को आगे की तरफ से निशान १ पर छाटा हो। इस चित्र मे निशान २ पर पीठ का कन्धा जरूरत के मुताबिक कम किया गया है॥

(११) वास्कट का लम्बाई में छोटा होना।

(VEST TOO SHORT)

यह ऐसा नुक्स नही है जिसे चित्र द्वारा दिखाने की जरूरत हो क्योंकि यह नुक्स बिल्कुल साधरण है। अथवा वास्कट लम्बाई मे छोटी बनाई गई है। या तो कटर ने नाप लेने मे गलती की है जिस से नाप छोटा लिया गया है अथवा नाप तो पूरा लिया गया हो और काटने मे इसे गलती से छोटा काटा गया हो। एक और कारण से भी वास्कट की लम्बाई को ज्यादा करने की जरूरत होती है वह यह कि पतलून की लम्बाई ऊपर से छोटी बन जाती है तथा पतलून को ज्यादा ऊंचा तो किया नही जा सकता इस वास्ते पतलून की कमी को पूरा करने के वास्ते वास्कट को ही ज्यादा लम्बा करने की ज़रूरत होती है जोकि चाहे पहले ही पूरी लम्बी हो अथवा चाहे वास्कट की लम्बाई छोटी ही बनाई गई हो इसे ही ज्यादा लम्बा करने की जरूरत होती है क्योंकि इस के सिवाये पतलून की लम्बाई की कमी को छुपाने का और कोई

साधन नही है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते यदि वास्कट के घेरे के नीचे दबाव रखा हुआ हो तो उसे वाहिर निकाल कर जरूरत के मुताबिक वास्कट को लम्बा किया जा सकता है परन्तु क्योंकि वास्कट के सामने की नोकें नीचे से पहले ही काफ़ी लम्बी बनाई जाती हैं जैसा कि आज कल का फैशन है और इस तरह से घेरे का दबाव वाहिर निकाल कर वास्कट की लम्बाई को ज्यादा करने से यह नोके और भी ज्यादा लम्बी हो जाती है जिस से देखने में बहुत भद्दी मालूम होती हैं इस वास्ते इस प्रकार से वास्कट की लम्बाई को बढ़ाना ठीक नहीं मालूम होता।

इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने अथवा वास्कट की लम्बाई को बढ़ाने का ठीक तरीका यह है कि पीठ नई काट कर लगाई जाय जोकि पुरानी पीठ से इस प्रकार से बड़ी बनाई जाय जैसाकि नीचे चित्र सं० २३२ से ज़ाहिर किया गया है। चित्र अनुसार पीठ की ऊंचाई को ३ से ४ तक और ५ से ६ तक इस तरह बाढ़ओ कि यह ज्यादती इतनी हो कि वास्कट की लम्बाई की कमी को पूरा कर सके। अर्थात् वास्कट लम्बाई मे जितनी छोटी हो पीठ को ३ से ४ तक और ५ से ६ तक उतना ऊंचा करो। अब ४ से ६ तक ठीक की गोलाई बना कर इसे निशान ७ तक बढ़ाओ ताकि ६ से ७ तक का नाप ३ से ४ तक के बराबर बन इसी तरह पीठ के कन्धे को भी मोंढ़े अथवा वाहिर की तरफ़ से ९ से ८ तक ऊंचा करो ताकि ९ से ८ तक की

ऊंचाई ५ से ७ तक के बराबर बने। अब ७ से ८ तक पीठ के कन्धे की गोलाई बनाओ और इस की लम्बाई का सामने के कन्धे की लम्बाई से मुकाबला करो। अर्थात् इस की लम्बाई भी बिल्कुल सामने के कन्धे की लम्बाई के मुताबिक बना कर ८ से ६ तक मोंढ़े की गोलाई मुकम्मल करो।
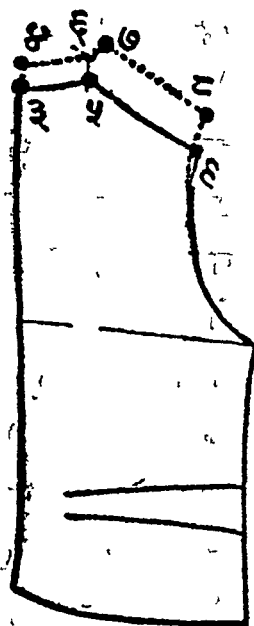
चित्र सं० २३२

ऐसा करने से केवल एक तकलीफ़ होती है वह यह कि वास्कट का हाला पहले से ज़रा ज्यादा नीचा हो जायगा क्योंकि इस प्रकार से हमने पीठ की लम्बाई ऊपर से ज्यादा की है। अथवा ऐसा करने से पीठ पर तो वास्कट वैसी ही रहेगी तथा पीठ का ऊपर का फ़ाल्तू हिस्सा सामने की तरफ़ चला आयगा जिस से वास्कट का सामना जरूरत के मुताबिक नीचे को ढिलक आयगा और हमारा मतलब पूरा हो जायगा अथवा वास्कट की लम्बाई आगे से जरूरत के मुताबिक ज्यादा हो जायगी।

(१२) वास्कट का ज़रूरत से ज्यादा लम्बा होना

(VEST TOO LONG)

यह नुक्स ऊपर वाले नुक्स का बिल्कुल उलट है अर्थात् जहां

ऊपर वास्कट की लम्बाई छोटी थी वहां इस अवस्था में यह ज्यादा है। जिस तरह ऊपर वास्कट की लम्बाई को बढ़ाने से वास्कट का हाला ज़रूरत तथा फैशन से ज्यादा लम्बा हो गया था इसी तरह इस नुक्स को दूर करने से भी अथवा वास्कट की लम्बाई को ज़रूरत के मुताबिक घटाने से भी वास्कट के फैशन अथवा स्टाईल में फ़र्क पड़ जायगा अर्थात् या तो वास्कट का हाला छोटा करना पड़ेगा या नीचे से नोकों की लम्बाई घटानी पड़ेगी अथवा दोनों को ही घटाना पड़ेगा।

यदि वास्कट की लम्बाई थोड़ी ज्यादा हो तो उसे घेरे पर से दबा कर छोटा कर लेना चाहिये परन्तु जब वास्कट इतनी ज्यादा लम्बी बनाई गई हो कि उसे सारा घेरे पर से छोटा करने से सामने की आगे की नोकें इतनी छोटी हो जाती हों कि देखने में भद्दी मालूम दें तो ऐसी अवस्था में जितना घेरे पर से लम्बाई को घटाने से नोकें खराब न होती हों उतना तो सामने को घेरे पर से घटा देना चाहिये और बाकी लम्बाई ऊपर अथवा हाले पर से कम करनी चाहिये और थोड़ी सी कमी पीठ के ऊपर से भी कर लेनी चाहिये जिससे यह ज्यादती तीन भागों मे बांट कर घटाई जायगी और सारी कमी घेरे पर से ही करने से सामने की नोकें इतनी छोटी हो जाती हैं कि बीच के बटन अथवा काज के साथ जा मिलती हैं जोकि देखने मे बहुत बुरी मालूम देती हैं।

चित्र सं० २३३ मे बिंदियों वाली लकीर की सहायता से १० से

११ तक वास्कट के सामने को ऊपर से छोटा किया गया है और १२ से १३ तक पीठ को कन्धे पर से छोटा किया गया है और बाकी ज्यादती को सामने के घेरे पर के निशान १४ पर कम किया गया है चित्रानुसार सामने के घेरे, हाले और कन्धे की गोलाई वनाओ और पीठ की टीक और कन्धे की गोलाई वना कर चित्र को ठीक करो तो वास्कट की लम्बाई जरूरत के मुताबिक घट जायगी ॥
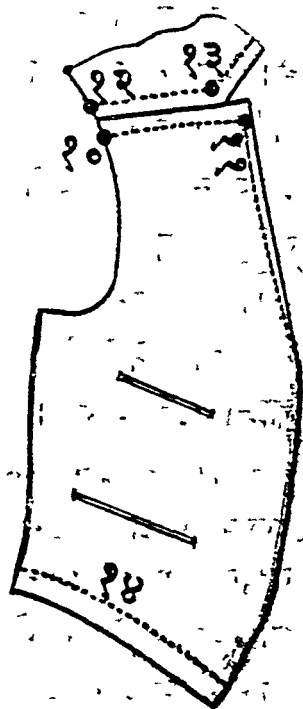
चित्र सं० २३३

(१३) वास्कट की टीक का कमीज़ के कालर के नीचे चला जाना ।

(NECK CREEPING UNDER LINEN COLLAR)

यह नुक्स चित्र सं०. २३४ से जाहिर किया गया है। इस नुक्स से ग्राहक को वास्कट पहिनते समय बहुत तकलीफ होती है। चाहे ग्राहक वास्कट की टीक को खेंच कर कितनी ही वार क्यों न ठीक करता फिरे यह वार २ कमीज के कालर

के नीचे ही भागने लगती है जिस से ग्राहक को बड़ी तकलीफ़ होती है। यह नुक्स प्रायः ऐसे ग्राहकों की वास्कटों मे पड़ता है जिनकी गर्दन नार्मल शकल से ज्यादा लम्बी होती है।
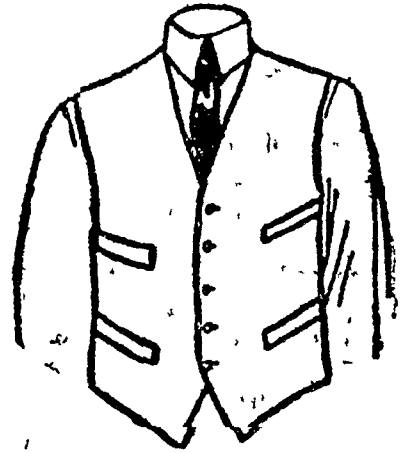
चित्र सं० २३४

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि ग्राहक की गर्दन बहुत ज्यादा लम्बी है। परन्तु वास्कट की पीठ की ऊंचाई ग्राहक की गर्दन की ऊंचाई के मुताबिक नहीं बनाई गई बल्कि उससे कम बनाई गई है जिससे वास्कट की टीक गर्दन के ऊपर चढ़ी रहने की बजाय नीचे रह जाती है तथा कमीज़ के कालर के नीचे घुसड़ने लगती है। दूसरे शब्दों मे इस नुक्स का कारण यह है कि वास्कट का पीठ की ऊंचाई ग्राहक की गर्दन की ऊंचाई के बराबर नही बनाई गई बल्कि उससे छोटी बनाई गई है अथवा पीठ के कन्धे ज़रूरत से ज्यादा ऊंचे बनाये गये हैं तथा टीक

चित्र स० २३५

ज़रूरत से कम चौड़ी बनाई गई है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २३५ के अनुसार पीठ के कन्धे पर के दबाव से काम लेकर टीक को बिन्दियों वाली लकीर की सहायता से निशान १५ पर जरूरत के मुताबिक चौड़ा करो और निशान १६ पर पीठ के कन्धे को मोंढों की तरफ़ से नीचा करो। कन्धे को निशान १६ पर नीचा करने से पीठ के मोंढे की गहराई घट गई है। इस वास्ते पीठ के मोंढे को निशान १७ पर गहरा करो॥

(१४) वास्कट के सामने का छाती और कमर पर ज्यादा चौड़ा होना।

(VEST TOO LARGE DOWN FRONT)

यह नुक्स चित्र सं० २३६ से ज़ाहिर किया गया है। जब वास्कट के बटन खोल दिये जाये तो वास्कट के सामने बहुत ज्यादा एक दूसरे के ऊपर चढ़ने लग जाते हैं जिससे यह मालूम होता है कि वास्कट उस ग्राहक की नहीं है जिसने कि पहिनी हुई है बल्कि यह किसी और बड़े नाप वाले ग्राहक की मालूम होती है क्योंकि यह छाती और
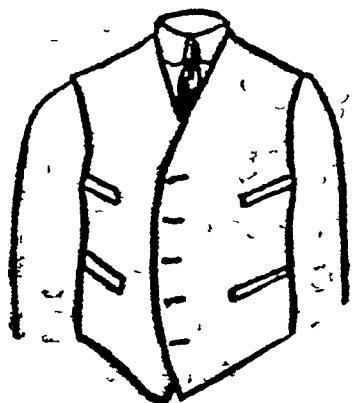
चित्र सं० २३६

कमर पर बहुत ही ज्यादा ढीली होती है। और जब वास्कट के बटन बन्द कर दिये जायें तो यह ज्यादती पीछे की तरफ़ मोंढों के पास धकेली जाती है और सारे सामने मे झोल पड़ने लग जाते हैं।

कारण—इस नुक्स का कारण बिल्कुल स्पष्ट है। अथवा या तो नाप लेते समय ग़लती से नाप बड़े लिये गये हैं। या नाप लिये तो ठीक गये हैं परन्तु आर्डर बुक मे लिखते समय कटर स्वप्न अवस्था में चला गया है और उसने वह नाप जोकि ठीक लिये थे लिखने की बजाय ग़लती से उससे बड़े नाप ऑर्डर बुक मे लिख दिये हैं जिसका परिणाम यह हुआ है कि वास्कट ज़रूरत से बहुत ज्यादा बड़ी बन गई है। अथवा इसका कारण यह भी हो सकता है कि वास्कट का नाप लिया भी ठीक गया हो और आर्डर बुक मे भी ठीक लिखा गया हो परन्तु वास्कट काटते समय ग़लती से वास्कट बहुत बड़ी काटी गई हो।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते देखना यह है कि यह ज्यादती अथवा अधिकता कहां पर है जोकि चित्र स० २३६ को देखने से मालूम होती है कि यह स्पष्ट तौर पर वास्कट के सामने के आगे के ही हिस्से में है। इस वास्ते इस ज्यादती को आगे की तरफ़ से ही घटाने की जरूरत होती है। परन्तु ऐसा करने से आगे के किनारे पर के काज तथा बटन बाधा डालते हैं और सामने के हाले तथा नीचे वाली नोका की शक्ल भी ठीक नहीं रहती। इस वास्ते ऐसा करना भी ठीक नही है बल्कि इस ज्यादती को

जोकि वास्कट के सामने के आगे के हिस्से में है पहले पीछे की तरफ़ ले जाना चाहिये और फिर इसे पीछे से घटा कर दूर करना चाहिये।

ऐसा करने के वास्ते अर्थात् आगे की तरफ़ की ज्यादती को पीछे की तरफ़ धकेलने के वास्ते जरूरी है कि वास्कट की पीठ पर से टीक को ऊपर से थोड़ा सा दबा कर पीठ को सामने से ऊपर की तरफ़ सुरकाना चाहिये जैसाकि चित्र सं० २३७ मे निशान १८ पर किया गया है। अब क्योंकि पीठ को सामने से ऊपर की तरफ़ बढ़ाया गया है इस वास्ते सामने का कन्धा मोंढे की तरफ़ से पीठ की अपेक्षा बड़ा हो जायगा। इस ज्यादती को निशान १९ पर घटा कर इसे पीठ के कन्धे के बराबर बनाओ।

ऐसा करने से सामने की चौड़ाई की ज्यादती जोकि पहले आगे की तरफ़ थी अब मोंढों की तरफ़ चली गई है। इस वास्ते अब इस ज्यादती को साईडों पर से बड़ी आसानी से दूर किया जा कसता है जैसाकि इस चित्र मे २० से २१ तक करके दिखाया गया है।
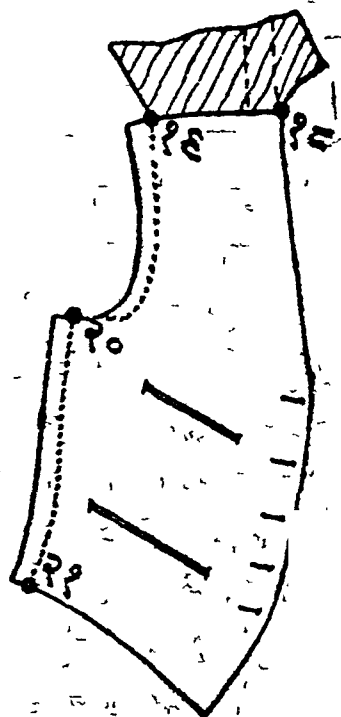
चित्र सं० २३७

कइ दर्ज़ी लोग कपड़े खाकों की मदद से काटते हैं अथवा ग्राहक के नाप के अनुसार चित्र बनाकर कपड़ा काटने की बजाय किसी एक नाप का खाका लेकर, जोकि उनके पास पड़ा रहता है, उससे जरूरत के मुताबिक छोटा बड़ा करके कपड़ा काट लेते हैं। इस से सिद्ध हुआ कि यदि आप भी ऐसा ही करते हों और आप के पास कितने ही बड़े नाप का खाका क्यों न हो आप उसे ऊपर लिखी रीति से बड़ी आसानी से जितने छोटे से छोटे नाप के बराबर क्यों न बनाना चाहें काट सकते हैं॥

(१५) सामने के मोंढे पर झोल पड़ना।

(BULGING AT FRONT SCYE)

यह नुक्स चित्र सं० २३८ से ज़ाहिर किया गया है। इस में वास्कट के सामने मे मोंढे की तरफ़ से पड़ते हुए शिकन नज़र आते हैं जिससे देखने वाले को यह मालूम होता है कि वास्कट का सामना ज़रूरत से बड़ा है जिस से यह ज्यादती झोल की शकल में नज़र आती है। जब ग्राहक बैठ जाता है तो नुक्स और भी ज्यादा नज़र आने लगता है। और वास्कट का हाला ग्राहक की गर्दन पर से दूर उठ खड़ा होता है जिससे गर्दन और हाले के दरमियान जगह खाली नज़र आने लगती है। जब वास्कट कुछ दिनों तक पहिन
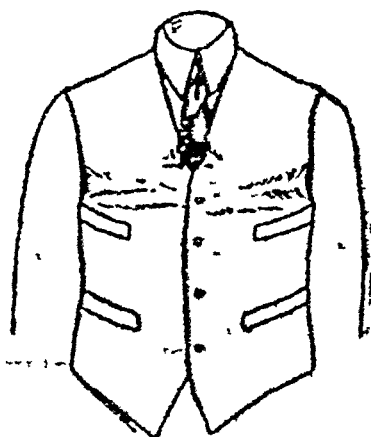
चित्र सं० २३८

ली जाय तो उस के सामने मे कमर पर सीधे शिकन पड़ने लग जाते है।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि सामने के कन्धे की ऊंचाई जरूरत से ज्यादा ऊची बनाई गई है। अथवा पीठ के कन्धों की ऊचाई सामने की अपेक्षा बहुत छोटी है। जब सामने के बटन बन्द कर दिये जाते है तो यह ज्यादती वास्कट के ऊपर के बटन के ऊपर इकट्ठी हो जाती है जिससे सामने मे इस हिस्से पर झोल पड़ने लग जाते हैं और जब ग्राहक बैठ जाता है तो यह झोल और भी बढ़ जाते हैं।

इस नुक्स का दूर करना बिल्कुल साधारण बात है
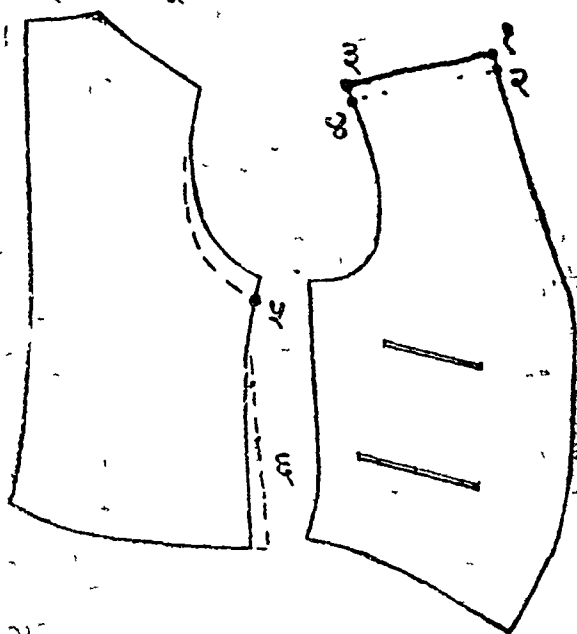
क्योंकि इस नुक्स का कारण, जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, सामने के कन्धे का पीठ के कन्धे की अपेक्षा ज्यादा ऊंचा होना है। इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने के वास्ते ज़रूरी है कि सामने के कन्धे को ज़रूरत के मुताबिक नीचा किया जाय जैसाकि चित्र सं० २३९ में आगे की तरफ़ से १ से २ तक और पीछे तथा मोंढे की तरफ़ से ३ से ४ तक करके दिखाया गया है। चित्रानुसार २ से ४ तक सामने के कन्धे की नई गोलाई बनाओ तो नुक्स दूर हो जायगा।

यदि ऐसा करने से वास्कट की लम्बाई के छोटा हो जाने का डर हो तो पीठ के कन्धे को सामने के कन्धे के अनुसार ऊंचा कर लेना चाहिये जोकि पहले सामने के कन्धे को अपेक्षा कम ऊंचा है जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है। इस जित्र में निशान ५ पर डैष वाली लकीर की सहायता से पीठ के मोंढे की गोलाई को नीचे छांट कर पीठ के कन्धे को ज़रूरत के मुताबिक ऊंचा किया गया है ताकि यह सामने के कन्धे की ऊंचाई के मुताबिक ठीक हो सके। ऐसी अवस्था में पीठ के साईड को कमर पर से ढीला करने की भी ज़रूरत होती है जैसाकि इस चित्र में निशान ५ पर डैष वाली लकीर से करके दिखाया गया है॥

(१६) वास्कट की टीक का ज़रूरत से ज्यादा ऊचा बनाया जाना।

(TOO HIGH ROUND NECK)

यह नुक्स चित्र सं० २४० से जाहिर किया गया है। इस मे पीठ पर टीक जरूरत से बहुत ज्यादा ऊंची बनाई गई है जिस से प्रायः टीक की ज्यादती को ग्राहक की गर्दन नीचे की तरफ़ धकेलती है तथा टीक से नीचे बहुत से शिकन पड़ने लग जाते हैं। परन्तु हमेशा ऐसा नहीं होता बल्कि कभी कभी ऐसा भी होता है कि टीक की ज्यादती कमीज के कालर से भी ऊपर खिसक जाती है और कोट के ऊपर से नजर आने लगती है।
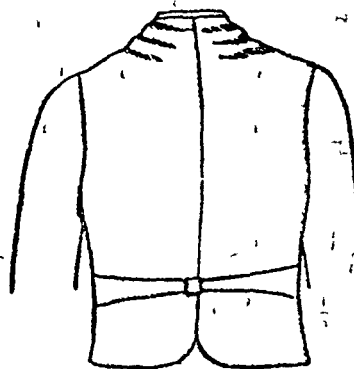
चित्र सं० २४०

कारण—ऐसी अवस्था में नुक्स का कारण मालूम करने का सरल तरीका यह है कि वास्कट के कन्धों की सिलाई को सारा खोल दो अथवा सारा खोलने की बजाय इसे बाहिर से लेकर गले की तरफ़ खोलते जाओ और केवल आधा अथवा पौना इंच के बराबर मत खोलो बाकी सब खोल कर देखने से मालूम होगा कि वास्कट के कन्धे मोंढों की तरफ़ से अथवा बाहिर के सिरों पर से एक दूसरे से दूर चले जाते हैं और उनके दरमियान जगह खाली हो जाती है तथा टीक के नीचे से सारे के सारे शिकन भी दूर हो जाते हैं। इस से सिद्ध हुआ कि इस नुक्स का कारण वास्कट के कन्धों का बाहिर की तरफ़ से ज़रूरत से ज्यादा नीचा गिराया जाना है जिससे न केवल वास्कट के

सारा बोझ ग्राहक के कन्धों पर इकट्ठा हो जाता है बल्कि टीक भी ज़रूरत से ज्यादा ऊंची हो जाती है और यह नुक्स पड़ने लग जाता है।

जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है इस नुक्स का कारण वास्कट के कन्धों का मोंढों की तरफ़ से ज़रूरत से ज्यादा नीचा बनाया जाना है। जोकि वास्कट की पीठ और सामने के गले के ज़रूरत से ज्यादा ऊंचा बनाये जाने से हो जाता है। अब देखना यह है कि वास्कट का मोंढा नीचे की तरफ़ से ज़रूरत से ज्यादा गहरा तो नहीं बनाया गया यदि मोंढे की गहराई ठीक हो, अथवा

चित्र नं० २४१
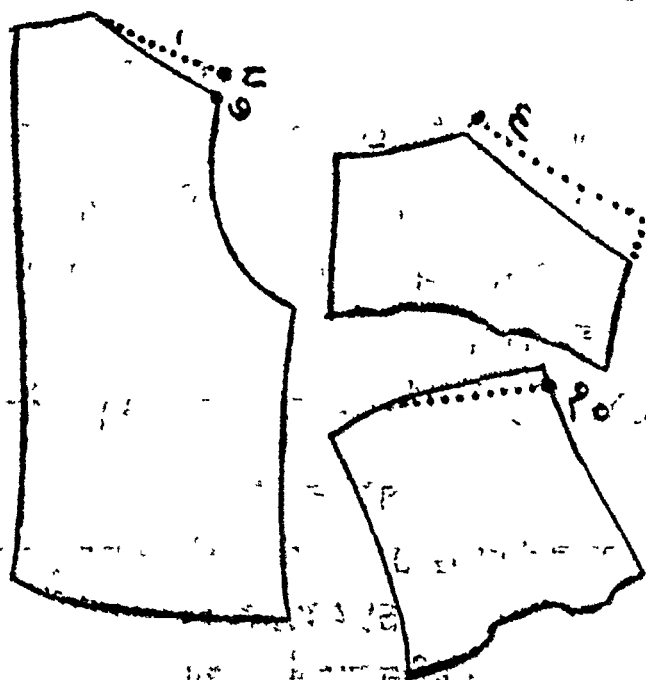
मोंढा ज़रूरत से ज्यादा गहरा न हो तो इस नुक्स के दूर करने का आसान तरीका यह होता है कि पीठ के कन्धे पर के दबाव को मोंढे की तरफ़ से जरूरत के मुताबिक बाहिर निकाल कर इसे ऊंचा कर लेना चाहिये जैसाकि चित्र सं० २४१ मे निशान ७ से ८ तक करके दिखाया है।

इस नुक्स को दूर करते समय यदि वास्कट की पीठ की टीक को भी थोड़ा सा चौड़ा कर दिया जाय जैसाकि इस चित्र मे निशान ६ पर करके दिखाया गया है तो और भी अच्छा होगा। ऐसी अवस्था मे वास्कट के सामने के कन्धे को भी हाले की तरफ़ से नीचा करने की जरूरत होगी जैसाकि इस चित्र मे निशान १० पर किया गया है। अब चित्रानुसार निशान ८ मे से पीठ का कन्धा बिन्दियों वाली लकीर की सहायता से बनाओ अथवा निशान ६ और १० मे से बिन्दियों वाली लकीरों के अनुसार बारी २ पीठ और सामने के कन्धे बनाओ तो नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा॥

(१७) जब ग्राहक बैठ जाय वास्कट का गर्दन पर चढ़ जाना।

(VEST CREEPING UP INTO THE NECK WHEN SEATED)

जब ग्राहक वास्कट पहिन कर बैठ जाता है तो पीठ ग्राहक की गर्दन के ऊपर चढ़ने लगती है जिससे पीठ तो कालर के ऊपर

चली जाती है और सामने पर वास्कट का हाला शरीर से दूर उठ खड़ा होता है जिससे वास्कट के हाले और ग्राहक की गर्दन के दरमियान जगह खाली नज़र आने लगती है । जब वास्कट कुच्छ दिनों तक पहिन ली जाय तो वास्कट की पीठ मे टीक से नीचे शिकन पड़ने लग जाते हैं जोकि गर्दन के वासकट की पीठ को नीचे की तरफ़ धकेलने से पैदा होते है ।

कारण—नये कटर को जिसने पहिले इस प्रकार का नुक्स कभी न देखा हो यह नुक्स बहुत ही परेशान कर देता है । पीठ पर जो टीक से नीचे शिकन पड़ते नज़र आते है उनको देखने से मालूम होता है कि पीठ के बीच की सिलाई जरूरत से ज्यादा गोल बनाई गई है। जिससे वास्कट की पीठ कमर के पास पर शरीर ठीक पर नहीं बैठती बल्कि कमर पर शरीर के साथ लगी रहने की बजाय उससे दूर उठ खड़ी होती है । जिससे आप यह अनुमान लगाने लगेंगे कि पीठ की बीच के सिलाई को कमर पर से अच्छी तरह अन्दर के तरफ़ नहीं दबाया गया । परन्तु वास्तव मे इस नुक्स का कारण यह नहीं है बल्कि इस नुक्स का कारण पीठ की कमर का साईड पर से तंग होना है । अर्थात् वास्कट की पीठ के साईड को कमर पर से ज़रूरत से ज्यादा दबाने अथवा अन्दर की तरफ़ गोल करने से यह नुक्स पड़ता है जिस से वास्कट साईड पर तो शरीर के साथ लगी रहती है परन्तु पीठ पर इस के बीच मे कमर से दूर उठ खड़ी होती है जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते पीठ के साईड को कमर पर से ढीला करो। अर्थात् पीठ के साईड पर के दबाव को कमर पर से जरूरत के मुताबिक बाहिर निकाल कर वास्कट की पीठ को कमर पर ढीला करो और छाती के साथ इस नये निशान को जहां पर कि कमर को ढीला किया हो, इस तरह मिलाओ कि वास्कट छाती पर बिल्कुल ढीली न हो बल्कि वैसी ही रहे जैसाकि चित्र सं० २४२ मे ११ से १२ तक करके दिखाया गया है। जब आप ऐसा करेंगे तो वास्कट के सामने का हाला ढीला हो जायगा अर्थात् हाले की ऊंचाई ज्यादा हो जायगी। इस

चित्र सं० २४
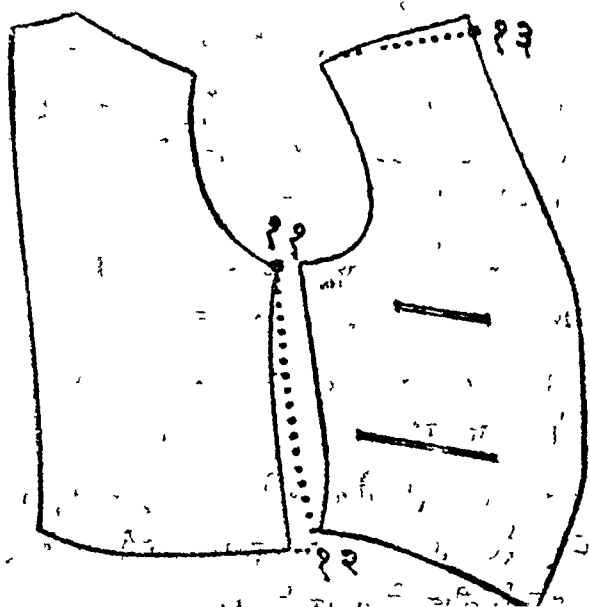
वास्ते ऐसी अवस्था मे वास्कट के हाले को भी ज़रा नीचा करने की ज़रूरत होगी। जैसाकि इस चित्र में निशान १३ पर किया गया है। अब निशान १३ को सामने के कन्धे के बाहिर वाले सिरे के साथ मिलाओ और सामने में लगाये गये बटनों को पहले से ज़रा पीछे की तरफ़ हटाओ तो नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा ॥

(१८) वास्कट का ऊपर के बटन पर ढीला होना।

(TOO LARGE AT TOP BUTTON)

जैसाकि पहले कहीं बताया जा चुका है यह नुक्स उन वास्कटों मे ज्यादा पड़ता है जिनका ऊपर का बटन बहुत ज्यादा ऊंचा रखा जाता है। जैसाकि चित्र सं० २४३ से ज़ाहिर किया गया है छाती पर वास्कट बहुत ढीली मालूम होती है और इसे छाती पर फ़िट बानने के वास्ते ऊपर वाले दोनों बटनों को काफ़ी पीछे की तरफ़ हटाना पड़ता है और बाक़ी नीचे वाले बटन उसी जगह पर रह जाते हैं जहां पर कि वह पहले थे।
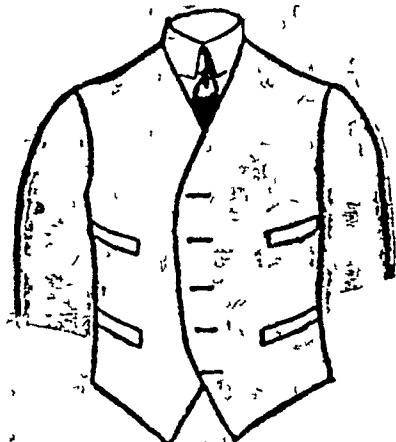
चित्र सं० २४३

कारण—इस अवस्था में जैसाकि चित्र सं० २४३ को देखने से मालूम होता है वास्कट बाक़ी सब प्रकार से ठीक है।

इस वास्ते नुक्स का कारण यह मालूम होता है कि वास्कट का सामना छाती पर आगे की तरफ़ ज्यादा चौड़ा बनाया गया है इस का मतलब यह नहीं है कि सामने का आगे का किनारा छाती पर से आगे को निकाल दिया गया है बल्कि वास्तव मे बात यह है कि ग्राहक का शरीर इस स्थान पर पतला है अर्थात् अन्दर को धसा हुआ है। परन्तु वास्कट काटते समय इस बात का ध्यान नहीं रखा गया बल्कि सामने के आगे के किनारे को जोकि छाती पर जाकर अन्दर को चला जाना चाहिये था बिल्कुल सीधा बनाया गया है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते यदि वास्कट के सामने बिल्कुल तैयार न हो चुके हों अर्थात् उन मे बटनो के वास्ते काज न बनाये जा चुके हों तो उस अवस्था मे यह नुक्स बडी आसानी से दूर हो सकता है। वह यह कि वास्कट के सामने को आगे किनारे पर से ही छांट दिया जाये जहां पर कि यह ढीला हो।

परन्तु जब वास्कट के सामने कच्चे न हों अर्थात् वह बिल्कुल तैयार हो चुके हों और उन मे बटनों के वास्ते काज इत्यादि किये जा चुके हों तो उस अवस्था मे ऐसा करना न केवल मुश्किल है बल्कि बिल्कुल असम्भव है इस वास्ते ऐसी अवस्था मे सिवाये इस बात के और कुछ नहीं हो सकता कि वास्कट की पीठ के गले अथवा टीक को ऊपर से छांट देना चाहिये और फिर टीक को अथवा पीठ को ऊपर को खिसका कर इसे सामने के कन्धे के साथ लेजाकर मिला देना चाहिये जैसाकि चित्र सं० ३४४

में निशान १४ पर करके दिखाया गया है। ऐसा करने से पीठ का कन्धा मोंढे की तरफ़ से सामने के कन्धे से छोटा हो जायगा इस वास्ते सामने के कन्धे को भी मोंढे की तरफ़ से छांट कर पीठ के कन्धे के बराबर बनाओ जैसाकि इस चित्र मे निशान १६ पर किया गया है।
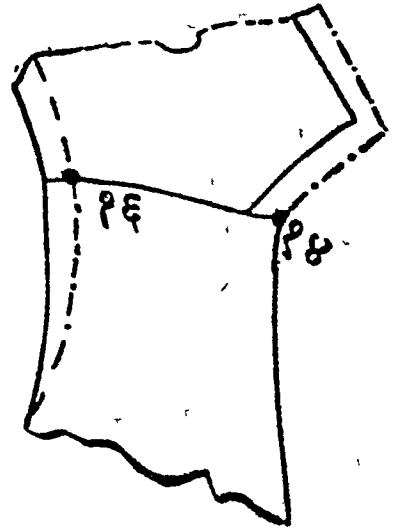
चित्र सं० २४४

ऐसा करने से वास्कट की पीठ क्योंकि ऊपर की तरफ़ सुरकाई गई है इस वास्ते सामना पीछे की तरफ़ धकेला जायगा जिस से इस के आगे के किनारे पर की ज्यादती मोंढे की तरफ़ चली जायगी जोकि जरूरत के मुताबिक पीठ के साईड को दबाने से दूर की जा सकती है इस तरह से नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा॥

(१९) सामने के मोंढे पर वास्कट का तंग होना
(TIHGNESS FRONT SCYE)

कई लोग इसे बिल्कुल साधारण बात समझते हैं परन्तु बहुत से लोग ऐसे भी मिलेगे जोकि इस नुक्स को अच्छी तरह नहीं जानते होंगे और इस पुस्तक को लिखने का हमारा मतलब यह है कि इस से प्रत्येक को लाभ हो इस वास्ते हम इस का यहां पर लिखना ज़रूरी समझते हैं।

चाहे वास्कट के मोंढे की गोलाई को कितना ही आगे की तरफ़ क्यों न कर दिया जाय परन्तु यह तंगी बिल्कुल दूर नहीं होती। जब ग्राहक बैठ जाता है अथवा अपने बाजू आगे की तरफ़ करता है तो यह तंगी और भी ज्यादा मालूम होने लगती है। दोनों हालतों में पीठ पर मोंढे की हड्डियों पर काफ़ी बोझ पड़ता है और जब वास्कट कुछ दिनों तक पहिन ली जाय कन्धों पर तिरछे शिकन पड़ते नजर आने लगते हैं जैसाकि चित्र सं० २४५ से ज़ाहिर किया गया है।
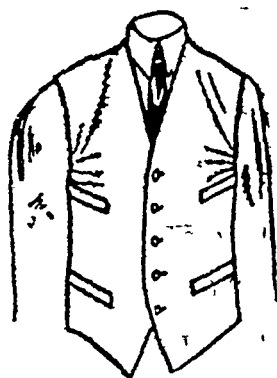
चित्र सं० २४५

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि वास्कट के सामने में हाले से लेकर बग़लों में से होते हुए पीठ के बीच की सिलाई तक का नाप जरूरत से छोटा है जिस का परिणाम यह होता है कि न केवल वास्कट के सामने के कन्धे की ऊंचाई आगे की तरफ़ से ज़रूरत से छोटी है बल्कि यह कन्धा भी बहुत ज्यादा मोंढे की तरफ़ चला गया है। इस से वास्कट का हाला सामने को मोंढे पर से अपनी तरफ़ खेंचता है और इस प्रकार का नुक्स पड़ता है जोकि चित्र सं० २४५ से ज़ाहिर किया गया है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते जरूरी है कि वास्कट के

सामने के हाले को आगे की तरफ़ से बाहिर निकाल कर सामने के कन्धे को आगे की तरफ़ से बढ़ा दिया जाय। जैसाकि चित्र सं० २४६ मे निशान ३ पर किया गया है। ऐसा करने से वास्कट के सामने का कन्धा जरूरत से ज्यादा लम्बा अथवा बड़ा हो जाता है। इस ज्यादती को दूर करने के वास्ते इसे मोंढे की तरफ़ से इतना छोटा करो जितना कि इसे आगे की
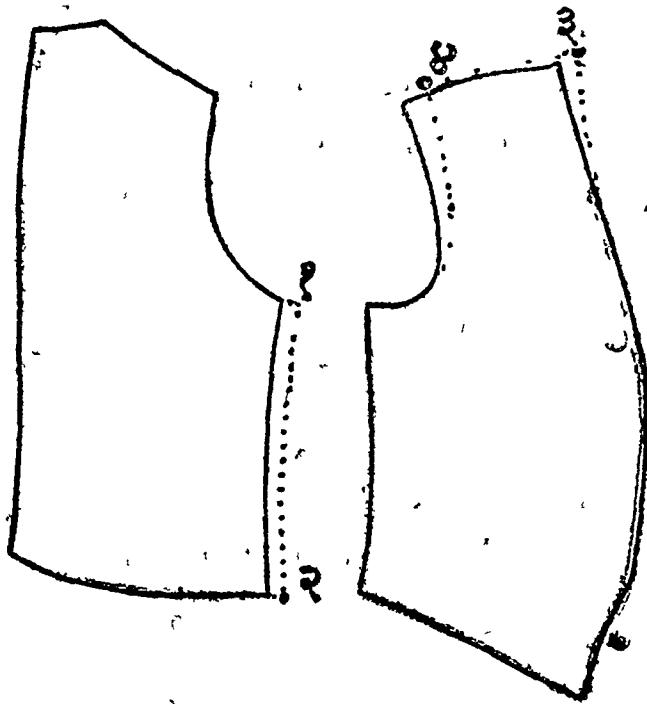
चित्र सं० २४६

तरफ़ से निशान ३ पर बड़ा किया हो जैसाकि इस चित्र में निशान ४ पर किया गया है। अब चित्रानुसार बिन्दियों वाली

लकीरों की सहायता से सामने के हाले, कन्धे तथा मोंढे की गोलाईयाँ बनाओ तो नुक्स दूर हो जायगा।

परन्तु जब वास्कट बिल्कुल तैयार हो चुकी हो अर्थात् उस के काज भी बनाये जा चुके हों तो ऐसी अवस्था मे वास्कट के सामने के हाले पर के दबाव को बाहिर निकालना मुश्किल होता है। इस वास्ते ऐसी अवस्था मे नुक्स को दूर करने का केवल यही तरीका रह जाता है कि वास्कट की पीठ का साईड पर का दबाव बाहिर निकाल कर इसे ढीला कर दिया जाय ताकि वास्कट की पीठ पहले से ज्यादा मोंढे की तरफ अथवा बगल के नीचे चली जाय जिस से सामने का मोंढा आगे की तरफ चला आये और ऊपर बताई गई सारी तंगी दूर हो जाय। इस चित्र मे निशान १ से लेकर २ तक वास्कट की पीठ को साईड पर से ढाला किया गया है।

(२०) वास्कट की पीठ पर टीक का बहुत नीचा होना।

(VEST TOO LOW AT BACK NECK)

यह नुक्स चित्र स० २४७ से जाहिर किया गया है इस मे वास्कट की पीठ की टीक ग्राहक की गर्दन पर उस स्थान तक ऊची नही रहती जहाँ तक कि इसे होना चाहिये बल्कि उससे बहुत नीची रह जाती है जिस का परिणाम यह होता है कि कमीज़ के कालर का शटड बटन जो पीछे लगाया जाता है वह वास्कट के नीचे रह जाने के कारण से बाहिर
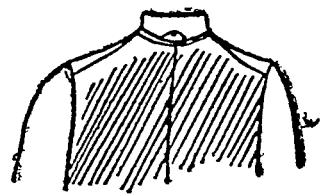
चित्र स० २४७

नज़र आता रहता है। परन्तु वास्तव मे इसे ऐसा नही होना चाहिये बल्कि साधारण अवस्था मे यह वास्कट की टीक के अन्दर छुपा रहता है। चाहे वास्कट की टीक को कितना ही बार २ खेंच कर ऊपर की तरफ़ ले जाया जाय परन्तु यह शीघ्र ही नीचे को उतर आती है और साधारण हालत मे जहाँ पर कि इसे खेंच कर रखा जाता है यह बिल्कुल नहीं ठहरती।

कारण—इस नुक्स के दो कारण हो सकते है पहला तो यह कि वास्कट की पीठ की छाती से ऊपर २ की ऊंचाई सामने की अपेक्षा छोटी है जिससे सामना तो अपनी असली जगह पर ठीक आ जाता है परन्तु पीठ जोकि कम ऊंची बनाई गई होती है ग्राहक की गर्दन से नीचे रह जाती है।

इस नुक्स का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि चाहे वास्कट की टीक की ऊंचाई ठीक क्यों न बनाई गई हो परन्तु वास्कट की पीठ के कन्धे की सिलाई के बिल्कुल सीधा बनाये जाने से भी यह नुक्स पड़ जाता है। अर्थात् यदि वास्कट की पीठ के कन्धे को टीक के पास से थोडा सा गहरा न किया जाय तो भी इस प्रकार के नुक्स के पड़ जाने की सम्भावना है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते देखना यह चाहिये कि इस का कारण क्या है। अर्थात् यदि इस नुक्स का कारण पीठ के कन्धे का गहरा न बनाया जाना हो, अथवा यह नुक्स पीठ के कन्धे के बिल्कुल सीधा बानाये जाने से पड़ता हो तो पीठ के कन्धे को टीक के पास जरूरत के मुताबिक गहरा कर

लेना चाहिये जैसाकि चित्र सं० २४८ मे बिन्दियों वाली लकीर से निशान ९ पर करके दिखाया गया है।

परन्तु जब नुक्स का कारण यह न हो बल्कि यह नुक्स पीठ की टीक के सामने के हाले की अपेक्षा कम ऊंचा बनाया जाने से पड़ा हो तो उस अवस्था मे पीठ को ऊपर से नीचे लिखी रीति से ऊंचा करना चाहिये। चाहे वास्कट तैयार हो चुकी हो अथवा नई पीठ बनानी हो तो इस नुक्स के ठीक करने का तरीका यही है कि वास्कट की पीठ को सामने से ऊपर की तरफ़ सुरका दिया जाय। अर्थात् वास्कट की पीठ को मोंढे से नीचे साईड
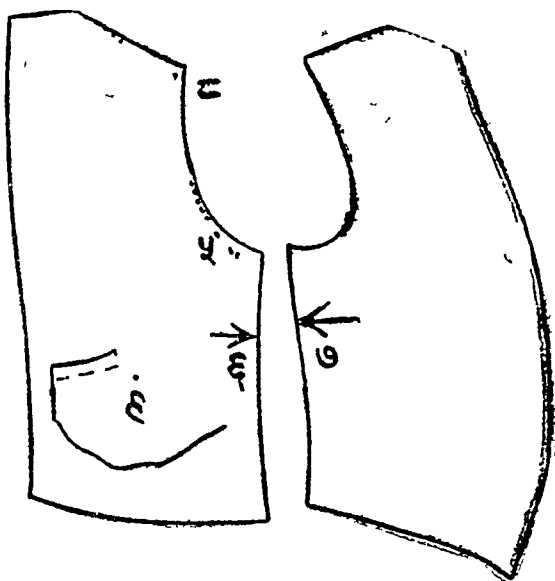
चित्र सं० २४८

पर से छाँट देना चाहिये जैसाकि चित्र सं० २४८ मे निशान ५ पर ज़ाहिर किया गया है। इस तरह से पीठ जरूरत के मुताबिक

ऊंची चली जायगी और पीठ का निशान ६ जो सामने के साईड पर के निशान ७ से पहले जरा नीचे को था अब पीठ को ऊपर सुरकाने से पीठ का निशान ६ सामने के निशान ७ के साथ ही जोड़ा जायगा। और इस तरह से वास्कट की पीठ की लम्बाई, जो सामने की अपेक्षा नीचे से छोटी हो जायगी, पीठ के घेरे पर के दबाव को बाहिर निकाल कर पूरी की जायगी। ऐसा करने से क्योंकि वास्कट की पीठ ऊपर को सुरकाई गई है इस वास्ते टीक पर का नुक्स तो दूर हो जायगा परन्तु मोंढे को नीचे से छाँटने अथवा गहरा करने से पीठ के कन्धे की ऊंचाई बाहिर अथवा मोंढे की तरफ़ से ज़रूरत से ज्यादा हो जायगी। इस वास्ते ऐसी अवस्था में पीठ के कन्धे को भी उतना नीचा करने की ज़रूरत होती है जितना कि इस के मोंढे को निशान ५ पर गहरा किया गया होता है। इस चित्र मे निशान ८ पर वास्कट की पीठ के कन्धे को ज़रूरत के मुताबिक नीचा किया गया है॥

(२१) वास्कट की टीक का कमीज़ के कालर से दूर खड़े रहना।

(BACK NECK STANDING AWAY FROM THE COLLAR)

यह नुक्स चित्र सं० २४६ से जाहिर किया गया है इस मे वास्कट की पीठ ग्राहक की गर्दन से दूर उठ खडी होती हैं और

चित्र स० २४६

नीचे वास्कट की पीठ मे टीक से दो अथवा तीन इंच तक सीधे शिकन पड़ते नजर आते है । इस प्रकार के नुक्स प्राय: ऐसे ग्राहकों की वास्कटों मे पडते है जिन की गर्दन आगे को झुकी हुई होती है ।
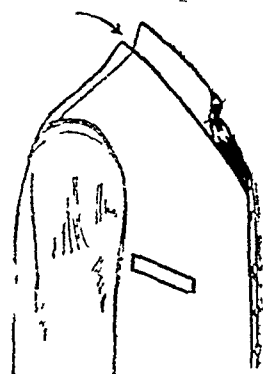
कारण—इस नुक्स का कारण बिल्कुल साधारण है। अर्थात् जिस ग्राहक के वास्ते यह वास्कट बनाई गई है उस की गर्दन तो आगे को झुकी हुई है परन्तु वास्कट काटते समय इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं दिया गया बल्कि इसे नार्मल शकल वाले आदमी के मुताबिक ही बना दिया गया है । अर्थात् वास्कट की पीठ काटते समय इस के बीच की सिलाई को ग्राहक के शरीर के मुताबिक गोल नही बनाया गया बल्कि इसे बिल्कुल सीधा बनाया गया है जिस से वास्कट की पीठ कमर से ऊपर २ ग्राहक के शरीर के साथ लगी रहने की बजाय उससे दूर उठ खडी होती है और टीक से नीचे शिकन भी पडने लग जाते है जैसाकि ऊपर चित्र स० २४६ से जाहिर किया गया है ।

यदि वास्कट तैयार हो चुकी हो तो वास्कट ग्राहक को पहिना कर पीठ के बीच की सिलाई के फ़ाल्तू कपड़े को पकड कर पिन से टॉक दो और चित्र सं० २५० के अनुसार इसे पीछे

छाती की लकीर से लेकर ऊपर की तरफ से उतना दबा देना चाहिये जितना कि ट्राई करते समय इस ज्यादती को पिन से टाँक कर मालूम किया हो। टीक पर की जो ज्यादती ट्राई करते समय पिन से टाँकी हो उसे तो चित्र सं० २५० के अनुसार निशान १० पर दबा दो और निशान १० को पीठ के बीच की सिलाई के साथ छाती वाली लकीर तक लेजाकर
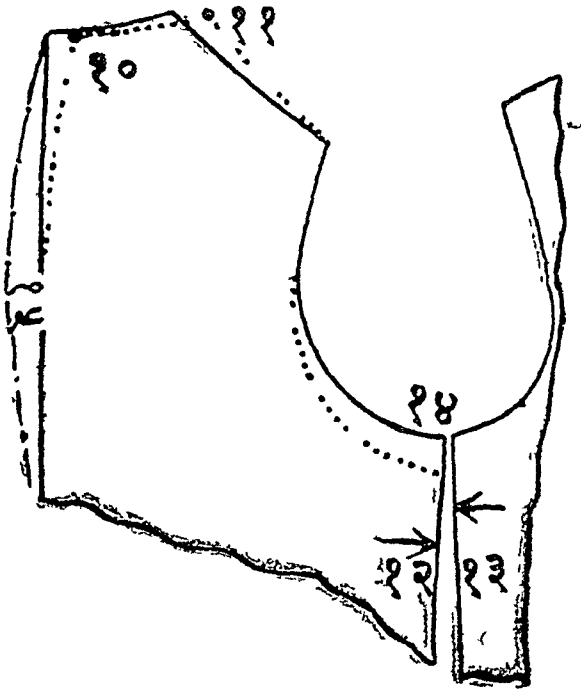
चित्र सं० २५०

मिलाओ जैसाकि इस चित्र मे बिन्दियों वाली लकीर से निशान १० से नीचे करके दिखाया गया है।

ऐसा करने से टीक की चौड़ाई जरूरत से छोटी हो जाती है इस वास्ते निशान ११ पर टीक को जरूरत के मुताबिक चौड़ा करो। अर्थात् कन्धे पर के दबाव को बाहिर निकाल कर टीक को जरूरत के मुताबिक चौड़ा करो जैसाकि इस चित्र मे निशान ११ पर किया गया है। इस के साथ ही पीठ को भी थोड़ा सा ऊपर को सुरकाने की ज़रूरत होती है जैसाकि इस चित्र मे निशान १२ को, जोकि सामने के साईड पर के निशान१३ से ऊचा है, निशान१३ के साथ मिलाने से किया गया है। अर्थात् १२ को १३ से मिला कर पीठ को थोड़ा सा ऊपर को सुरका दो। इस तरह से पीठ का साईड तो ऊपर मे बढ़ जाता है उसे निशान १४ पर छॉट कर न केवल साईड को ही ऊपर से सामने के साईड के बराबर बना दो बल्कि पीठ का मोंढा भी इस तरह से गहरा हो जायगा कि पीठ आसानी से ऊपर को सुरक कर ग्राहक की गर्दन के ऊपर ठीक चली जायगी और नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा। अर्थात् अब वास्कट की टीक ग्राहक की गर्दन से दूर नहीं उठ खड़ी होगी॥

(२२) वास्कट के हाले का बहुत ऊचा होना

(WHEN THE VEST OPENING FINISHES TOO HIGH)

यह नुक्स कोई नाप लेते समय गलती हो जाने तथा वास्कट के काटने मे गलती होने से नहीं पड़ता बल्कि यह नुक्स ऐसे ग्राहको की वास्कटों मे पड़ता है जिन्हों ने पहली बार ही वास्कट पहिनी हो और बनवाने से पहले वह अपने विचारों को भली

भांति न समझ सके हों बल्कि वास्कट के तैयार हो जाने पर ही उन को अनुभव हुआ हो कि वास्कट का हाला ऊंचा है जोकि उनको देखने मे बुरा मालूम होता है ।

इस नुक्स को दूर करने का सरल तरीका यह है कि यदि वास्कट के काज न बनाये गये हों तो हाले को ऊपर से छांट कर ज़रूरत के मुताबिक इसे लम्बा अथवा नीचा किया जाय । परन्तु जब वास्कट तैयार हो चुकी हो अथवा उसमे काज इत्यादि बनाये जा चुके हों तो ऐसी अवस्था मे हाले को ऊपर बताई गई रीति से लम्बा करना अति कठिन मालूम होता है क्योंकि ऐसा करने से वासकट के ऊपर के काज को भी काटना पड़ता है जिससे न केवल ऊपर का काज़ ही जब ज़रा नीचे किया जायगा बहुत बुरा मालूम देगा क्योंकि वह दूसरे बटन से उतनी दूरी पर न होगा जितनी दूरी पर कि वासकट के बाकी काज़ अथवा बटन एक दूसरे से होंगे । अथवा यह दूसरे बटन अथवा काज़ के बिल्कुल पास चला जायगा और इस के इलावा वासकट का हाला उस स्थान पर जहां से कि काज काटा जायगा बहुत गहरा हो जायगा इस वासते ऐसी अवसथा मे हाले को ऊपर बताई गई रीति से नीचा करना अति कठिन मालूम होता है ।

इस वासते ऐसी अवसथा मे इस नुक्स को दूर करने का सरल और ठीक तरीका यह है कि वास्कट की पीठ के कन्धे पर का दबाव ऊपर से बाहिर निकाल कर इसे पहले से ज्यादा ऊंचा किया जाय जिस से पीठ के कन्धे की ऊंचाई की यह

ज्यादती ग्राहक के सामने की तरफ़ चली आवे और वास्कट का सामना पहले से जरा ज्यादा नीचे को खिसक आये जिस से इसका हाला भी लम्बा मालूम होने लगे। चित्र सं० २५१ मे १६ से १७ तक पीठ के कन्धे पर के दबाव को बाहिर निकाल कर ऊंचा किया गया है। ऐसी अवस्था मे पीठ को साईड पर से ऊपर को सुरकाने की भी जरूरत होती है जैसाकि इस चित्र मे निशान १८ पर करके दिखाया गया है॥

चित्र स० २५१

(२३) वास्कट की कमर से नीचे खिच पड़ना।

(DRAGGING OVER THE BUTTOCKS)

इस प्रकार का नुक्स उस समय पडता है जबकि वास्कट की पीठ की लम्बाई जरूरत से ज्यादा बनाई गई हो और ग्राहक के चूतड़ ज्यादा मोटे अथवा बाहिर को उभरे हुए हों परन्तु वास्कट काटते समय इस बात की तरफ़ बिल्कुल ध्यान न दिया गया हो।

इस नुक्स को दूर करने का सरल तरीका यह है कि वास्कट की पीठ को साईड अथवा घेरे पर से दबा देना चाहिये जैसाकि चित्र सं० २५२ मे निशान १६ अथवा २० पर करके दिखाया

गया है। इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि यहां पर से केवल पीठ के नीचे वाले कपड़े को दबाना चाहिये न कि ऊपर वाले कपड़े को।

इस नुक्स को दूर करने का दूसरा तरीका यह है कि पीठ मे से कमर पर मोंढे की हड्डियों से नीचे एक तिरछी डाट निकाल लेनी चाहिये जैसाकि इस चित्र मे निशान २१ पर करके दिखाया गाया है। ऐसा करने से पीठ की
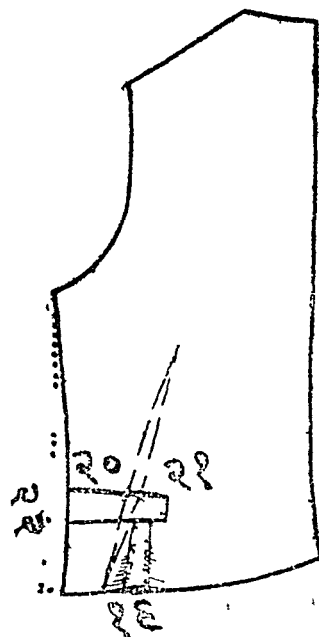
चित्र सं० २५२

चौड़ाई कमर पर जितनी कम हो गई है निशान २२ पर, पीठ के साईड पर को दबाव को बाहिर निकाल कर इस कमी को पूरा करो तो नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा ॥

(२४) डबल ब्रैसट वास्कट का लपेल के भान पर फूलना

(D.B.COLLARED VEST BULGING AT THE CREASE)

यह नुक्स चित्र सं० २५३ से ज़ाहिर किया गया है। इस प्रकार के नुक्स प्रायः ऐसे आदमियों के कोटों मे पडते है जिन का शरीर नार्मल शकल वाले आदमी की अपेक्षा अकडा हुआ होता है अथवा छाती बाहिर को उभरी हुई होती है। इस अवस्था

मे नपेल का भान ग्राहक के शरीर पर के उस स्थान से दूर उठ खडा होता है जहां पर कि छाती बाहिर को उभरी हुई होती है । और जब ग्राहक बैठ जाता है तो यहा पर वास्कट इतनी ऊपर को उभर खडी होती है कि इस के अन्दर से क़मीज का बहुत
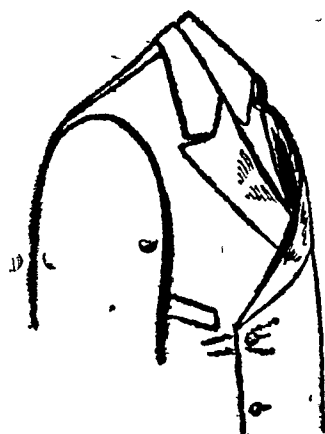
चित्र स० २५३

सा हिस्सा नजर आने लगता है । इस के इलावा वास्कट के ऊपर के बटन पर भी खिच पड़ने लगती है जैसाकि इस चित्र मे बटन के दोंनों तरफ़ के निशान खिच को जाहिर करते हैं ।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि नपेल के भान पर या तो टेप को तान कर नही दिया गया जिससे कि यह शरीर पर ठीक बैठ सके या इस मे से डाट निकाल कर इसे छोटा कर दिया जाता है । अर्थात् हर अवस्था में इसे ऐसा बनाना चाहिये कि यह लकीर पूरी तरह से तनी अथवा खिची रहे । यहां पर इस बात का जानना भी ज़रूरी है कि डबल ब्रैस्ट वास्कटों मे इसे सिङ्गल ब्रैस्ट वास्कटों की अपेक्षा ज्यादा खेच अथवा तान कर रखने की ज़रूरत होती है क्योंकि ऐसी अवस्था मे इसकी लम्बाई ज्यादा हो जाती है जोकि शरीर पर गोलाई मे बैठती है । इस वास्ते इसे ध्यान पूर्वक तान कर बनाना चाहिये । जिसके दो

तरीके हैं पहला तो यह कि इसमे से जरूरत के मुताबिक डाट निकाल लिये जायें जिससे यह छोटी होकर इस स्थान पर तन जाय अथवा इसके अन्दर जो टेप दी जाती है वह इतनी खेंच अथवा तान कर रखी जाय जोकि मतलब को पूरा कर सके। यदि इस के साथ ही सामने के कन्धे की ऊंचाई हाले की तरफ़ से ज्यादा हो तो यह नुक्स और भी ज्यादा नज़र आने लगता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते यदि आप इसे केवल कारीगरों के ऊपर छोड़ देगे और उन्हें कह देगे कि नपेल के भान में टेप तान कर दे देना तो इस तरह से आप को पूरी २ सफलता नहीं होगी क्योंकि ऐसी अवस्था मे वह लोग जो इस बात को समझने में पूरी तरह समर्थ नहीं होतें, या तो ज़रूरत से ज्यादा इस टेप को तान देते हैं जिससे नुक्स दूसरी शकल मे उलट जाता है या वह इसे इतना कम खेंचते है कि नुक्स पूरी तरह दूर होता ही नहीं।
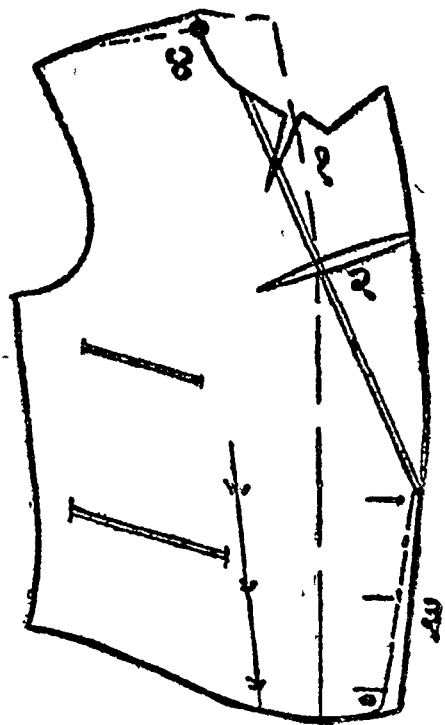
चित्र सं० २५४

इस वास्ते ऐसी अवस्था मे पूरी सफलता प्राप्त करने के

वास्ते यदि आप चाहते है कि नुक्स दूर हो जाय तो आप स्वयम् ही वास्कट के ख़ाके मे से नपेल के भान पर से ही एक या दो डाट निकाल ले जैसाकि चित्र सं० २५४ मे निशान १ और २ पर किया गया है । ऐसा करने से न केवल नपेल के भान पर की लकीर ही छोटी हो जाती है बल्कि जहा पर ग्राहक की छाती उभरी हुई होती है वहा पर भी यह बाहिर को फूल आती है जिससे छाती के उभार पर ठीक बैठ सके । यह डाट निकालते समय इस बात का ध्यान रखना भी जरूरी है कि डाट नपेल के भान पर से तो ज्यादा दबानी चाहिये और किनारों पर से कम जैसाकि इस चित्र मे ज़ाहिर किया गया है ।

यदि वास्कट के सामने के आगे के किनारे को कमर पर से जरा पीछे को हटा दिया जाय जैसाकि इस चित्र मे निशान ३ पर ज़ाहिर किया गया है और कन्धे की ऊंचाई को हाले की तरफ़ से जरा नीचा कर दिया जाय जैसाकि इस चित्र मे निशान ४ पर किया गया है तो और भी अच्छा परिणाम होता है । क्योंकि ऐसा करने से वास्कट की कमर पर किसी प्रकार का दबाव अथवा बोझ नही पडता जिससे हाला बिल्कुल ठीक बैठता है और उसमें किसी प्रकार का झोल नही पडता ॥

(२५) डबल ब्रैसट वास्कट के दोनों सामनों का तलपट घेरे पर एक दूसरे के मुताबिक न होना ।

(IRREGULAR RUN OF BOTTOM)

यह नुक्स चित्र सं० २५५ से जाहिर किया गया है इस मे

एक तरफ़ के सामने का घेरा दूसरी तरफ़ के घेरे पर पूरा २ बैठने की बजाय इस तरह पड़ता है कि एक तरफ़ के सामने का घेरा कोने पर दूसरी तरफ़ के सामने के घेरे से नीचे ढिलक जाता है जिस से यह ढिलके हुए हिस्से नज़र आने लग जाते है।

चित्र स० २५५

कारण—डबल ब्रैस्ट वास्कटों मे तलपट के वास्ते जो फ़ाल्तू कपड़ा रक्खा जाता है उस के पीछे अवस्था अन्दर वाले किनारे अथवा सीमा को सैण्टर लाईन कहते हैं। वास्कट के घेरे की गोलाई बनाते समय सैण्टर लाईन से पीछे की तरफ़ उस स्थान तक की गोलाई जोकि इस से आगे की चौडाई के बराबर हो बिल्कुल आगे के अनुसार बनाई जाती है अर्थात् सैण्टर लाईन के आगे घेरा जितना चौड़ा होता है पीछे की तरफ़ भी उतना चौड़ा निशान लगा कर घेरे को इस तरह से गोल करो कि इन दोंनों भागों की गोलाई जो सैण्टर लाईन से आगे तथा पीछे की तरफ़ है एक जैसी हो। इस का सरल तरीका यह है कि वास्कट के सामने को सैण्टर लाईन पर भान डाल कर इस लाईन के आगे वाले हिस्से को पीछे की तरफ़ उलट देना चाहिये और फिर बिना किसी बन्धन के जैसा जी चाहे घेरे की गोलाई कर लेनी चाहिये। ऐसा

करने से क्योंकि दोंनों सामनो को एक दूसरे के ऊपर रख कर गोलाई की जाती है इस वास्ते दोंनों तरफ़ की गोलाईयां एक जैसी होती है परन्तु इस चित्र वाली वास्कट मे इसे ऐसा नही वनाया गया जिस से यह नुक्स पड़ जाता है।

जब वास्कट के सामने तैयार हो जाये तो पीठ जोडने से पहले उन को एक दूसरे के ऊपर इस तरह रक्खो कि दोंनों की सैण्टर लाईन एक दूसरे के ऊपर आय जैसाकि चित्र सं० २५६ से जाहिर किया गया है। यदि आप की वास्कट का घेरा ठीक होगा तो वह इस अस्था मे रखने से एक दूसरे के ऊपर ठीक बैठगे जैसा कि इस चित्र मे बिंदियों वाली लकीर से निशान ६ पर जाहिर किया गया है और यदि ठीक नहीं होगा तो इस की शकल भी चित्र
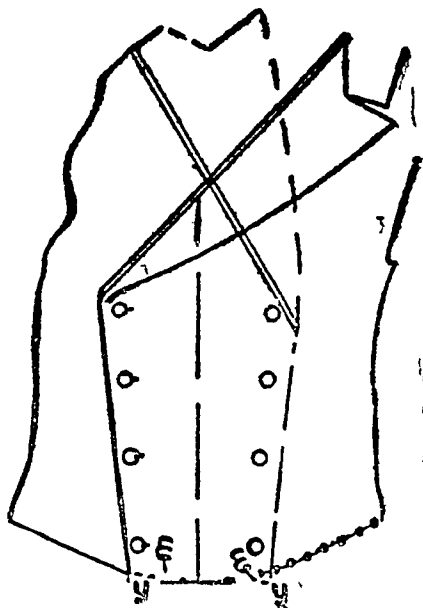
चित्र सं० २५६

अनुसार निशान ५ के घेरे के मुताबिक होगी ऐसी अवस्था मे उसे एक दूसरे के मुताबिक निशान लगा कर छाट कर फिर काटने की ज़रूरत होती है अथवा निशान ५ पर जो हिस्से नीचे

को ढिलके हुए हैं छांट कर नुक्स को दूर करो।

(२६) ड्रैस वास्कट के हाले में झोल पड़ना।

(DRESS VEST LOOSE AT THE OPENING)

यह नुक्स चित्र सं० २५७ से ज़ाहिर किया गया है इस में नेपेल के भान वाले किनारे मे झोल पड़ता है जिस से वह शरीर से दूर उठ खड़ा होता है ॥

कारण—इस नुक्स के दो कारण हो सकते हैं पहला तो यह कि वास्कट के सामने का कन्धा ज़रूरत से बहुत ज्यादा पीछे की तरफ़ चला गया हो अथवा वास्कट का हाला ज़रूरत से ज्यादा छांटा गया हो। और इसका दूसरा कारण यह भी हो सकता है
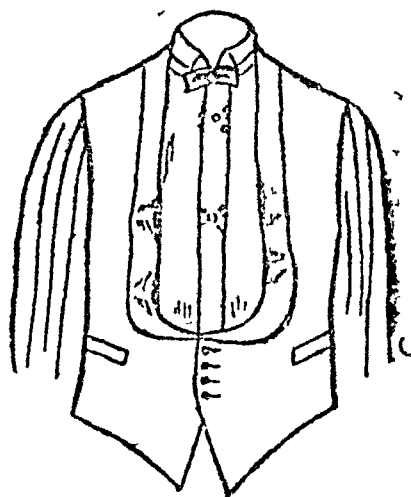
चित्र सं० २५७

कि वास्कट का सामना कमर पर तंग हो जिस से वह पेट अथवा कमर पर तंग होने के कारण से यहां पर खिच डालती है। इस का परिणाम यह होता है कि हाला फूलने लगता है अर्थात् न केवल यह शरीर से दूर उठ खड़ा होता है बल्कि इस मे झोल भी पड़ने लग जाते हैं।

क्योंकि इस प्रकार की वास्कटों का हाला साधारण वास्कटों

की अपेक्षा ज्यादा लम्बा होता है और इसके इलावा इसकी गोलाई इतनी गहरी बनाई जाती है कि किसी भी वास्कट के हाले की गहराई ड्रैस वास्कटों जैसी नही होती। इस वास्ते इस प्रकार की वास्कटों के हाले को फ़िट करना कोई साधारण काम नहीं है बल्कि बहुत सी कोशिश की ज़रूरत होती है और हाले अथवा नपेल के भान के अन्दर की टेप रखने मे विशेष निपुणता की ज़रूरत होती है।

इस नुक्स को दूर करना चित्र सं० २५८ की सहायता से समझाया गया है। वास्कट को कपड़े पर से काटने से पहले इस का कागज़ का खाका काट लेना चाहिये फिर उस के मोंढ़े से लेकर सामने को चित्र अनुसार निशान ७ से लेकर ८ तक तिरछा काट देना चाहिये। यहा पर इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि सामने को मोंढे से लेकर उस तरफ़ को तिरछा काटना चाहिये जिधर को कि छाती का उभार आता हो। अब हाले मे से चित्रानुसार ९ से लेकर ८ तक एक तिरछी डाट निकालो। ऐसा करने से क्योंकि सामना ७ से ८ तक पहले ही काटा हुआ है इस
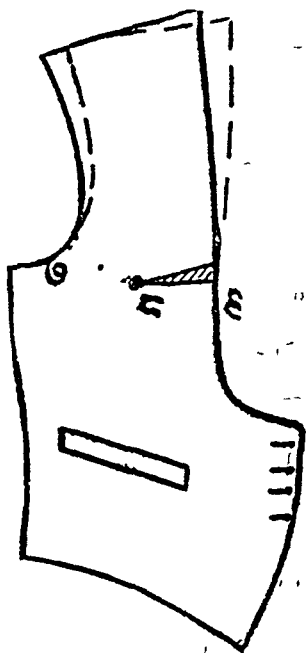
चित्र स० २५८

वास्ते मोंढा यहां पर खुल जायगा जैसाकि बिन्दियों वाली लकीर से ज़ाहिर किया गया है और सामने का कन्धा आगे की तरफ़ चला आयगा जैसाकि इस चित्र मे डैश वाली लकीरों से ज़ाहिर किया गया है। इस तरह से ७ से ८ तक जहां पर कि वास्कट का सामना खुल जाता है यह जितना खुलता है उतना ही काग़ज़ का टुकड़ा इस मे जोड़ दो ताकि वास्कट का सामना न केवल आगे की तरफ़ सुरक आये जैसाकि निशान ६ पर की डाट निकालने से हो गया है तथा वास्कट का हाला छोटा होकर ठीक हो जाय बल्कि सामना ग्राहक की छाती पर भी ठीक बैठ सके।

इस नुक्स को दूर करने का एक और तरीका भी है जोकि चित्र सं० २५६ से ज़ाहिर किया गया है। इस अवस्था में सामने की कमर में से डाट निकाली गई है और जब निशान ६ पर हाले में से डाट निकाली जायगी तो वास्कट का सामना नीचे की तरफ़ से आगे को सुरक आयगा जैसाकि डैश वाली लकीरों से ज़ाहिर किया गया है। इस तरह करने से क्योंकि वास्कट का सामना कमर पर आगे को चला आता है इस वास्ते यहा पर खिच
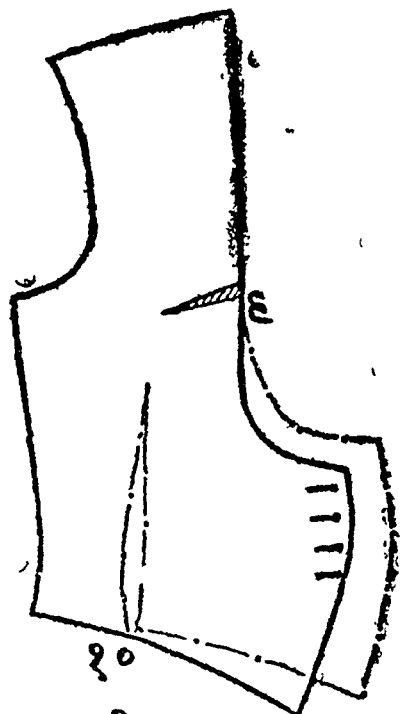
चित्र सं० २५६

न पड़ने से हाले मे किसी प्रकार का झोल नही पड़ता और नुक्स बिल्कुल दूर हो जाता है। यहां पर इस बात का जता देना भी जरूरी मालूम होता है कि वास्कट के सामने मे कमर पर से जो निशान १० पर डाट निकाली गई है उसकी कमी को पूरा करने के वास्ते जरूरत के मुताबिक साईड पर के दबाव को बाहिर निकाल देना चाहिये॥

(२७) मोटे पेट वाले आदमी की वास्कट का घेरा शरीर से दूर उट खड़ा होना।

(CORPULENT VEST STANDING AWAY ON BOTTOM EDGE)

जैसाकि मोटे पेट वाले आदमियों के कोटों के विषय मे भी बता चुके हैं कि कोट कमर अथवा पेट से नीचे शरीर के साथ लगा रहने की बजाय उससे दूर उठ खड़ा होता है। इसी तरह वास्कट मे भी यही नुक्स पड़ता है। अर्थात् मोटे पेट वाले अदमी के कोट तथा वास्कट दोंनों मे यह नुक्स पड़ता है। कही आप ग़लती से इस नुक्स को उस नुक्स के साथ न मिलाले जोकि चित्र सं० २१८ से जाहिर करके समझाया जा चुका है। बल्कि यह उस से भिन्न है और यह नुक्स प्राय. मोटे पेट वाले आदमी की वास्कट मे पड़ता है। इस अवस्था मे वास्कट का घेरा कमर से नीचे ग्राहक के शरीर पर ठीक नही बैठता बल्कि उससे दूर उठ खड़ा होता है।

कारण—इस नुक्स का कारण भी वही है जोकि कोटों के पाठ मे बताया जा चुका है। क्योंकि मोटे पेट वाले आदमी के कोट अथवा वास्कट मे, जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, यह नुक्स एक जैसा पड़ता है इस वास्ते इनके कारण भी एक जैसे होंगे। अर्थात् सामना काटते समय इस बात का विचार नही किया गया कि ग्राहक का पेट आगे को निकला हुआ है बल्कि इसे बिल्कुल नार्मल शकल वाले आदमी की वास्कट की तरह काटा गया है जिससे यह वास्कट ग्राहक के शरीर पर ठीक बैठने की बजाय कमर से नीचे उस से दूर उठ खड़ी होती है।

यदि आप चाहते है कि आपकी वास्कट मे इस प्रकार के नुक्स न पडे तो आपको चाहिये कि वास्कट का सामना काटते समय उसकी कमर पर की पाकट के निशान को पीछे का तरफ़ बढ़ा कर साईड तक लेजाओ। और ख़ाके को चित्र सं० २६० के अनुसार पाकट के आगे के सिरे पर नीचे की तरफ निशान ११ पर घेरे तक लेजाकर काट दो। अब वास्कट के सामने के घेरे में से निशान ११ पर से डाट निकालो। ऐसा करने से निशान १२ पर साईड में से सामना खुल जायगा और न
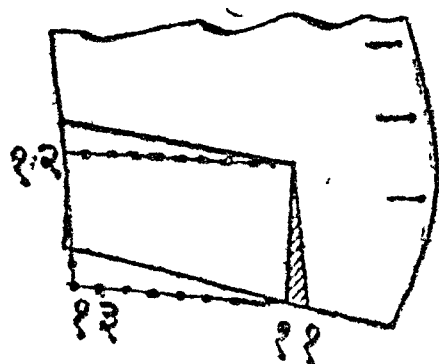
चित्र सं० २६०

केवल पाकट के मुंह की ऊपर तथा नीचे की दोंनों लकीरे एक

दूसरी से जुदा हो जायेगी बल्कि घेरा भी साईड पर से नीचे को उतर आयगा। जैसाकि बिन्दियों वाली लकीरों से जाहिर किया गया है। अर्थात् घेरे पर के दबाव को बाहिर की तरफ़ से अथवा साईड की तरफ से बाहिर निकाल कर नुक्स को दूर किया जा सकता है। क्योंकि ऐसा करने से पाकट के आगे के सिरे पर जहा पर कि ग्राहक का पेट बाहिर को निकला हुआ है वास्कट का सामना भी फूल जायगा और तोंद अथवा पेट पर ठीक आ-कर बैठेगा। और घेरा जिस मे से निशान ११ पर डाट निकाली गई है पीछे हट जायगा। इस वास्ते यह भी शरीर पर ठीक बैठे-गा। निशान १३ पर घेरे पर का दबाव बाहिर निकाला गया है जैसाकि इस चित्र मे बिन्दियों से जाहिर किया गया है।

ऐसा हम उस समय कर सकते है जबकि हमने वास्कट अभी काटनी हो और उसका काग़ज का ख़ाका काट रहे हों। परन्तु जब न केवल वास्कट कट चुकी हो बल्कि तैयार भी हो चुकी हो तो ऐसी अवस्था मे इस तरह से नुक्स दूर करना मुश्किल होता है जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है। इस वास्ते ऐसी अवस्था मे इस प्रकार के नुक्स दूर करने का आसान तरीका यह है। क्योंकि वास्कट की पाकटे तैयार हो चुकी होती है इस वास्ते इस मे से डाट नकाल कर सामने मे पेट के मुताबिक तौंद निकालना तो मुष्किल होता है। इस वास्ते ऐसी अवस्था मे घेरे को खोल कर उस मे खेच कर टेप दे देनी चाहिये और घेरे पर के फ़ाल्तू कपडे को खेच कर ऊपर की तरफ नम से धकेल देना

चाहिये जिससे न केवल पेट पर सामना ठीक आकर बैठेगा बल्कि घेरा भी ठीक हो जायगा।

इस अवस्था मे इस नुक्स के दूर करने का एक और तरीका भी है। वह यह कि पाकट के आगे के सिरे से लेकर घेरे तक एक डाट निकाल ली जाय जिससे न केवल इस डाट के ऊपर के सिरे अथवा पाकट के आगे के सिरे पर सामने मे पेट के वढ़ाव का प्रबन्ध हो जायगा वल्कि घेरा भी छोटा होकर पीछे को खिचा जायगा और शरीर के साथ ठीक जाकर वैठ जायगा। ऐसी अवस्था में एक कष्ट जरूर होता है कि सामने मे से इस स्थान पर निशान ११ पर से डाट निकालने से सामने मे सिलाई आजाती है जिस पर ग्राहक इतराज कर सकता है। यदि ग्राहक ऐसा न करे तो आप इस तरह से डाट निकाल सकते हैं वरना नहीं॥

वाज़ू वाली वास्कटों के नुक़्स

सिङ्गल ब्रेस्ट तथा डवल ब्रेस्ट विना आस्तीनों वाली वास्कटों के नुक्स वता चुकने पर हम आस्तीनों वाली वास्कटों के नुक्स वतलाते हैं जिनको आप भली भांति समझने का यत्न करें।

(२८) जब वाज़ू ऊपर को उठाये जायें तो वास्कट में खिच पड़ना

'DRAGGING WHEN THE ARMS ARE RAISED)

इस प्रकार के नुक़्स ऐसे कटरों की वास्कटों में वहुत पड़ते हैं जिन्हों ने आस्तीनो वाली वास्कटे वहुत कम काटी हों। जब

ग्राहक अपने बाजू ऊपर को उठाने लगता है तो सारी की सारी वास्कट आस्तीन के साथ ही ऊपर को खिची आती है जिससे ग्राहक के बाजू पर बहुत सा बोझ पड़ता है और वह यह अनुभव करने लगता है जैसेकि कोई उसके बाजू को नीचे की तरफ खेंच रहा हो। यह नुक्स चित्र सं० २६१ से जाहिर किया गया है।

चित्र स० २६१

कारण—जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है इस प्रकार के नुक्स प्राय ऐसे कटरों की वास्कट मे पड़ते है जिन्होने आस्तीनों वाली वास्कटे बहुत कम काटी हों। इस नुक्स के दो कारण हो सकते हैं। पहला तो यह कि वास्कट का मोंढा जरूरत से ज्यादा गहरा बनाया गया हो जिससे वास्कट बाजू के ऊपर को उठाते समय ऊपर को खिची जाती है। इसका दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि आस्तीन के नीचे का हिस्सा, जिसे ताल भी कहते हैं, मोंढे की गोलाई पर जरूरत से ज्यादा गहरा बनाया गया हो।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते पहले यह मालूम करना ज़रूरी है कि इसका कारण इन दोनों मे से कौनसा है जोकि ऊपर बताये गए हैं। इसके मालूम करने का आसान तरीका यह है कि ट्राई करते समय वास्कट के मोंढे खोल कर आस्तीनों को वास्कट से अलग करो। और वास्कट के मोंढे मे बगल के

नीचे हाथ डाल कर अनुभव करो कि वासकट का मोंढा ग्राहक की बग़लों से बहुत ज्यादा नीचे को तो नही चला गया। यदि ऐसा हो तो समझना चाहिये कि इस नुक्स का कारण भी मोंढे का ज़रूरत से ज्यादा गहरा बनाया जाना है और यदि वासकट का मोंढा ठीक हो अथवा ज्यादा गहरा न हो तो समझना चाहिये कि इस नुक्स का कारण आस्तीन के ताल के मोंढे का जरूरत से ज्यादा गहरा छांटा जाना है।

अब यदि इस नुक्स का कारण वासकट के मोंढ़े का ज़रूरत से ज्यादा गहरा बनाया जाना हो तो इसे ठीक करने के वास्ते वास्कट के सामने और पीठ को ऊपर की तरफ़ से छोटा कर देना चाहिये जैसाकि चित्र सं० २६२ मे पीठ को निशान १, २, ३ पर तथा सामने को निशान ५,६ पर छोटा किया गया है अर्थात् निशान १ पर पीठ मे टीक को उतना छाट कर नीचे करो जितना कि मोंढ़े की गहराई ज्यादा बनाई गई हो। अब टीक को निशान १ से २ तक बनाओ जोकि पहली टीक से उतनी नीचे को हो जितना कि निशान १ टीक से नीचे को बनाया गया है। अथित् पीठ के कन्धे के टीक वाले सिरे को भी निशान २ पर उतना ही नीचा करो जितना कि निशान १ को पीठ की टीक से नीचा किया हो और १ को २ के साथ गोलाई मे मिला कर नई टीक बनाओ जोकि पुरानी टीक से उतनी ही नीची बनाई गई है जितना कि वास्कट का मोंढा ज्यादा गहरा बनाया गया है जोकि इस नुक्स का मुख्य कारण है। अब पीठ के कन्धे को बाहिर वाले सिरे पर से भी निशान ३ पर

उतना ही नीचे करो तथा २ से ३ तक कन्धे की गोलाई बनाओ। ऐसा करने से वास्कट की पीठ जरूरत के मुताबिक ऊपर से नीचे कर दी गई है। इस वास्ते पीठ के मोंढे की गोलाई पर के उस निशान को भी, जहा पर कि आस्तीन का पास अथवा बाहिर की सिलाई जोड़ी जाती है, पहले से उतना नीचा करने की जरूरत होती है जितना कि पीठ को निशान १, २ तथा ३ पर नीचा किया हो जैसाकि इस चित्र मे निशान ४ पर किया गया है ।
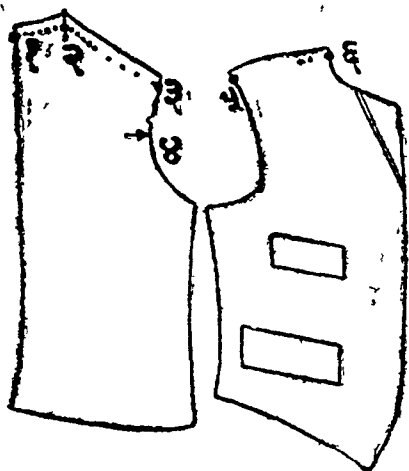
चित्र नं० २६२

इसी तरह पीठ के बराबर सामने के कन्धों को भी इस के दोंनों सिरों पर नीचा करो जैसाकि इस चित्र मे निशान ५ और ६ पर जाहिर किया गया है। ५ से ६ तक सामने के कन्धे की गोलाई बनाओ जोकि पहले वाले कन्धे से उतनी नीचे को हो जितना कि पीठ को ऊपर से नीचे किया गया है। ऐसा करने से न केवल वास्कट के सामने और पीठ ही ऊपर से नीचे हो जायेंगे बल्कि अब उस के मोंढों की गहराई भी स्वयम् ही ठीक हो गई है जोकि पहले बिल्कुल नीची थी ।

अब क्योंकि वास्कट के सामने और पीठ के कन्धे ऊपर से नीचे

किये गये हैं इस वास्ते आस्तीनों का मोंढा बाडी के मोंढे की अपेक्षा बड़ा हो जायगा। क्योंकि यह तो पहले ही बाडी के मुताबिक़ काटा गया है और बाडी का मोंढा ऊपर से छोटा हो जाने पर इसे भी छोटा करने की ज़रूरत होती है। इस वास्ते चित्र सं० २६३ के अनुसार आस्तीन के गोले के मोंढे की गोलाई को ऊपर से निशान ७ पर ज़रा नीचा करो और पास की तरफ़ से निशान ८ पर। चित्रानुसार निशान ८ और ७ को मिला कर गोले के मोंढे की गोलाई बनाओ जैसाकि इस चित्र में बिंदियों से करके दिखाया गया है। ऐसा करने से नुक्स तो बिल्कुल ठीक हो जायगा परन्तु वास्कट की लम्बाई थोड़ी सी घट जायगी चित्र सं० २६३ जिस की इतने बड़े नुक्स के दूर हो जाने के मुकाबले मे कोई परवाह नही करनी चाहिये।
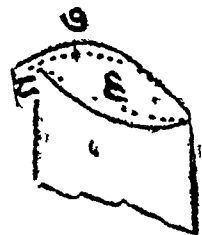
और यदि नुक्स का कारण आस्तीन के ताल के मोंढे का ज़रूरत से ज्यादा गहरा होना हो तो इस नुक्स को दूर करने के वास्ते आस्तीन के ताल के मोंढे को चित्र सं० २६३ के अनुसार निशान ९ पर कम गहरा बनाओ। यहां पर इस बात का ध्यान रखना भी जरूरी है कि वास्कट की आस्तीन के ताल के मोंढे की गोलाई बहुत गहरी नही बनाई जाती जैसाकि कोट के वास्ते बनाई जाती है बल्कि इससे कम गहरा बनाया जाता है जैसाकि इस चित्र मे निशान ९ पर बिन्दियों वाली लकीर से ज़ाहिर किया गया है॥

(२९) मोंढे और आस्तीन पर वास्कट का तग होना।
(TIGHTNESS IN THE SCYE & ACROSS THE SLEEVE)

यह नुक्स प्राय आस्तीनों वाली वास्कटों मे पड जाता है जब बाज़ू नीचे को किये जाये तो नुक्स इतना नही मालूम देता परन्तु ज्यों ही बाजू आगे को उठाया जाता है, चाहे एक बाजू आगे को किया जाये अथवा दोंनों तो उस अवस्था मे सामने के मोंढे के नीचे और पीठ मे मोंढे की हड्डियों पर बहुत सी तंगी मालूम होती है और इस के साथ ही आस्तीन पर बहुत ज्यादा खिच पड़ती रहनी है जिस से आस्तीन मे शिकन पड़ते नज़र आते रहते है। इन कारणों से बजाय इस के कि ग्राहक वास्कट पहिन कर सुख अनुभव करे उसे उलटा इस से दुःख होता रहता है। यह नुक्स चित्र सं० २६४ से जाहिर किया गया है।
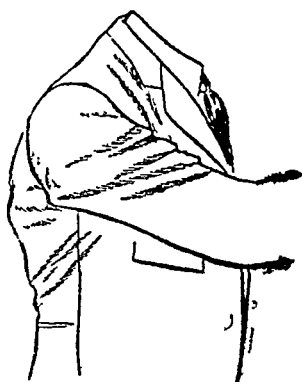
चित्र सं० २६४

कारण—प्रायः इस नुक्स का कारण यह समझा जाता है कि वास्कट की आस्तीन तंग बनाई गई है। परन्तु वास्कट की आस्तीनों को चौडा करने के वास्ते उन मे किसी प्रकार का दबाव नहीं होता। और यदि उन मे इस प्रकार का दबाव

रखा गया हो अर्थात् नई आस्तीने ज़रा चौड़ी बना कर लगा भी दी जाये तो भी नुक्स बिल्कुल दूर नहीं होगा और बाजू को आगे करने से जो २ तकलीफ़ अथवा नुक्स पड़ता था वैसे ही पड़ता रहेगा। इस से सिद्ध हुआ कि इस नुक्स का कारण यह नहीं है अर्थात् आस्तीनों की चौड़ाई का कम होना इस नुक्स का कारण नहीं है। बल्कि इस नुक्स का कारण यह है कि वास्कट की पीठ के बीच की सिलाई से लेकर सामने के मोंढे की गोलाई तक का नाप ज़रूरत से कम है। इस के इलावा पीठ की चौड़ाई का कम होना भी इस नुक्स को बढ़ाने का कारण हो सकता है।

यदि सामने का हाला अथवा कन्धे का आगे की तरफ़ वाला सिरा ज़रूरत से ज्यादा ऊंचा बनाया गया हो जिस से सामने का मोंढा ज्यादा नीचा चला जाता है तो भी आस्तीन में खिंच पड़ने लगती है जैसाकि ऊपर चित्र स० २६१ से जाहिर की जा चुकी है।

इस से सिद्ध हुआ कि इस नुक्स के निम्न लिखित कारण हो सकते हैं। पहला पीठ के बीच की सिलाई से लेकर सामने के मोंढे की गोलाई तक के नाप का जरूरत से छोटा होना। दूसरा पीठ की चौड़ाई का कम होना और तीसरा सामने के हाले का जरूरत से ज्यादा ऊंचा होना अथवा मोंढे का ज्यादा गहरा बनाया जाना।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते वास्कट की पीठ नई

बनानी पड़ती है ताकि पीठ की चौडाई पहले से ज्यादा हो जैसाकि चित्र सं० २६५ मे निशान १० पर किया गया है । इसके साथ ही पीठ के साईड पर के दबाव को थोड़ा सा बाहिर निकाल कर इसे चौड़ा करो जैसाकि इस चित्र मे निशान ११ पर जाहिर किया गया है इसी तरह
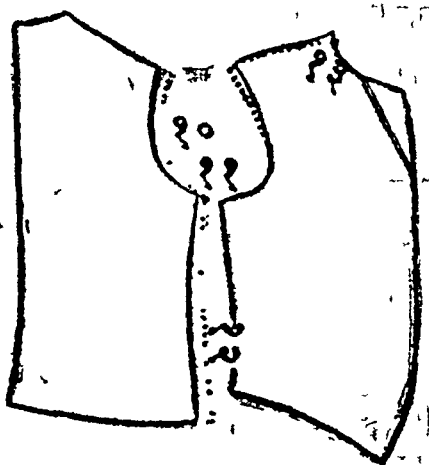
चित्रसं० २६५

कमर पर पीठ के साईट के दबाव को छाती से ज्यादा बाहिर निकालो जैसाकि इस चित्र मे निशान १२ पर जाहिर किया गया है। अर्थात् निशान १२ पर, जोकि कमर की जगह को जाहिर करता है, पीठ के साईड के दबाव को निशन ११ पर की अपेक्षा ज्यादा बाहिर को निकालो । अथवा पीठ को साईड पर के निशान १२ पर, निशान ११ की अपेक्षा ज्यादा बाहिर निकालो ।

अब सामने के हाले को निशान १३ पर थोडा सा नीचा करके सामने के कन्धे और मोंढ़े की गोलाईया बिंदियों वाली लकीरो के अनुसार बनाओ तो नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा ॥

(३०) आस्तीन के मोंढे पर पास की तरफ़ से खिच पड़ना
(STRAIN FROM THE HIND ARM PITCH)

जब ग्राहक बाज़ू आगे को करता है तो पीठ के मोंढ़े की गोलाई पर जहां कि आस्तीन के मोंढ़े का पास जोड़ा जाता है वहां पर से खिच पड़ने लग जाती हैं जिस का परिणाम यह होता है कि आस्तीन आगे से बाज़ू के ऊपर चढ़ आती है और देखने वाला यह अनुमान करने लगता है कि आस्तीन आगे से ज्यादा ऊंची बनाई गई है इस वास्ते ऊपर को चढ़ जाती है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता।

कारण-इस नुक्स का कारण यह है कि आस्तीन का गिराओ पीछे को बनाया गया है अर्थात् काटते समय आस्तीन के पास और गिट्टी के ऊपर के सिरे ज़रूरत के मुताबिक ग्राहक के शरीर के अनुकूल नहीं बनाये गये बल्कि पास ज़रूरत से ज्यादा ऊपर की तरफ़ से नीचे उतारा गया है जिस से आस्तीन पीछे को खिची जाती है अर्थात् आस्तीन का गिराओ पीछे को बनाया गया है जिस से यह नुक्स पड गय है।

क्योंकि इस नुक्स का कारण जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है आस्तीन के पास का ऊपर की तरफ़ से ज़रूरन से ज्यादा नीचा छांटा जाना है जिस से आस्तीन पीछे की तरफ़ खिची जाती है इस वास्ते ज़रूरी है कि इस नुक्स को दूर करने के वास्ते आस्-तीन के पास के ऊपर के दबाव को बाहिर निकाल कर उसे नीचे लटका दिया जाय जिस से आस्तीन जोकि पीछे को चली गई है ज़रूरत के मुताबिक आगे को आजाये परन्तु जैसाकि- आप को मालूम है आस्तीन के मोंढों की गोलाई मे किसी प्रकार का

दबाव नही होता जिस से कि आस्तीन के पास को ऊंचा करके आस्तीन को ज़रूरत के मुताबिक़ आगे किया जा सके। इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने का एक ही तरीका रह जाता है वह यह कि आस्तीन का पास जरूरत से जितना ज्यादा नीचा छांटा गया हो उस की गिद्री को भी उतना ही नीचा कर दो जैसाकि चित्र सं० २६६ मे निशान १४ पर करके दिखाया गया है। इस का परिणाम भी वही होगा जोकि हम चाहते है अर्थात् आस्तीन की गिद्री ऊपर को खिची आयगी जिस से आसतीन भी
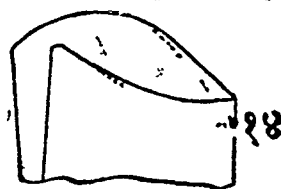
ज़रूरत के मुताबिक़ आगे को आजायगी

चित्र सं० २६६

और नुक्स दूर हो जायगा। अब निशान १४ मे से गोले और ताल के मोढों की गोलाईयां बनाओ जैसाकि बिन्दियों वाली लकीरो से जाहिर किया गया है तो नुक्स दूर हो जायगा। ऐसा करने से आस्तीन की लम्बाई छोटी हो जायगी। इस वास्ते मोहरी पर के दबाव को बाहिर निकाल कर इस कमी को पूरा करो।

कई लोगो का विचार यह होता है कि वह आस्तीन के गिराओ को ऊपर लिखी रीति से दूर करने की बजाय केवल आस्तीन को फेर देते है। अर्थात् आस्तीन के पास को तो पीठ पर से जरा नीचे उतार देते है और गिद्री को सामने के मोंढे से ज़रा ऊपर को उठा लेते हैं। ऐसा करने से उनका मतलब

यह होता है कि आस्तीन जो पीछे को चली गई है आगे को अपनी असली हालत मे आजाय और नुक्स बिल्कुल जाता रहे। परन्तु वास्तव मे इसका परिणाम उलटा होता है और नुक्स दूर होने की वजाय बढ़ जाता है। इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने का केवल एक ही तरीका है जोकि ऊपर चित्र सं० २६६ से समझाया गया है॥

(२१) जब ग्राहक बैठ जाय तो सामने का ऊपर को सुरकना।

(FRONTS CREEPING UP WHEN SEATED)

यह नुक्स चित्र सं० २६७ से जाहिर किया गया है। इस नुक्स से ग्राहक को बहुत कष्ट होता है। इस प्रकार का नुक्स प्रायः बन्द गले की वास्कटों मे पडता है। जब ग्राहक दर्ज़ी से वास्कट लेने आता है और उस समय इसे पहिन कर भी देखता है तो उसे इस वास्कट मे किसी प्रकार का नुक्स नजर नहीं आता। जब ग्राहक वास्कट पहिन कर इसे देखता है तो उसे सब प्रकार से ठीक नज़र आती है परन्तु जब ग्राहक जरा बैठ जाता है तो उस मे वह नुक्स नजर आने लगता है जोकि चित्र स० २६७ से जाहिर किया गया है। अर्थात् ज्यों ही ग्राहक बैठ जाता है वास्कट सारी की सारी ऊपर को सुरकने लगती है जिस से

चित्र सं० २६७

वास्कट के गले पर का बटन अपनी असली जगह से इतना ऊंचा चला जाता है कि कमीज के कालर से भी बहुत ऊंचा चला जाता है। और सामने मे बहुत से शिकन पडने लग जाते हैं।

कारण—इस नुक्स के दो कारण हो सकते हैं। पहला तो यह कि वास्कट का सामना ज़रूरत से कम चौडा अथवा तंग बनाया गया हो। और दूसरा यह कि सामने के हाले की ऊंचाई पीठ की अपेक्षा ज्यादा बनाई गई हो। प्राय: इस प्रकार के नुक्स का कारण दूसरा ही हुआ करता है। अर्थात् सामने के हाले के ज्यादा ऊंचा बनाये जाने से यह नुक्स बहुत पडता है। परन्तु इस से यह न समझ लेना चाहिये कि इस नुक्स का कारण ही केवल यही हो सकता है बल्कि इसका कारण पहला भी ह सकता है परन्तु बहुत क़म हालतों मे।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते देखना यह है कि वास्कट के सामने का हाला पीठ की अपेक्षा ज्यादा ऊचा बनाया गया है। इस वास्ते इसे ठीक करने के वास्ते जरूरी है कि सामने के हाले को जरूरत के मुताबिक नीचा किया जाय। परन्तु इस बात का विचार करना भी जरूरी है कि यदि सामने को हाले पर छेडा जाय अर्थात् हाले को नीचा किया जाय तो कालर को भी उतना ही छोटा करना होगा जितना कि हाला नीचा किया गया हो। इस वास्ते हाले को नीचा करने से बहुत सी तकलीफ होती है अब हम को कोई और तरीका सोचना चाहिये जिस से कि हम इस नुक्स को ज्यादा आसानी से दूर कर सके।

इस का दूसरा तरीका यह है कि पीठ का कन्धा सामने की

अपेक्षा जितना कम ऊचा है उसे नीचे लिखी रीति से चित्र सं० २६८ की सहायता से ज्यादा ऊंचा किया जाय। पीठ के मोंढे की गोलाई को नीचे की तरफ़ से छॉट कर ज़रूरत के मुताबिक पहले से जरा नीचा करो जैसाकि इस चित्र मे बिंदियों वाली लकीर से निशान १७ पर जाहिर किया गया है। ऐसा करने से क्योंकि पीठ का मोंढा पहले से ज्यादा गहरा बनाया गया है इस वास्ते निश्चय तौर से इसका परिणाम यह होगा कि पीठ के कन्धे की ऊंचाई जोकि सामने की अपेक्षा पहले कम ऊची थी अब ठीक हो जायगी। परन्तु ऐसी अवस्था मे क्योंकि पीठ का मोंढा पहले से ज्यादा गहरा हो गया है इस वास्ते साईड की सिलाई करते समय पीठ को ऊपर की तरफ़ सुरकाने की जरूरत होगी और सामने को नीचे सुरकाना पड़ेगा। जैसाकि इस चित्र मे निशान १५ और १६ से ज़ाहिर किया गया है।
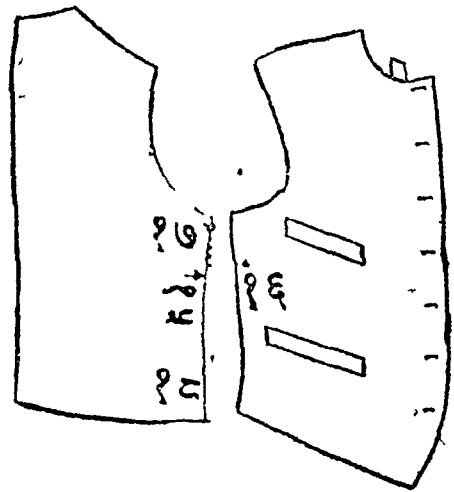
चित्र सं० २६८

यदि इस के साथ ही पीठ के साईड पर के दबाव को कमर पर से वाहिर निकाल कर वास्कट को कमर पर ढीला भी कर दिया जाय जैसाकि इस चित्र मे निशान १८ पर किया गया है तो यह

सोने पर सुहागे का काम देगा अर्थात् नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा॥

(३२) सामने के हाले का ज्यादा चौड़ा होना।

(TOO LARGE AT FRONT NECK)

यह नुक्स चित्र सं० २६६ से ज़ाहिर किया गया है। इस प्रकार की वास्कटे वह लोग पहिनते है जोकि नुक्स को साधारण दर्जियों की अपेक्षा बहुत अच्छी तरह समझ सकते हैं। इस प्रकार की वास्कटों मे सब से अधिक जो नुक्स पड़ता है वह यही है। क्योंकि इस अवस्था मे वास्कट के सामने का हाला जरूरत से बहुत ज्यादा चौड़ा बनाया गया है जिसका परिणाम यह होता है कि दोंनों सामनों का तलपट बहुत ज्यादा हो जाता है जोकि देखने मे बहुत बुरा मालूम देता है जैसाकि इस चित्र मे दिखाया गया है।

चित्र सं० २६६

जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है इस प्रकार की वास्कटे जिन्हें क्लैरीकल वास्कटे (Clerical vests) भी कहते है, पहिनने वाले लोग कपड़े पहिनने मे इतने निपुण होते है कि वह साधारण दर्जियो की अपेक्षा नुक्स को बहुत भली भाति समझ सकते हैं। अर्थात् वह कपडो की फ़िटिग को भली भांति जॉच सकते है। इस वास्ते छोटे से छोटे नुक्स को भी शीघ्र ही जान लेते हैं। परन्तु यह नुक्स तो बहुत बड़ा है और इस प्रकार की वास्कटों मे बहुत अधिक पड़ता है।

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण, जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, वास्कट के सामने के हाले का जरूरत से ज्यादा चौड़ा होना है। इस वास्ते यदि आप चाहते हैं कि कन्धे मे किसी प्रकार का शिकन न पड़े तो पीठ पर टीक की चौड़ाई को भी सामने के हाले के मुताबिक़ ज्यादा चौड़ा बनाये। परन्तु ऐसी अवस्था मे यह भी जरूरी है कि सामने के गले पर के निशान से लेकर सैंटर लाईन तक का नाप भी इस के मुताबिक होना ज़रूरी है।

क्योंकि इस नुक्स का कारण, जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, सामने के हाले का जरूरत से ज्यादा चौड़ा होना है। इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने के वास्ते वास्कट के हाले पर के दबाव को जरूरत के मुताबिक बाहिर निकाल कर हाले की चौड़ाई की ज्यादती को दूर करो जैसाकि चित्र सं० २७० मे निशान १६ से २० तक करके दिखाया गया है। ऐसा करने से वास्कट के सामने के हाले की चौड़ाई जोकि पहले ज़रूरत से ज्यादा थी वह अब ज़रूरत के मुताबिक ठीक हो जायगी अर्थात् हाले की चौडाई का नुक्स जाता रहेगा परन्तु कन्धे की लम्बाई जोकि पहले बिल्कुल ठीक थी अब ज्यादा हो जायगी। अर्थात्

चित्र सं० २७०

नुक्स हाले मे से निकल कर कन्धे मे चला जायगा इस वास्ते ज़रूरी है कि ऐसा करने से वास्कट के सामने का कन्धा जितना बड़ा हो गया हो उसे बाहिर अथवा मोंढे की तरफ़ से छोटा किया

जाय जैसाकि चित्रानुसार २१ से २२ तक करके दिखाया गया है। अब चित्रानुसार बिन्दियों वाली लकीरों की सहायता से सामने के हाले तथा मोंढे की गोलाई बनाओ तो नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा ॥

(३३) बन्द गले वाली डबल ब्रैस्ट वासूकट के आगे के किनारे में झोल पड़ना ।

(CASSOCK VEST LOOSE ON BUTTON HOLE EDGE)

यह नुक्स चित्र सं० २७२ से जाहिर किया गया है । इस मे बन्द गले की डबल ब्रैस्ट वास्कट दिखलाई गई है। जब वास्कट के बटन बन्द कर दिये जाये तो वास्कट के सामने के आगे के किनारे मे, जहा पर कि बटनों के वास्ते काज बनाये गए होते हैं झोल पडते नजर आते है और जब बटन खोल दिये जाये और दोंनो सामनों का लटपट एक दूसरे के ऊपर चढा कर छोड दिया जाय तो बाये तरफ का सामना नीचे से अथवा घेरे पर से पीछे को खिसकने लगता है जिस का परिणाम यह होता है कि यह सामना बटनों वाले सामने से नीचे ढिलक जाता
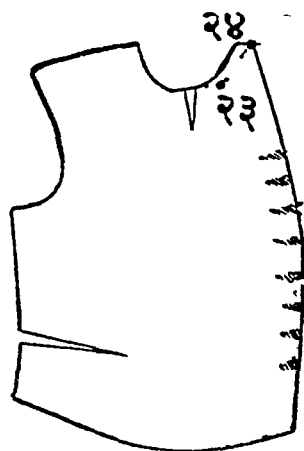
चित्र स० ०२७

है और देखने मे बहुत बुरा मालूम देता है।

कारण—इस प्रकार के नुक्स का कारण बताने से पहले यह बता देना जरूरी मालूम होता है कि डबल ब्रैस्ट वास्कटों मे प्राय: सैण्टर लाईन पर जोड़ होता है अर्थात् सामने से तलपट का हिस्सा अलग काटा जाता है परन्तु इस प्रकार की वास्कटों में ऐसा नही होता बल्कि ऐसी वास्कटों के सामने मे इस प्रकार का जोड़ बिल्कुल नही होता। ऐसी वास्कटों के सामने का कन्धा साधारण डबल ब्रैस्ट वास्कटों की अपेक्षा, जिनकी सैण्टर लाईन पर जोड होता है, ज्यादा आगे को होना चाहिये परन्तु इस अवस्था मे ऐसा नही किया गया बल्कि इस अवस्था मे भी सामने का कन्धा साधारण वास्कटों की तरह पीछे को बनाया गया है यही इस नुक्स का मुख्य कारण है।

यदि ग्राहक इस बात पर इतराज न करे कि सामने के हाले मे से डाट निकाल ली जाय तो इस नुक्स के दूर करने का सरल तरीका यह है कि निशान २३ पर चित्र स० २७२ के अनुसार हरेले मे से एक डाट निकाल ली जाय और हाले के आगे वाले सिरे पर से इसे थोडा सा छोड़ दिया जाय जैसाकि इस चित्र मे निशान २४ पर ज़ाहिर किया गया है।

जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है कि ऐसा उस अवस्था मे करना चाहिये जबकि ग्राहक वास्कट के हाले में से डाट निकालने पर इतराज़ न करे। परन्तु जब ग्राहक ऐसा मन्जूर न करे तो उस अवस्था मे नुक्स को दूर करने का केवल एक ही तरीका रह जाता है वह यह कि सामने के हाले पर का दबाव बाहिर

निकाल कर इस की चौडाई की ज्यादती को दूर किया जाये जैसा कि चित्र सं० २७१ मे निशान २५ पर जाहिर किया गया है। ऐसा करने से वास्कट के सामने का हाला आगे आ जायगा और कन्धा बडा हो जायगा। कन्धे की लम्बाई की ज्यादती को दूर करने के वास्ते इसे
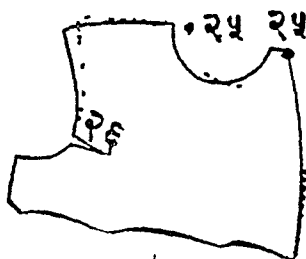
चित्र स० २७१

बाहिर अथवा मोंढे की तरफ से जरूरत के मुताबिक छाट दो। अब चित्र अनुसार बिन्दियों वाली लकीरो की सहायता से हाले, कन्धे और मोंढे की गोलाईया बनाओ। ऐसी अवस्था मे वास्कट के सामने के मोंढे मे से भी डाट निकालना जरूरी है जैसाकि इस चित्र मे निशान २६ पर करके दिखाया गया है॥

चौथा अध्याय

पतलूनों, निकरों तथा बिर्जसों के नुक्स

(DEFECTS IN TROUSERS, NICKERS & BREECHES)

इस पुस्तक का यह अन्तिम अध्याय है । इस मे जैसाकि इस के नाम से जाहिर है, पतलूनों, निकरों तथा ब्रिर्जसों इत्यादि के नुक्स बताये जायेगे । सब से पहले हम पतलूनों तथा निकरों के नुक्स बताते है ।

पतलूनों तथा निकरों के नुक्स

इस मे सन्देह नही है कि प्राय: ग्राहक कोटों तथा वास्कटों की अपेक्षा पतलूनों के छोटे २ नुक्सों की तरफ बहुत कम ध्यान देते हैं। अर्थात् ग्राहक जहा कोटों और वास्कटों के छोटे २ नुक्सों को चुन २ कर दर्जियों से ठीक कराते रहते है वहां पतलूनों मे वह ऐसा नहीं करते । बल्कि वह प्राय: यह देखते हैं कि पतलून की लम्बाई तथा चौडाई ठीक हो । अर्थात् पतलून न तो ज्यादा लम्बी हो और न ही ज्यादा छोटी । इसी तरह से न ही इसे तंग बनाया गया हो और न ही बहुत ढीला । बलिक सब अवस्थाओं मे पतलून की लम्बाई तथा चौडाई ग्राहक की इच्छानुसार ठीक हो । इसके इलावा पतलून इस तरह से काटी गई हो कि साधारण अवस्था मे चलते फिरते, उठते बैठते तथा साईकल पर चढ़ते समय ग्राहक को किसी प्रकार का कष्ट न हो तो ग्राहक बिल्कुल

खुश हो जाता है। परन्तु प्रत्येक ग्राहक एक जैसा नहीं होता। अर्थात् कई ग्राहक ऐसे भी होते हैं जो छोटी २ बातों पर भी ध्यान देते है। हा इतना जरूर है कि बहुत थोड़े ग्राहक ऐसे होते हैं जो छोटी २ बातों की तरफ़ ध्यान देते हों। प्राय: ग्राहक केवल लम्बाई चौड़ाई के ठीक होने तथा साधारण अवस्था मे चलने फिरने से तकलीफ अनुभव न होने पर सन्तुष्ट हो जाते है। इस वास्ते हमे कभी यह विचार करके, कि प्रत्येक ग्राहक छोटे २ नुक्सो की ओर ध्यान नही देता इस वास्ते हमे भी उनके जानने की कोई जरूरत नही, बल्कि अपने काम मे निपुणता प्राप्त करने के वास्ते आप के वास्ते जरूरी है कि आप प्रत्येक छोटे बड़े नुक्स को समझ कर उसे दूर करने का यत्न करे ताकि आप का यष बढ़े और आपका काम प्रति दिन उन्नति करता जाय। हम नीचे पतलूनों के सब प्रकार के नुक्सों का वर्णन करते हैं:—

(१) फ़ोर्क से लेकर साईड की तरफ़ तिरछे शिकन पड़ना।

(DIAGONAL CREASES FROM FORK TO SIDE SEAM)

फोर्क-पतलून तथा निक्कर के सामने मे जो बटन लगाये जाते है वह फलाई मे काज करके बन्द किये जाते हैं जिससे सामना बिल्कुल साफ नजर आता है और उसमे बटन लगे हुए बाहिर नजर तक नही आते। फलाई दो इच के लग भग चौडी कपडे की फटी होती है जोकि पतलून के सामने के आगे वाले किनारे के मुताबिक गोल बना दी जाती है। और बाये तरफ़ वाले

सामने के आगे लगाई जाती है। ऊपर से लेकर नीचे जहा पर कि यह फ़लाई खतम होती है उस स्थान को फ़ोर्क कहते है।

इस अवस्था मे फ़ोर्क से लेकर पतलून की साईड की सिलाई की तरफ़ तिरछे शिकन पड़ते नजर आते है जोकि पतलून के सामने मे पड़ते है जैसाकि चित्र सं० २७३ से जाहिर किया गया है। जैसाकि चित्र से जाहिर है यह शिकन फ़ोर्क से लेकर साईड से नीचे की तरफ़ को नही जाते बल्कि ऊपर की तरफ़ जाते हैं जहां पर कि पतलून का ऊपर का सिरा शुरू होता है। अर्थात् यह शिकन फ़लाई के नीचे अथवा फ़ोर्क से शुरू होकर साईडों की तरफ़ पाकटों के ऊपर की तरफ़ जाते नज़र आते है। इस अवस्था मे पतलून बाकी सब प्रकार से तो बिल्कुल ठीक है। केवल इसकी फ़लाई ऊपर की तरफ़ से ज्यादा चौड़ी है और फ़लाई की गोलाई ज्यादा गहरी बनाई गई है इस वास्ते यहां पर, जहां कि गोलाई ज्यादा गहरी बनाई गई है, शिकन अथवा ख़िच पड़ने लग जाती है।

कारण—पतलून के दूसरे नुक्सों की तरह यह शिकन भी उस समय नजर नही आते जबकि पतलून पहले पहिल तैयार की जाय। बल्कि जब यह कुच्छ दिनों तक पहिन ली जाय तो शिकन नजर आने लग जाते हैं।
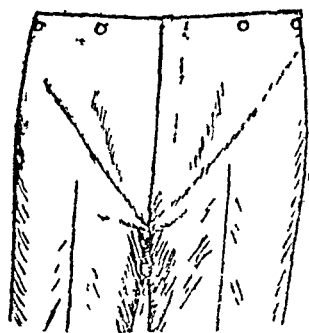
चित्र सं० २३७

इस नुक्स का कारण यह है कि

पतलून का सामना आगे की तरफ से ज्यादा चौडा बनाया गया है जिससे फलाई का ऊपर का सिरा जरूरत से ज्यादा आगे को चला आता है। जब सामने के साईड पर कमर की गोलाई बनाई जाती है तो इसे भी ज्यादा गहरा करना पडता है क्योंकि सामना पहले ही कमर पर आगे को बढा हुआ है और कमर की गोलाई बनाते समय कमर के नाप को ही पूरा करना होता है। इस वास्ते सामना जितना आगे को बढा होगा उतना ही साईड पर कमर की गोलाई को ज्यादा गहरा करने की जरूरत होगी। इस से सिद्ध हुआ कि फलाई, की गोलाई जहां पर फोर्क होती है, वास्तव मे तो ठीक बनाई गई है परन्तु क्योंकि सामना ऊपर से आगे की तरफ़ बढा हुआ है इस वास्ते यह गोलाई भी ज्यादा अन्दर को चली जाती है और फ़ोर्क से लेकर साईड पर कमर की गोलाई तक खिच पडने लग जाती है।

यदि पतलून की पीठ के बीच की सिलाई कम तिरछी अथवा ज्यादा गहरी बनाई गई हो तो यह नुकस और भी बढ जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते जरूरी है कि पतलून के सामने को आगे की तरफ से थोड़ा सा छांट दिया जाय और वह भी केवल ऊपर २ से जैसाकि चित्र सं० २७४ मे निशान १ पर ज़ाहिर किया गया है। ऐसा करने से सामने की कमर का नाप जितना छोटा हो गया हो उसे साईड पर का दबाव कमर पर से बाहिर निकाल कर पूरा करो जैसाकि इस चित्र मे निशान २ पर ज़ाहिर किया गया है।
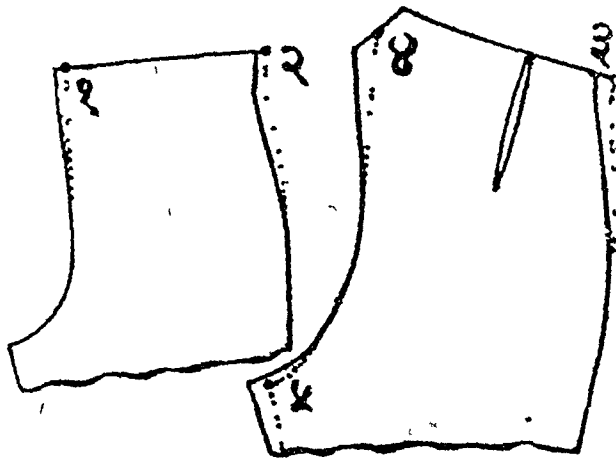
चित्र सं० २७४

यदि पतलून की पीठ की सिलाई की गोलाई भी जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है इस नुक्स को बढ़ाने का कारण हो तो इसे ठीक करने की विधि यह है कि इस सिलाई को ऊपर से थोड़ा सा दबा देना चाहिये जैसाकि इस चित्र मे निशान ४ पर ज़ाहिर किया गया है। ऐसा करने से पीठ की चौड़ाई जितनी छोटी हो गई हो साईड पर से उतना दबाव बाहिर निकाल कर उस कमी को पूरा करो जैसाकि इस चित्र मे निशान ३ पर ज़ाहिर किया गया है। इसी तरह यदि फ़ोर्क पर गिद्री को दबा दिया जाय तो पीठ की सिलाई की गहराई कम हो सकती है ॥

(२) पीठ की सिलाई के ऊपर शिकन पड़ना

ROPING UP THE SEAT SEAM

यह नुक्स चित्र सं० २७५ से ज़ाहिर किया गया है इस अवस्था

मे पतलून की पीठ पर ऊपर के हिस्से मे बहुत तंगी मालूम होती है जिस से पतलून की पीठ की सिलाई फोर्क के बिल्कुल अन्दर घुसी चली जाती नजर आती है। और इस सिलाई के दोनों तरफ सीधे शिकन पड़ते नजर आते हैं। इस का परिणाम प्राय: ऐसा होता है कि यह सिलाई इन शिकनों के अन्दर इतनी छुप जाती है कि बिल्कुल नजर नही आती।

चित्र स० २७५

क्योंकि पीठ की सिलाई जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है ग्राहक की फ़ोर्क के अन्दर घुस जाती है इस वास्ते ग्राहक को इस स्थान पर पतलून बहुत तंग प्रतीत होती है। इस तंगी और कष्ट को अनुभव करता हुआ ग्राहक पतलून को अपने शरीर के उस स्थान से जहां पर कि यह तंग करती रहती है बार २ दूर खेचता रहता है। उस का विचार यह होता है कि कही ऐसा करने से यह तगी दूर हो जाय परन्तु इस से उसे कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं होता और पतलून पहले की तरह ही चूतड़ों पर तग मालूम होती है। अब ग्राहक तग आकर पतलून के गैलस (Braces) को ढीला करके पतलून को नीचे की तरफ सुरकाता है।
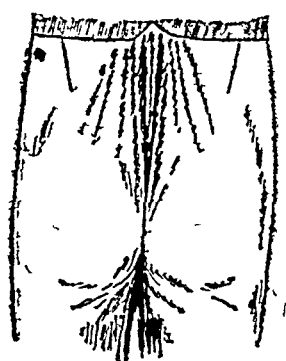
इसके इलावा इस अवस्था मे चलते समय ग्राहक के घुटने पर भी दबाव (Pressure) पडता है और जब ग्राहक पतलून पहिन कर बैठ जाता है तो सीट से लेकर घटने तक खिच पडने लग जाती है।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि चित्र सं० २७६ मे ६ से ७ तक का नाप पतलून काटते समय जरूरत से छोटा रखा गया है। अर्थात् पतलून की पीठ की सिलाई जरूरत से ज्यादा सीधी अथवा कम तिरछी बनाई गई है। जिससे ६ से ७ तक का नाप जरूरत से छोटा हो गया है। यह नुक्स प्राय: इंगलिश कट वाली पतलूनों मे पडता है।
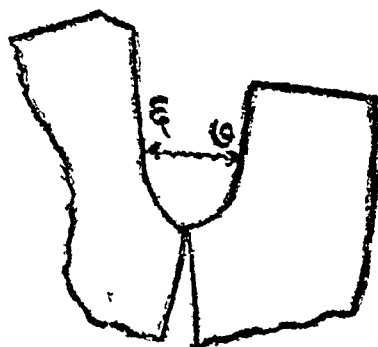
चित्र सं० २७६

इस नुक्स को नीचे लिखी रीति से दूर करना चाहिये। यदि थोड़ा सा काम करके आप इस नुक्स को दूर करना चाहते हों तो चित्र सं० २७७ के अनुसार पीठ की सिलाई को ऊपर से निशान ८ पर बिंदियों वाली लकीर के मुताबिक दबा दो। ऐसा करने से पतलून की पीठ की चौडाई जितनी घट गई हो उस के साईड पर का दबाव निशान ९ पर उतना ही बाहिर निकाल कर कमी को पूरा करो। ऐसा करने से न केवल पीठ की सिलाई ही तिरछी हो जायगी बल्कि सीट पर की तंगी भी जाती रहेगी। परन्तु इस अवस्था मे एक और नुक्स पड़ जायगा। वह यह कि चूतड़ों से नीचे बहुत सा कपड़ा इकट्ठा हो कर शिकन पैदा करेगा। इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने का ठीक तरीका यह है। कि चित्र सं० २७७ के अनुसार पीठ की सिलाई को न केवल ऊपर से ही दबाना चाहिये बल्कि चित्र सं० २७८ के अनुसार इसे ऊपर से लेकर नीचे तक डेढ़ इंच के बराबर दबा देना
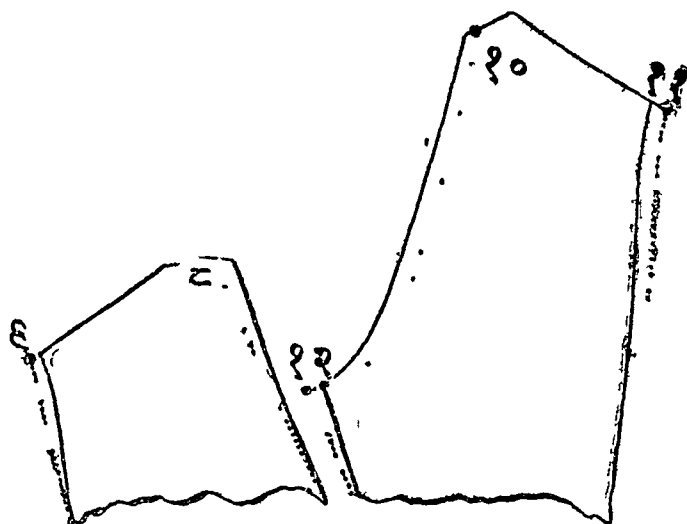
चित्र सं० २७७ चित्र सं० २७८

चाहिये जैसाकि इस चित्र मे बिन्दियों वाली लकीर से निशान १० पर जाहिर किया गया है । जहाँ चित्र सं० २७७ मे इस सिलाई को केवल ऊपर से दबा कर थोडा सा तिरछा कर दिया गया था वहाँ इस अवस्था मे इसे ऊपर से लेकर नीचे तक दबाया गया है । इस कमी को पूरा करने के वास्ते पतलून के साईड पर के दबाव को जरूरत के मुताबिक बाहिर नकालो जैसाकि इस चित्र मे बिदियों वाली लकीर से निशान ११ पर जाहिर किया गया है और गिद्री पर के दबाव को फ़ोर्क पर बाहिर निकालो जैसाकि इस चित्र मे बिदियों वाली लकीर से निशान १२ पर जाहिर किया गया है। ऐसा करने से नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा और पतलून सब प्रकार से ठीक हो जायगी ॥

(३) गिद्री के ऊपर कपड़ा इकट्ठा होना

(SURPLUS MATERIAL AT THE TOP OF LEG-SEAM)

यह नुक्स चित्र सं० २७६ से ज़ाहिर किया गया है इस मे पतलून की गिद्री के ऊपर के सिरे पर कपड़ा इकट्ठा होता नजर आता है जिससे यह मालूम होता है कि पतलून की गिद्री ज़रूरत से वडी बनाई गई है। इस के साथ ही पतलून की मोहरी गिद्री की तरफ से बिल्कुल बूट के साथ लगी रहती है। और यदि मोहरी बहुत खुली अथवा चौड़ी बनाई गई हो तो बाहिर अथवा पास की तरफ़ से बूट से दूर उठ खड़ी होती है।
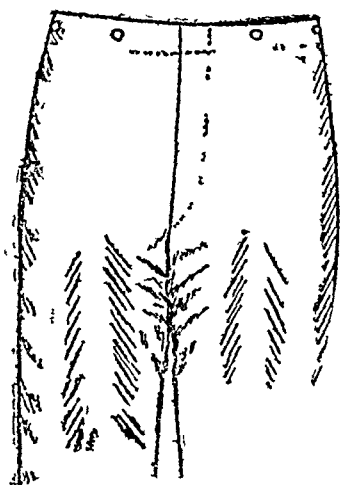
चित्र सं० २७६

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि ग्राहक का शरीर तो नार्मल शकल का है और पतलून बनाई गई है खुली टांगों वाले ग्राहक के मुताबिक। अथवा ग्राहक की टांगे नार्मल शकल से भी कम खुली है परन्तु पतलून नार्मल शक्ल के मुताबिक अथवा उस से भी खुली टांगों वाले शरीर के मुताबिक बनाई गई है। परिणाम यह कि पतलून काटते समय इसे ग्राहक के शरीर की

बनावट से ज्यादा खुली टागों वाले आदमी के मुताबिक बनाया गया हैं। जब वह ग्राहक इस प्रकार की पतलून पहिन लेता है तो पतलून तो बाहिर की तरफ भागना चाहती है क्योंकि वह ज्यादा खुली टागो के मुताबिक बनाई गई होती है परन्तु ग्राहक की टागे क्योंकि इतनी ज्यादा खुली नही हैं इस वास्ते वह पतलून को अन्दर की तरफ़ धकेलती हैं जिससे न केवल गिद्री के ऊपर कपड़ा इकट्ठा हो कर शिकनों का कारण बनता है बल्कि पतलून की मोहरी सीधी गिरने की बजाय गिद्री की तरफ़ से तो ज़रूरत से ज्यादा बूट के साथ चिमट जाती है और पास की तरफ़ से जरूरत से ज्यादा बूट से दूर उठ खडी होती है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते यदि अभी आपने केवल पतलून का खाका काग़ज का ही काटा हो और कपड़े पर से पतलून न काटी हो तो इस नुक्स को दूर करने का ठीक तरीका यह है कि पतलून के सामने और पीठ के खाके मे साईड की सिलाईयों पर फोर्क की बिल्कुल सीध मे एक तिनकोनी शकल का टुकडा इस
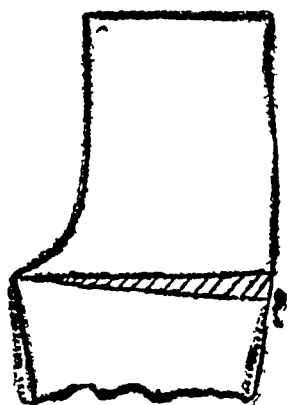
चित्र सं० २८०

तरह से जोड दे कि इसका एक कोना तो फोर्क के साथ मिले और बाकी के दो कोने पास की सिलाई के साथ जैसाकि चित्र स० २८० मे निशान १ से जाहिर किया गया है। ऐसा करने

से पतलून के पास का नाप जितना बढ़ जाय उसे नीचे से काट कर पूरा करो। इसका परिणाम यह होगा कि पतलून के सामने और पीठ की गिद्री और पास की सिलाईया जरूरत के मुताबिक अन्दर की तरफ़ धकेली जायेगी जैसाकि इस चित्र मे बिन्दियों से जाहिर किया गया है। इस से क्योंकि पतलून की टांगे, जोकि पहले ज़रूरत से ज्यादा बाहिर की तरफ़ बानाई गई थी, अब अन्दर को आगई हैं इस वास्ते नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा।

जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है हम पतलून के इस नुक्स को ऊपर बताई गई रीति से केवल उस अवस्था मे दूर कर सकते हैं जबकि पतलून कपड़े पर से बिल्कुल न काटी गई हो बल्कि केवल उसका कागज़ का खाका ही काटा गया हो। अब हम बतलाते है कि यदि पतलून तैयार हो चुकी हो तो इस नुक्स को किस तहर से दूर करना चाहिये। ऐसी अवस्था मे पतलून की गिद्री पर के दबाव को फ़ोर्क पर तो आधे इंच के बराबर बाहिर निकाल कर उसे घुटने के साथ मिला दो जैसाकि चित्र सं० २८१ मे निशान १५ पर जाहिर किया गया है। मोहरी पर का सारे का
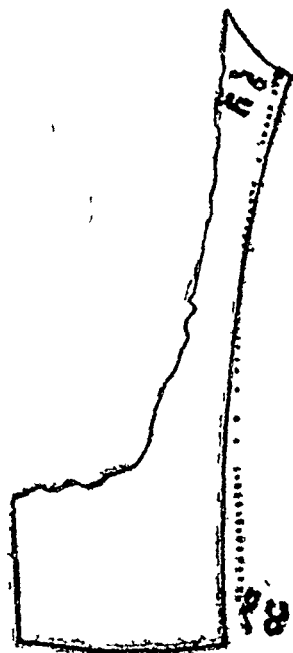
चित्र सं० २८१

सारा गिद्री पर का दवाव बाहिर निकाल कर उसे भी घुटने के साथ मिलादो जैसाकि इस चित्र मे निशान १४ पर जाहिर किया गया है। ऐसा करने से भी नुक्स दूर हो जायगा ॥

(४) पीठ में कमर पर झोल पड़ना

(LOOSE MATERIAL AT BACK WAIST)

कई ग्राहक ऐसे होते है जो अपनी पतलून के गैलस (Braces) इतने ऊपर को खेच कर कस लेते है कि पतलून नीचे से बिल्कुल फोर्क मे घुस जाती है। जब वह अपनी पतलून को इस तरह कस लेते हैं तो अपने हाथ से पतलून की पीठ को टटोल कर अनुभव करते है कि पतलून की पीठ मे कमर पर झोल पड़ रहा है या नहीं। यह नुक्स प्रायः उस समय ग्राहक को अनुभव होता है जबकि वह पतलून को कुछ दिन पहिन लेता है फिर वह दर्जी के पास आकर शिकायत करता है।

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि पीठ की सिलाई जरूरत से ज्यादा सीधी अथवा कम तिरछी बनाई गई है। जैसा कि चित्र सं० २८२ मे असली चित्र की लकीरों से जाहिर किया गया है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि ग्राहक की कमर का नाप बहुत पतला हो परन्तु उसकी पतलून की पीठ मे से किसी प्रकार की डाट न निकाली गई हो जैसाकि इस चित्र मे निशान १६ से जाहिर किया गया है। बल्कि पतलून को पीठ की सिलाई पर से ही दबा कर नाप को जरूरत से मुताबिक पूरा कर लिया गया हो।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते देखना यह चाहिये कि इसका कारण ऊपर बताये गए दोनों कारणों मे से कौनसा है। अर्थात् यदि इस नुक्स का कारण पीठ की सिलाई का कम तिरछा होना हो तो चित्र स० २८२ के अनुसार इसे निशान १७ पर बिंदियों वाली लकीर की सहायता से तिरछा करके गहरा करो। परन्तु जब इस नुक्स का कारण इससे भिन्न हो अर्थात् पीठ की सलाई ठीक तिरछी बनाई गई हो तो पतलून की पीठ मे से इस तरह डाट निकालो कि ऊपर से तो बिल्कुल कुच्छ न दबाया जाय और कमर पर
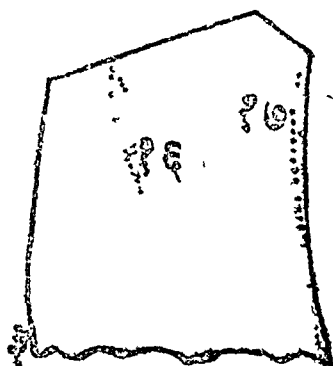
चित्र सं० २८२

से यह जरूरत के मुताबिक दबा दी जाय जैसाकि इस चित्र में निशान १६ पर करके दिखाया गया है। ऐसा करने से क्योंकि पतलून की पीठ कमर पर से दबाई जायगी इस वास्ते इसके सारे झोल दूर हो जायेंगे और पीठ कमर पर बिल्कुल साफ़ हो जायगी। ऐसा करने से पतलून की कमर के नाप मे जो कमी हो जाय उसे पतलून के सामने के पास के दबाव को बाहिर निकाल कर पूरा करो। यदि ऐसा करने से कमर का नाप ठीक ही रहता हो तो पास को खोलने की जरूरत नही॥

(५) चूतड़ों से नीचे पीठ पर झोल पड़ना

(FULLNESS IMMEDIATELY BELOW THE BALL OF SEAT)

यह नुक्स चित्र सं० २८३ से जाहिर किया गया है। जैसा कि चित्र सं० २८३ को देखने से मालूम होता है पतलून की पीठ मे चूतडों से नीचे बहुत से शिकन पड़ते नजर आते है जिस से यहा पर पतलून इकट्ठी हो जाती है। ऐसी अवस्था मे पतलून की पीठ की सिलाई का नीचे का हिस्सा,जहा पर कि फोर्क की गोलाई होती है,शरीर से दूर उठ खडा होता है। अर्थात् पतलून की पीठ फ्रोर्क पर शरीर से दूर उठ खड़ी होती है। इसके इलावा टाग के पीछे नीचे की ओर भी दबाव पड़ता रहता है।
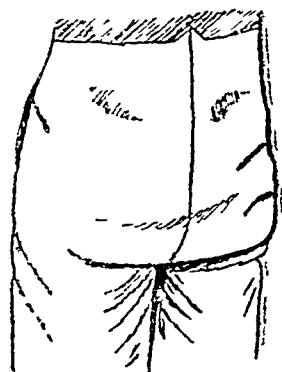
चित्र सं० २८३

यहा पर इस बात का विचार कर लेना जरूरी है कि हिप से नीचे जो शिकन पडते है जिन से यहां पर कपडा इकट्ठा हो जाता है जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है उन शिकनों के कारण से यहां पर किसी प्रकार का दबाव नही पड़ता बल्कि ग्राहक तो उन्हे अनुभव तक भी नही करता जब तक कि वह यहां पर हाथ लगा कर न टटोले। यह नुक्स वैसे देखने वाले को बहुत बुरा मालूम देता है।

कारण—इस नुक्स का कारण केवल यही है कि पतलून की पीठ की सिलाई जरूरत से बहुत ज्यादा तिरछी बनाई गई है जिससे इस सिलाई की लम्बाई इतनी अधिक हो गई है कि

साधारण अवस्था में चलते फिरते समय इसकी जितनी भी आवश्यकता होती है उससे यह बहुत बढ़ जाती है। जिसका परिणाम यह होता है कि इसकी फ़ाल्तू लंबाई यहां पर इकट्ठी हो जाती है जोकि शिकनों की शकल में नज़र आती है। यही कारण है कि ग्राहक की टांग पर पीछे की तरफ़ पतलून दबाव डालती रहती है।

किसी नुक्स को दूर करने के वास्ते यही देखना ज़रूरी होता है कि उसका कारण क्या है। उसी कारण के ही आधार पर नुक्स ठीक किया जा सकता है। यदि आपने अभी पतलून का कागज़ का खाका ही काटा हो तो इस नुक्स को दूर करने का सरल तरीका यह है कि पतलून के पीछे की सिलाई में से उस स्थान पर एक टाट निकाल ली जाय जोकि चित्र नं० २८२ में निशान १ से ज़ाहिर की गई है। ऐसा करने से न केवल इस सिलाई की लम्बाई ही ज़रूरत के मुताबिक छोटी हो जायगी बल्कि यह सिलाई पहले से कम तिरछी भी हो जायगी क्योंकि इस में से टाट निकालने से इस सिलाई का ऊपर का सिरा पीछे को खिंचा जायगा और नुक्स
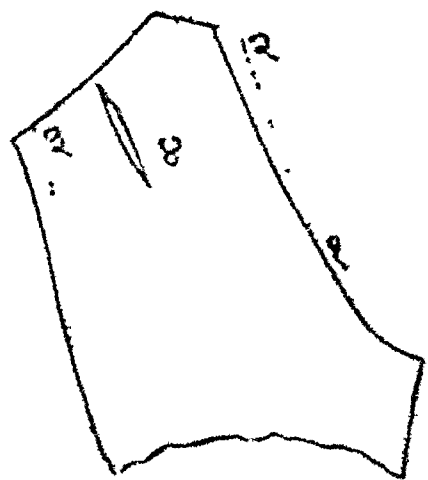
चित्र नं० २८२

बिल्कुल दूर हो जायगा। क्योंकि ऐसा करने से न केवल पीछे की

सिलाई ही निशान २ पर खिची जाकर कम तिरछी हो जायंगी बल्कि ऐसा करने से पास भी निशान ३ पर अन्दर को चला आयगा। इस प्रकार से ठीक किये गये ख़ाके की सहायता से यदि पतलून काटी जाय तो उस मे इस प्रकार का नुक्स विल्कुल नही पड़ेगा।

परन्तु जब पतलून न केवल कपड़े पर से ही काटी जा चुकी हो बल्कि सिलाई करके तैयार भी की जा चुकी हो तो उस अवस्था मे इस नुक्स को नीचे लिखी रीति से दूर करना चाहिये। ऐसी अवस्था मे पीछे की सिलाई पर के दबाव को चित्र स० २८४ के अनुसार निशान १ से २ तक बाहिर निकालो जिससे यह सिलाई जरूरत के मुताबिक कम तिरछी हो जायगी। परन्तु ऐसा करने से क्योंकि पतलून की पीठ कमर पर बड़ी हो जायगी इस वास्ते जरूरी है कि इस के पास की सिलाई खोल कर निशान ३ पर इसे उतना ही दबा दिया जाय जितना कि पीछे की सिलाई का दबाव बाहिर निकाला गया हो। यदि आप चाहते है कि पतलून का पास उधेड़ने से बहुत सा काम बढ जाता है तो निशान १ से २ तक की गई ज्यादती को दूर करने का सरल तरीका यह है कि पीठ की डाट को जरूरत के मुताबिक ज्यादा दबा दिया जाय और यदि यहां पर से पहले डाट न निकाली गई हो तो चित्रानुसार निशान ४ पर से डाट निकाल कर उस ज्यादती को दूर करो जोकि पीछे की सिलाई का दबाव बाहिर निकालने से हो गई थी॥

(६) पीठ में पट (रान) पर दबाते हुए तिरछे शिकन।

(CONTRACTING CROSS CREASES AT BACK THIGH)

यह नुक्स चित्र सं० २८५ से जाहिर किया गया है। जैसाकि इस चित्र को देखने से प्रतीत होता है यह नुक्स देखने मे बहुत बुरा लगता है। न केवल पतलून की पीठ ही बुरी नजर आती है बल्कि ऐसी पतलून, जिसमे यह नुक्स हो, ग्राहक को बड़ा कष्ट देती है। शिकन पीठ पर फोर्क से शुरू होकर टांगों के बीच मे से होते हुए पट अथवा रानों (Thighs) की तरफ़ जाते नज़र आते हैं।
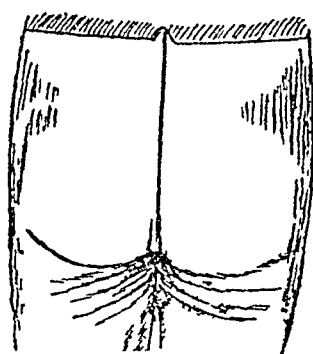
चित्र सं० २८५

कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि जिस ग्राहक के वास्ते पतलून बनाई गई है उसकी सीट अथवा हिप का नाप बहुत भारी है। अथवा उसकी हिप मोटी है। या यूं समझो कि उसके चूतड़ इतने ज्यादा गोल है कि बहुत ज्यादा बाहिर को उभरे हुए नज़र आते हैं। परन्तु पतलून काटते समय इस बात की ओर बिल्कुल ध्यान नही दिया गया। बल्कि पीठ मे जो सीट के वास्ते फ़ोर्क की जगह पर पतलून को ढीला किया जाता है अर्थात् पीठ की फ़ोर्क की चौड़ाई जो बनाई जाती है वह ज़रूरत से कम बनाई गई है। इसके भी दो ही कारण हो सकते हैं पहला यह कि पतलून की पीठ

काटते समय फोर्क की चौडाई ही ज़रूरत से कम बनाई गई हो और दूसरा यह कि पीछे की सिलाई ज़रूरत से कम तिरछी अथवा सीधी बनाई गई हो जिससे यह नुक्स पड जाता है।

जब ग्राहक इस प्रकार की पतलून पहिनने लगता है तो अभी पतलून अपनी पूरी ऊंचाई तक भी नही ले जाई जाती कि पीछे की सिलाई हिप के साथ रुक जाती है और बाकी पतलून को ऊपर की तरफ़ नहीं जाने देती जिससे कि वह अपनी असली जगह पर जा सके । जैसाकि चित्र सं० २८७ में दिखाया गया है । यहा पर डैष वाली लकीरों से तो ग्राहक का शरीर दिखाया गया है और बिन्दियों वाली तथा दूसरी लकीरों से पतलून जाहिर की गई है । इसमे दिखाया गया है कि पतलून हिप पर से पूरी तरह ऊपर को नहीं जा सकती जिससे हिप पतलून को नीचे की तरफ धकेलती है और ५ से ६ तक पतलून का कपड़ा इकट्ठा हो जाता है जिससे ऊपर बताये गए शिकन पडने लग जाते हैं।
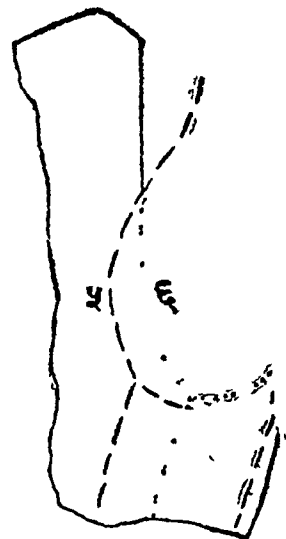
चित्र सं० २८७

चाहे पतलून तैयार हो चुकी हो अथवा केवल कागज़ का खाका ही काटा गया हो। सब अवस्थाओं मे इस नुक्स को दूर

करने का तरीका एक ही है। वह यह कि पीठ मे गिद्री पर के दबाव को फ़ोर्क पर ज़रूरत के मुताबिक बाहिर निकाल कर पतलून की पीठ को फ़ोर्क पर चौडा करो जैसाकि चित्र सं० २८६ मे निशान ७ से ८ तक किया गया है। इस के साथ ही पीछें की सिलाई को बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार ज़रा गहरा करो तो नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा ॥
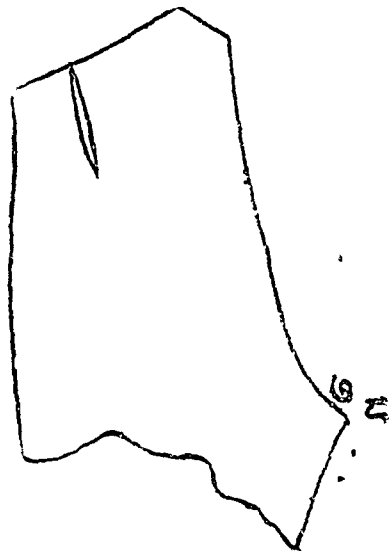
चित्र सं० २८६

(७) चलते समय टांगों पर आगे की तरफ़ दबाव पड़ना
(PRESSUSE ON FRONT OF LEGS WHEN WALKING)

इस प्रकार का नुक्स ग्राहक को बड़ा दुःख देता है। जब ग्राहक पतलून पहिन कर चलता है तो यह पतलून उसकी टांग को साधारण अवस्था मे चलने के वास्ते आगे जाने से रोकती है जिसका परिणाम यह होता है कि ग्राहक की रान (पट) (Thigh) पर दबाव पड़ता है और घुटने पर भी पतलून दबाती रहती है। इसके इलावा चलते समय हिप से लेकर पट अथवा घुटने की तरफ़ खिच भी पड़ती रहती है। जब ग्राहक बैठ जाता है तो फ़ोर्क से लेकर घुटने तक खिच पड़ने लगती है।

जब पतलून कुच्छ दिनों तक पहिन ली जाय तो पतलून के सामने मे फोर्क से लेकर साईड तक शिकन पड जाते हैं।

कारण–इस नुक्स के दो कारण हो सकते हैं। पहला यह कि ग्राहक की टागे ज्यादा खुली हैं अर्थात् चलते समय ग्राहक अपनी टागे ज़रा खुली करके चलता है परन्तु पतलून काटते समय इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया गया अर्थात् पतलून नार्मल शकल की तरह काट दी गई है। अथवा यदि ग्राहक नार्मल शकल वाला हो तो पतलून काटते समय उसे नार्मल शकल के मुताबिक काटने की बजाय उसकी टाग ज्यादा अन्दर को अथवा कम खुली बनाई गई है। इस नुक्स का दूसरा कारण यह हो सकता है कि पीठ के बीच की सिलाई, जिसे पीछे की सिलाई भी कहा जाता है, ज्यादा सीधी बनाई गई है जिससे साधारण अवस्था मे चलते फिरते समय भी रूकावट पैदा होती है।
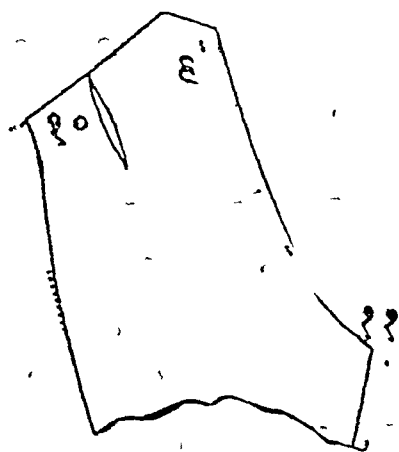
चित्र स० २८८

इस नुक्स को दूर करने के दो तरीके है। पहला यह कि यदि पतलून तैयार हो चुकी हो तो चित्र स० २८८ के अनुसार पीछे की सिलाई को निशान ९ पर दबादो। ऐसा करने से कमर

के नाप मे जो कमी हुई हो उसे निशान १० पर साईड पर का दबाव बाहिर निकाल कर पूरा करो। इस तरह से पीछे की सिलाई की लम्बाई बड़ी हो जाती है जिससे चलने फिरने मे किसी प्रकार की रुकावट तथा कष्ट नहीं होता।

परन्तु इस नुक्स को दूर करने की ठीक रीती यह है कि पतलून की पीठ की गिद्री पर का दबाव फ़ोर्क पर से बाहिर निकाल कर उसे घुटने से तथा उस से भी नीचे तक लेजाकर मिला देना चाहिये जैसाकि इस चित्र मे निशान ११ पर बनाया गया है। ऐसा करने से पतलून की टागे जरूरत के मुताबिक खुली हो जाती है और नुक्स सब प्रकार से दूर हो जाता है ॥

(८) पतलून की मोहरी पर सामने में शिकन पड़ना।

(CREASES OVER THE INSTEP)

यह नुक्स प्राय: उन पतलूनों मे पड़ता है जोकि बिना टर्न के बनाई जाती हैं अर्थात् जिन पतलूनों की मोहरिया ऊपर को उलटाई नही जाती उन मे यह नुक्स पड़ता है और जो पतलूनें टर्न वाली होती है उन मे यह नुक्स बहुत कम पड़ता है। हाँ यदि टर्न वाली पतलून की लम्बाई बहुत ज्यादा रक्खी गई हो तो मोहरी बूट की चोट से ऊपर को मुड़ती रहती है और उस अवस्था मे इस प्रकार की पतलूनों मे भी यह नुक्स पड़ जाता है।

जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है यह नुक्स वास्तव मे उन पतलूनों मे पड़ जाता है जिन की मोहरियां न केवल सीधी अथवा बिना टर्न के होती है बल्कि काफ़ी तंग भी होती हैं जैसा

कि डिन्नर सूट की पतलूनों की होती है।

कारण - इस नुक्स का कारण यह होता है कि इस प्रकार की पतलूनों की मोहरियां सीधी नही रखनी चाहिये बल्कि इन्हे इस प्रकार से गोल बनाना चाहिये कि यह बूट की गोलाई के ऊपर आगे और पीछे विल्कुल ठीक आकर बैठे। परन्तु वास्तव मे ऐसा नही किया गया बल्कि मोहरियों को बिल्कुल सीधा बनाया गया है जिससे यह नुक्स पड़ गया हैं। इस नुकूस का कारण यह भी हो सकता है कि पतलून की मोहरियां बिल्कुल सीधी तो न बनाई गई हों बल्कि उन मे जो गोलाइ बनाई गई हो वह इतनी थोड़ी हो कि बूट की गोलाई पर ठीक न बैठे जिस से सामना बूट से टक्कर खाकर ऊपर को मुड़ जाता है। क्योंकि इस प्रकार की पतलूनों की मोहरिया बूट की गोलाई के अनुसार गोल बनाई जाती हैं इस वास्ते इन पतलूनों को शू कट (Shoe Cut) पतलूने भी कहते हैं।

इस नुकूस को दूर करने के वास्ते, जैसाकि इस के कारण मे बताया गया है, जरूरी है कि मोहरी की गोलाई बूट के अनुसार कर दी जाय जैसाकि चित्र स० २८६ मे बिंदियों वाली लकीर के अनुसार निशान १२ और १३ पर किया गया है॥
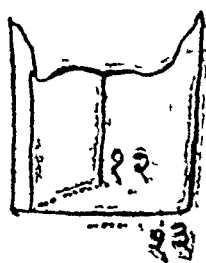
चित्र सं० २८६

(९) पतलून के सामने का ज्यादा चौड़ा होना

(EXCESSIVE MATERIAL IN THE LAP)

जब ग्राहक पतलून पहिन कर खड़ा हो जाता है तो यह नुक्स कुच्छ विशेष तौर पर नज़र नहीं आता परन्तु जब ग्राहक ज़रा बैठ जाता है तो सारा नकशा ही बदल जाता है। अर्थात् सामने में बहुत से बड़े २ झोल पड़ने लग जाते है जिससे यह प्रतीत होता है कि पतलून मे यहां पर कपडा बहुत फ़ाल्तू है। और पीछे की सिलाई टागों के मध्य मे बडी तंगी से खिची जाती है अर्थात् यह सिलाई फोर्क के साथ जा लगती है।
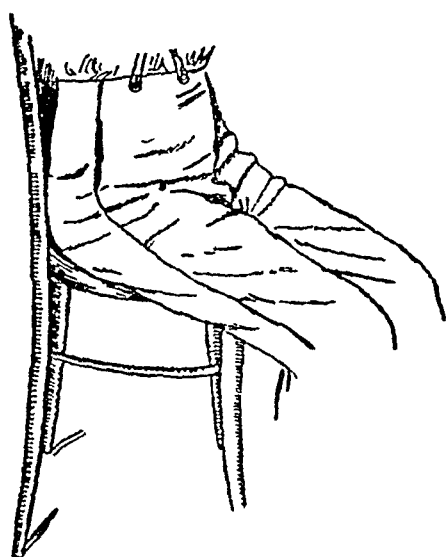
चित्र सं० २९०

इसके इलावा फ़लाई का ऊपर का हिस्सा भी फूलने लगता है। यह नुक्स चित्र सं० २९० से ज़ाहिर किया गया है।

कारण-इस नुक्स का मुख्य कारण पतलून का सामना है जोकि बहुत ज्यादा चौड़ा बनाया गया है। यह भी हो सकता है कि ग्राहक का पेट बढ़ा हुआ हो परन्तु पतलून काटते समय इस बात की तरफ ध्यान न दिया गया हो बल्कि पतलून को

नार्मल शक्ल के अनुसार काट दिया गया हो। इस नुक्स का दूसरा कारण, जिससे पतलून की पीछे की सिलाई दोनों टांगों के मध्य मे तग मालूम होने लगती है, यह हो सकता है कि पीछे की सिलाई कम तिरछी अथवा ज्यादा सीधी बनाई गई है जिससे बैठते समय टागों को साधारण अवस्था मे आगे करने के वास्ते कोई स्थान नही रहता और परिणाम यह होता है कि फ़ोर्क मे खिच पड़ने लग जाती है। पतलून की बाडी का ज्यादा ऊंचा होना भी इस नुक्स का कारण हो सकता है। परन्तु ऐसा केवल उस समय होता है जबकि ग्राहक की कमर का नाप बहुत पतला हो और कपड़ा आगे जाकर इकट्ठा हो जाय।

इस नुक्स के क्योंकि कई एक कारण हैं जैसाकि ऊपर बताया गहा है। इसी वास्ते इसे दूर करने के भी कई एक तरीके होंगे। यदि पतलून न काटी हो और अभी केवल इसका काग़ज़ का खाका ही काटा हो तो चित्र सं० २६१ के अनुसार निशान १ पर पतलून के सामने के खाके मे टुकडा जोड़ कर उसके पेट मुताबिक गोलाई बना देनी चाहिये। परन्तु जब पतलून तैया हो चुकी हो तो इस नुक्स को दूर करने के वास्ते जरूरी है ि सामने को फोर्क पर निशान १६ पर से छाट दिया जाय। ऐस करते समय इस बात का विचार करना जरूरी है कि सामने क केवल फोर्क पर से ही दवाना है ऊपर से बिल्कुल नहीं दबाना।

दोनो अवस्थाओं मे ज़रूरी है कि पीठ मे भी पीछे क सिलाई को ज्यादा तिरछा किया जाया जैसाकि इस चित्र ं
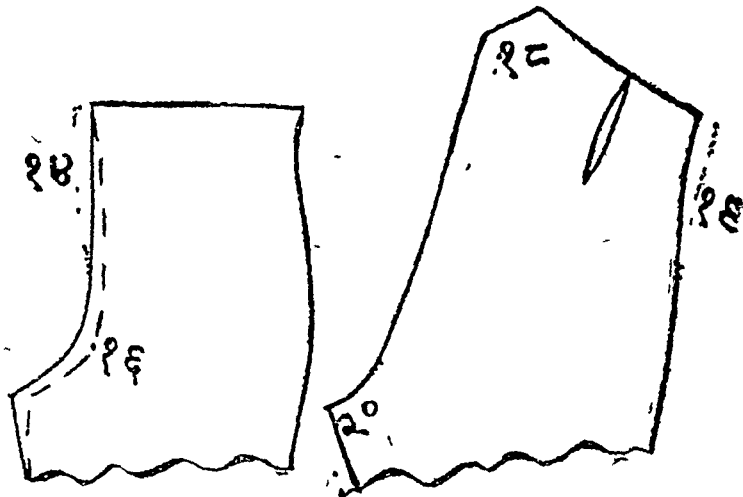
चित्र सं० २६१

निशान १८ पर किय गया है। ऐसा करने से कमर के नाप में जो कमी हुई है, पीठ के साईड पर के दबाव को बाहिर निकाल कर उसे पूरा करो जैसाकि इस चित्र मे निशान १६ पर किया गया है।

यदि पतलून काटते समय पीछे की सिलाई काफ़ी गहरी बनाई गई हो अर्थात् सीट पर की गहराई काफ़ी की गई हो तो पीठ को फ़ोर्क पर छेड़ने की ज़रूरत नही। परन्तु यदि थोड़ी गहराई बनाई गई हो तो पीठ की गिद्री पर के दबाव को फ़ोर्क पर से बाहिर निकाल देना चाहिये जैसाकि इस चित्र मे निशान २० पर करके दिखाया गया है।

या यदि सामने की फ़ोर्क को निशान १६ पर छांटा गया हो तो पीठ की गिद्री के दबाव को फ़ोर्क पर बाहिर निकालना ज़रूरी होता है जैसाकि इस चित्र मे निशान २० पर दिखाया गया है॥

(१०) फ़ोर्क में खड़े अथवा सीधे शिकन पड़ना
(VERTICAL CREASES IN THE FORK)

यह नुक्स चित्र सं० २६२ से जाहिर किया गया है। इस चित्र मे फोर्क से लेकर पेट तक सीधे अथवा खड़े शिकन पडते नजर आते है इसके इलावा पीठ मे रान अथवा पट पर बहुत सा कपडा फ़ाल्तू कपड़ा इकट्ठा हो जाता है जिस से यहां पर झोल पडने लग जाता है। और पतलून की पीठ सीधी गिरने की बजाय टांगों के साथ लगी रहती है। यहां इस बात का विचार कर लेना जरूरी है कि ग्राहक को इस प्रकार की पतलून पहिनने मे किसी प्रकार की तंगी अनुभव नहीं होती। बल्कि यदि यह कह दिया जाय कि इस प्रकार की पतलून ज़रूरत से ज्यादा सुख दाई होती है तो ठीक होगा।
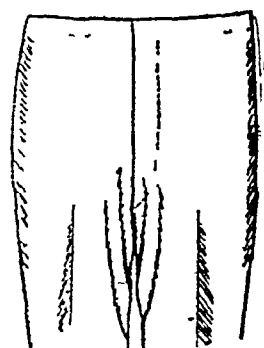
चित्र सं० २६२

कारण—इस नुक्स का सब से बड़ा तथा मुख्य कारण यह है कि पतलून की सीट तथा हिप जरूरत से ज्यादा चौडी बनाई गई है। इस के इलावा यदि पीठ की सिलाई जरूरत से ज्यादा तिरछी तथा लम्बी बनाई जाय तो नुक्स और भी बढ़ जाता है। क्योंकि जब पीछे की सिलाई ज्यादा तिरछी बन जाय तो जरूरी है कि उसकी लम्बाई भी बढ़ जायगी। उस सिलाई की लम्बाई के ज्यादा हो जाने से पतलून आगे की तरफ़ चली आती है जिस

का परिणाम यह होता है कि पतलून पीठ पर टांगों के साथ लग जाती है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते यदि पतलून तैयार हो चुकी हो तो सरल तरीका यह होता है कि पतलून के सामने को फ़ोर्क पर से थोडा सा छांट देना चाहिये और इस के साथ ही फ़लाई की गहराई को जरा ज्यादा गहरा कर देना चाहिये जैसाकि चित्र सं० २९३ मे निशान १ और २ पर करके दिखाया गया है।
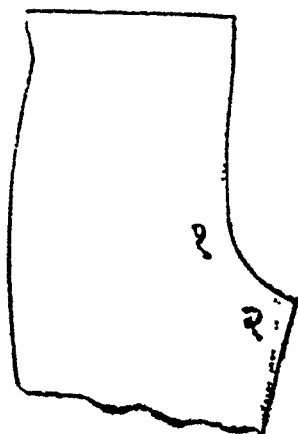
चित्र सं० २९३

यदि इसके इलावा इस नुक्स का कारण पीठ की सिलाई का ज़रूरत से ज्यादा तिरछा होना भी हो जिससे पतलून आगे को चली आती हो और पीठ टांगों के साथ चिमट जाती हो जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है। तो जरूरी है कि पीठ की सिलाई को कम तिरछा तथा ज़रा सीधा कर दिया जाय। ऐसा करने का सरल तरीका यह है कि पीछे की सिलाई पर का दबाव ऊपर से जरूरत के मुताबिक बाहिर निकाल दिया जाय जैसाकि चित्र सं० २९४ मे बिन्दियों वाली लकीर से

चित्र सं० २९४

निशान ३ पर ज़ाहिर किया गया है। ऐसा करने से पीठ की कमर पर की चौड़ाई का नाप जितना बढ़ गया है पीठ की डाट को उतना ज्यादा दबा कर उस ज्यादती को दूर करो जैसाकि इस चित्र मे निशान ४ पर ज़ाहिर किया गया है ॥

नोट—पीठ की सिलाई का ज़रूरत से कम तथा ज्यादा तिरछा होना अर्थात् जरूरत से लम्बा तथा छोटा होना हम ऊपर विस्तार पूर्वक बता आये हैं। इस वास्ते यदि आपने उसे भली भांति समझ लिया है और इस से जो २ नुक्स पड़ते हैं उन को भी जान लिया है तो आप को पतलूनों के बहुत से नुक्स जानने तथा उन को दूर करने मे बहुत सी सहायता मिलेगी।

(११) सामने में फ़ोर्क के पास गोल शिकन पड़ना (CURVED CREASES ROUND FRONT FORK)

यह नुक्स किसी अलग चित्र द्वारा ज़ाहिर नहीं किया गया बल्कि चित्र स० २६५ से ही ज़ाहिर किया गया है जिस मे कि इस नुक्स को दूर करने कि रीती बतलाई गई है जिसका वर्णन आगे आयगा। इस चित्र मे भली भाति जाहिर किया गया है कि ऐसे नुक्स वाली पतलून में शिकन तथा झोल किस प्रकार से पड़ते हैं।

इस चित्र को भली प्रकार देखने से आप को मालूम हो जायगा कि इस अवस्था मे पतलून के सामने मे ही फ्रोर्क के आस पास गोल शिकन पड़ते नजर आते है जोकि फ्रोर्क से लेकर गिद्दी की तरफ़ चले जाते है और घुटने से ज़रा ऊपर जा कर समाप्त

हो जाते हैं ।

पतलून की पीठ में भी इसी प्रकार का शिकन पड़ता नज़र आता है परन्तु जहां सामने मे यह झोल गोलाई मे पड़ता है वहां पीठ मे ऐसा नहीं होता बल्कि केवल खिच सी पड़ती मालूम होती है ।

कारण— इस नुक्स का कारण ऊपर बताये गये नुक्स का बिल्कुल उलट है अर्थात् जहां ऊपर वाले नुक्स का करण पतलून की सीट का जरूरत से ज्यादा चौड़ा होना है वहां इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि पतलून हिप तथा सीट पर जरूरत से कम चौड़ी तथा तंग बनाई गई है क्योंकि ग्राहक का हिप भारी तथा मोटा है और पतलून जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है उस के अनुसार खुली नहीं बनाई गई बल्कि तंग बनाई गई है । इस वास्ते ग्राहक का शरीर पतलून को हिप पर दबाता है जिस का परिणाम यह होत है कि सामने और पीठ पर हिप की गोलाईयों के पास झोल तथा शिकन पड़ते नज़र आते हैं।

इस नुक्स को दूर करने की रीति जैसाकि ऊपर बताया गया है चित्र सं० २९५ से ज़ाहिर की गई है । क्योंकि पतलून के सामने में पास तथा गिद्री पर किसी प्रकार का दबाव नहीं रखा जाता इस वास्ते जरूरी है कि इस नुक्स को दूर करने तथा पतलून को हिप पर चौड़ा करने के वास्ते पीठ की गिद्री पर के दबाव से काम लिया जाय अर्थात् यह नुक्स केवल पीठ की सहायता से ही दूर किया जा सकता है और इस मे पतलून के सामने को कसी प्रकार से छेड़ने की ज़रूरत नहीं है । पीठ के गिद्री पर के दबाव को फ़ोर्क

पर बाहिर निकालो जैसाकि चित्र स० २६५ मे निशान ५ पर ज़ाहिर किया गया है। ऐसा करने से पतलून जरूरत के मुताबिक हिप पर खुली हो जावेगी। अब पीठ की गिद्री पर के दबाव को फोर्क से लेकर नीचे तक बाहिर निकालो जैसाकि इस चित्र मे बिंदियों वाली लकीर से जाहिर किया गया है। ऐसा करने से नुक्स सब प्रकार से जाता रहेगा ॥
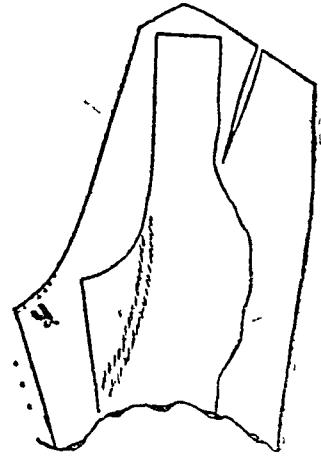
चित्र सं० २६५

(१२) फ़ोर्क से घुटने तक शिकन पड़ना

(CREASES FROM FORK TO KNEE)

यह नुक्स चित्र सं० २६६ से जाहिर किया गया है जब ग्राहक पतलून पहिन कर खडा होता है तो यह नुक्स इतना ज्यादा नजर नही आता परन्तु जब ग्राहक बैठ जाता है तो गिद्री मे फोर्क से लेकर घुटने तक खिच पडने लग जाती है।

इस प्रकार की पतलून से फोर्क पर बहुत तगी होती
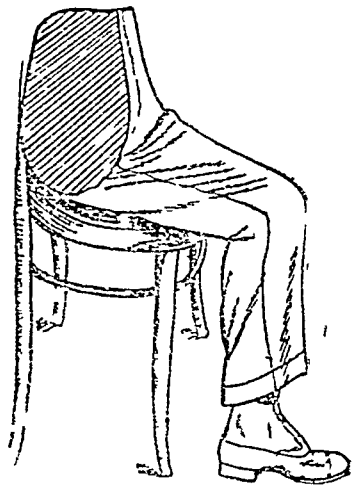
चित्र सं० २६६

है और इस के इलावा घुटने पर भी काफी दबाव पडता रहता है ।

कारण– जिस तरफ़ पतलून की गिद्री मे खिच पडती है अर्थात् फोर्क से घुटने तक का नाप पतलून काटते समय जरूरत से छोटा बनाया गया है जिसका परिणाम यह होता है कि फ़ोर्क से लेकर घुटने तक खिच पड़ने लग जाती है जोकि शिकनों से जाहिर की गई है ।

इस के इलावा फ़ोर्क पर पतलून का कम चौड़ा अथवा तग होना भी इस नुक्स का कारण होता है और यदि पीठ के बीच की सिलाई ज़रूरत से छोटी हो तो यह नुक्स और भी बढ जाता है क्योंकि जब ग्राहक खड़ा होता है तो उस का हिप इतना फैलाना नही बल्कि उस की मोटाई ज्यादा लम्बाई को जाहिर करती है परन्तु जब ग्राहक बैठ जाता है तो उस का हिप लम्बाई मे बढ़ने की बजाये, जैसाकि वह खड़े हुऐ होता है, चौडाइ मे फैलने लग जाता है अर्थात् प्रायः जब ग्राहक बैठ जाता है तो उस का हिप खड़े होने की अवस्था से ज्यादा चौड़ा तथा मोटा ज़ाहिर होता है परन्तु पतलून काटते समय जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है इस बात की ओर ध्यान नही दिया गया जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसी अवस्था मे ग्राहक को पतलून फोर्क पर चुभती रहती है ।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते चित्र सं० २६७ के अनुसार पीठ की गिद्री पर के दबाव को बाहिर निकाल दो जैसाकि इस चित्र मे बिंदियों वाली लकीर से निशान ६ पर जाहिर किया

गया है। ऐसा करने से पतलून सीट पर तो ज़रूर खुली हो जायगी परन्तु इस के पीछे की सिलाई वैसी तथा कम तिरछी रहेगी जिस से यह नुक्स बिल्कुल दूर नही होगा। इस वास्ते ज़रूरी है कि पीठ की सिलाई को जरूरत के मुताबिक पहले से ज्यादा तिरछा बनाया जाय जैसाकि इस चित्र मे पीठ की सिलाई को केवल ऊपर से
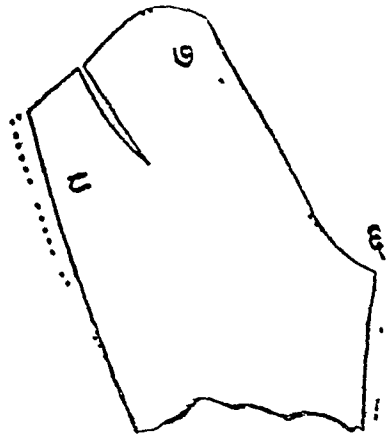
चित्र सं० २६७

ही दबा कर किया गया है। इस सिलाई को ऊपर निशान ७ पर दबा कर इसे बिंदियों वाली लकीर की सहायता से निशान ६ तथा फ़ोर्क के साथ इस तरह से मिला दिया जाय कि फ़ोर्क पर यह सिलाई बिल्कुल न दबाई जाय जैसाकि इस चित्र मे ज़ाहिर किया गया है।

ऐसा करने से अर्थात् पीठ के बीच की सिलाई को ऊपर से दबाने से पतलून की कमर का नाप पहले से घट जायगा। इस वास्ते जरूरी है कि इस कमी को दूर करने के वास्ते पतलून की पीठ के पास पर के दबाव को बाहिर निकाल दिया जाय जैसाकि इस चित्र मे निशान ८ पर किया गया है॥

(१३) बैठते समय पतलून की मोहरियों का ऊपर को उठ खड़ा होना।

(BOTTOMS RISING UP WHEN SEATED)

यह नुक्स भी ऊपर वाले नुक्स के साथ चित्र सं० २९६ से ज़ाहिर किया गया है। जब ग्राहक पतलून पहिन कर बैठ जाता है तो पतलून की मोहरी आगे की तरफ़ ऊपर को उठ खड़ी होती है जैसाकि चित्र सं० २९६ को देखने से मालूम होता है।

जैसाकि ऊपर वाले नुक्स के पाठ में बताया जा चुका है कि पतलून मे बैठते समय फ्रोर्क से घुटने तक खिच पडती है। इसका परिणाम् यह भी होता है कि यह खिच पतलून की मोहरी को भी आगे की तरफ़ ऊपर को खेंचती है जिससे मोहरी पीछे अथवा नीचे की तरफ़ पैर के साथ चिमट जाती है।

इस से सिद्ध हुआ कि यह कोई नया नुक्स नही है बल्कि ऊपर वाले नुक्स की यह दूसरी अवस्था है जो यहां पर बताई गई है। जब चित्र सं० २९७ की सहायता से ऊपर वाला नुक्स दूर किया जायगा जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है तो यह नुक्स भी स्वयंम् दूर हो जायगा। इस वास्ते इस के दोबारा लिखने की ज़रूरत नही॥

(१४) पाकट के मुंह का खुलना

(GAPING POCKET MOUTH)

यह नुक्स चित्र द्वारा दिखाने की ज़रूरत नही है। क्योंकि यह एक साधारण सी बात है कि पाकट का मुंह हमेशा खुला रहे जिससे देखने वाले को स्पष्ट तौर पर यह प्रतीत हो कि पतलून यहां पर तंग है जिससे खिच पड़ने के कारण से पाकट का मुंह खुला रहता है। यह न केवल स्वयंम् ही बुरा मालूम होता है

बल्कि इस से पाकट के अन्दर की सिलाई तथा पाकट का रंगदार कपड़ा भी नजर आने लगता है जोकि देखने मे बहुत भद्दा मालूम देता है ।

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि ग्राहक के हिप साईड पर तो बाहिर को निकले हुए है और पीछे की तरफ़ सीधे है अथवा बाहिर को नही निकले हुए । परन्तु पतलून काटते समय इस बात की तरफ ध्यान नही दिया गया कि ग्राहक के शरीर की बनावट कैसी है बल्कि इसे साधारण पतलूनों की तरह काट दिया गया है । जिसका परिणाम यह होता है कि साईड पर, जहा कि ग्राहक के हिप बाहिर को निकले हुए हैं, पतलून मे खिच पडने लग जाती है और पाकट का मुंह फटने लगता है तथा पीठ पर, जहाकि ग्राहक का शरीर उभरा हुआ होने की बजाय सीधा है, कपडा इकट्ठा हो जाता है और यहाँ पर पतलून मे झोल पडने लग जाता है ।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते जरूरी है कि जहाँ पतलून के हिप को साईड पर से बाहिर निकाला जाय अथवा ढीला किया जाय वहाँ पीछे से इसे तग कर दिया जाय । जिस से न केवल साईड पर की खिच तथा पाकट के मुह का खुलना बन्द हो जाय बल्कि पीछे के झोल भी दूर हो जाये । अर्थात् पतलून सब प्रकार से ठीक हो जाय ।

चित्र स० २९८ के अनुसार पीठ के बीच की सिलाई को ऊपर से लेकर नीचे तक जरूरत के मुताबिक दबा दो जैसाकि चित्र स० २९८ मे निशान ९ से १० तक जाहिर किया गया

है। अर्थात् पतलून के पीछे जितने झोल पड़ते हों उतना ही पतलून को ६ से १० तक दबा दो। ऐसा करने से पतलून के कमर तथा हिप के नाप जरूरत से छोटे हो जायेंगे इस वास्ते ज़रूरी है कि पतलून के पास के दबाव को उतना ही बाहिर निकाल दिया जाय जितना कि इसे पीछे की सिलाई पर ६ से १० तक दबाया गया हो जैसाकि इस
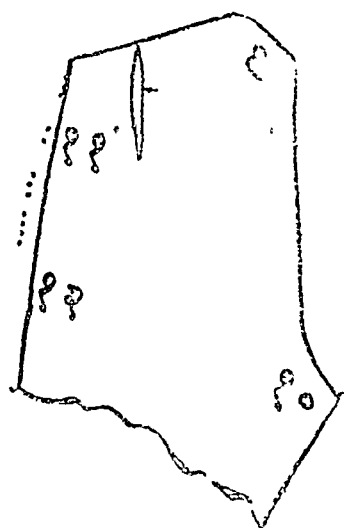
चित्र सं० २६८

चित्र मे ११ से १२ तक करके दिखाया गया है ।

इस प्रकार के शरीर वाले ग्राहकों, जिनके हिप साईड पर तो बाहिर को उभरे हुए हों और पीठ पर सीधे हों, की पतलून काटते समय जरूरी है कि उन की पतलून के पीछे की सिलाई काफ़ी ज्यादा सीधी अथवा कम तिरछी होनी चाहिये। इस के साथ ही उनकी पतलूनों की पीठ मे से साधारण पतलूनों की तरह डाट नही निकालनी चाहिये बल्कि डाट का हिस्सा साईड को ऊपर से दबा कर निकाल देना चाहिये। इस का परिणाम यह होगा कि हिप पर चित्रानुसार साईड गोल हो जायगा जोकि बिल्कुल ग्राहक के शरीर के अनुकूल होगा और पतलून मे इस प्रकार का नुकस कदापि नही पडेगा ॥

(१५) पेट पर दबाव पड़ना ।

(PRESSUSE ON THE STOMACK)

यह नुक्स चित्र स० २६६ से जाहिर किया गया है। ऐसी अवस्था मे ग्राहक हमेशा शिकायत करता है कि पतलून फ़लाई के ऊपर वाले बटन अथवा पेट पर बहुत तग है जिससे पेट पर काफ़ी दबाव पडता रहता है। यदि फलाई का ऊपर का बटन खोल दिया जाय तो पतलून का सामना ऊपर से खुलने लग जाता है जिससे यह मालूम होता है कि पतलून यहाँ पर बड़ी तंग है जैसाकि चित्र सं० २६६ मे दिखाया गया है।
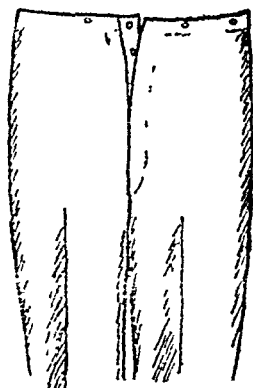
चित्र सं० २६६

कारण—इस नुक्स का सब से बडा कारण यह है कि पतलून कमर पर तंग है और यही कारण है कि जब फ़लाई का ऊपर का बटन खोला जाता है तो पतलून के सामने खुलने अर्थात् एक दूसरे से अलग होने लग जाते हैं।

इस का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि ग्राहक का पेट तो सामने आगे की तरफ़ बढ़ा हुआ है परन्तु पतलून काटते समय इस बात की तरफ़ ध्यान नही दिया गया। अर्थात् पतलून के सामने को आगे की तरफ़ पेट की गोलाई के मुताबिक गोल नही किया गया बल्कि साधारण पतलूनों की तरह इसे सीधा ही काट दिया गया है। जिस का परिणाम यह होता है कि चाहे पतलून की कमर का नाप पूरा ही क्यों न बनाया गया हो परन्तु

पेट पर पतलून जरूर ही दबाती रहेगी। क्योंकि, जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, पतलून काटते समय पतलून के सामने में पेट के उभार के मुताबिक गोलाई नही बनाई गई।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते देखना यह है कि क्या पतलून तैयार हो चुकी है या इसे अभी काटना है। यदि अभी पतलून काटनी हो तो सरल और साधारण रीति इस नुक्स को दूर करने की यह है कि पतलून के सामने को आगे की तरफ़ बढ़ा दिया जाय जैसाकि चित्र सं० ३०० मे निशान १३ पर किया गया है।
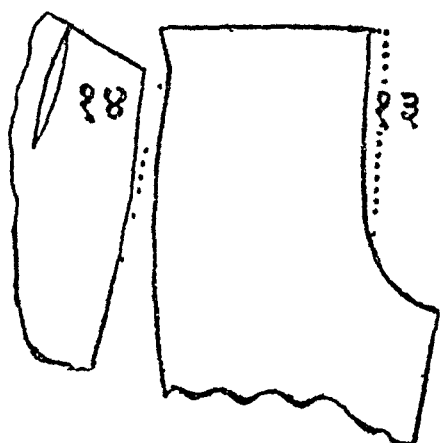
चित्र सं० ३००

परन्तु जब पतलून तैयार हो चुकी हो तो उस अवस्था में हम ऐसा नहीं कर सकते अर्थात् सामने को आगे की तरफ़ नही बढ़ा सकते, जैसाकि ऊपर निशान १३ पर करके दिखाया गया है, कयोंकि सामने मे कोई ऐसा दबाव नहीं रखा जाता जिसे बाहिर निकाल कर कमी पूरी की जा सके। और आप चाहें कि जरूरत के मुताबिक सामने मे जोड़ लगा कर इसे बढ़ा दिया जाय तो यह बहुत ही बुरा मालूम देगा कयोंकि जोड़ बिल्कुल सामने आजायगा। इस वास्ते ऐसी अवस्था मे ज़रूरी है कि कोई और तरीका ढूंढा जाय। वह यह कि जरूरत के मुताबिक पतलून की पीठ के साईड पर का दबाव बाहिर निकाल

दिया जाये जैसाकि इस चित्र मे निशान १४ पर किया गया है।

यदि आप विचार करे कि साईड खोलने से पाकट भी खोलनी पडेगी जिससे मुफ़्त मे बहुत सा काम बढ़ जायगा। क्योंकि न पीठ के बीच की सिलाई पर का दबाव बाहिर निकाल कर कमर के नाप की कमी को पूरा कर दिया जाय। तो हम आप पर भली भाति विदित किये देते हैं कि ऐसा करने से कुछ भी लाभ प्राप्त नही होगा। क्योंकि इस प्रकार से की गई सारी की सारी ज्यादती पीचे की तरफ़ ही रहेगी जहा पर कि पतलून मे झोल पडने लग जायगा। और पतलून के सामने का पेट पर का दबाव बिल्कुल कम नहीं होगा॥

(१६) घोड़े के पैर के खुर की तरह झोल पड़ना (HORSE SHOE FOLDS)

यह नुक़स चित्र सं० ३०१ से जाहिर किया गया है। यदि आप इस चित्र को देखें तो आपको शीघ्र ही मालूम हो जायगा कि पतलून की पीठ मे हिप की गोलाई से नीचे बहुत से गोल गोल शिकन पड़ते नज़र आते है। जिससे यह मालूम होता है कि पतलून इस भाग पर ज़रूरत से ज्यादा लम्बी है इस
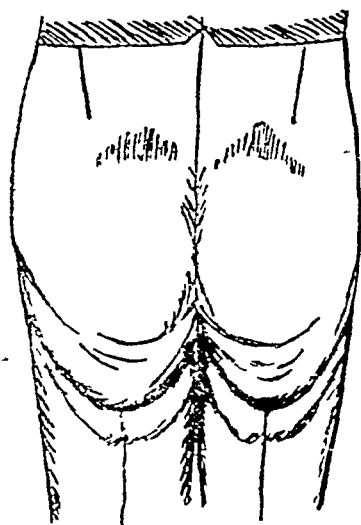
चित्र सं० ३०१

वास्ते यहां पर फाल्तू कपड़ा इकट्ठा हो कर झोल तथा शिकनों की शकल मे नज़र आता है। यह फ़ाल्तू कपड़ा हिप की गोलाई तथा चूतड़ों से नीचे इकट्ठा हो जाता है अर्थात् यह फाल्तू लम्बाई पीठ मे रान तथा पट के ऊपर इकट्ठी हो कर झोल पैदा करती है। यह झोल तथा शिकन हिप तथा चूतडों की तरह बिल्कुल गोल होते है। ऐसी अवस्था मे पतलून की पीठ टांगों के साथ बिल्कुल चिमटी रहती है और पिडलियों पर पतलून की पीठ का बहुत सा दबाव पड़ता रहता है। इस दबाव का परिणाम यह होता है कि पतलून की मोहरी बूट की अड्डी पर गिरने की बजाय उससे दूर उठ खड़ी होती है।

यदि आप पतलून की पीठ को फ़ोर्क पर से भली भांति देखे तो आप को मालूम हो जायगा कि यहां पर भी कुच्छ शिकन पड़ रहे हैं जिनको देखने से यह अनुमान होता है कि पतलून मे यहां पर खिच पड़ रही है।

कारण—इस नुकस का मुख्य कारण यह है कि पतलून की पीठ की सिलाई, जिसे पीछे की सिलाई भी कहते हैं, ज़रूरत से ज्यादा तिरछी बनाई गई है। इसके इलावा इस नुक्स का एक कारण यह भी है कि जिस ग्राहक की पतलून बनाई गई है उसका शरीर अकड़ा हुआ है और कारीगरों ने पतलून सीते समय पतलून के सामने तथा पीठ को अच्छी तरह लोहे के साथ खेच कर तथा प्रैस करके फलकाया नहीं है जैसाकि अकड़े हुए शरीर वाले आदमी की पतलून सीते समय करना जरूरी है।

यह कोई साधारण नुक्स नहीं है बल्कि इतना बडा नुक्स है कि कटर और ग्राहक दोनों को बहुत ज्यादा परेशान करता है। साधारण अवस्था मे तो ग्राहक इस प्रकार के नुक्स से इतना घबरा जाता है कि दर्ज़ी की बुद्धि भी मारी जाती है। इस वास्ते आप इसे भली भाती समझने की कोशिश करे। इस मे सन्देह नहीं कि ऐसे नुक्सों को दूर करने मे काम बहुत सा बढ जाता है परन्तु ऐसा किये बिना कुछ बनता ही नहीं। यदि आप ऐसी अवस्था मे पतलून की सीट के नाप को भी बढ़ा सके तो इस नुक्स को दूर करने मे बहुत सी सहायता मिलेगी। ऊपर तो यह बताया गया ह कि पतलून की पीठ मे फ़ोर्क पर भी शिकन पड़ते नजर आते हैं जिन को देखने से यह अनुमान किया जा सकता है कि पतलून मे यहा पर भी खिच पड़ रही है जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है। ऐसा केवल उस अवस्था मे होता है जबकि हिप के ज्यादा गोल होने तथा शरीर के ज्यादा अकड़े हुए होने के इलावा कोई और कारण हो अर्थात् पतलून फ़ोर्क पर तंग हो जिस से यहा पर ऊपर बताये गये शिकन पड़ते हों। ऐसी अवस्था मे चाहे आप कितना ही क्यों न पतलून के सामने और पीठ को लोहे से प्रैस करके आवश्यकता अनुसार फलकाते तथा शरिङ्क करते रहे यह नुक्स बिल्कुल दूर नहीं होगा जब तक कि इस के साथ ही पतलून को हिप पर ढीला ना किया जाय। इसके इलावा यदि पतलून की पीठ मे बीच की सिलाई को ज़रा ज्यादा गहरा करके इसे कम तिरछा अथवा सीधा बना दिया जाय तो नुक्स दूर करने मे बहुत सी सहायता मिलेगी।

अब हम नीचे बतलाते हैं कि इस नुक्स को किस २ प्रकार से दूर करना चाहियेः—

यदि ग्राहक का शरीर अकड़ा हुआ हो और पट तथा
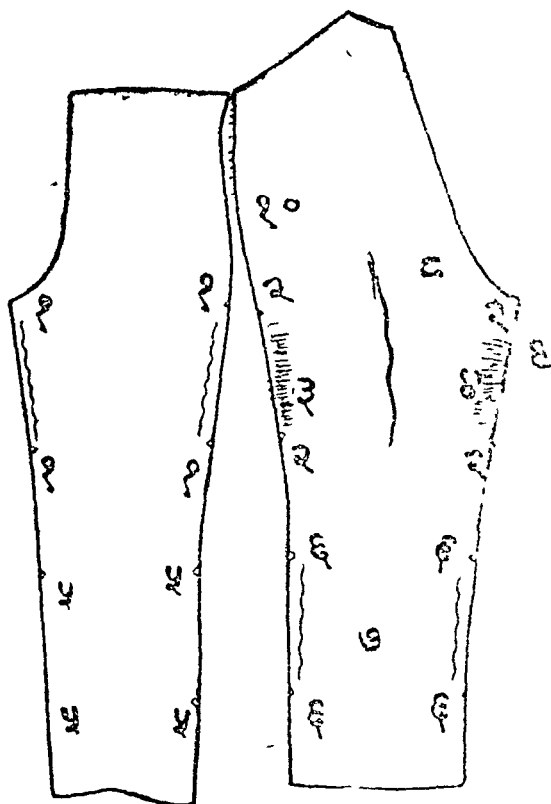
चित्र सं० ३०२

पिडलियां काफ़ी मोटी हों तो पतलून के सामने मे निशान १ और १ पर "नम" (Full on) देनी चाहिये और पीठ को यहां पर खेंच कर लगाना चाहिये जैसाकि चित्र सं० ३०२ मे निशान ३ और ४ से ज़ाहिर किया गया है। अर्थात् चित्र सं०

३०२ के अनुसार सामने को तो निशान १ और १ पर नम मे लगाओ और पीठ को निशान ३ और ४ पर खेच कर तथा फलका कर। पीठ मे निशान ३ और ४ के बीच मे जो टेढ़ी लकीर लगाई गई है वह यह जाहिर करती है कि पीठ को ३ और ४ पर फलकाने से उसके बीच मे जो झोल सा पड़ने लगे उसे लोहे से शरिङ्क करके दूर करो। अर्थात् यह निशान शरिङ्क करने का है। इस से निश्चय हुआ कि पतलून के सामने को तो निशान १ तथा १ पर नम मे लगाओ और पीठ को निशान ३ तथा ४ पर फलका कर और उन के बीच मे इसे शरिङ्क करो।

यहां तक हम ने जो कुच्छ किया है वह केवल पटों तक किया गया है। अब हम पिंडलियों पर की मोटाई का वर्णन करते हैं जोकि घुटने से तीन इंच नीचे को होती हैं।

पिडलियों पर पीठ मे निशान ६ और ६ पर नम लगाई जाती है। ऐसा करने से इसके बीच मे निशान ७ पर जो झोल पड़ने लग जाता है उसे पानी लगा कर लोहे से प्रैस करके दूर करो।

पीठ के बीच की सिलाई को बिन्दियों वाली लकीर के अनुसार निशान ८ पर गहरा करो। सीट पर पतलून को खुला करने के वास्ते पतलून की पीठ की गिद्री मे फ़ोर्क पर जितना भी दबाव है, उसे बाहिर निकालो जैसाकि इस चित्र मे निशान ६ पर जाहिर किया गया है। और पास के दबाव को भी हिप पर बाहिर निकालो जैसाकि इस चित्र मे निशान १० पर किया

गया है । ऐसा करने से नुक्स सब प्रकार से दूर हो जायगा ।।

(१७) झुकते समय पतलून में खिच पड़ना ।

(LIMITED STOOPING ROOM)

जब ग्राहक कुरसी पर बैठ कर शरीर को आगे की तरफ़ मेज़ के साथ झुका कर बैठता है अथवा साईकल पर चढ़ कर उसके हैण्डल को पकड़ कर आगे को झुकता है तो पतलून की पीठ की सिलाई मे बहुत सी तंगी अनुभव होती है । प्रायः इस से गैलसों (Braces) पर इतनी खिच पडने लगती है कि पीछे के गैलस के बटन इस खिच को सहिन नहीं कर सकते बल्कि वह बटन टूट जाते हैं अथवा उन का धागा टूट जाता है और वह पतलून से अलग हो जाते हैं । और पतलून का सामना न केवल पटों पर आकर चिमट जाता है और यहाँ पर इसे दबाता रहता है बल्कि पतलून का सामना फ़ोर्क मे घुसने लग जाता है । और जब ग्राहक साधारण अवस्था मे बैठ जाता है तो फ़ोर्क से घुटने तक खिच तथा शिकन पड़ने लग जाते है जैसा कि ऊपर चित्र सं० २६६ मे बताया जा चुका है ।

कारण—यह नुक्स देखने मे बिल्कुल साधारण मालूम होता है क्योंकि इसका कारण बिल्कुल साधारण है अर्थात् पीठ की बाडी की ऊंचाई के कम होने से यह नुक्स पड़ जाता है । परन्तु यदि आप यह विचार करने लगे कि पतलून की पीठ मे ऊपर की तरफ़ कपड़े का टुकड़ा जोड़ दिया जाय तो यह कमी

पूरी हो जायगी अर्थात् पतलून की पीठ की बाडी की ऊंचाई ज्यादा हो जायगी और नुक्स दूर हो जायगा। परन्तु ऐसा करने से यह नुक्स बिल्कुल दूर नही होगा और आप का अनुमान बिल्कुल ग़लत साबित होगा।

क्योंकि इस नुक्स का ज़ाहिरा कारण तो यह मालूम होता है कि पीठ की बाडी की ऊंचाई छोटी है। परन्तु वास्तव मे ऐसा नही है बल्कि इस नुक्स का असली कारण पीठ के बीच की सिलाई का कम तिरछा होना है जिससे बैठते और झुकते समय जो सीट फूल जाती है उसके वास्ते कोई प्रबन्ध नही होता और यह नुक्स पड़ने लगता है।

इस वास्ते इस नुक्स को दूर करने के वास्ते जरूरी है कि पतलून की पीठ के बीच की सिलाई को जरूरत के मुताबिक तिरछा किया जाय। अर्थात् चित्र सं० ३०२ के अनुसार पीठ की सिलाई को ऊपर कमर पर से दबा दो जैसाकि इस चित्र मे निशान ११ पर किया गया है। अब निशन ११ को बिदियों वाली लकीर की सहायता से फ़ोर्क के साथ मिला दो जैसाकि इस चित्र मे दिखलाया गया है। ऐसा करने से जो बिदियों वाली लकीर बनाई गई है वह पीठ के बीच की सिलाई को जाहिर करती है जोकि पहले से बहुत तिरछी हो गई है। ऐसा करने से वह नुक्स तो जाता रहेगा परन्तु क्योंकि पीठ की सिलाई कमर पर दबाई गई है जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है इस वास्ते पीठ की कमर की चौड़ाई भी ज़रूरत से छोटी हो जायगी। इस कमी को

पूरा करने के वास्ते पीठ के साईड पर के दबाव को कमर पर उतना ही बाहिर निकालो जितना कि इसे पीछे की सिलाई पर दबाया गया हो जैसाकि इस चित्र में निशान १२ पर किया गया है इस के इलावा यदि पतलून की सीट भी तंग हो

चित्र सं० ३०३

अर्थात् पतलून फ़ोर्क पर कम चौडी हो तो जरूरत के मुताबिक पीठ की गिद्री पर के दबाव को फ़ोर्क पर से बाहिर निकाल देना चाहिये ॥

(१८) पतलून की बाडी का छोटा होना

(TROUSERS TOO SHORT IN THE BODY)

यह नुक्स प्राय: मोटे पेट वाले आदमी की पतलून मे पड़ता है। क्योंकि उस का पेट आगे को बढ़ा हुआ होता है इस वास्ते उसकी पतलून काटते समय सामने मे भी बाडी को ऊंचा करना पड़ता है। सामना आगे से पेट की गोलाई के ऊपर चढने के कारण से नीचा रहता है और साईड पर आगे की अपेक्षा ऊंचा होता है वास्तव मे यह आगे की तरफ़ साईड की अपेक्षा ऊंचा होना चाहिये चाहे पतलून मोटे पेट वाले आदमी की हो अथवा नार्मल शकल वाले आदमी की दोनों अवस्थाओं मे यदि उस की पतलून
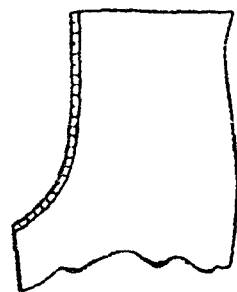
चित्र सं० ३०५

के सामने की फ़लाई को नाप कर उस के बराबर ही उसे रक्खा जाय जैसाकि चित्र सं० ३०५ मे फ़लाई नापना बताया गया है। यदि पतलून के सामने की बाडी न केवल आगे से छोटी हो बल्कि सारी की सारी छोटी हो तो उस अवस्था मे इस के ऊपर पटी अथवा बैल्ट लगा देनी चाहिये जिस से इस की ऊंचाई जरूरत के मुताबिक ऊची हो जायगी और नुक्स जाता रहेगा। परन्तु ऐसा हम उस अवस्था मे कर सकते हैं जबकि हमारे पास ऐसा करने अथवा बैल्ट लगाने के वास्ते काफी कपड़ा हो परन्तु जब हमारे पास फ़ाल्तू कपडा बिल्कुल न हो तो उस अवस्था मे हम ऐसा नही कर सकते।

जब हमारे पास कपडा न हो जिस से कि हम बैल्ट बना कर सामने के ऊपर लगा सके तो ऐसी अवस्था मे पतलून की पीठ तथा सामने की फ़ोर्क को पहले से नीचा करना होगा जिस से
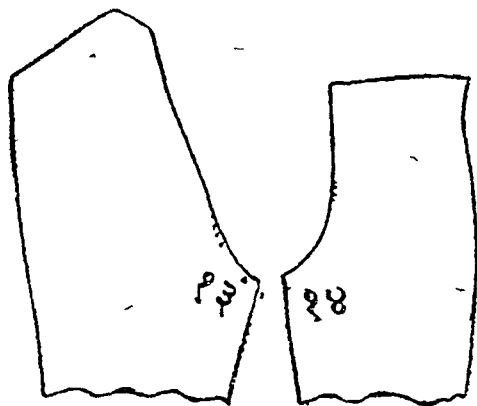
चित्र सं० ३०४

उस की बाडी ज़रूरत के मुताबिक ऊंची हो सके जैसाकि चित्र सं० ३०४ मे निशान १३ और १४ पर करके दिखलाया गया है। ऐसा करने से पतलून की गिद्री की लम्बाई छोटी हो जायगी क्योंकि गिद्री को ऊपर से घटा कर फ़ोर्क को नीचा करके बाडी को बढ़ाया गया है। गिद्री की इस कमी को पूरा करने के वास्ते मोहरी के नीचे मोड़े हुए दबाव मे से ज़रूरत के मुताबिक बाहिर निकाल कर गिद्री के नाप को पूरा करो ॥

(१६) गिद्री के ऊपर सीधे शिकन पड़ना जिस से ड्रैस ज़ाहिरा तौर पर नज़र आती रहे।

(HORIZONTAL CREASES AT THE TOP OF LEG-SEAM DRESS SHOWING UP PROMINENTLY)

यह नुक्स चित्र सं० ३०६ से ज़ाहिर किया गया है इस मे पतलून की गिद्री का ऊपर का हिस्सा ग्राहक की टाँग के साथ बिल्कुल चिमटा रहता है जिस से ड्रैस बिल्कुल नज़र आती रहती है। अर्थात् ग्राहक के शरीर का वह हिस्सा जहा से कि गिद्री शुरू होती है बिल्कुल नजर आता रहता है। हालांकि वास्तव मे ऐसा बिल्कुल नहीं होना
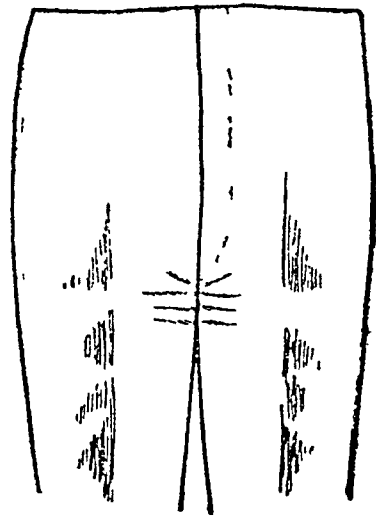
चित्र सं० ३०६

चाहिये बल्कि शरीर सब प्रकार से ढका रहना चाहिये । शिकन गिद्री के ऊपर इकट्ठे हो जाते है जैसाकि इस चित्र मे जाहिर किया गया है ।

कारण–इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि फ्रोर्क से लेकर जब गिद्री की गोलाई बनाई जाती है तो वह जरूरत से ज्यादा गहरी बनाई जाती है। अर्थात् पतलून की गिद्री के जरूरत से,ज्यादा गहरा बनाये जाने से यह नुक्स पड़ जाता है ।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते पतलून के सामने को फ़ोर्क पर से थोड़ा सा छांट दो जैसाकि चित्र सं० ३०७ मे निशान
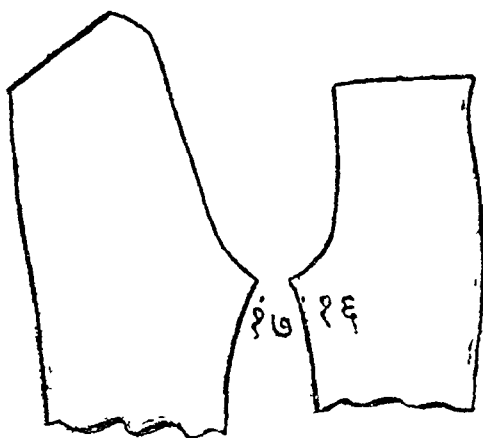
चित्र सं० ३०७

१६ पर करके दिखाया गया है। ऐसा करने से सामने की गिद्री की गोलाई तो पहले से कम गहरी हो जायगी परन्तु फोर्क पर पतलून की चौडाई पहले से घट जायगी। अर्थात् पतलून का

सामना हिप पर तंग हो जायगा। इस कमी को पूरा करने के वास्ते पतलून की पीठ के गिद्री पर के दबाव को फ़ोर्क पर ज़रूरत के मुताबिक बाहिर निकालो जिससे पतलून के सामने में फ़ोर्क पर की गई कमी पूरी हो सके जैसाकि इस चित्र में निशान १७ पर ज़ाहिर किया गया है। इस के साथ ही गिद्री पर के दबाव की सहायता से गिद्री की गहराई को कम करो। अर्थात् पीठ की गिद्री का दबाव बाहिर निकाल कर जरूरत के मुताबिक गिद्री की गहराई को कम करो जैसाकि इस चित्र में बिन्दियों वाली लकीर से करके दिखाया गया है ॥

(२०) पिंडली के ऊपर झोल पड़ना

(WRINKLING OVER THE CALF)

ग्राहक की पिंडलियां ज्यादा मोटी हैं और पतलून की मोहरियां ग्राहक की ईच्छानुसार तथा समय के फैशन के अनुकूल तंग बनाई गई है। पतलून की पीठ नीचे की तरफ़ सीधी गिरने की बजाय ग्राहक की पिंडलियों के साथ लगी रहती है और इस मे अर्थात् पतलून की पीठ मे घुटने से नीचे झोल पड़ते नज़र आते हैं।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते जरूरी है कि क्योंकि ग्राहक की पिंडलियां मोटी हैं इस वास्ते पतलून की पीठ को सामने के साथ जोड़ते समय उस मे ज़रूरत के मुताबिक नम देनी चाहिये। जैसाकि ऊपर चित्र सं० ३०२ मे बताया गया है।

यदि ऐसी अवस्था मे पीठ के बीच की सिलाई, जिसे पीछे

की सिलाई भी कहते है, बहुत ज्यादा तिरछी बनाई जावे तो नुक्स बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। क्योंकि ऐसा करने से पतलून की पीठ बहुत ज्यादा टागों के साथ चिमट जाती है और सामना आगे को निकल खडा होता है। अर्थात् पतलन की पीठ का सारा बोझ टाग के ऊपर पड़ने लगता है जिससे पिडलियों पर दबाव पडता रहता है। इसके इलावा जब ग्राहक की टागे काफ़ी मोटी हों तो नुक्स इतना बढ़ जाता है कि पतलून बिल्कुल ठीक बैठती ही नही ॥

(२१) फ़ोर्क से लेकर साईड तक सीधे शिकन पड़ना
(HORIZONTAL CREASES FROM FORK TO SIDE-SEAM)

यह नुक्स शुरू २ मे नजर ही नही आता बल्कि जब पतलून कुछ दिनों तक पहिन ली जाय तो यह नुक्स जाहिर होने लगता है। इस नुक्स मे पतलून के सामने मे पट के ऊपर के हिस्से मे फ़ोर्क से लेकर पास की तरफ़ जाते हुए सीधे शिकन पडने लग जाते हैं।

जब ग्राहक पतलून पहिन कर बैठ जाता है तो पतलून फ़ोर्क पर इतनी तग मालूम होती है कि ऐसा अनुभव होने लगता है कि पतलून शरीर को फोर्क पर काटना चाहती है। विशेषतर यह तगी उस तरफ होती है जिधर से कि ड्रैसिग उतारी जाती है जो प्राय पतलून की दायी टाग के सामने मे से ही छाँटी जाती है।

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि पतलून की पीठ के बीच की सिलाई बहुत ही कम तिरछी अथवा सीधी बनाई गई है। दूसरे ग्राहक का हिप इतना मोटा नहीं है जितना कि पतलून को हिप पर चौड़ा बनाया गया है। जिसका परिणाम यह होता है कि इस नुक्स के सारे शिकन पूरी तरह नजर नहीं आते बल्कि पतलून के ढीलापन में छुप जाते हैं।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते ज़रूरी है कि पीछे की सिलाई को ज़रूरत के मुताबिक ज्यादा तिरछा बनाया जाय जैसाकि चित्र सं० ३०८ में पीछे की सिलाई को ऊपर से दबा
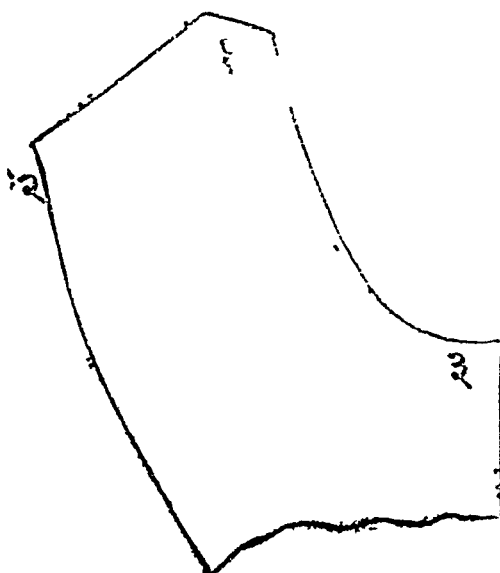
चित्र सं० ३०८

कर किया गया है। अर्थात् पीछे की सिलाई को ऊपर से इतना दबादो जितना कि इस सिलाई को पहले से ज्यादा तिरछा

करना हो जैसाकि इस चित्र मे निशान १ पर करके दिखाया गया है । अब निशान १ को फोर्क के साथ बिन्दियों वाली लकीर की सहायता से गोलाई मे मिलाओ । ऐसा करने से पीछे की सिलाई जरूरत के मुताबिक तिरछी बन जायगी। परन्तु निशान १ पर इसे दबाने से कमर का नाप जितना छोटा हो गया हो निशान २ पर साईड पर का दबाव बाहिर निकाल कर उस कमी को पूरा करो ।

हिप का नाप जितना जरूरत से ज्यादा बनाया गया हो पतलून की पीठ को फ़ोर्क पर उतना ही दबादो जैसाकि इस चित्र मे निशान ३ पर करके दिखाया गया है ॥

(२२) ड्रैस का ग़लत तरफ से उतारा जाना

(DRESS OUT OF WRONG SIDE)

इस नुक्स के विषय मे कुच्छ लिखने से पहले जरूरी मालूम होता है कि आप को बतलाया जाय कि "ड्रैस" शब्द का जो प्रयोग आया है उसका क्या मतलब है ? जैसाकि आप जानते हैं पतलून का सामना काटते समय प्रायः उसका ऊपर का हिस्सा तो कटर लोग अपने दाये तरफ रखते हैं और नीचे का हिस्सा, जिधर मोहरी होती है, बाये तरफ। क्योंकि कपडा काटने से पहले दोहरा कर दिया जाता है और कपड़े की सीधी तरफ तो अन्दर को रखी जाती है और उलटी तरफ बाहिर को। इस तरह से कपड़े पर से जब पतलून के सामने काटे जायेगे तो जो सामना ऊपर को होगा वह दाये तरफ अथवा दाये टाग का

सामना होगा और जो सामना नीचे होगा वह बाये तरफ़ अर्थात् बाये टांग का सामना होगा। पतलून के ऊपर के सामने अर्थात् दाये तरफ़ वाले सामने में से फलाई की गोलाई के साथ २ पौने इंच के बराबर चौडाई मे कपड़ा काट लिया जाता है। इस प्रकार से दाये तरफ़ के सामने की फ़लाई की गोलाई के साथ २ कपड़े को छांटने के करम को ड्रैस उतारना कहते है। यहां पर यह बात विदित कर देना भी ज़रूरी मालूम होता है कि ज़रूरी नहीं कि हमेशा दाये तरफ़ के सामने से ही ड्रैसी उतारी जाय। कई ग्राहक ऐसे भी होते हैं जो बाये तरफ़ से ही ड्रैसी उतरवाते है। परन्तु ऐसे लोग बहुत कम मिलेंगे और प्रायः ड्रैसी दायें तरफ़ से ही उतारी जाती है। अब यहां पर प्रश्न यह है कि यदि ड्रैसी दाये तरफ की बजाय बाये तरफ से उतारी गई हो अर्थात् बाये तरफ़ की बजाय दाये तरफ उतारी गई हो तो उस अवस्था मे कया करना चाहिये। अथवा जैसाकि हम ऊपर बतला आये हैं कि पतलून का ऊपर का सिरा तो काटते समय दाये हाथ की तरफ़ रखा जाय और नीचे का सिरा बाये हाथ की तरफ़ रखा जाता है। परन्तु यदि कोई कटर इसका उलट करता हो अर्थात् ऊपर का सिरा तो अपने बाये हाथ की तरफ़ रख दे और नीचे का सिरा अपने दाये हाथ की तरफ तो ऐसी अवस्था मे उसका दाये टांग का समना ऊपर वाला होने की बजाय नीचे वाला होगा। इस वास्ते उस अवस्था मे ज़रूरी है कि पतलून की ड्रैसी ऊपर वाले सामने मे से काटने की बजाय

नीचे वाले सामने मे से छांटी जाय। परन्तु यदि कटर ऐसी अवस्था मे भी ड्रैसी ऊपर वाले सामने मे से छाट ले जोकि बायें टाग का सामना है तो समझना चाहिये कि ड्रैसी गलत तरफ़ से छाटी गई हैं।

दूसरे यह कि यदि कोई ग्राहक बाये तरफ़ से ड्रैसी उतरवाना चाहता हो और आप ग़लती से दूसरी पतलूनों की तरह इसे भी दाये तरफ़ से छाट दें तो वह ड्रैसी भी ग़लत तरफ़ से छाटी गई कही जायगी।

तीसरे यह कि यदि ग्राहक अपनी पुरानी पतलून उलटवाना चाहे तो ऐसा करते समय उस की दाये टाग जिधर से पहले ड्रैसी उतारी गई होती है बाये तरफ़ आजायगी। ऐसी अवस्था मे भी हमारी ड्रैसी ग़लत तरफ़ से छॉटी हुई होगी।

अब आप के मन मे विचार पैदा होगा कि जब कई लोग बाये तरफ़ से भी ड्रैसी उतरवाते हैं तो कटर की ग़लती से जिनकी पतलून की ड्रैसी गलत तरफ़ से उतारी जाती हैं वह उसे वैसा क्यों नही ले लेते। इसके उत्तर मे यदि यह कह दिया जाय कि यह बात उन के बस की नहीं होती बल्कि उनकी आदत बन जाती है तो ठीक होगा।

दूसरे आपके वास्ते ज़रूरी है कि आप हर एक नुक्स को दूर करना सीखे। यही कारण है कि हम इसे यहा पर इतने विस्तार के साथ लिखने लगे है।

यह एक ऐसा नुक्स है जिसे अनुभव हर एक ग्राहक करता है

परन्तु हर एक ग्राहक इस को मुंह से प्रकट नही कर सकता क्योंकि वह जानते ही नहीं कि इस के विषय में दर्जी को क्या कहा जाय अब हम नीचे इस नुक्स के विषय मे अपने विचार लिखते हैं जिन को आप भली भांति सोच विचार कर पढ़ें और लाभ उठावे। इस नुक्स को दूर करने की रीति चित्र सं० ३०६ की सहायता से समझाई गई है।

इस चित्र मे पतलून का जो सामना दिखलाया गया है यह वह सामना है जिस तरफ से कि ड्रैस नहीं उतारी गई है अर्थात्
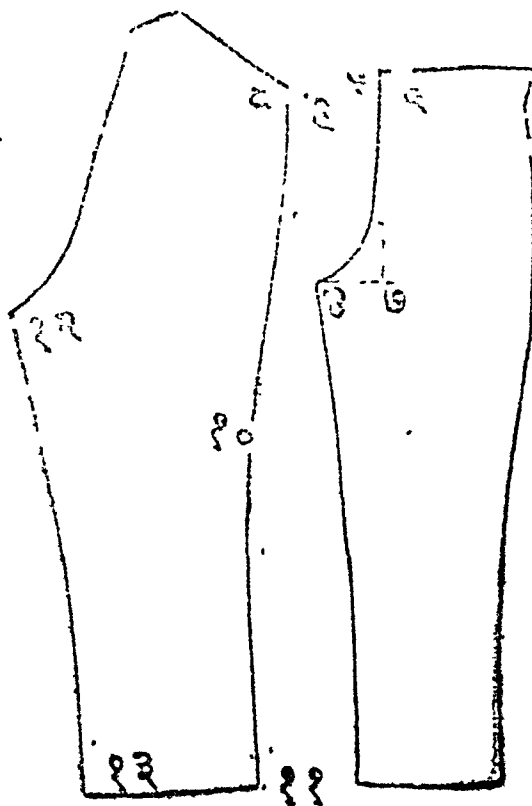
चित्र सं० ३०६

यह वह सामना है जिधर से वास्तव मे ड्रैस उतारनी चाहिये थी परन्तु ग़लती से उतारी दूसरे सामने मे से गई है।

इस मे निशान ४ फ़ोर्क पर की जगह को जाहिर करता है। निशान ५ से लेकर ६ तक को पौने इंच के बराबर बनाओ यह पौना इच उस नाप को ज़ाहिर करता है जितनी कि दूसरे सामने मे से ड्रैसी उतारी गई है निशान ६ से नीचे की तरफ़ ७ तक एक लकीर सकोयर करो। ऐसा करने से जो फ़लाई की दूसरी गोलाई बनेगी उस से यह सामना भी दूसरे सामने के बराबर हो जायगा जिस मे से कि पहले ड्रैस उतारी गई थी। परन्तु ऐसा करने से एक नुक्स पड जाता है वह यह कि इस स्थान पर पतलून के सामने की चौड़ाई घट जाती है इस कमी को पूरा करने के वास्ते पीठ के साईड पर के दबाव को ५ से ६ तक के बराबर बाहिर निकालो जैसाकि इस चित्र मे निशान ८ से ९ तक करके दिखाया गया है। अब निशान ९ को निशान १० के साथ गोलाई मे मिलाओ तो नुक्स दूर हो जायगा और पतलून के सामने की चौडाई भी पूरी हो जायगी क्योंकि पीठ के साईड मे से निकाला हुआ दबाव सामने को आगे की तरफ़ धकेल देता है जिस से सामना सब प्रकार से ठीक हो जायगा।

परन्तु निशान ९ को १० के साथ जब मिलाया जायगा तो यह पास की गोलाई निशान १० पर बहुत गहरी हो जायगी अर्थात् ज्यादा अन्दर को चली जायगी इस से पतलून का फाल (गिराओ) ठीक नही रहेगा। इस नुक्स को दूर करने के वास्ते

जरूरी है कि निशान ६ को १० के साथ मिलाने की बजाए इसे सीधा नीचे मोहरी की तरफ़ निशान ११ तक लेजाना चाहिये। ऐसा करने से पतलून का फ़ाल तो ठीक हो जायगा परन्तु इस की मोहरी की चौड़ाई जरूरत से ज़्यादा हो जायगी। इस ज्यादती को दूर करने के वास्ते ज़रूरी है कि पतलून की मोहरी को गिद्री पर से घटाया जाय जैसाकि इस चित्र से निशान १३ पर करके दिखाया गया है। अब निशान १३ को फ़ोर्क के साथ मिलाओ। इस चित्र मे पीठ की फ़ोर्क निशान १२ से जाहिर की गई है अर्थात् १३ को १२ के साथ मिलाओ।

चित्र सं० ३१०

चित्र सं० ३१० मे बतलाया गया है कि पीठ मे फ़ोर्क पर गिद्री का दबाव बाहिर निकाल कर किस तरह सीट की चौड़ाई बढ़ाई गई है। ऐसा करने से हिप की तगी बहुत सी दूर हो जाती है॥
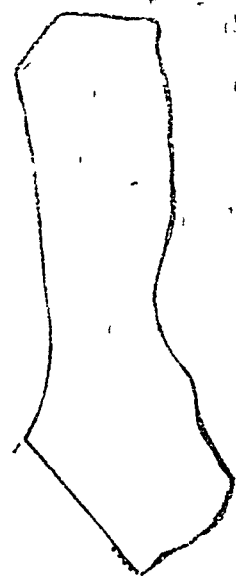
(२३) फ़ोर्क से लेकर गैलस के बटन तक खिंच पड़ना (CREASES FROM FORK TO BRACE BUTTON)

यह नुक्स चित्र सं० ३११ से ज़ाहीर किया गया है। इस में जैसाकि इसे देखने से मालूम होता है फ़ोर्क से लेकर गैलस के बटनों की तरफ़ जाते हुए शिकन पड़ते नज़र आते है जिन से यह मालूम होता है कि पतलून में यहां पर खिंच पड़ रही है।

कारण–इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि यह पतलून जिस ग्राहक की बनाई गई है उस का पेट बढ़ा हुआ है और गैलस के बटन लगाते समय उन्हे साईड की सिलाई से बहुत ज्यादा आगे को लगाया गया है जिस का परिणाम यह होता है कि जब ग्राहक गैलस लगाता है तो उस से बटन अपनी ठीक जगह पर न लगे हुए होने के कारण से पतलून साईड की तरफ़ खिंची जाती है जिस से यह शिकन पड़ने लग जाते हैं जिन का वर्णन ऊपर किया गया है।
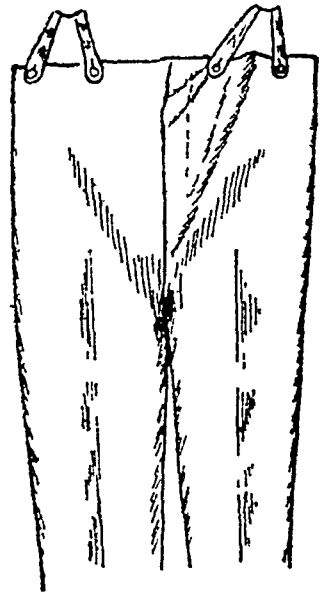
चित्र सं० ३११

इस नुक्स को दूर करना चित्र स० ३१२ की सहायता से समझाया गया है। इस मे निशान १४ और १६ पर लगाये गये बटनो के गलत निशान है जोकि साईड से बहुत ज्यादा आगे की तरफ लगाये गये हैं जिस से कि ऊपर बताये गये शिकन पड़ने
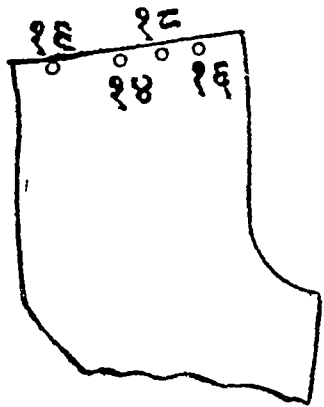
चित्र सं० ३१२

लग जाते हैं। इस नुक्स को दूर करने के वास्ते ज़रूरी है कि बटनों के इन निशानों को ज़रूरत के मुताबिक साईड की तरफ़ लेजाकर बटनों को पुराने ग़लत निशानों से उतार कर यहां पर लगा देना चाहिये जैसाकि इस चित्र में निशान १६ और १८ पर दिखाया गया है। अर्थात् बटनों को निशान १४ और १६ की बजाय १६ और १८ पर लेजाकर लगाने से यह नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा ॥

(२४) पतलून के घुटने पर झोल पड़ना।

(BAGGY KNEES)

यह नुक्स बहुत सी पतलूनों में पाया जाता है वह लोग जिन का विचार यह होता है कि उन के काम मे किसी प्रकार का नुक्स न हो और अपने प्रत्येक नुक्स को दूर करने का पूरा २ प्रयत्न करते हैं उन को भी इस नुक्स को दूर करने के वास्ते बहुत सा यत्न करना पड़ता है। कई लोगों ने अपनी २ बुद्धी के अनुसार इस नुक्स को दूर करने के वास्ते अच्छे २ तरीके निकाले है जोकि एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर अच्छे हैं परन्तु उन मे से एक भी ऐसा नहीं है जिस के विषय मे यह कहा जा सके कि इस से नुक्स बिल्कुल दूर हो गया है।

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि ग्राहक पतलून पहिन कर कभी बैठ जाता है कभी उठ खड़ा होता है तथा चलने फिरने और साईकल आदि चलाने लगता है। जिस से चाहे उस की पतलून कितनी ही अच्छी क्यों न बनी हो घुटनों पर से

आगे को उभर आती है जोकि देखने मे बहुत बुरी मालूम होती है।

यहा इस बात का जानना भी जरूरी है कि दुनियां मे कोई ऐसा तरीका पतलून काटने का नही है जिस से काट कर बनाई हुई पतलून खड़े हुए और बैठे हुए दोंनों हालतों मे बिल्कुल ठीक हो। अर्थात् यदि ग्राहक वह पतलून पहिन कर बैठ जाय तो वह उतनी ही अच्छी तथा ठीक मालूम हो जैसाकि उस समय मालूम होती थी जबकि ग्राहक पतलून पहिन कर खडा हो ।

आजकल नई रोशनी के जमाने मे भी पुरानी कहावत चली आती है कि वह पतलून जो खड़े हुए बहुत ही अच्छी नजर आती है वह बैठे हुए बहुत ही बुरी नजर आती है। इसी तरह जो पतलून बैठे हुए बहुत अच्छी मालूम होती है वह खड़े हुए बहुत ही बुरी मालूम होती है।

जब पतलून एक अथवा दो दिन पहिनने के बाद घुटनों पर से आगे को उभरने लग जाय तो इस नुक्स को दूर करने के वास्ते जरूरी है कि सीट और फोर्क से लेकर घुटने तक के नाप को बढ़ाया जाय। अर्थात् यह नुक्स इसी कारण से पड़ता है कि यह नाप छोटा होता है जिससे घुटने पर सामने मे दबाव पडता है और पतलून यहा पर बाहिर को निकल आती है। ऐसा करने के वास्ते जरूरी है कि पतलून के पीछे की सिलाई को ज्यादा तिरछा किया जाय। जिससे इस सिलाई की लम्बाई बढ़ जायगी और यह लम्बाई पतलून को नीचे की तरफ़ धकेलेगी

तथा पतलून घुटने पर ठीक हो जायगी। पतलून की पीछे की सिलाई को तिरछा करने का तरीका आप जानते ही है, जैसा कि पहले कई बार बताया जा चुका है। इस सिलाई को ऊपर से ज़रूरत के मुताबिक दबादो जैसाकि चित्र सं० ३१३ म निशान २० पर किया गया है। ऐसा करने से पतलून की पीठ की कमर के नाप मे जो कमी हुई है उसे साईड पर का दबाव बाहिर निकाल कर पूरा करो जैसाकि इस चित्र मे निशान १७ पर करके दिखाया गया है।
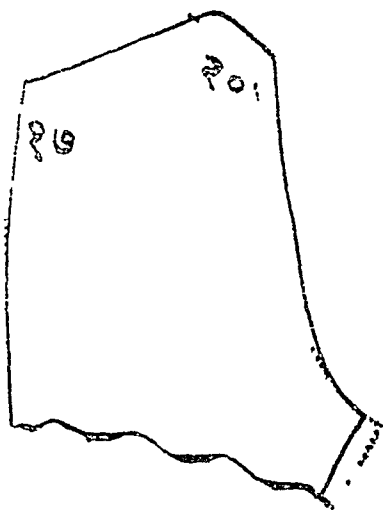
चित्र सं० ३१३

चित्र सं० ३१४ के अनुसार पास के दबाव को निशान २१ पर बाहिर निकालने से भी यह मतलब पूरा हो सकता है। ऐसा करने से कमर के नाप मे जो ज्यादती हो गई है उसे डाट निकाल कर पूरा करो जैसाकि इस चित्र में निशान २२ पर करके दिखाया गया है॥

चित्र सं० ३१४

(२५) पतलून की मोहरियों का अन्दर की तरफ़ उछल जाना

(BOTTOMS SWINGING ON THE INSIDE)

इस नुक्स के कारण से जब ग्राहक चलने लगता है तो पतलून की गिद्री ग्राहक की टांग पर से घुटने से लेकर मोहरी तक दूर उठ खडी होती है।

कारण - इस नुक्स का कारण स्पष्ट रूप मे ज़ाहिर है। वह यह कि पतलून काटते समय एक तो इसकी गिद्री ज्यादा अन्दर को काटी गई है जैसाकि कम खुली टागों वाले आदमी की पतलून काटते समय किया जाता है। दूसरेपत लून की पीठ की सिलाई जरूरत से कम तिरछी बनाई गई है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते देखना यह है कि क्या पतलून मे जरूरी दबाव रखे गए है या नहीं। यदि इसमे तमाम जरूरी दबाव रखे गए हों तो नुक्स नीचे लिखी रीति से दूर करना चाहिये जैसाकि चित्र सं० ३१५ मे दिखलाया गया है। इस अवस्था मे पतलून की गिद्री को मोहरी पर से ज़रूरत के मुताबिक दबादो जैसाकि इस चित्र मे निशान २३ पर दिखलाया गया है। अब निशान २३ को फोर्क के साथ मिलादो। ऐसा करते समय इस बात का विचार कर लेना ज़रूरी है कि पतलून को फ्रोर्क पर
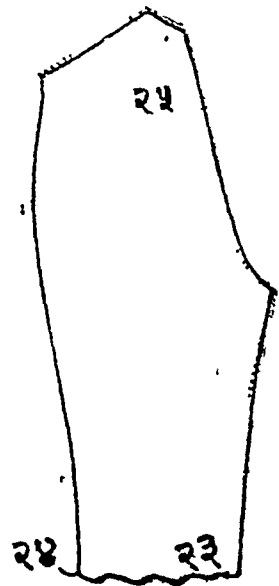
चित्र सं० ३१५

से बिल्कुल नहीं दबाना बल्कि फ़ोर्क के साथ केवल निशान २३ को ही मिला देना है।

निशान २३ पर गिद्री को जितना दबाया हो पास पर के दबाव को निशान २४ पर उतना ही बाहिर निकाल दो ताकि गिद्री को निशान २३ पर दबाने से मोहरी के नाप मे जो कमी हुई है वह पूरी हो जाय।

अब पीठ की सिलाई को तिरछा करने के वास्ते इसे ऊपर से दबादो जैसाकि इस चित्र मे निशान २५ पर दिखाया गया है। ऐसा करने से कमर की चौड़ाई के नाप में जो कमी हुई है उसे निशान २६ पर पास के दबाव को बाहिर निकाल कर पूरा करो॥

(२६) पतलून के पास का आगे की तरफ़ खिसकना

(SIDE SEAM TWISTING TOWARDS THE FRONT)

ऐसी अवस्था मे पतलून को प्रैस करते समय चाहे कितना ही पास तथा गिद्री की सिलाईयों को एक दूसरे के ऊपर रख कर क्यों न ठीक २ प्रैस किया जाय तो भी साईड की सिलाई पट से नीचे २ आगे को सुरकना शुरू कर देती है। जिसका परिणाम यह होता है कि मोहरी पर जाकर पतलून के पास का बहुत सा हिस्सा बूट के आगे की तरफ़ आजाता है।

ग्राहक ज्यों ही पतलून पहिनता है त्यों ही उसका ध्यान इस नुक्स की तरफ़ चला जाता है। और वह यह समझने लगता है कि प्रैस करते समय पतलून का क्रीज़ को ठीक नहीं बिठाया गया।

कारण—यह नुक्स बहुत सी पतलूनों मे पड जाता है। और इसी कारण से बहुत से दर्ज़ी इस नुक्स से दुखी नजर आते हैं। उन मे से प्रायः दर्ज़ी लोग यह कहते सुने गए हैं कि पतलून सीते समय उनमे किसी प्रकार का नुक्स नही रखा गया और कहते है कि सामना और पीठ को जोडते समय अर्थात् पास तथा गिद्री की सिलाई करते समय घुटने तथा सीट के सामने और पीठ पर के निशानों को एक दूसरे के साथ ठीक २ मिलाया गया है। कई दर्ज़ी यह भी कहते है कि उनका ग्राहक नार्मल शकल वाला है। अर्थात् उसके शरीर की बनावट मे किसी प्रकार का नुक्स नही है। इतनी बातों के होते हुए भी वह हैरान होते है कि उनकी पतलून मे यह नुक्स क्यों पड़ जाता है।

इस मे सन्देह नही कि ऊपर बताई गई बाते भी इस नुक्स का कारण हो सकती है अर्थात् पतलून के सामने और पीठ के आपस मे ठीक २ न जोड़े जाने से अथवा प्रैस करते समय क्रीज के ठीक न बिठाये जाने से या ग्राहक के नार्मल शकल वाला न होने से भी यह नुक्स पड जाता है परन्तु इस के इलावा भी बहुत सी हालतों मे नुक्स का जो कारण होता है वह यह कि पतलून हिप पर काफ़ी तग होती है। इस के भी दो कारण होते है पहला यह कि पीछे की सिलाई कम तिरछी बनाई गई है अथवा सीट की चौड़ाई फ़ोर्क पर कम बनाई गई है इस तंगी का परिणाम यह होता है कि जब ग्राहक पतलून पहिन लेता है तो उस मे सीट तथा

हुआ हो उसे फ़ोर्क पर से सारे का सारा बाहिर निकाल दो जैसाकि चित्र सं० ३१६ मे निशान १ से २ तक करके दिखाया गया है अब निशान १ को नीचे की तरफ मोहरी के साथ जा कर मिलादो ताकि मोहरी पर का दबाव गिद्री मे से बिल्कुल न बाहिर निकाला जाय। ऐसा करने से सीट पर खुली हो जायगी पतलून अब पीछे की
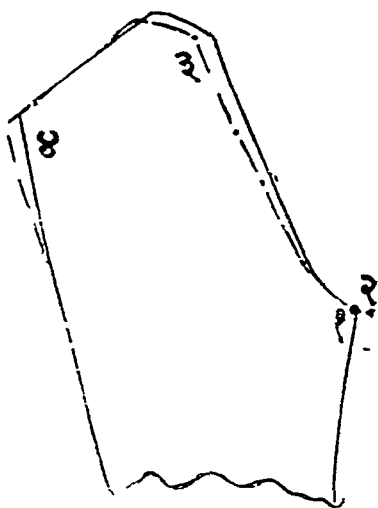
चित्र सं० ३१६

सिलाई को तिरछा करने केवास्ते इसे ऊपर से निशान ३ पर जरूरत के मुताविक दबा दो और निशान ४ पर उतना ही पास का दबाव बाहर निकाल दो जितना कि पीछे की सिलाई को निशान ३ पर दबाया हो। ऐसा करने से कमर का नाप पूरा हो जायगा चित्रनुसार बिंदियों वाली लकीर की सहायता से पीछे तथा पास की सिलाईया बनाओ तो नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा॥

(२७) केवल दायें टांग का आगे को खिसकना

(TWISTINC ON RIGHT SIDE ONS)

जब पतलून की केवल दाये टांग ही आगे की तरफ़ आने लगे और बाये टांग बिल्कुल ठीकर हे उस समय बड़ी है रानी होती

है कटर विचार करने लगता है कि इस नुक्स का कारण ढ़ूसी का गलत छांटा जाना अर्थात ढ़ूसी जहां से ज्यादा उतारनी हो वहां से कम और जहां से कम उतारनी हो वहां से ज्यादा उतारा जाना ही इस नुक्स का मुख्य कारण है । जैसाकि चित्र सं० ३१८ में ६ से ७ तक तो ग़लत ढ़ूस उतार कर दिखाई गई है और ५ से ६ तक ठीक ढ़ूसी उतारी गई है ।

६ ५ ६ ७
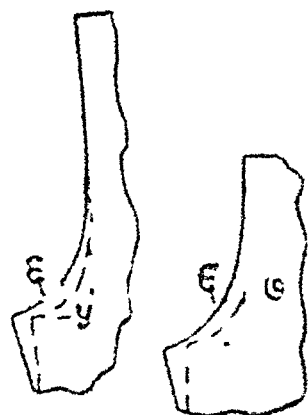
चित्र सं० ३१८

परन्तु हमारे विचार में इस नुक्स का कारण यह है कि पास और गिद्री जोड़ते समय सिलाई ध्यान पूर्वक नहीं की गई । अर्थात् यह सिलाईयां करने से पहले उन्हें कच्चे धागे से पहले हाथ से सिला नहीं गया जिसे कच्चा करना कहते हैं बल्कि यूं ही अन्धा धुन्ध सामने और पीठ को एक दूसरे के साथ जोड़ कर रख के मशीन चला दी गई है और इस बात की तरफ़ बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया । कि सामने और पीठ के घुटने के निशान एक दूसरे के साथ मिलते हैं अथवा एक दूसरे से ऊपर नीचे हो जाते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि सामना तो नीचे की तरफ़ खिचा जाता है और पीठ में नम आजाती है । ऐसी अवस्था तो पास की सिलाई करते समय होती है क्योंकि पास की सिलाई करते समय सामना ऊपर रख कर मशीन चलाई जाती है परन्तु गिद्री की सिलाई करते समय

क्योंकि पीठ ऊपर को रहती है इस वास्ते गिद्री मे पीठ तो नीचे की तरफ खिची जाती है और सामने मे नम आजाती है जिसका परिणाम यह है कि पतलून की यह टाग सारी कि सारी चरख जाती है ।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते जरूरी है कि गिद्री की और पास की सिलाईयों को फोर्क तक खोल देना चाहिये इन दोनों सिलाईयो को उधेड कर सामने के पास को नम रख कर लोहे से शरिङ्क करो ताकि सिलाई करने से खिच कर जो यह झलकाया गया था वह ठीक हो जाय । अब सामने और पीठ के घुटने के निशानों को जोड कर पास और गिद्री की सिलाईयो को हाथ से कचा करो और फिर ध्यान पूर्वक इस तरह मैशीन से सिलाई करो कि यह फिर न चरखने पाए । सिलाई करके अच्छी तरह लोहे से प्रैस करो यह हमारा अभ्यास है कि सिलाईयों का चरखना कारीगर के अन्धा धुन्ध मैशीन चलाने का परिणाम होता है ॥

(२८) बाहिर की तरफ झुकी हुई टाँगे

(A BOW LEGS DEFECT)

यह नुक्स चित्र स० ३१६ से जाहिर किया गया है इस मे पतलून की गिद्री पर फोर्क से लेकर नीचे की ओर घुटने तक और मोहरी से लेकर ऊपर की तरफ़ घुटने से बाहिर की ओर शिकन पडते नजर आते हैं जैसाकि इस चित्र को देखने से मालूम होता है । इस के इलावा पतलून का पास नीचे की तरफ

सीधा गिरने की बजाय टांग के ज्यादा नज़दीक चला जाता है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि पतलून पिंडली के साथ हर समय टकराती रहती है। अर्थात् पतलून के पास का सारा बोझ टांग पर पड़ता रहता है ।
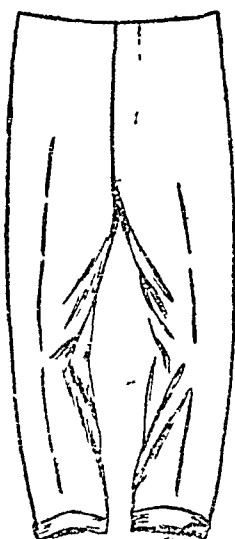
कारण—इस नुक्स का कारण यह है कि पतलून ग्राहक के शरीर के मुताबिक नही काटी गई । अर्थात् पतलून तो नार्मल शकल वाले आदमी के मुताबिक काटी गई है परन्तु ग्राहक की टांगे नार्मल नहीं हैं बल्कि जैसाकि ऊपर बताया गया है कि ग्राहक की टांगें झुकी हुई हैं । अर्थात् ग्राहक की टांगों के घुटने बाहिर की तरफ़ निकले हुए हैं परन्तु पतलून की टागें यहां पर इतनी खुली नही बनाई गई जिससे कि वह पतलून ग्राहक के शरीर पर फिट आसके। यही कारण है कि पतलून मे यह नुक्स पड़ता है ।

चित्र स० ३१९

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते पतलून के पास पर के दबाओ को कमर से लेकर पिंडली तक बाहिर निकालो जैसाकि चित्र सं० ३२० मे निशान ८ से लेकर ९ तक बिंदियों वाली लकीर से ज़ाहिर किया गया है। अब पतलून की गिद्री पर के दबाव को मोहरी पर से बाहिर निकालो जैसाकि इस चित्र

मे निशान १० पर करके दिखाया गया है। पतलून की गिद्री पर के दबाव को मोहरी पर बाहिर निकालने से मोहरी का नाप जितना बडा हो गया हो पतलून की मोहरी को चित्रानुसार साईड पर से उतना दबा कर मोहरी के नाप को पूरा करो। इसके इलावा पतलून की पीठ की फोर्क पर के दबाव को बाहिर निकाल कर इसे सीट पर खुला करो जैसाकि इस चित्र मे निशान ११ पर ज़ाहिर किया गया है। ऐसा करने से नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा ॥

चित्र सं० ३२०

(२९) घुटने अन्दर की तरफ़ झुके हुए।

(KNOCK KNEES)

यह नुक्स चित्र सं० ३२१ से जाहिर किया गया है। यह नुक्स ऊपर बतलाए गए नुक्स का बिल्कुल उलट है। अर्थात् जहा चित्र स० ३१६ वाले नुक्स मे फोर्क तथा पतलून की मोहरी की गिद्री पर से लेकर घुटने के बाहिर की तरफ़ जाते हुए शिकन पडते हैं वहा इस अवस्था मे पतलून के पास पर हिप और मोहरी पर से लेकर घुटने के अन्दर की तरफ़ जाते हुए शिकन

पड़ते हैं जैसाकि इस चित्र मे दिखलाया गया है। इस से सिद्ध हुआ कि यह नुक्स ऊपर वाले नुक्स का बिल्कुल उलट है।

इसके इलावा फ्रोर्क पर बहुत से सीधे शिकन पड़ते नज़र आते हैं जिससे यह मालूम होता है कि पतलून की बाडी फ्रोर्क पर ज़रूरत से ज्यादा बड़ी है।

चित्र स० ३२१

चित्र सं० ३२२

कारण—क्योंकि यह नुक्स ऊपर वाले नुक्स का बिल्कुल उलट है इस वास्ते इसका कारण भी उस नुक्स के कारण का उलट होगा। अर्थात् पतलून काटते समय इस बात का विचार नहीं किया

गया कि ग्राहक के शरीर की बनावट कैसी है अथवा उसके घुटने अन्दर की तरफ़ झुके हुए हैं बल्कि इसे अन्धा धुन्ध नार्मल शकल के मुताबिक़ काट दिया गया है जिससे यह नुक्स पड गया है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते पतलून की गिद्री पर के दबाव को घुटनें पर से बाहिर निकालो जैसकि चित्र सं० ३२२ मे निशान १२ पर जाहिर किया गया है। और गिद्री की मोहरी की चौडाई को चित्रानुसार निशान १३ पर-दबादो और ऐसा करने से पतलून की मोहरी की चौडाई जितनी घट गई हो उस कमी को पास पर के दबाव को मोहरी पर बाहिर निकाल कर पूरा करो तो नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा॥

(३०) पतलून का काफ़ी लम्बा होना परन्तु छोटा नज़र आना।

(LEGS LONG ENOUGH BUT SHORT)

आप हैरान होंगे कि जब पतलून काफी लम्बी बनाई गई हो तो यह छोटी किस तरह नजर आने लगती है। परन्तु इस मे हैरान होने की कोई बात नही। बहुत दफ़ा ऐसा देखा गया है कि पतलून जब पहिन ली जाय तो छोटी मालूम होती है परन्तु जब उसे उतार कर मेज अथवा फट्टे पर बिछा दिया जाय और फिर टेप (नापने का फीता) के साथ इस की लम्बाई नापी जाय तो मालूम होगा कि इसकी लम्बाई का नाप वास्तव मे पूरा है।

कारण—अब हमने मालूम यह करना है कि जब पतलून की लम्बाई का नाप पूरा है तो वह कौनसा कारण है जिससे कि यह पतलून पहिने हुए छोटी नजर आने लगती है। इस का मुख्य कारण यह है कि पतलून काटते समय इसे फ़ोर्क पर जरूरत से बहुत ज्यादा ढीला काटा गया है जिस का परिणाम यह होता है कि जब ग्राहक पतलून पहिनता है तो वह इसे गैलस (Bracse) के साथ इतना ऊंचा खेंच लेता है कि पतलून उस की फोर्क के साथ लगने लग जाय। क्योंकि पतलून फ़ोर्क पर जरूरत से ज्यादा ढीली अथवा चौड़ी बनाई गई है इस वास्ते यह बाडी पर भी ज्यादा ऊपर को चढ जाती है और ज़रूरी है कि पतलून जितनी ज्यादा ऊपर को चली जायगी उतनी नीचे से भी ऊंची अथवा छोटी हो जायगी जिस से पतलून की मोहरी बूट पर पड़ने की बजाय इस से ऊपर उठ खड़ी होती है और देखने मे पतलून छोटी मालूम होने लगती है।

१४

१५
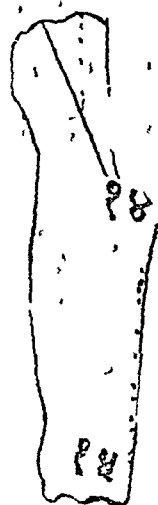
इस नुक्स को दूर करने का सब से सरल तरीका यह है कि पतलून की फ़ोर्क पर पीठ की सिलाई को खोल दो और पतलून के सामने और चित्र स० ३२३ पीठ दोनों को गिद्री पर दबाओ जैसाकि चित्र स० ३२३ मे निशान १४ पर सामने और पीठ की गिद्री को फ़ोर्क पर दबाया गया है निशान १४ से लेकर १५ तक गिद्री को दबाओ अर्थात् फ़ोर्क से लेकर घुटने तकप तलून के सामने और पीठ की

गिद्री को दबाओ जैसाकि इस चित्र मे दिखाया गया है तो नुक्स बिल्कुल दूर हो जायगा।

(३१) पतलून की धारियों (लकीरों) का इस के क्रीज़ के अनुकूल न होना

(IRREGULAR RUN OF PATTERN ON THE LEGS)

चाहे कपड़ा लकीर दार हो चाहे चार खाना इस की लकीरें पतलून के सामने पर ऊपर से नीचे तक सीधी गिरने की बजाय तिरछी पड़ती नज़र आती हैं इस नुक्स का कारण यह होता है। कि पतलून की मोहरी को पतलून काटते समय क्रीज से आधा एक तरफ़ और आधा दूसरी तरफ़ नहीं रखा जाता बल्कि पतलून की मोहरी को बिल्कुल कपड़े के किनारे के साथ से ही शुरू किया जाता है ताकि पतलून के पास पर कपड़े की धारियां बिल्कुल सीधी रहे परन्तु ऐसा करना किसी अवस्था मे भी ठीक नहीं है बल्कि पतलून का क्रीज़ जोकि पतलून के सामने में प्रायः बिल्कुल सीधा नीचे की तरफ़ होता है उस की मोहरी का निशान लगाते समय मोहरी की आधी चौडाई तो क्रीज़ के दाये तरफ़ रखनी चाहिये और आधी बायें तरफ़।

इस नुक्स को जब कि पतलून तैयार हो चुकी हो दूर करने का केवल एक ही तरीका रह जाता है वह यह कि पतलून को प्रैस करते समय उस के क्रीज को फेर दिया जाय अर्थात पतलून का क्रीज कपडे की लकीरों के मुताबिक बना दिया जाय जिस से पतलून की धारिया बिल्कुल ठीक नीचे की तरफ़ गिरती नजर आयेगी।

बिर्जसों के नुक्स

(BREECHES DEFECTS)

(३२) बिर्जस के सामने का घुटना ऊपर को सुरकना।

(RUCKING UP AT THE KNEE FRONT)

जब बिर्जस कुच्छ दिनों तक पहिन ली जाय, तो उसके सामने घुटनों से नीचे ऊपर की तरफ़ सुरकना शुरू कर देते हैं और घुटनों का नीचे का हिस्सा घुटने की आगे की हड्डी के ऊपर चढ़ने की कोशिश करता है जिस से यहां पर बहुत से सीधे शिकन पड़ने लग जाते हैं जोकि देखने में बहुत बुरे मालूम देते हैं

कारण—इस नुक्स के नीचे लिखे दो कारण हो सकते हैं:-

(१) बिर्जस की पीठ मे से घुटने की जगह पर से जो डा निकाली जाती है वह यदि जरूरत से ज्यादा निकाल ली जाय तं. इस तरह से पीठ के दो टुकड़े हो जाते हैं नीचे के टुकड़े की जो डाट पर की सिलाई होती है वह ज्यादा गोल हो जाती है क्योंकि उस मे से ज्यादा डाट निकाल ली गई होती है। इस का परिणाम यह होता है कि पीठ की इस गोलाई से लेकर जोकि डाट के कारण से बन जाती है सामने के उस स्थान तक का नाप जहां पर कि इसे बन्द किया जाता है जरूरत से छोटा होता है क्योंकि इस मे से जरूरत से ज्यादा टुकड़ा काट लिया जाता है।

(२) इस नुक्स का दूसरा कारण यह हो सकता है कि बिर्जस पिण्डली पर जरूरत से तग बनाई गई हो जिस से चलते फिरते समय जब ग्राहक की पिण्डली फूलने लगे तो बिर्जस के तंग होने

के कारण से बिर्जस ऊपर को सुरक जाती है जिस से यह नुक्स पड जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते देखना यह चाहिये कि इस का कारण ऊपर बताये गए दोनों कारणों मे से कौनसा है फिर उस कारण के ही अनुसार उस नुक्स को दूर करना चाहिये। यदि इस नुक्स का कारण पहला हो अर्थात् बिर्जस की पीठ के घुटने पर डाट के ज्यादा काटे जाने से यदि यह नुक्स पड़ गया हो तो इस नुक्स के दूर करने का सरल तरीका यह है कि देखा जाय कि डाट से बिर्जस की पीठ के जो दो टुकड़े हो जाते है उन मे से उन के नीचे वाले टुकड़े मे ऊपर अथवा डाट की गोलाई तथा मोहरी पर दबाव रखा गया हो तो नुक्स दूर करना ज्यादा आसान हो जाता है। क्योंकि यही गोलाई ही बीच मे ज्यादा गहरी बन जाने से यह नुक्स पड जाता है इस वास्ते इसे ठीक करने का ऐसी अवस्था मे सरल तरीका यह रह जाता है कि इस डाट की गोलाई पर के दबाव को बीच मे से जरूरत के मुताबिक बाहिर निकाल कर इसे ठीक कर लिया जाय। परन्तु प्राय. ऐसा होता है कि बहुत थोड़े लोग डाट की इस गोलाई पर दबाव रखते हैं बल्कि प्रायः केवल मोहरी के नीचे का दबाव ही रखा जाता है।

इस वास्ते ऐसी अवस्था मे ठीक तरीका यह होता है कि पीठ के इस टुकड़े को ऊपर से पास तथा गिद्री की सिलाईयों पर से थोड़ा २ छाट लो जैसाकि चित्र स० ३२४ मे निशान १ और २ पर करके दिखाया गया है। ऐसा करने से डाट के बीच की गहराई तो कम हो जायगी और ऊपर बताया गया नुक्स भी दूर

हो जायगा परन्तु बिर्जस की लम्बाई जरूर छोटी हो जायगी इस वास्ते मोहरी से नीचे पर का दबाव ज़रूरत के मुताबिक बाहिर
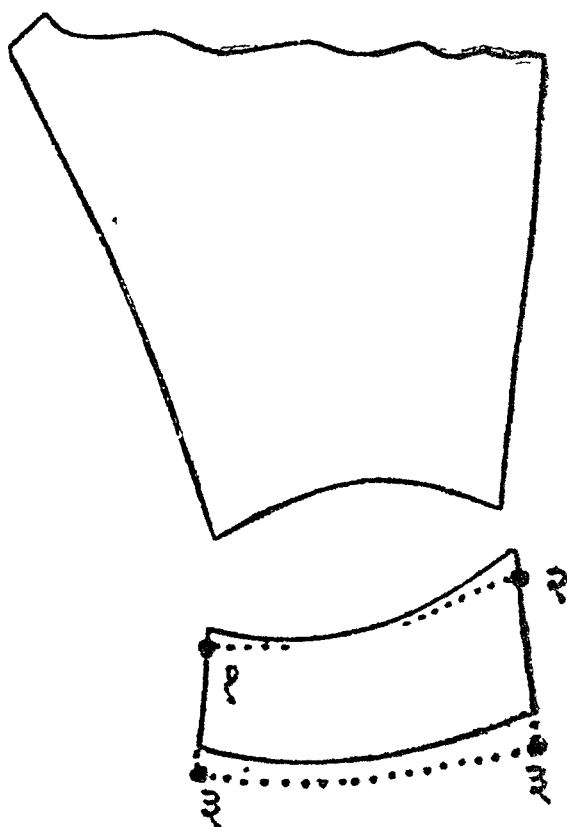
चित्र सं० ३२४

निकाल कर इस कमी को पूरा करो जैसाकि चित्र स० ३२४ में ३ से ४ तक करके दिखाया गया है।

परन्तु जब नुक्स का कारण दूसरा हो अर्थात् यदि नुक्स बिर्जस के पिण्डली पर तंग बनाये जाने के कारण से हो तो नुक्स का दूर करना ज्यादा आसान हो जाता है। ऐसी अवस्था में गिद्री की सिलाई पर के दबाव को जरूरत के मुता-

बिक पिण्डली पर बाहिर निकाल दो जैसाकि चित्र स० ३२५ मे निशान ४ पर ज़ाहिर किया गया है।

चित्र स० ३२५

यदि हम यह कहे कि लायक और अच्छे दर्जी के वास्ते ज़रूरी है कि वह बिर्जस को पिण्डली पर आधा अथवा पौना इंच ढीला बनाए ताकि चलते फिरते समय जो टागे फूलती है उस जरूरत को पूरा किया जा सके।
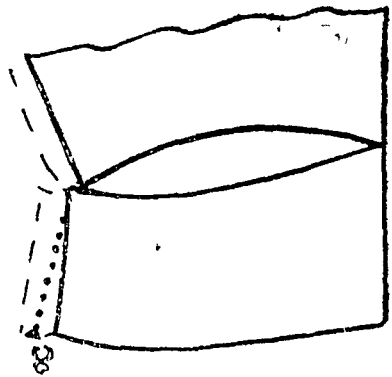
(३३) पांव को रिकाब तक उठाने में तकलीफ़ होना
(DIFFICULTY IN RAISING THE FOOT TO STIRRUPS)

जब ग्राहक इस प्रकार के नुक्स वाली बिर्जस पहिन कर घोड़े पर चढने लगता है तो घुटने तथा पाव को ऊपर उठाने मे बहुत सी तकलीफ़ होती है और ग्राहक घोड़े पर चढ़ते समय जब अपना पाव रिकाब तक लेजाने के वास्ते उछलता है अथवा छलाग लगाता है तो उसे टाग ऊंचा करते समय बहुत सा कष्ट होता है।

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि सीट से लेकर घुटने की हड्डी तक का नाप अथवा लम्बाई ज़रूरत से छोटी है इस के इलावा बिर्जस के पीछे की सिलाई का कम तिरछा होना

अथवा ज्यादा सीधा बनाया जाना और बिर्जस का फ़ोर्क पर तंग होना भी इस नुक्स के कारण हो सकते हैं।

इस बात का ध्यान कर लेना ज़रूरी है कि जो ग्राहक अपना बहुत सा समय बिर्जस पहिन कर घोड़े पर सवारी करके गुजारता है वह चाहता है कि सवारी के समय अथवा घोड़े पर चढ़ते उतरते समय अथवा उसे चलाते समय उसे बिर्जस मे किसी प्रकार की खिच प्रतीत न हो चाहे बिर्जस के दूसरे छोटे मोटे नुक्सों की ओर वह ध्यान तक भी न देता हो परन्तु वह यह चाहेगा कि उसे बिर्जस में किसी प्रकार की खिच अथवा तंगी न मालूम हो। इस वास्ते आप को यह जानना ज़रूरी है कि यदि आप की बिर्जस बनाई हुई पहिन कर ग्राहक को किसी प्रकार का चलते फिरते अथवा घोड़े पर चढ़ते समय कष्ट नही होता तो वह अवश्य खुशी २ आप की दुकान पर कपड़े सिलवाने के वास्ते आयगा चाहे आप की बिर्जस में एक आध छोटा मोटा फिटिंग का नुक्स ही क्यों न हो। परन्तु इससे यह न समझ लेना चाहिये कि आप छोटे मोटे नुक्सों की ओर बिल्कुल ध्यान ही न दे क्योंकि ऐसा करने से आप बदनाम हो जायेगे और आप का कारोबार बिल्कुल नही चल सकेगा। इस वास्ते जरूरी है कि आप इन छोटे मोटे नुक्सों के इलावा इस बात की ओर ध्यान दें कि आप की बनाई हुई बिर्जस पहिन कर ग्राहक सब प्रकार का सुख अनुभव करे।

इस नुक्स को दूर करने की रीति बताने से पहले ज़रूरी मालूम होता है कि आप यह पड़ताल करें कि क्या आप की बनाई हुई बिर्जस में वास्तव में फ़ोर्क से घुटने तक का नाप तो

जरूरत से छोटा नहीं बनाया गया यदि यह नाप छोटा बनाया गया हो तो इस नुक्स को दूर करने का सरल तरीका यह है कि इस कमी को पूरा कर दिया जाय। परन्तु जब नाप भी पूरा हो और नुक्स भी पडता हो तो उस अवस्था मे इस नुक्स को नीचे लिखी रीति से दूर करना चाहिये:—

पीठ के बीच की सिलाई को जिसे पीछे की सिलाई भी कहते हैं तिरछा करने से सीट से घुटने तक की लम्बाई का नाप बढ़ जाता है जैसाकि चित्र स० ३२६ मे निशान ५ पर करके दिखाया गया है। इस तरह से नुक्स तो बहुत कुच्छ दूर हो जाता है परन्तु ऐसी अवस्था मे पीठ की कमर पर की चौड़ाई जरूरत से कम हो जाती है। इस कमी को पूरा करने के वास्ते ज़रूरी है कि बिर्जस के पास के दबाव को उतना ही कमर पर से बाहिर निकाल दिया जाय जितना कि पीछे की सिलाई को निशान ५ पर तिरछा किया हो जैसाकि इस चित्र मे बिंदियों वाली लकीर से निशान ६ पर जहिर किया गया है।

यदि इस प्रकार से नुक्स बिल्कुल दूर हो जाय तो बेहतर परन्तु यदि ऐसा करने पर भी नुक्स बिल्कुल दूर न हो बल्कि थोड़ा बहुत बाकी रह जाय तो उस अवस्था मे बिर्जस की पीठ का गिद्री पर का दबाव फोर्क पर से बाहिर निकाल कर इसे सीट पर जरूरत के मुताबिक ढीला कर देना चाहिये जैसाकि चित्र सं० ३२६ मे निशान ७ पर करके दिखाया गया है। ऐसा करने से नुक्स सब प्रकार से दूर हो जायगा।

जरूरी नोट—वह लोग जिन को कभी २ अथवा काफ़ी

देर के बाद बिर्जस बनाने का मौका मिलता है उन को इस बात की तरफ़ अच्छी तरह ध्यान देना चाहिये कि जोधपुर अथवा राईडिंग बिर्जस का नाप लेते समय आप को घुटने, खुच और पिंडली इत्यादि की मोटाई का नाप ग्राहक की दोनों टांगो पर
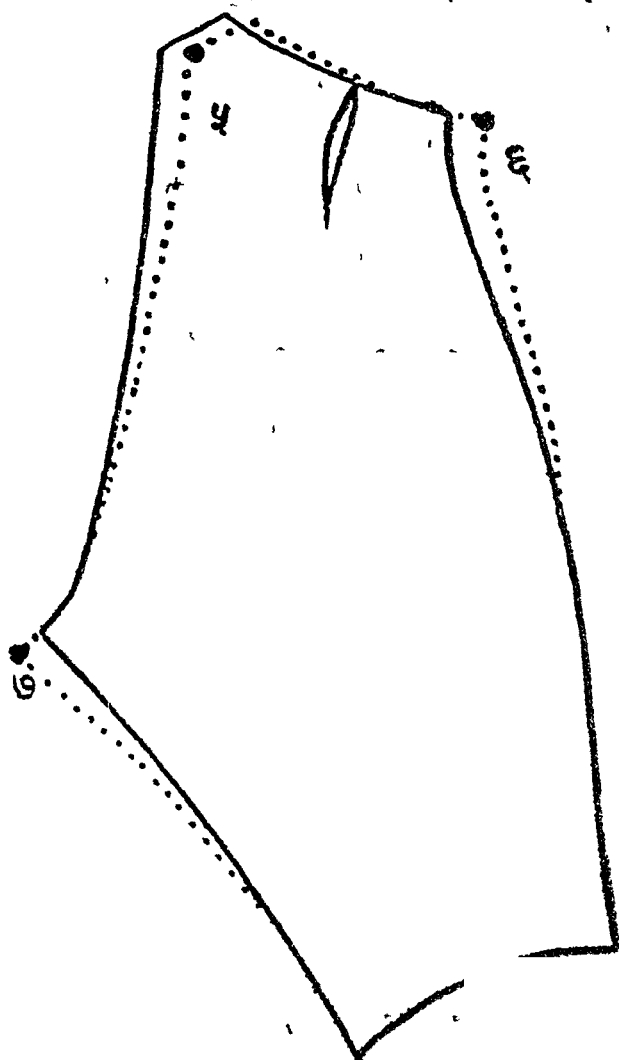
चित्र सं० ३२६

से अलग २ लेना चाहिये क्योंकि यह बात उन लोगों ने अपने

तजरब्बे से साबत की है जो प्रायः बहुत सी बिर्जसे बनाते रहते हैं कि यदि एक टांग पर से ग्राहक के घुटने, खुच अथवा पिण्डली की मोटाई का नाप लिया जाय जैसाकि वह पहले लिया करते थे तो प्रायः उन को यह कष्ट होता था कि या तो उन्हे एक टाग की मोटाई जिस का कि नाप नही लिया होता था कम करनी पड़ती थी या बढ़ानी पड़ती थी।

इस तरह से उन्हों ने यह सिद्ध किया है कि बहुत से लोग ऐसे होते है जिन की एक टांग की मोटाई दूसरी टांग की अपेक्षा भिन्न होती है इस वास्ते यदि नाप लेते समय दोंनों टागों पर से ही घुटने, खुच तथा पिडली पर की मोटाईयों के नाप ले लिये जाये तो न केवल बहुत सा समय ट्राइ करने मे व्यर्थ जाने से बच जाता है ब्लिक बार २ नुक्स दूर करने की तकलीफ भी नहीं होती ॥

(३४) पास का फुलाओ जिसे पख भी कहते हैं।

(CONCERNING THE SIDE POUCH)

इस नुक्स के बारे मे कुच्छ लिखने से पहले जरूरी मालूम होता है कि आप को बतलाया जाय कि पख अथवा पास का फुलाओ क्या होता है। प्रायः बिर्जसे साईड पर हिप से नीचे और घुटने से ऊपर बाहिर की तरफ उभरी हुई रहती है यह उभार बिल्कुल सीधा बाहिर की तरफ़ खड़ा रहता है इसे ही पख अथवा फुलाओ कहते है इङ्गलिश मे इसे (Pouch) कहते हैं। ग्राहक की इच्छा अनुसार इसे कम तथा ज़्यादा रखा जाता है अब यहा पर हम इसी पख के बारे मे ही लिखेगे कि इस मे जो नुक्स पड़

जाता है उसे किस तरह से दूर करना चाहिये ?

ऐसी अवस्था मे जबकि ग्राहक यह चाहता हो कि उसकी
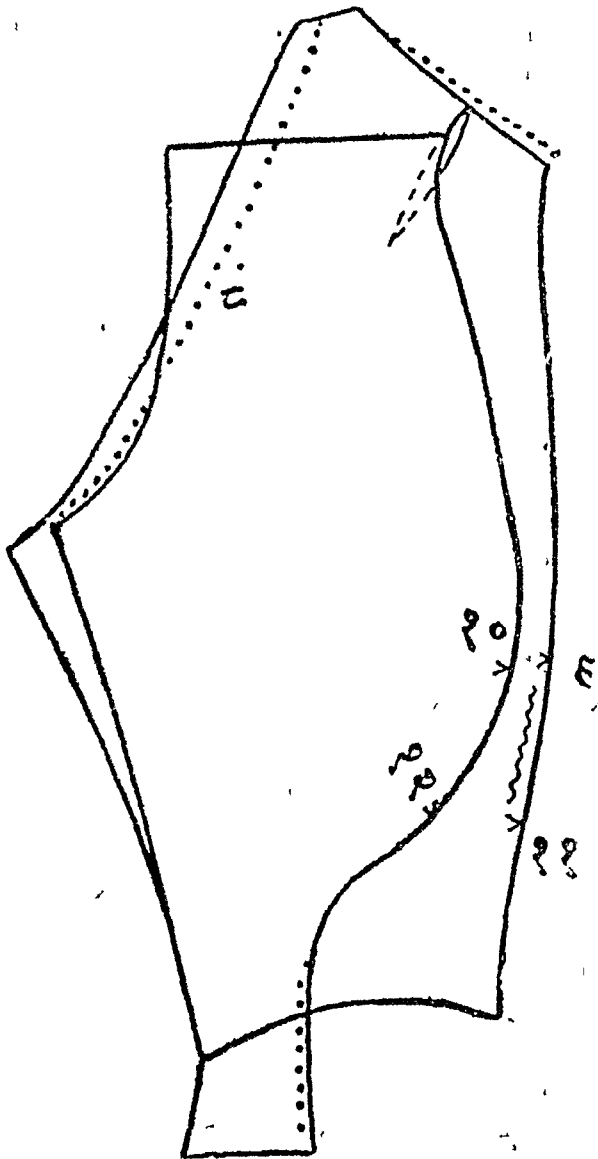
चित्र ०सं३२७

बिर्जस पख पर इतनी ढीली बनाई जाय कि पख बहुत ज्यादा

बाहिर की तरफ आजाय। उस अवस्था मे काटते समय तो बिर्जस को पख पर बहुत ढीला काट दिया जाता है परन्तु सिलाई करने के बाद वह पख सीधा बाहिर की तरफ़ खडा रहने की बजाय जरा नीचे को ढिलक जाता है जिस से यहां पर झोल पड़ने लग जाता है यह झोल न केवल पास की सिलाई पर पड़ने लग जाते हैं बल्कि बिर्जस की पीठ का यह हिस्सा टांग के साथ चिमट जाता है।

ऐसी अवस्था मे नुक्स को दूर करने का सरल तरीका यह है कि इसे पहले से जरा और पीछे की तरफ़ हाटा दिया जाय जैसाकि चित्र सं० ३२७ मे निशान ८ पर करके दिखाया गया है। यहां पर इस बात का ध्यान कर लेना जरूरी है कि पीठ के बीच की सिलाई को पीछे हटाने का मतलब यह नहीं है कि उसे केवल ऊपर से ही पीछे हटा दिया जाय जैसाकि पहले इसे तिरछा करते समय करते आये है बल्कि इस का मतलब यह है कि इस सिलाई को ऊपर से लेकर फोर्क तक पीछे की तरफ़ हटाया जाय जैसाकि इस चित्र को भली भाति विचार पूर्वक देखने से मालूम होता है अर्थात् यह सिलाई जितनी तिरछी पहले थी उतनी ही अब रहे न तो यह पहले से ज्यादा तिरछी हो जाय और न ही कम तिरछी।

इस के इलावा आप को इस चित्र के देखने से मालूम होगा कि बिर्जस की पीठ के पास की सिलाई बहुत सीधी है परन्तु इस के सामने के पास की सिलाई जोकि पीठ के पास के साथ जोडी जायगी उस की अपेक्षा बहुत गोल है इस वास्ते जरूरी है

कि पीठ के पास को सामने के पास की इस झोल अथवा पख वाली गोलाई की अपेक्षा ज़रा बड़ा बनाया जाय अर्थात् पीठ के पास की लम्बाई को सामने के पास की लम्बाई की अपेक्षा ज्यादा लम्बा रखा जाय और जब सामने और पीठ के पास को एक दूसरे के साथ जोड़ा जाय तो पीठ में इस जगह पर जहां पर कि सामना गोल है नम लगाई जाय और सामने को खेंच कर लगाया जाय जैसाकि इस चित्र में विर्जस की पीठ के पास की सिलाई ९ से ११ तक उस के सामने के पास की सिलाई १० से १२ तक की अपेक्षा ज्यादा है। अब जब ऊपर के निशान ९ को ऊपर के निशान १० के साथ और नीचे के निशान ११ को नीचे के निशान १२ के साथ जोड़ा जायगा तो क्योंकि ९ से ११ तक का नाप १० से १२ तक के नाप से बड़ा है इस वास्ते जरूरी है कि इस में ९ से ११ तक नम लगाई जाय। ऐसा करने से भी यह नुक्स बिल्कुल जाता रहेगा ॥

(३५) गिद्री का ज्यादा लम्बा होना
(EXCESSIVE LENGTH ON THE INSIDE LEG)

ब्रिर्जस की गिद्री में घुटने से ज़रा ऊपर झोल पड़ते नजर आते हैं जैसाकि चित्र सं० ३२८ में जाहिर किया गया है। इन झोलों को देखने से मालूम होता है कि यहां पर गिद्री की लम्बाई ज़रूरत से ज्यादा है। ऐसी अवस्था में ब्रिर्जस देखने में बहुत बुरी मालूम होती है जब बिर्जस के केपल (strappings) किसी सख्त चीज़ जैसे चमड़ा इत्यादि के लगाये जाये तो यह झोल और भी ज्यादा बढ़ जाते हैं और चलते फिरते समय यह
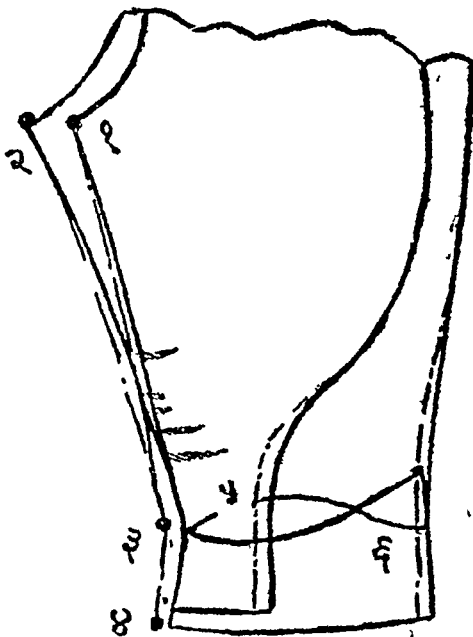
चित्र सं० ३२८

शिकन इतने स्पष्ट हो जाते हैं कि एक दो दिन मे कपड़े मे भी पक्के शिकन पड़ जाते हैं जिस से ग्राहक नाराज़ हो कर बिर्जिस वापस ला देता है ताकि यह नुक्स दूर कर दिया जाय।

कारण—जैसाकि ऊपर बताया गया है कि इस नुक्स को देखने से तो यह प्रतीत होता है कि यहां पर गिद्री की लम्बाई जरूरत से ज्यादा बनाई गई है परन्तु वास्तव मे ऐसा नहीं है क्यों कि यदि ऐसा होता तो पास की लम्बाई भी इसकी सीध मे ज्यादा होती। जबकि पास की लम्बाई बिल्कुल ठीक है तो समझना चाहिये कि गिद्री की लम्बाई भी बिल्कुल ठीक है और इस नुक्स का करण कुच्छ और होगा।

अब सोचना यह है कि जब गिद्री की लम्बाई का नाप भी ठीक है तो नुक्स का कारण क्या हो सकता है। इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि बिर्जस की गिद्री ज़रूरत से ज्यादा तिरछी बनाई गई है अर्थात् बिर्जस काटते समय इसे बहुत ज्यादा खुली टांगों वाले आदमी के मुताबिक काटा गया है।

इस मे सन्देह नहीं कि बिर्जस काटते समय गिद्री को पतलून की गिद्री की अपेक्षा बहुत तिरछा काटा जाता है ताकि घोड़े पर चढ़ते समय किसी प्रकार का कष्ट अथवा तकलीफ़ न हो। परन्तु जब कोई बात ज़रूरत से ज्यादा हो जाय तो वह दुःख का कारण होती है। इसी तरह जब गिद्री जरूरत से बहुत ज्यादा तिरछी काटी जाती है तो यह नुक्स पड़ जाता है। बहुत से कटर जान बूझ कर ऐसा करते हैं क्योंकि उनका विचार यह होता है कि जितना भी बिर्जस की गिद्री को तिरछा काटा जायगा उतनी ही उसकी बिर्जस ज्यादा ठीक, अथवा ग्राहक को चलते फिरते समय आराम देने वाली होगी। परन्तु यह उनकी बडी भारी भूल है। क्योंकि इस से घुटने की शकल इतनी बुरी नजर आने लगती है कि चाहे लोहे से इसे कितना ही प्रैस करके क्यों न शरिंक (shrink) किया जाए यह नुक्स बिल्कुल नही दूर होगा।

इस नक्स को दूर करने के वास्ते देखना यह है कि क्या बिर्जस तैयार हो चुकी है या केवल उसका खाका ही काटा गया है। यदि अभी तक केवल बिर्जस का खाका ही काटा गया हो। और उसे तैयार न किया हो तो नुक्स का दूर करना बहुत

आसान हो जाता है। वह इस तरह कि चित्र स० ३२८ के अनुसार सामने और पीठ की गिद्री को घुटने पर और अन्दर की तरफ़ सुरका दिया जाय, जैसाकि इस चित्र मे निशान ३ पर करके दिखाया गया है। अब निशान ३ को सामने और पीठ की फोर्क के साथ—जोकि इस चित्र मे बारी २ निशान १ और २ से जाहिर की गई है, मिला दो। घुटने के निशान ३ से नीचे की तरफ़ ४ तक गिद्री बिल्कुल सीधी नीचे को होती है। ऐसा करने से बिर्जस की गिद्री ज़रूरत के मुताबिक कम तिरछी हो जायगी और ऊपर वाला नुक्स तो ठीक हो जायगा परन्तु इस अवस्था मे सामने और पीठ की घुटने से नीचे तक की चौड़ाई बढ़ जायगी। इस ज्यादती को दूर करने के वास्ते ज़रूरत के मुताबिक सामने और पीठ की चौडाई को पास की तरफ़ से कम करो। जैसाकि इस चित्र मे निशान ५ और ६ पर करके डैश वाली लकीरों से करके दिखाया गया है। ऐसा करने से नुक्स बिल्कुल दूर हो जाता है॥

परन्तु जब बिर्जस बिल्कुल तैयार हो चुकी हो तो उस अवस्था मे यह नुक्स दूर करना ज्यादा कठिन होता है। ऐसी अवस्था मे क्योंकि सामने मे किसी प्रकार का दबाव नहीं रखा जाता इस वास्ते केवल पीठ से ही काम लेना पड़ता है। पीठ की गिद्री पर के दबाव को घुटने पर से ज्यादा से ज्यादा जितना हो बाहिर निकाल दो जैसाकि चित्र स० ३२६ मे निशान ७ पर करके दिखाया गया है। इसके साथ ही फ़ोर्क पर इसे जरा तग कर देना चाहिये जैसाकि इस चित्र मे निशान ८ पर करके

दिखाया गया है। अब पीछे की सिलाई को भी ऊपर से नीचे तक पीछे की तरफ़ हटाओ। जैसाकि इस चित्र में निशान ६ पर करके दिखाया गया है। ऐसा करने से यह नुक्स तो बिल्कुल दूर हो जायगा परन्तु घुटने का नाप ज़रूरत से बड़ा और कमर का नाप पहले से छोटा हो जायगा। इस वास्ते पास के
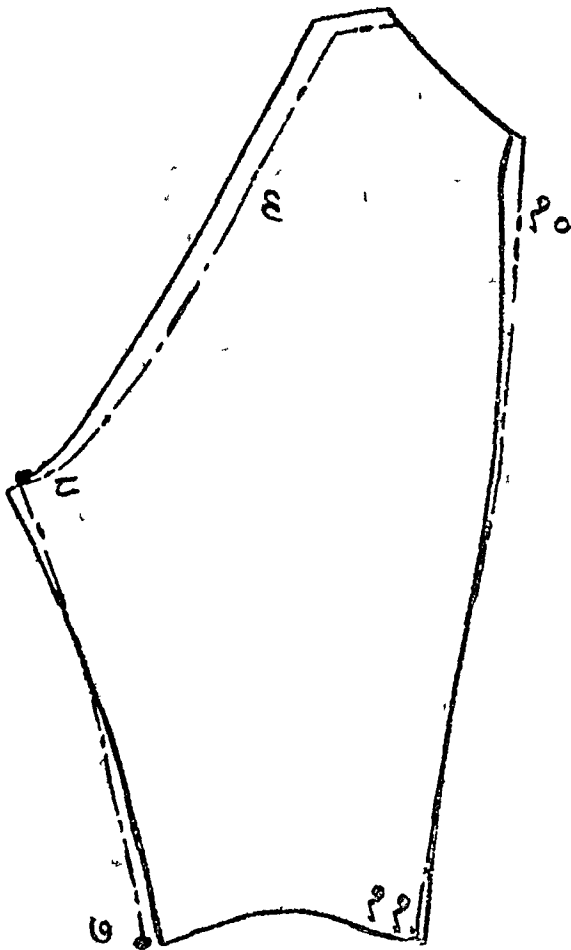
चित्र सं० ३२६

दबाव को कमर पर से ज़रूरत के मुताबिक बाहिर निकाल कर

कमर के नाप की कमी को पूरा करो जैसाकि इस चित्र में निशान १० पर करके दिखाया गया है। और घुटने पर पास को जरूरत के मुताबिक दबादो जैसाकि इस चित्र मे निशान ११ पर करके दिखाया गया है। ऐसा करने से बिर्जस बिल्कुल ठीक हो जायगी ॥

(३६) पीठ में घुटने के साईड की तरफ़ झोल पड़ना (UNDERSIDES WRINKLING AT THE SIDE OF KNEE)

अर्थात् इस अवस्था मे बिर्जस की पीठ मे घुटने के पास साईड की सिलाई से पीछे शिकन पड़ने लगा जाते हैं जैसाकि इस चित्र मे दिखाने की कोशिश की गई है। इस चित्र को देखने से मालूम होता है कि घुटने से जरा ऊपर को बिर्जस की पीठ की लम्बाई साईड की सिलाई से पीछे की तरफ़ ज्यादा है जिससे यहां पर शिकन पड़ने लग गया है। हालाकि पीठ के साईड की सिलाई पर की लम्बाई वास्तव मे सामने के साईड की सिलाई के बराबर है जोकि सिलाई हो जाने के बाद आगे की तरफ़ घुटने पर चली आती है।

कारण—अब सोचना यह है कि जब सामने और पीठ की पास की सिलाईया एक दूसरे के बराबर हैं तो क्या कारण है जिससे कि पीठ के इस हिस्से मे झोल पड़ने लग जाते है? इस नुक्स का सब से बडा कारण कारीगर का बिर्जस की पीठ को इस स्थान पर अच्छी तरह लोहे से न शरिङ्क करना है। अर्थात् कारीगर लोग पास की सिलाई करते समय इसे साधारण पतलून की तरह जोड़ देते हैं और लोहे से किसी प्रकार भी

पीठ को यहां पर शरिङ्क नहीं करते जिससे कि यह झोल पड़ने लग जाता है।

इस नुक्स को दूर करने के वास्ते जरूरी है कि क्योंकि आजकल बिर्जसों मे पास की सिलाई को घुटने के आगे रखा जाता है और इसके साथ ही सामने का पास पीठ की अपेक्षा बहुत ज्यादा गोल होता है इस वास्ते पीठ के साईड को सामने की अपेक्षा ज्यादा लम्बा रखा जाता है । क्योंकि जब तक पीठ के पास की लम्बाई सामने के पास की अपेक्षा ज्यादा न रखी जाय तब तक यह सामने के गोल साईड के साथ २ ठीक नही जोड़ी जा सकती । अब सोचना यह है कि पास की सिलाईयां तो एक दूसरे के बराबर २ हो गई है क्योंकि सामने का पास गोल है और पीठ का पास जोकि इसकी अपेक्षा सीधा है और लम्बाई मे ज्यादा कर दिया गया है। परन्तु पीठ के पास को बढ़ाने से इस सिलाई से पीछे की तरफ़ का हिस्सा जो लम्बाई मे ज्यादा है, किस तरह ठीक बैठ सकता है जरूरी है कि इस मे भी झोल पड़े। इस झोल को दूर करने के वास्ते जरूरी है कि पीठ को यहा पर लोहे के साथ भली भांति शरिंक किया जाय जैसाकि चित्र सं० ३३० मे निशान १२ पर गोल और तिरछी लकीर की सहायता से ज़ाहिर किया गया है । इसके साथ ही पीठ के साईड
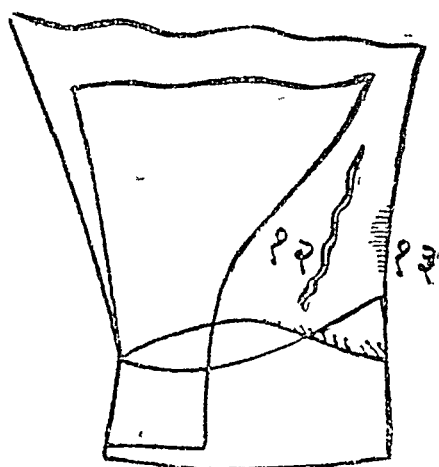
चित्र सं० ३३०

को निशान १३ पर लोहे से खेच (stretch) लेना चाहिये ताकि सामने और पीठ के पास की लम्बाईयां एक दूसरे के बराबर हो जाये। ऐसा करने से नुक्स बिल्कुल दूर हो जाता है॥

(३७) तस्मों अथवा चेन (Zip) का साईड की तरफ़ खिसकना

FASTENING TWISTING TOWARDS THE SIDE-SEAMS

यह नुक्स प्रायः जोधपुर बिर्जस मे पड़ता है। परन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिये कि दूसरी प्रकार की बिर्जसों में यह बिल्कुल पड़ ही नहीं सकता। बल्कि कभी २ दूसरी बिर्जसों मे भी पड़ जाता है परन्तु जोधपुर बिर्जसों मे यह नुक्स बहुत पड़ता है।

यह नुक्स ट्राई करते समय अथवा बिर्जस के तैयार करते समय नज़र नहीं आता बल्कि जब बिर्जस कुच्छ दिनों तक पहिन ली जाय और ग्राहक इसे पहिन कर चलने फिरने लगे तो घुटनों पर से बिर्जस साईड की तरफ को खिसकना शुरू कर देती है। चाहे ग्राहक उसे कितनी बार ही क्यों न खेंच २ कर अपनी असली जगह पर रखने की कोशिश करे परन्तु यह वहां बिल्कुल नहीं ठहरती बल्कि शीघ्र ही साईड की तरफ़ खिसक जाती है जिससे ग्राहक बहुत जल्दी तंग आजाता है।

कारण—इस नुक्स का मुख्य कारण यह है कि पीठ के पास की लम्बाई ज़रूरत से छोटी बनाई गई है। जिसके बारे

में हम यह विचार कर सकते हैं कि कटर ने बिर्जस काटते समय पुराने फैशन की बिर्जसों की तरह सामने और पीठ के पास पर के उन निशानों को जोकि पास की सिलाई करते समय एक दूसरे से जोड़े जाते हैं, एक दूसरे की सीध मे रखा है जैसाकि चित्र सं० ३३१ मे निशान १४ को १५ की सीध मे और १६ को २० की सीध रखा गया है।

क्योंकि, जैसाकि आप पहले जानते है, सामने का साईड निशान १५ और २० के दरमियान पीठ के इसी स्थान की अपेक्षा बहुत ज्यादा गोल होता है इस वास्ते ज़रूरी है कि सामने का पास यहां पर पीठ की आपेक्षा ज्यादा लम्बा भी होगा। जब कारीगर ने पास की सिलाई करनी होगी तो उसे सामने के निशान १५ और २० को बारी २ पीठ के निशान १४ और १६ के साथ ही जोडना होगा क्योंकि यह निशान केवल इसी वास्ते लगाये गए हैं। इस वास्ते जरूरी है कि सामने के पास में नम लगाई जाय। फिर कई लोग यह कहते हैं कि सामने के साईड मे यहां पर नम इस वास्ते लगाई जाती है ताकि बिर्जस घुटने की हडडी की गोलाई पर ठीक बैठ सके परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता। क्योंकि जहां पर यह नम दी जाती है वह हिस्सा घटने से बहुत दूर रहता है। इस वास्ते यह कैसे सम्भव हो सकना है कि यह नम घुटने पर की गोलाई को बनाने का काम दे सके। वास्तव में इसका परिणाम यह होता है कि फ़ाल्तू कपड़ा बिजेस की गिद्री की तरफ़ धकेला आता है जोकि देखने

में बहुत बुरा नज़र आता है। इसके साथ ही पास की सिलाई गिद्री की अपेक्षा बहुत छोटी होती है जिसका परिणाम यह होता है कि पास की सिलाई बिर्जस के सामने को अपनी तरफ़ खेंचती रहती है और घुटने पर से सामना पास की तरफ खिचा जाने से बिर्जस के सामने भी पास की तरफ खिंचे जाते हैं।

इस नुक्स को दूर करने का केवल एक ही तरीका है। वह यह कि सामने के साईड पर की नम को निकाल दिया
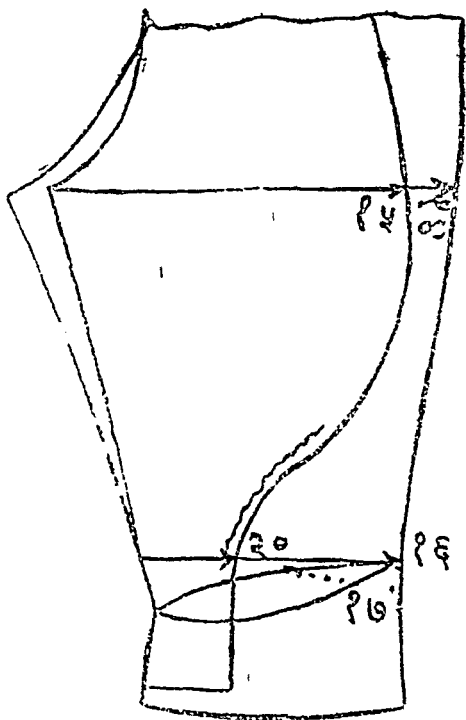
चित्र सं० ३३१

जाय और इस कमी को पूरा करने के वास्ते पीठ के पास की

लम्बाई को जरूरत के मुताबकि बढ़ा दिया जाय । जैसाकि चित्र सं० ३३१ मे घुटने पर की पीठ की डाट को पास में निशान १७ पर बढ़ा कर दिखाया गया है । ऐसा करने से नुक्स बिल्कुल दूर हो जाता है ॥

(३८) बिर्जस का ज्यादा लम्बा होना ।

(BREECHES TOO LONG)

बिर्जस की लम्बाई के ज्यादा होने का मतलब यह नही है कि इसकी लम्बाई नीचे से ज्यादा है बल्कि इसका मतलब यह है कि पट (Thigh) से लेकर घुटने तक बिर्जस की लम्बाई ज़रूरत से ज्यादा है । कई लोग इस बात की ओर ध्यान तक भी नही देते कि उनकी बिर्जस की लम्बाई यहां पर ज्यादा है । बल्कि वह इसे अच्छा विचार करते है । क्योंकि वह समझते हैं कि लम्बाई का ज्यादा होना ग्राहक को किसी प्रकार का कष्ट नही देता बल्कि ज्यादा आराम का कारण बनता है । परन्तु कभी २ ऐसा भी होता है कि नाप लेने की गलती से अथवा काटते समय गलती कर जाने से यह लम्बाई बहुत अधिक हो जाती है ।

इस नुक्स को दूर करने का केवल एक ही तरीका है कि सामने और पीठ की फोर्क को अपनी असली जगह से जरा नीचे उतार दिया जाय जैसाकि चित्र सं० ३३२ मे निशान १८ और १९ पर करके दिखाया गया है । दूसरे शब्दों मे गिद्री को दबादो । ऐसा करने से गिद्री की लम्बाई की ज्यादती तो दूर हो जायगी परन्तु फोर्क अथवा सीट पर बिर्जस की चौड़ाई कम
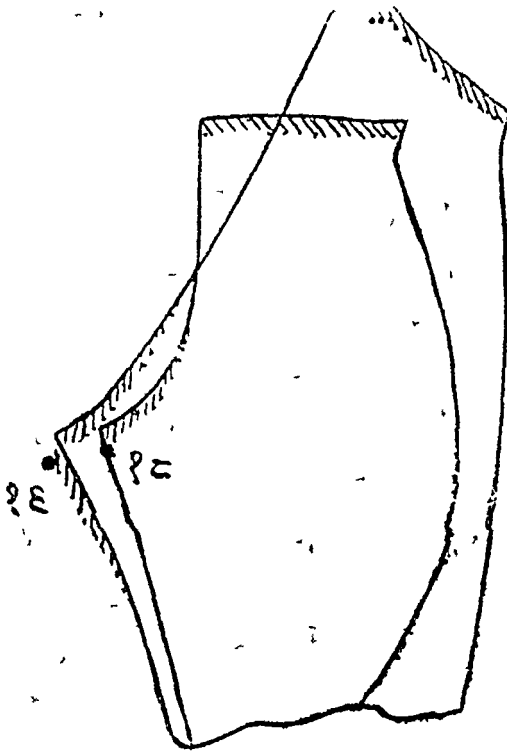
चित्र सं० ३३२

हो जायगी। इस कमी को पूरा करने के वास्ते ज़रूरी है कि बिर्जस की पीठ की गिद्री पर के दबाव को फ़ोर्क पर से जरूरत के मुताबिक बाहिर निकालो।

यदि बिर्जस बैल्ट वाली हो तो इसे इससे ज्यादा नही छेड़ना चाहिये और यदि बिना बैल्ट के बनाई गई हो तो फ़ोर्क को नीचे उतारने से बाडी की लम्बाई मे जितनी ज्यादती हुई है उसे ऊपर से छांट कर दूर करो जैसाकि इस चित्र मे करके दिखाया गया है॥ ॥ इति ॥